Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पं. प्रेमदत्त शास्त्री जहाँगीराबाद

[illegible] प्रारभ्यते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेमदत्त शर्मा
शास्त्री

जहाँगीराबाद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः॥स्मृत्वाहरिं श्रीरमयासमेतं परांकुशाख्यं पितरं च नत्वा॥करोमिटीकामिहगारुडस्यमनुष्यवाचाखलुकेशवाख्यः ॥ १ ॥
अथ टीकाया आरंभः क्रियते॥धर्महीं जाको बहुत पुष्ट मूल बँधि रहो है और वेद जाके गुद्देहहैं और पुराणरूपी शाखानकरिकै युक्त है
और यज्ञ जाके फूलहैं और मोक्ष जाको फल है ऐसो मधुसूदनरूपी वृक्ष सर्व उत्कर्षसों वर्त्तमानहै अर्थात् सबसे अधिक है यातें अधिक
कोई नहीं है ॥१॥ अनिमिष जे विष्णु हैं तिनको क्षेत्र ऐसो जो नैमिषारण्य है तामें शौनकआदि हैं ते स्वर्गलोककीजो प्राप्तिहै ताकेलिये

श्रीर्जयति ॥ धर्मदृढबद्धमूलोवेदस्कन्धः पुराणशाखाढ्यः ॥ क्रतुकुसुमोमोक्षफलोमधुसूदनपादपोजयति ॥
॥ १ ॥ नैमिषेनिमिषक्षेत्रेऋषयः शौनकादयः ॥ सत्रंस्वर्गायलोकायसहस्रसममासत ॥ २ ॥ तएकदातुमु
नयःप्रातर्हुतहुताग्नयः ॥ सत्कृतंसूतमासीनंपप्रच्छुरिदमादरात् ॥ ३ ॥ ऋषयऊचुः ॥ कथितोभवतासम्य
ग्वेदमार्गः सुखप्रदः ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामोयममार्गंभयप्रदम् ॥ ४ ॥ तथासंसारदुःखानितत्क्लेशक्षयसाध
नम् ॥ ऐहिकामुष्मिकान्क्लेशान्यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ५ ॥

हजार वर्षमें पूरो होने योग्य ऐसो जो यज्ञ है ताहि करत भये ॥ २ ॥ एकवार प्रातःकालके समय होमी है अग्नि जिनने ऐसे सब ऋषि
शौनकआदि सत्कार किये गये और बैठेभये सूतसों आदरपूर्वक यह पूँछत भये ॥३॥ ऋषि बोले कि अपने सुखको देनहारो देवमार्ग
कहो अब हम भयको देनहारो यमको मार्ग सुनो चाहैं हैं ॥४॥ तैसेही संसारके दुःख और उनके क्लेशके क्षयको उपाय और या लोक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा परलोकके क्लेशनको आप यथार्थ कहने योग्य हौ ॥५॥ सूत बोले ॥ बहुतही दुर्गम और पुण्यात्मा मनुष्यनको सुख देनहारो तथा पापीनको दुःख देनहारो ऐसो जो यमको मार्ग है ताहि मैं कहोंगो आप सब ऋषि सुनैं ॥६॥ श्रीविष्णुभगवान्से पूँछत भये जे गरुड़ हैं तिनसों जैसो कह्यो वैसोही मैं आप लोगनके सन्देहके दूरि होनेके लिये कहोंगो ॥७॥ काहूँ समय वैकुंठमें सुखसों बैठेभयेजेश्रीहरिगुरुहैं

सूतउवाच ॥ शृणुध्वंभोविवक्ष्यामियममार्गंसुदुर्गमम् ॥ सुखदंपुण्यशीलानांपापिनां दुःखदायकम् ॥ ६ ॥
यथा श्रीविष्णुनाप्रोक्तं वनतेयायपृच्छत ॥ तथैवकथयिष्यामिसंदेहच्छेदनायवः ॥ ७ ॥ कदाचित्सुखमासीनंवैकुण्ठेश्रीहरिंगुरुम् ॥ विनयावनतोभूत्वापप्रच्छविनतासुतः ॥ ८ ॥ गरुड उवाच ॥ भक्तिमार्गोबहुविधः कथितोभवतामम ॥ तथाचकथितादेवभक्तानांगतिरुत्तमा ॥ ९ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामियममार्गंभयंकरम् ॥ त्वद्भक्तिविमुखानांचतत्रैवगमनंश्रुतम् ॥ १० ॥ सुगमंभगवन्नामजिह्वाचवशवर्तिनी ॥ तथापिनरकंयान्तिधिग्धिगस्तुनराधमान् ॥ ११ ॥

तिनसों विनय करि नम्र हो गरुडजी पूँछत भये ॥८॥ गरुड बोले आपने मोसों भक्तिको मार्ग बहुत [illegible]कारको कहो और हे देव ! आपने भक्तनकी उत्तमगति कही ॥९॥ और अब भयंकर जो यमको मार्ग है ताहि सुनो चाहौंहौं आपकी भक्तितें जे विमुख हैं वे वहांई जायहैं ॥१०॥ हे भगवन् ! आपको नाम लेनो सुगम है जीभ अपने वशमें है ताहूपै नरकमें जायहैं याते अधम नरनको धिक्कार धिक्कारहै ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे भगवन् ! याते पापीनकी जो गति होयहै वाहि मोसों कहो और यमके मार्गके दुःख जैसे उन नरनको प्राप्त होयहैं सो सब कहिये ॥ १२ ॥ श्रीभगवान् बोले हे पक्षीनके राजा ! जामें होकै पापी यमके लोककौ जायहैं और सुननहारेनहूको भय देनहारो जो यमको मार्ग है ताहि मैं कहौंगो॥१३॥हे गरुड ! जे पापहीमें लगे रहैंहैं और दया तथा धर्मकरि रहित हैं और दुष्ट जिनकी संगतिहै और उत्तम शास्त्रको नहीं जानै हैं तथा सत्संगतिसों दूरि रहैं हैं ॥१४॥ और जे आपको प्रतिष्ठित जानै हैं और काहूसो नम्र नहीं होय

अतोमेभगवन्ब्रूहिपापिनांयागतिर्भवेत् ॥ यममार्गस्यदुःखानियथातेप्राप्नुवन्तिवै ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
वक्ष्येहंशृणुपक्षीन्द्रयममार्गंचयेनय ॥ नरकेपापिनोयान्तिश्रृण्वतामपिभीतिदम् ॥ १३ ॥ येहिपापरतास्ता
र्क्ष्यदयाधर्मविवर्जिताः ॥ दुष्टसंगाश्चसच्छास्त्रसत्सङ्गतिपराङ्मुखाः ॥ १४ ॥ आत्मसम्भाविताः स्तब्धा
धनमानमदान्विताः ॥ आसुरंभावमापन्नादैवीसंपद्विवर्जिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमा
वृताः ॥ प्रसक्ताः कामभोगेषुपतन्तिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥

हैं और धन तथा मानके घमण्डसों भरे हैं और असुरनके भावको प्राप्त और दैवी संपत्तिकरि रहित हैं ॥ १५ ॥ और अनेक जे पराई दारा पराये धनके लेने आदिमें भ्रमि रह्यो है मन जिनको और मोहजालमें फँसोभयोहै मन जिनको और जे कामके भोगमें लगे भयेहैं वे अशुद्ध नरकमें गिरैं हैं ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जे नर ज्ञानी हैं वे परमगति जो मोक्ष है ताको प्राप्त होयहैं और जे पापी हैं वे दुःखसों यमकी यातनानको प्राप्त होयहैं ॥ १७ ॥ पापिनको जैसेया लोकको दुःख होयहै सो सुनो तापीछे वे मरणकोप्राप्त होकै जैसे यातनाको प्राप्त होयहै सोसुनो॥१८॥पहले जन्ममें जो इकट्ठो कियोहै सुकृत अथवा पाप ताको भोगिकै कर्मकेयोगसों वाके कोईरोग उत्पन्न होयहै॥१९॥आधिजो मानसी व्यथाहैऔर व्याधि

येनराज्ञानशीलाश्चतेयान्तिपरमांगतिम् ॥ पापशीलानरायांतिदुःखेनयमयातनाम् ॥ १७ ॥ पापिनामैहिकंदुःखंयथाभवतितच्छृणु ॥ ततस्तेमरणं प्राप्ययथागच्छन्तियातनाम् ॥ १८ ॥ सुकृतंदुष्कृतंवापि भुक्तापूर्वंयथार्जितम् ॥ कर्मयोगात्तदातस्यकश्चिद्व्याधिःप्रजायते ॥ १९ ॥ आधिव्याधिसमायुक्तंजीविताशासमुत्सुकम् ॥ कालोबलीयानहिवदज्ञातः प्रतिपद्यते ॥ २० ॥ तत्राप्यजातनिर्वेदोम्रियमाणःस्वयंभृतैः॥ जरयोपात्तवैरूप्योमरणाभिमुखोगृहे ॥ २१ ॥ आस्तेवमत्योपन्यस्तंगृहपालइवाहरन् ॥ आमयाव्यप्रदीप्ताग्निरल्पाहारोल्पचेष्टितः ॥ २२ ॥

जोरोगहै ताकरिकै युक्त और जीवनेकी आशामें उत्कंठित जोप्राणीहै ताको बलवान् काल सर्पके समान विना जाने प्राप्त होयहै॥२०॥ वहां अन्तकालहूमें नहीं उत्पन्न भयोहै निर्वेद जाको ऐसो आपकरि पालन किये गये जे पुत्र स्त्री आदि हैं तिनकरिकै पोषण किये जातो भयो और बुढापे करि कुरूप कियो गयो वह घरमें मरनेके सन्मुख होय हैं ॥ २१ ॥ अवज्ञासों समीपमें धरे भये आहारको कुत्ताके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समान खातो भयो रहैहै और रोगी तथा मन्दाग्नि होनेसों आहार घटिजायहै चलने और फिरने आदिकी चेष्टाहू कम होजायहै ॥२२॥ और कफसों रुकीहैं नाडीरूप मार्ग जाके तासों निकरो चाहतो जो प्राणरूप वायु है तासों फटेहैं नेत्र जाके और कास श्वासकरि दबायो गयो जो वह प्राणी है ताके कंठमें घुरघुर शब्द होयहै ॥ २३ ॥ शोचकरते जे अपने भाई बन्धु हैं ते जाको घेर रहैं ऐसो धरतीमें परो भयो वह कालके वशमें होकै बुलानेहूपै नहीं बोलै है ॥२४॥ या प्रकार कुटुंबके पालन पोषणमें लगोहै आत्मा जाको और उसकीही

वायुनोत्क्रमतोत्तारःकफसंरुद्धनाडिकः ॥ कासश्वासकृतायासःकण्ठेघुरघुरायते ॥ २३ ॥ शयानः परिशोचद्भिः परिवीतः स्वबन्धुभिः ॥ वाच्यमानोऽपिनब्रूतेकालपाशवशंगतः ॥ २४ ॥ एवंकुटुम्बभरणेव्यापृतात्माजितेन्द्रियः ॥ म्रियतेरुदतांस्वानामुरुवेदनयास्तधीः ॥ २५ ॥ तस्मिन्नन्तक्षणेताक्ष्यदैवीदृष्टिः प्रजायते ॥ एकीभूतंजगत्सर्वंनकिंचिद्वक्तुमीहते ॥ २६ ॥

बहुत भारी जो वेदना अर्थात् एकसाथ सौ बिच्छूनके काटनेके समान पीडा सो नष्ट होगई है बुद्धि जाकी ऐसो वह प्राणी रोतेभये भाईबन्धूनके मध्यमें मरिजायहै ॥ २५ ॥ हे गरुड़ ! वा अन्तसमयमें देवतानकीसी दृष्टि होजायहै अर्थात जा दृष्टिसों यमके दूतनको प्रत्यक्ष दर्शन होयहै और फिरि जा दृष्टिसों सब यह लोक तथा परलोकरूप जगत एक भयो सो होजायहै यही आश्चर्यके देखनेसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ नहीं कहैहै॥२६॥ इन्द्रियनको जो समूह है ताके व्याकुल होनेपै और चैतन्यके जड होजानेपै समीप आये भये जे यमके दूत हैं तिनके कारणसों प्राण अपने स्थानते चलायमान होय हैं ॥ २७ ॥ जब श्वास अपने स्थानते चलायमान होयहै वा समय मरतेभये पापीको एकक्षण कल्पके समान बीतेहै और सौ बिच्छूनको काटिबेकी जो पीडा होयहै वह वा करिकै अनुभव करीजायहै अर्थात भोगनी परै है ॥ २८ ॥ या पीछे वह फेनको उगिलैहै मुख लारसों भरिजायहै तब पापीनकी प्राणवायु गुदामें होकै निकरै है ॥ २९ ॥ तब

विकलेन्द्रियसंघातेचैतन्येजडतांगते ॥ प्रचलन्तिततःप्राणायाम्यैर्निकटवर्तिभिः ॥ २७ ॥ स्वस्थानाच्चलिते श्वासेकल्पाख्योह्यातुरक्षणः ॥ शतवृश्चिकदष्टस्ययापीडासानुभूयते ॥ २८ ॥ फेनमुद्गिरतेसोथमुखंलालाकुलं भवेत् ॥ अधोद्वारेणगच्छन्तिपापिनां प्राणवायवः ॥ २९ ॥ यमदूतौतदाप्राप्तौभीमौसरभसेक्षणौ ॥ पाशदण्ड धरौनग्नौदन्तैः कटकटायितौ ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वकेशौकाककृष्णौवक्रतुण्डौनखायुधौ ॥ सदृष्ट्वात्रस्तहृदयःशकृ न्मूत्रंविमुञ्चति ॥३१॥ अंगुष्ठमात्रःपुरुषोहाहाकुर्वन्कलेवरात् ॥ तदैवगृह्यतेदूतैर्याम्यैःपश्यन्स्वकंगृहम् ॥ ३२ ॥

प्राणनकी यात्राके समय क्रोधसमेत हैं नेत्र जिनके ऐसे और भयानक और पाश तथा दंडको लियेभये नंगे और दांतनको कटकटाते भये यमके दूत प्राप्त भये ॥ ३० ॥ ऊपरको उठे भये हैं बाल जिनके और कौआके समान काले टेढो जिनको मुख और नखही हैं हथियार जिनके ऐसे यमके दूतनको देखि हृदयमें भयभीत हो विष्ठा तथा मूत्रको छोड़ैहै ॥३१॥ और हाय हाय करतो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भयो पुरुष देहसों निकसिकै अंगुष्ठमात्र अर्थात् अंगूठेकी बराबर देहको धारण करैहै तब अपने घरको देखतो भयो वह यमके दूतनकरिकै पकरलियो जाय है ॥ ३२ ॥ यातनानके भोगनेके प्रारब्ध कर्मकरिकै स्वप्नके समान उठेभये वा शरीरमें घेरिकै यमके दूत लंबे मार्गमें गला बांधिकै ऐसे लेजाय हैं जैसे दंड देने योग्य पुरुषको राजाके सिपाही लेजाय हैं ॥ ३३ ॥ या प्रकार नीयमान जो

यातनादेहआवृत्यपाशैर्बद्ध्वागलेबलात ॥ नयतोदीर्घमध्वानंदण्डचम्राजभटायथा ॥ ३३ ॥ तस्यैवंनीयमान स्यदूताः संतर्जयन्तिच ॥ प्रवदन्तिभयंतीव्रंनरकाणां पुनः पुनः ॥ ३४ ॥ शीघ्रंप्रचलदुष्टात्मन्यास्यसित्वंय मालयम् ॥ कुम्भीपाकादिनरकांस्त्वांनयाम्यद्यमाचिरम् ॥ ३५ ॥ एवंवाचस्तदाशृण्वन्बन्धूनांरुदितं तथा ॥ उच्चैर्हाहेतिविलपंस्ताड्यतेयमकिङ्करैः ॥ ३६ ॥ तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनैर्जातवेपथुः ॥ पथिश्वभिर्भक्ष्यमाण आर्तोघंस्वमनुस्मरन् ॥ ३७ ॥

प्राणी है ताहि यमके दूत धमकावै हैं और नरकनके तीव्रभयको वारंवार कहै हैं ॥ ३४ ॥ अरे दुष्ट ! शीघ्र चल तू यमके घरको जायगो और कुंभीपाक आदि नरकनमें हम तोको अब शीघ्र लियेजाये हैं ॥ ३५ ॥ या प्रकार यमदूतनके वचन और भाई बन्धूनके रोवनेको सुनतो भयो ऊँचे प्रकार हाय २ करि रोवतो भयो वह प्राणी यमके दूतनकरि ताडना कियो जायहै ॥ ३६ ॥ उन यमदूतनके धमकावनेसों विदीर्ण होगयोहै हृदय जाको ऐसो कांपतो भयो वह प्राणी दुःखी हो अपने पापनको स्मरण करतो भयो मार्गमें कुत्तान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करि खायो जायहै॥३७॥क्षुधा और पियास करि पीडित और सूर्य तथा दावाग्निकी पवन करि तपीहै वालू जामें और नहीं है विश्राम तथा जल जामें ऐसे मार्गमें तपायो गयो और क्षुधा पिपासा आदिके कारण चलनेको असमर्थहू प्राणी कोरडानकी मार देकै चलायो जायहै॥३८॥वा मार्गमें गिरतो और थकोभयो मूर्च्छित होकै फिरि उठोभयो वह प्राणी अतिपापी जो तम है ता करिकै यमके लोकमें

क्षुत्तृट्परीतोऽर्कदवानलानिलैः संतप्यमानः पथि तप्तवालुक ॥ कृच्छ्रेणपृष्ठेकशयाचताडितश्चलत्यशक्तोपि निराश्रमोदके ॥३८॥ तत्रतत्रपतञ्छ्रान्तोमूर्च्छितः पुनरुत्थितः ॥ यथा पापीयसानीतस्तमसायमसादनम् ॥ ॥ ३९ ॥ त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यांवानीयतेतत्रमानवः ॥ प्रदर्शयन्तिदूतास्तान्घोरानरकयातनाः ॥ ४० ॥ मुहूर्तमात्रात्त्वरितंयमंवीक्ष्यभयंपुमान् ॥ यमाज्ञयासमंदूतैः पुनरायातिखेचरः ॥ ४१ ॥ आगम्यवासनाबद्धोदेहमिच्छन्यमानुगैः ॥ धृतः पाशेनरुदतिक्षुत्तृड्भ्यांपरिपीडितः ॥ ४२ ॥

पहुँचायो जायहै ॥३९॥ तीनि मुहूर्तों करिकै मनुष्य वहां पहुँचायो जायहै और दूत वाको अति घोर नरककी यातना दिखावैहैं ॥४०॥ मुहूर्तमात्रहीमें शीघ्र यमको तथा यातनानको देखि वह पुरुष यमकी आज्ञासों शीघ्र ही दूतनके साथही आकाशमार्गमें होकै फिरि आवैहै ॥४१॥ आयके वासनासों बंधोभयो देहमें प्रवेश करनेकी इच्छा करतो यमके दूतनकरि पाशनसों बांधोगयो वह प्राणी क्षुधा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पियासासों पीडित होकै रोवैहै ॥४२॥ और मृत्युके स्थान आदिमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको और मरनेके समयमें दिये भये दानको खायहै हे गरुड ! ताहूपै वह नास्तिक पापी तृप्तिको प्राप्त होयहै ॥४३॥ दान श्राद्ध तथा जलकी अंजली पापीमनुष्यनको नहीं पहुँचे है याहीतें पिंडके खानेवाले वे क्षुधासों व्याकुल होजाय हैं ॥४४॥ और जो उनकी पिंडदान नहीं कियो जाय तौ वे कल्पभरि प्रेतरूप

भुंक्तेपिण्डंसुतैर्दत्तंदानंचातुरकालिकम् ॥ तथापिनास्तिकस्तार्क्ष्यतृप्तिंयातिनपातकी ॥ ४३ ॥ पापिनांनोपतिष्ठन्तिदानंश्राद्धंजलांजलिः ॥ अतः क्षुद्व्याकुलायान्तिपिण्डदानभुजोपिते ॥ ४४ ॥ भवन्तिप्रेतरूपास्ते पिण्डदानविवर्जिताः ॥ आकल्पनिर्जनारण्येभ्रमन्तिबहुदुःखिताः ॥४५ ॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अभुक्त्वायातनां जन्तुर्मानुष्यलभतेनहि ॥ ४६ ॥ अतोदद्यात्सुतः पिण्डान्दिनेषु दशसुद्विज ॥ प्रत्यहन्तेविभज्यन्तेचतुर्भागैःखगोत्तम ॥ ४७ ॥

होयहैं और शून्यवनमें बडे दुःखी हो भ्रमण करैहैं ॥४५॥ करोडों कल्पनलौं विना भोगे कर्म क्षीण नहीं होयहै और यमकी यातना भोगे विना मनुष्यरूपको नहीं पावैहै ॥ ४६ ॥ हे द्विज ! याहीते पुत्र दशदिनलौं पिंडदान करै हे पक्षीनमें उत्तम ! वे पिंड प्रतिदिन चारीभागनमें बांटे जायहैं ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनमें दोभाग या भूतनमें देहको पुष्टि देयहैं और तीसरो भाग यमके दूतनको होय है और चौथे भागको वह प्रेत खायहै ॥ ४८ ॥ नव रातिदिनलों प्रेत पिंडको पावैहै तापीछे दशवें दिन पिंडनसों उत्पन्न भयोहै देह जाको ऐसो जीव बल अर्थात मार्ग चलनेकी सामर्थ्यको पावैहै ॥ ४९ ॥ हे खग ! पहले देहके जरिजानेपै पिंडनसों फिरि देह उत्पन्न होयहै वह हाथभरिको होयहै जादेहकरिकै यमके मार्गमें शुभ तथा अशुभको भोगैहै ॥५०॥ पिंडनसों उत्पन्न देहके बननेको जो प्रकार है ताको कहें हैं कि पहले दिन जो पिंड

भागद्वयंतुदेहस्यपुष्टिदंभूतपञ्चके ॥ तृतीयंयमदूतानांचतुर्थंसोपजीवति ॥ ४८ ॥ अहोरात्रैश्चनवभिःप्रेतः पिण्डमवाप्नुयात् ॥ जन्तुर्निष्पन्नदेहश्चदशमेबलमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ दग्धेदेहेपुनर्देहः पिण्डैरुत्पद्यतेखग ॥ हस्तमात्रःपुमान्येनपथिभुंक्ते शुभाशुभम् ॥५०॥ प्रथमेऽहनि यः पिण्डस्तेनमूर्धाप्रजायते॥ग्रीवास्कन्धौद्विती येनतृतीयाद्धृदयं भवेत् ॥ ५१ ॥ चतुर्थेनभवेत्पृष्ठंपञ्चमान्नाभिरेवच ॥ षष्ठेनचकटीगुह्यंसप्तमात्सक्थिनीभ वेत् ॥ ५२ ॥ जानुपादौतथाद्वाभ्यांदशमेऽह्निक्षुधातृषा ॥ ५३ ॥

दियो जायहै तासों मस्तक अर्थात् शिर उत्पन्न होयहै और दूसरेसों गरदन और कंधे उत्पन्न होयहैं और तीसरेसों हृदय अर्थात् छाती उत्पन्न होयहै ॥५१॥ और चौथेसों पीठि तथा पांचमेंसों नाभि उत्पन्न होयहै और छठमेंसों कटि कहिये करिहांउँ और गुह्य कहिये मलमूत्रके स्थान अर्थात् गुदा लिंग भग और कटिके नीचेके दोनों ओरनके मांसके पिंडे ये सब उत्पन्न होय हैं ॥ ५२ ॥ और दो पिंडनसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जांघें और पांय उत्पन्न होय हैं और दशमें दिन क्षुधा तृषा अर्थात् भूँख प्यास उत्पन्न होय है॥५३॥ पिंडनसों उत्पन्न देहको आश्रय लेकै भूंख तथा प्यासकरि पीडित वह प्रेत ग्यारहें और बारहें इन दो दिनमें भोजन करै है ॥५४॥ और तेरहें दिन यमके दूतनकरि बांधो गयो वह प्रेत वा मार्गमें बांधे भये बन्दरके समान अकेलो जाय है ॥५५॥ हे गरुड ! वैतरणीको छोडिकै जो यमके मार्गको

पिण्डजंदेहमाश्रित्यक्षुधाविष्टस्तृषार्दितः ॥ एकादशंद्वादशंचप्रतोभुंक्तदिनद्वयम् ॥ ५४ ॥ त्रयोदशेहनिप्रेतो यन्त्रितोयमकिङ्करैः ॥ तस्मिन्मार्गेव्रजत्यकोगृहीतइवमर्कटः ॥ ५५ ॥ षडशीतिसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः ॥ यममार्गस्यविस्तारोविनावैतरणींखग ॥५६॥ अहन्यहनिवैप्रेतोयोजनानांशतद्वयम् ॥ चत्वारिंशत्तथासप्तदिवारात्रेणगच्छति ॥ ५७ ॥ अतीत्यक्रमशोमार्गेपुराणीमानिषोडश ॥ प्रयातिधर्मराजस्यभवनंपातकीजनः ॥ ५८ ॥ सौम्यंसौरिपुरंनगेन्द्रभवनंगन्धर्वशैलागमौक्रौञ्चंक्रूरपुरंविचित्रभवनंबह्वापदंदुःखदम् ॥ नानाक्रन्दपुरंसुतप्तभवनंरौद्रंपयोवर्षणंशीताढ्यबहुभीतिधर्मभवनंयाम्यं पुरंचाग्रतः ॥ ५९ ॥

विस्तार है वह प्रमाणमें छयासी हजार योजन हैं ॥५६॥ प्रतिदिन प्रेत निश्चयकरि दोसौ सैंतालीस योजन रातिदिनमें चलैहै॥५७॥ और इन सोरह ग्रामनको मार्गमें क्रमसों उल्लंघन करिकै पातकी मनुष्य धर्मराजके घरको जाय है॥५८॥ सोलह पुरनके नाम कहते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं सौम्य, सौरिपुर, नगेंद्रभवन, गंधर्वशैल, आगम, क्रौंच, क्रूरपुर विचित्रभवन, बह्वापद, दुःखद, नानाक्रंदपुर, सुतप्तभवन, रौद्र, पयोवर्षमें
शीताढ्य, बहुभीति, धर्मभवन और आगे यमको पुरहै ।।५९।। यमके पाशनकरि बांधो गयो वह पापीमार्गमें हाय हाय करिकै रोवतो
भयो अपने घरको छोंडिकै यमराजके पुरको जाय है ॥ ६० ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां

यामयपाशैर्धृतः पापीहाहेतिप्ररुदन्पथि ॥ स्वगृहंतुपरित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत ॥ ६० ॥ इति श्रीसारोद्धारे
गरुडपुराणे पापिनामैहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणन्नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ गरुडउवाच ॥ कीदृशोयमलो
कस्यपन्थाभवतिदुःखदः ॥ यत्रयान्तियथापापास्तन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यममार्गं
महद्दुःखप्रदंतेकथयाम्यहम् ॥ ममभक्तोऽपितच्छ्रुत्वात्वभविष्यसिकम्पितः ॥ २ ॥ वृक्षच्छायानतत्रास्तियत्र
विश्रमतेनरः ॥ यस्मिन्मार्गेनचान्नाद्यंयेनप्राणान्समुद्धरेत् ॥ ३ ॥

गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ गरुड बोले, यमके लोकको माग कैसो दुःखको देनहारो होय है ? केशव ! वामें
जैसे पापी जाय है मोसों कहौ ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले, बडे दुःखको देनहारो जो यमको मार्ग है ताहि मैं तुमसों कहौं हौं जाको
सुनिकै मेरे भक्तहू तुम कंपायमान होजाउगे॥२॥ वहां वृक्षकी छाया नहीं है जामें मनुष्य विश्राम लेइ और जा मार्गमें अन्नआदि नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है जासों प्राणनको उद्धार करै है ॥३॥ वा मार्गमें जल कहीं नहीं दिखाई देय है जाको बहुत प्यासों प्राणी पीवै हे खग ! बारहों सूर्य ऐसे तपैं हैं जैसे प्रलयके अंतमें तपैं हैं ॥४॥ वा मार्गमें पापात्मा पुरुष शीतल वायुसों पीडित होतो भयो जाय है और कहूं कांटेनसों वींधे है और बडे विषधारी सांपनकरि काटो जाय है ॥५॥ और कहूं बडे घोर सिंह बाघ और कुत्तनकरि पापी खायो जाय है और बिच्छून

नज लंदृश्यतेक्वापितृषितातीवयत्पिबेत ॥ तपन्तेद्वादशादित्याः प्रलयान्तेयथाखग ॥ ४ ॥ तस्मिन्गच्छतिपापात्माशीतवातेनपीडितः ॥ कण्टकैर्विंध्यतेक्वापिकचित्सर्पैर्महाविषैः ॥ ५ ॥ सिंहैर्व्याघ्रैःश्वभिर्घोरैर्भक्ष्यतेक्वापिपापकृत ॥ वृश्चिकैर्दश्यतेक्वापिकचिद्दह्यातिवह्निना ॥६॥ ततःक्वचिन्महाघोरमसिपत्रवनंमहत ॥ योजनानां सहस्रेद्वेविस्तारायामतःस्मृतम् ॥ ७ ॥ काकोलूकवटगृध्रसरघादंशसंकुलम् ॥ सदावाग्निचतत्पत्रैश्छिन्नभिन्नःप्रजायते॥८॥क्वचित्पतत्यन्धकूपेविकटात्पर्वतात्क्वचित ॥ गच्छतेक्षुरधारासुशङ्कूनामुपरिक्वचित् ॥ ९ ॥

करि काटो जायहै और कहूं आगिसों जरायो जाय है ॥ ६ ॥ तापोछे वहां कहीं बडो घोर असिपत्र वन है दोहजार योजनकी वाकी लंबाई चौडाई कही है ॥ ७ ॥ कौआ उलूक गीध महूकी माखी और डांसनसों भरो है और दावाग्नि करिकै युक्त वह पत्रनकरिकै छिन्न भिन्न हो जाय है ॥ ८ ॥ कहूँ अंधेकुआंमें गिरै है और कहूँ विकट पर्वतके ऊपरसों गिरै है और कहूं छुरानकी जे धारैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनपै चले है और कहूँ कीलनके ऊपर चलनो परै है ॥९॥ कहूँ बडे उग्र अन्धकारमें गिरै है और कहूँ जलमें गिरै और कहूँ जोंकनसों भरीभई कीचमें और कहूं तपीभई कीचमें गिरै है ॥१०॥ कहूँ तपी भई बालूसों भरे भयेमें और कहूँ तपायेभये तांबेसों बने भयेमें और कहूँ अंगारनके ढेरमें और बडे धुआँसों भरेभये मार्गमें गिरै है ॥११॥ कहूँ अंगारकी वर्षा होय है और कहूँ वज्रसमेत शिलानकी वर्षा

स्खलत्यन्धतमस्युग्रेजलेनिपततिकचित् ॥ कचित्पङ्केजलौकाढ्येकचित्सतप्तकर्दमे ॥ १० ॥ संतप्तवालुकाकीर्णेध्मातताम्रमयेकचित् ॥ कचिदङ्गारराशौचमहाधूमाकुलेकचित॥११॥ कचिदङ्गारवृष्टिश्चशिलावृष्टिः सवज्रका ॥ रक्तवृष्टिः शस्त्रवृष्टिःकचिदुष्णाम्बुवर्षणम् ॥ १२ ॥ क्षारकर्दमवृष्टिश्चमहानिम्नानिचकचित ॥ वप्रप्ररोहणंकापिकन्दरेषुप्रवेशनम् ॥ १३ ॥ गाढांधकारस्तत्रास्तिदुःखारोहशिलाः कचित् ॥ पूयशोणितपूर्णाश्चविष्ठापूर्णाह्रदाः कचित् ॥ १४ ॥ मार्गमध्यवहात्युग्राघोरावैतरणीनदी ॥ सादृष्टादुःखदाकिंवा यस्यावार्त्ताभयावहा ॥ १५ ॥

॥ ७ ॥

होयहै कहूँ रक्तकी वषा और कहूँ शस्त्रकी वर्षा तथा कहूँ तपेभये जलकी वर्षा होयहै ॥ १२ ॥ कहूँ खारी कीचकी वर्षा होय है और कहूँ बहुत गहरे स्थानहैं और कहूँ पर्वतनके शिखरपर चढानो परैहै कहूँ गुफानमें घुसनो परैहै ॥१३॥ वहाँ बहुतही गहरो अंधकारहै और कहूँ दुःखसों चढने योग्य शिलाहैं और कहूँ पीव तथा रुधिरसों भरेभये और कहूँ विष्ठासों भरेभये कुंड हैं ॥ १४ ॥ और मार्गके मध्यमें बहने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाली वैतरणी नदीहै वह देखनहींसों दुःखकी देनेहारीहै और कहा कहनोहै जाकी वार्त्ताहू भयकी देनेहारीहै ॥१५॥ सौयोजन चौडीहै और वामें पीव तथा रुधिर बहैहै और हाडोंके समूहसों बनेभये वाके किनारेहैं और वह दुःखसों जाने योग्यहै और मांस तथा रुधिरकी वामें कीचहै ॥१६॥ अथाहहै और पापी नरनको दुःखसों उतरने योग्यहै और बालरूपी सिवारोंसों दुर्गमहै और बडेभारी ग्राह जो घरिया

शतयोजनविस्तीर्णा पूयशोणितवाहिनी॥ अस्थिवृन्दतटादुर्गामांसशोणितकर्दमा॥१६॥अगाधादुस्तरापापैः केशशैवालदुर्गमा ॥ महाग्राहसमाकीर्णाघोरपक्षिशतैर्वृता ॥ १७ ॥ आगतपापिनंदृष्ट्वाज्वालाधूमसमाकुला ॥ कथतेसानदीताक्ष्र्य कटाहान्तंघृतंयथा ॥ १८ ॥ कृमिभिः सकुसाघोरैः सूचिवक्त्रैः समन्ततः ॥ वज्रतुण्डैर्महागृध्रैर्वायसैः परिवारिता ॥ १९ ॥ शिशुमारैश्चमकरैर्जलौकोमत्स्यकच्छपैः ॥ अन्यैर्जलस्थजीवैश्चपूरितामांसभेदकैः ॥ २० ॥

ल हैं तिनसों भरीहै और बडे घोर सैकरन पक्षीनसों घिरी भईहै ॥१७॥ हे गरुड ! वह नदी पापीको आयो भयो देखि अग्निकीज्वाला तथा धुओंसों भरिके वह नदी ऐसे खेदकैहै जैसे कराहमें घी ॥१८॥ जिनके सुईके समान मुखहैं ऐसे घोर कीरानसों भरीभईहै और वज्रके समान जिनकी चोंचें ऐसे गीधनसों तथा कौआनसों घिरीभई है ॥ १९ ॥ और सुसुहार मगर जोंक मछली कछुआ तथा और मांसके भेदन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनहारे जलके जीवनसों भरी है ॥ २० ॥ वाकी धारमें गिरे भये बहुतसे पापी चिल्लायहैं और हाय ! भाई हाय ! पुत्र हाय ! बाप ! ऐसे वारंवार बकैहैं ॥ २१ ॥ भूंखे प्यासे पापी निश्चय रुधिरको पीवे हैं और वह नदी जामें बहुतसे झष उठिरहेहैं ऐसे रुधिरके प्रवाहसों बहिरहीहै ॥ २२ ॥ बडी घोर गर्जतीभई दुःखसों देखने योग्य भयावनीहै वाके देखेनेहीसों पापी नर मूर्च्छित होजाँ

पतितास्तत्प्रवाहेचक्रन्दन्तिबहुपापिनः ॥ हाभ्रातः पुत्रतातेतिप्रलपन्तिमुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥ क्षुधितास्तृषिताः पापा पिबन्ति किल शोणितम् ॥ सासरिद्रुधिरापूरंवहन्तीफनिलंबहु ॥ २२ ॥ महाघोरातिगर्जन्ती दुर्निरीक्ष्यभयावहा ॥ तस्या दर्शनमात्रेण पापाः स्युर्गतचेतनाः ॥ २३ ॥ बहुवृश्चिकसंकीर्णासेविताकृष्णपन्नगैः ॥ तन्मध्येपतितानांचत्राताकोपिनविद्यते ॥२४ ॥ आवर्तशतसाहस्रैः पातालेयान्तिपापिनः ॥ क्षणंतिष्ठन्तिपातालेक्षणादुपरिवर्तिनः ॥ २५ ॥ पापिनांपतनायैवनिर्मितासानदीखग ॥ नपारंदृश्यतेतस्यादुस्तराबहुदुःखदा ॥ २६ ॥

यहैं ॥२३॥ बहुतसी बिच्छूनसों भरीभई वह काले सर्पनकरि सेवन करीगई है वामें गिरेभये जे प्राणी हैं तिनकी रक्षा करनहारो कोई नहीं है ॥२४॥ लाखन भँवरनसों पापी पातालपै जायहै फिरि क्षणभरि पातालमें ठहरिकै क्षणहीमें ऊपर आय जायहैं ॥२५॥ हे गरुड़ ! पापी जीवनके गिरनेहीके लिये वह नदी बनाईगईहै वाको पार नहीं दिखाई देयहै वह बडी दुस्तरहै और बहुतसे दुःखकी देनेहारीहै ॥२६॥ ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

याप्रकार बहुत प्रकारके हैं क्लेश जामें ऐसे अतिदुःख देनहारे यमके मार्गमें चिल्लाते तथा रोतेभये पापी दुःखी होके जाय हैं ॥ २७ ॥ कोई फांसीमें बँधेहैं और अंकुशनसों खींचे जाते हैं और शस्त्रनसों पीछेसों छेदेगये पापीनको यमके दूत ले जायहैं ॥ ॥ २८ ॥ कोई नाककी नोकमें फांसी डारिकै और काननमें फांसी डारिकै खींचे गये और कोई कालकी फांसीनसों खैंचे गये तैसेही

एवंबहुविधक्लेशेयममार्गेतिदुःखदे ॥ क्रोशन्तश्चरुदन्तश्चदुःखितायान्तिपापिनः ॥ २७ ॥ पाशेनयन्त्रिताः केचित्कृष्यमाणास्तथांकुशैः ॥ शस्त्राग्रैःपृष्ठतःप्रोतैर्नीयमानाश्चपापिनः ॥ २८ ॥ नासाग्रपाशकृष्टाश्चकर्णपाशैस्तथापरे ॥ कालपाशैःकृष्यमाणाः काकैःकृष्यास्तथापरे ॥ २९ ॥ ग्रीवाबाहुषुपादेषुबद्धाःपृष्ठेचशृंखलैः ॥ अयोभारचयंकेचिद्वहन्तःपथियान्तिये ॥ ३० ॥ यमदूतैर्महाघोरैस्ताडयमानाश्चमुद्गरैः ॥ वमन्तोरुधिरंवक्त्रात्तदेवाश्नन्तितेपुनः ॥ ३१ ॥ शोचन्तेस्वानिकर्माणिग्लानिंगच्छन्तिजन्तवः ॥ अतीवदुःखसंपन्नाः प्रयान्तियममन्दिरम् ॥ ३२ ॥

और पापीको आनकरके खैंचे जायहैं ॥ २९ ॥ गर्दन बाँह पाँव और पीठमें संकलनसों बांधे भये और कोई लोहके भारको लियेभये मार्गमें जायहैं ॥ ३० ॥ बड़े घोर यमके दूतनकरि मुद्गरनसों ताडन किये गये पापी मुखते रुधिर डारेहैं और वाहीको फिरि खाय जायहैं॥ ३१॥ अपने कर्मको सोचै हैं और ग्लानिको प्राप्त होयहै और बहुतही दुःखसों भरेभये वे पापी यमके लोकको जायहैं ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह मंदबुद्धि वा मार्गमें जातोभयो पुत्र पौत्र ऐसे कहतो और हाय २ करिकै रोवतो भयो बडे दुःखको प्राप्त होयहै ॥ ३३ ॥ बड़े पुण्यके योगसों मनुष्यको जन्म मिलेहैं वाको पायके मैंने धर्म नहीं कियो सो कहा कियो ॥ ३४ ॥ मैंने न तो दान दियो और न अग्निमें होम कियो न तप कियो और न देवता पूजे और न विधानसे तीर्थनकी सेवा कीन्ही तातें हे देही ! जो तैंने कियोहै ताको भोग॥

तथापिसव्रजन्मार्गेपुत्रपौत्रइतिब्रुवन् ॥ हाहेतिप्ररुदन्नित्यमनुतप्यतिमन्दधीः ॥ ३३ ॥ महतापुण्ययोगे नमानुषंजन्मलभ्यते ॥ तत्प्राप्यनकृतोधर्मःकीदृशंहिमयाकृतम् ॥ ३४ ॥ मयानदत्तंनहुतंहुताशनेतपोनतप्तं त्रिदशानपूजिताः ॥ नतीर्थसेवाविहिताविधानतोदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३५ ॥ नपूजिता विप्रगणाःसुरापगानचाश्रितासत्पुरुषानसेविताः ॥ परोपकारो न कृतः कदाचनदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वया कृतम् ॥ ३६ ॥ जलाशयोनैवकृतोहिनिर्जलेमनुष्यहेतोःपशुपक्षिहेतवे ॥ गोविप्रवृत्त्यर्थमकारिनाण्वपिदे हिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३७ ॥

॥ ३५ ॥ ब्राह्मणनके समूहको नहीं पूजो और गंगाजीकोहू आश्रय नहीं लियो और सज्जन पुरुषकोहू सेवन नहीं कियो और परोपकारहूँ कबहूँ नहीं कियो यातें हे देही ! जो तैंने कियोहै ताको भोग ॥ ३६ ॥ जा देशमें जल नहीं है वा देशमें मैंने मनुष्य तथा पशुपक्षीनके लिये जलाशय अर्थात् कुँआ बावडी तालाब आदि नहीं बनवायो और गौ तथा ब्राह्मणकी जीविकाके लिये कुछ किंचित्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मात्रहू नहीं कियो· ताते हे देही ! जो तैंने कियोहै वाको भोग ॥३७॥ न तो नित्य दान अर्थात् अन्नआदि और गवाह्निक कहिये एक गौके एक दिनकी तृप्ति करावन हारो तृणआदि न दियो और वेद तथा शास्त्रके अर्थको प्रमाण नहीं मानो और पुराण नहीं सुने और उनके वक्ताको पूजन नहीं कियो· ताते हे देही ! जो तैंने कियो है वाको भोग ॥३८॥ मैंने अपने स्वामीको हित वचन नहीं कियो और न कबहूँ अपने स्वामीको व्रत पालन कियो और न गुरूनको उचित गौरव कबहूँ कियो. ताते हे देही! तैंने जो कियोहै वाको तू भोग

ननित्यदानंनगवाह्निकंकृतंनवेदशास्त्रार्थवचः प्रमाणितम् ॥ श्रुतंपुराणंनचपूजितोज्ञोदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३८ ॥ भर्तुर्मयानैवकृतंहितंवचःपतिव्रतंनैवकदापिपालितम् ॥ नगौरवंकापिकृतंगुरूचितंदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥३९॥ नधर्मबुद्ध्यापतिरेवसेवितोवह्निप्रवेशोनकृतोमृतेपतौ ॥ वैधव्यमासाद्य तपोनसेवितंदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ४० ॥ मासोपवासैर्नविशोषितंमयाचान्द्रायणैर्वानियमैः सविस्तरैः ॥ नारीशरीरं बहुदुःखभाजनंलब्धंमयापूर्वकृतैर्विकर्मभिः ॥ ४१ ॥

॥ ३९ ॥ पतिकी सेवा करनीही स्त्रीनको परमधर्म है या वार्त्ताको जानिकै पतिको सेवन नहीं कियो और पतिके मरनेपै सतीहू नहीं भई और विधवा होकै तपकोहू सेवन नहीं कियो तातें हे देही ! जो तैंने कियो है वाको भोग॥४०॥महीनेके व्रतनसों मैंने शरीरको नहीं सुखायो अथवा चांद्रायणोंकरिकै अथवा विस्तारसहित नियमोंकरिकै मैंने नहीं सुखायो बहुतसे दुःखनको पात्र यह नारीको शरीर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैंने पहले कियेभये विकर्म जे निषिद्ध आचरण हैं तिनसों पायोहै॥४१॥याप्रकार बहुत विलाप करिकै पूर्वके देहको स्मरण करतोभयो वह मेरो मनुष्यपनो कहाँ ऐसे कहतो भयो चलै है॥४२॥सत्रहदिनलों अकेलो वायुके वेगसों चलेहै.हे गरुड़! और अठारहवेंदिनप्रेतसौम्य पुरको जायहै॥४३॥वा मनोहर पुरवरमें बडाभारीप्रेतनको गणरहैहै और वहाँ पुष्पभद्रा नाम नदीहै और प्यारोहै दर्शनजाको ऐसो वटको

एवंविलप्यबहुशःसंस्मरन्पूर्वदैहिकम् ॥ मानुषत्वंममकुतइतिक्रोशन्प्रसर्पति ॥ ४२ ॥ दशसप्तदिनान्येको वायुवेगेनगच्छति ॥ अष्टादशेदिनेताक्ष्र्यप्रेतः सौम्यपुरंव्रजेत् ॥ ४३ ॥ तस्मिन्पुरवरेरम्येप्रेतानांचगणोमहान्॥ पुष्पभद्रानदीतत्रन्यग्रोधः प्रियदर्शनः ॥ ४४ ॥ पुरेतत्रसविश्रामंप्राप्यतेयमकिङ्करैः ॥ दारपुत्रादिकंसौख्यं स्मरतेतत्रदुःखितः ॥ ४५ ॥ धनानिभृत्यमात्राणिसर्वंशोचतिवैयदा ॥ तदाप्रेतांस्तुतत्रत्याः किंकराश्चेदम ब्रुवन् ॥ ४६ ॥ क्वधनंक्वसुताजायाक्वसुहृत्क्वचबान्धवाः ॥ स्वकर्मोपार्जितम्भोक्तामूढयाहिचिरंपथि ॥ ४७ ॥

पेडहै॥४४॥वा पुरमें यमके दूतनकरि वह प्राणी विश्रामको प्राप्त कियो जायहै.वहाँ दुःखित वह स्त्री पुत्र आदिके सौख्यकी स्मरण करैहै॥ ॥४५॥जब धन भृत्य आदिके शोच करैहै तब वहाँके निवासी और यमके दूत यह कहत भये॥४६॥कहाँ धन कहाँ पुत्र कहाँ स्त्री कहाँ मित्र और कहाँ बान्धव अपने कर्मनसों इकट्ठे किये भयेको भोगै है। हे मूढ! मार्गमें चिरं याहि अर्थात् एकवर्षतक चल ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हेपरलोकपांथ अर्थात् परलोकके बटोही! तू संबल जो यमहैं तिनके बलको नहीं जानेहै और यमके मार्गमें तुमसे प्राणीनके साथ जान नहारे हम जे दूत हैं तिनके बलकोहू नहीं जानैहै और संबल जो यमहैं तिनके लिये यत्न नहीं करैहै याते यमयातना न दें ऐसो यत्न नहीं करेहै और तोको निश्चयकरिकै वा मार्गमें चलनो परैगो जामें क्रयविक्रय नहीं होयहै॥४८॥या मार्गको तो बालकहू जानैहै हे मर्त्य! तूने नहीं सुनो है और तैंने कहां पंडितनहूँसों पुराणनके वाक्य नहीं सुने हैं ॥ ४९ ॥ तापीछे दूतनकरि ऐसे कहोगयो

जानासिसम्बलबलंबलमध्वगानांनोसम्बलाययतसेपरलोकपान्थ ॥ गन्तव्यमस्तितवनिश्चितमेवतेनमार्गेणय त्रभवतःक्रयविक्रयो न॥ ४८ ॥ आबालख्यातमार्गोयंनैवमर्त्यश्रुतस्त्वया ॥ पुराणसम्भवंवाक्यंकिंद्विजे भ्योपिनश्रुतम्॥४९॥एवमुक्तस्ततोदूतैस्ताड्यमानश्चमुद्गरैः॥ निपतन्नुत्पतन्धावन्पाशैराकृष्यतेबलात् ॥५०॥ अत्रदत्तंसुतैःपौत्रैःस्नेहाद्वाकृपयाथवा ॥ मासिकंपिण्डमश्नातिततःसौरिपुरं व्रजेत ॥५१॥ तत्रनाम्नास्तिराजा वैजंगमःकालरूपधृक् ॥ तंदृष्ट्वाभयभीतोसौविश्रामेकुरुतेमतिम ॥ ५२ ॥

और मुद्गरनसों ताडन कियो गयो वह गिरतो उठतो और दौरतो भयो बलकरि पाशनसों खैंचो जाय है ॥ ५० ॥ घरतैं तेरहें दिन प्राणी मार्गमें चलैहै और अठारहवें दिन यह सौम्यपुरमें पहुँचेहै या पुरमें पुत्र पौत्रनकरि स्नेहसों अथवा कृपाकरिकै दियेभये मासिकपिंडको खाय है. तापीछे यमके पुरको जायहै ॥ ५१ ॥ वा सौरिपुरमें काल जो यम हैं तिनके रूपको धारण करनहारो जंगम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजाहै वाको देखि भयभीत होकै यह विश्राममें मति करेहै॥५२॥और वा पुरमें गयो भयो वह अन्नसमेत जलको भोजन करेहै और निश्चयकरिकै तीनी पक्षमें जो दियोजाय वह वा पुरको उल्लङ्घन करैहै ॥ ५३ ॥ तापीछे प्रेत अतिशीघ्रतायुक्त हो नगेन्द्र जे बडे वृक्ष हैं जामें ऐसे स्थानमें जायहै फिर वहां वा पुरके मार्गमें रौद्र कहिये भयानक असिपत्रवनहै वाको देखि दुःखी होकै चिल्लायहै ॥५४॥

उदकंचान्नसंयुक्तंभुंक्तेतत्रपुरेगतः ॥ त्रैपक्षिकेवैयद्दत्तंसतत्पुरमतिक्रमेत् ॥ ५३ ॥ ततोनगेन्द्रभवनंप्रेतोयातित्वरान्वितः ॥ वनानितत्ररौद्राणिदृष्ट्वाक्रन्दतिदुःखितः ॥ ५४ ॥ निर्घृणः कृष्यमाणस्तुरुदतेचपुनः पुनः ॥ मासद्वयावसानेतुतत्परंव्यथितोव्रजेत् ॥ ५५ ॥ भुक्त्वापिण्डजलंवस्त्रंदत्तंयद्बान्धवैरिह ॥ कृष्यमाणः पुनः पाशैर्नीयतेऽग्रेचकिङ्करैः ॥५६॥ मासेतृतीयेसम्प्राप्तेप्राप्यगन्धर्वपत्तनम् ॥ तृतीयमासिकंपिण्डंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ ५७ ॥ शैलागमं चतुर्थेचमासिप्राप्नोतिवैपुरम् ॥ पाषाणास्तत्रवर्षान्तप्रेतस्योपरिभूरिशः ॥ ५८ ॥

निर्दयी जे यमके दूतहैं तिनकरिकै वारंवार खैंचो गयो वह प्राणी रोवैहै और दो महीनोंके अंतमें व्यथितहो वा पुरमें जायहै॥५५॥वहां बांधवनकरि दिये भये पिंड जल तथा वस्त्रनको भोगिकै फिर यमदूतनकरि पाशनमें बाँधिकै खैंचोगयो वहप्राणीआगे पहुँचायो जायहै५६ फिर तीसरे महीनेके आवनेपै गन्धर्वपत्तनमें पहुँचकर वहां तीसरे महीनेकेपिंडको खायकै फिर चलेहै॥५७॥फिरि चौथे महीनेमें शैल जे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पत्थर हैं तिनको है गिरनो जामें ऐसे शैलागमनाम पुरमें पहुँचै है वामेंप्रेतके ऊपर बहुतसे पत्थर बरसैंहैं॥५८॥ वहां चौथे महीनेके पिंडको खायके कुछ सुखी होय है तापीछे वह प्राणी पाँचमें महीनेमें क्रौंचनाम पुरमें जायहै ॥५९॥ वा समय क्रौंचपुरमें स्थित यह प्रेत पाँचमें महीनेके पिंडको जो हाथसों दियोगयो है वाको खायकै निर्दयी मनुष्य जामें रहेहैं ऐसे क्रूरपुरकोजायहै॥६०॥आधेसमेत पांचमासनकरि

चतुर्थमासिकंपिण्डंभुक्त्वाकिंचित्सुखीभवेत ॥ ततोयातिपुरंप्रेतः क्रौंचंमासेऽथपञ्चमे ॥ ५९ ॥ हस्तदत्तंतदाभुंक्तेप्रेतःक्रौञ्चपुरेस्थितः ॥ यत्पञ्चमासिकंपिण्डंभुक्त्वाक्रूरपुरंव्रजेत् ॥ ६० ॥ सार्धकैःपञ्चभिर्मासैन्यूनषाण्मासिकंव्रजेत् ॥ तत्रदत्तनपिण्डेनघटेनाप्यायितःस्थितः॥६१॥मुहूर्तार्धन्तुविश्राम्यकम्पमानःसुदुःखितः ॥ तत्पुरंतुपरित्यज्यतर्जितोयमकिंकरैः ॥६२॥ प्रयातिचित्रभवनंविचित्रोनामपार्थिवः ॥ यमस्यैवानुजोभ्रातायत्रराज्यंप्रशास्तिहि ॥६३॥ तंविलोक्यमहाकायंयदाभीतः पलायते ॥ तदासंमुखआगत्यकैवर्ताइदमब्रुवन् ॥६४॥

कै अर्थात् साढेपांच मासन करिकैन्यून षाण्मासिकको जायहै वहांदिये भये पिंडसोंकुछतृप्त होकैस्थितहोयहै॥६१॥और आधेमुहूर्त्तलों विश्रामलेके कांपतो भयो अतिदुःखी वहप्रेत यमके दूतनकरिधमकायो गयोहोवापुरकोछोडिकै॥६२॥जामेंविचित्रनामराजाहै ऐसे चित्रभवन नाम नगरको जायहै वह यमराजकोछोटोभाईवह विचित्रवापुरमेंराज्यकरैहै ॥ ६३ ॥ वाबडेशरीरवालेकोदेखिजब भयभीतहोकै भागैहैतब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाकेसंमुखआयकेकैवर्त्तजेनौकाचलावनहारेहैवेयहबोलतभये हम या बडीवैतरणीनदीकोउतारोचाहतो जो तूहै ताकेलिये नावलेआयेहैं जोतेरो यानावपै चढनेकेयोग्यपुण्यहोयतोआयजा अर्थात् नावपर बैठिजा॥६४॥६५॥ सत्त्वके देखनहारे मुनीश्वरने दानको वितरण कहो है सो वा वितरणसों जो तरीजाय ताको वैतरणी कहे हैं॥६६॥धीवर कहे हैं कि जो तूने गोदान कियोहै नाव आवै, यह अन्यथा नहींहै

वयंतेतर्तुकामायमहावैतरणींनदीम् ॥ नावमादायसम्प्राप्तायदिते पुण्यमीदृशम् ॥६५॥ दानंवितरणं प्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ इयंसातीर्यतेयस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृता ॥ ६६ ॥ यदित्वयाप्रदत्तागौस्तदानौरुपसर्पति ॥ नान्यथेतिवचस्तेषां श्रुत्वाहादैवभाषते ॥६७॥ तंदृष्ट्वाकथतेसातुतांदृष्ट्वासोतिक्रन्दते॥अदत्तदानःपापात्मातस्यामेवनिमज्जति ॥६८॥ तन्मुखेकण्टकंदत्त्वादूतैराकाशसंस्थितैः ॥ बडिशेनयथामत्स्यस्तथापारंप्रणीयते ॥ ६९ ॥ षाण्मासिकंचयत्पिण्डंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ मार्गेसविलपन्यातिबुभुक्षापीडितोह्यलम् ॥ ७० ॥

उनके यावचनको सुनिकै हा दैव ! ऐसे कहत भयो॥६७॥वा प्राणीकोदेखिकै वह कहै है और वाको देखिकै वह बहुत चिल्लायहै और जाने दान नहीं दियोहै वह पापी वहीमें डूबिजाय है॥६८॥तब आकाशमें स्थित ऐसे दूतनकरि वाके मुखमें कांटो डारिकै ऐसे खैंचैहैं जैसे बंशीसों मछलीको खैंच पार पहुँचावै है ॥६९॥ और छठे महीनेको जो पिंड है ताको वहां खायकै फिर चलैहै और मार्गमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह भूंखसों बहुतही दुःखीहो विलाप करतो भयो जायहै॥७०॥सातवें मासके प्राप्त होनेपै बह्वापदनाम पुरमें जायहै वा पुरमें सातवें महीनेमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको खाय है ॥ ७१ ॥ वा पुरको उल्लंघन करि दःखदपुरमें पहुँचै है. हे पक्षिनके राजा! आकाशमें जातोभयो वह प्राणी बहुतही दुःख पावै है ॥ ७२ ॥ आठमें महीनेमें पुत्रनकरि दिये भये पिंडको खायकै चलै है फिरि नववें महीनेके पूरे हौनेपै

सप्तमेमासिसंप्राप्तेपुरंबह्वापदंव्रजेत् ॥ तत्रभुंक्तेप्रदत्तंयत्सप्तमेमासिपुत्रकैः ॥ ७१ ॥ तत्पुरंतुव्यतिक्रम्यदुःखदंपुरमृच्छति ॥ महद्दुःखमवाप्नोतिखेगच्छन्खेचरेश्वर ॥ ७२ ॥ मास्यष्टमेप्रदत्तंयत्पिण्डंभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ नवमेमासिसम्पूर्णेनानाक्रन्दपुरंव्रजेत ॥ ७३ ॥ नानाक्रन्दगणान्दृष्ट्वाक्रन्दमानान्सुदारुणान् ॥ स्वयंचशून्यहृदयःसमाक्रन्दतिदुःखितः ॥ ७४ ॥ विहायतत्पुरःप्रेतस्तर्जितोयमकिङ्करैः ॥ सुतप्तभवनंगच्छेद्दशमेमासिकृच्छ्रतः ॥ ७५ ॥ पिण्डदानंजलंतत्रभुक्त्वापिनसुखीभवेत् ॥ मासिचैकादशेपूर्णेपुरंरौद्रंसगच्छति ॥७६॥ दशैकमासिकंतत्रभुंक्तेदत्तंसुतादिभिः ॥ सार्द्धंचैकादशेमासिपयोवर्षणमृच्छति ॥ ७७ ॥

नानाक्रंदपुरको जाय है ॥ ७३ ॥ बडा दारुण पुकारते भये नानाप्रकारके जो आक्रंदगणहैं तिनको देखिकै आपहू शून्यहृदय तथा दुःखित होकै चिल्लाय है ॥७४॥ यमके दूतनकरि धमकायो गयो वह प्राणी वापुरको छोडि दशवें महीनेमें बडे कष्टसों सुतप्तभवनको जाय है ॥ ७५ ॥ वहां पिंडदान तथा जलको भोजन करकैहू सुखी नहीं होय है और ग्यारह महीनेके पूरे होनेपै वह रौद्रपुरको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाय है वहां पुत्रनकरि ग्यारहे महीनाको दियो भयो पिंड खाय है फिरि साढेग्यारहें महीनाकेपूरे होनेपै पयोवर्षणमें पहुँचै है ॥ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ वहाँ प्रेतनके दुःख देनहारे मेघ बरसै हैं और वहां न्यूनाब्दिक जो श्राद्ध है ताहि दुःखी होके खायहै ॥ ७८ ॥ तापीछे वर्षके पूरे होनेपै वह प्रेत शीताढ्य नगरको जाय है वहां हिमालयते सौगुनो अधिक शीत परैहै ॥७९॥ शीतसों पीडित भूखो

मेघास्तत्रप्रवर्षन्तिप्रेतानांदुःखदायकाः ॥ न्यूनाब्दिकंचयच्छ्राद्धंतत्रभुंक्तेसदुःखितः ॥ ७८ ॥ सम्पूर्णे तुततोवर्षेशीताढ्यन्नगरंव्रजेत् ॥ हिमाच्छतगुणंतत्रमहाशीतंपतत्यपि ॥ ७९ ॥ शीतार्तःक्षुधितः सोपिवीक्षतेहिदिशोदश ॥ तिष्ठतेबान्धवः कोपि योमेदुःखं व्यपोहति ॥ ८० ॥ किंकरास्तेवदन्त्यत्रकिन्तेपुण्यं हितादृशम् ॥ भुक्त्वाचवार्षिकंपिंडंधैर्यमालम्बतेपुनः ॥ ८१ ॥ ततःसंवत्सरस्यान्तेप्रत्यासन्नेयमालये ॥ बहुभी तिपुरेगत्वाहस्तमात्रं समुत्सृजेत् ॥ ८२ ॥ अंगुष्ठमात्रोवायुश्चकर्मभोगायखेचरः ॥ यातनादेहमासाद्यसहया म्यैः प्रयातिच ॥ ८३ ॥

वह प्रेत दशोंदिशानको देखेहै कि कहूँ कोऊ मेरो बान्धव है जो मेरे दुःख दूर करै॥८०॥ यमके दूत कहैं हैं कि, कहां तेरो ऐसो पुण्यहै जाते यह दुःख जाय और वार्षिक जो पिंडहै ताहि खायकै पिरि धीरको धरै है॥८१॥ तापीछे वर्षके अंतमें जब यमको घर निकट रहजायहै तब बहुभीतिपुरमें जायकै हस्तमात्र जो शरीर है ताहि छोडि देय है ॥८२॥ कर्मनके भोगके लिये अंगुष्ठमात्र आकाशमें वि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चरणवालो वायु यातनाके देहको पायकै यमदूतनके साथ जायहै॥८३॥हे काश्यप ! जाने मरनेके समय और्ध्वदेहिक दान नहीं दिये हैं पुष्टबंधनसों बांधेभये वे या प्रकार कष्टसों जांयहैं॥८४॥ हे गरुड़ ! धर्मराजके पुरमें चारिद्वार हैं तिनमेंसों यह दक्षिणद्वारको मार्ग तेरे लिये कल्पित कियोगयो है॥८५॥या महा घोरमार्गमें भूँखे प्याससों पीडित प्राणी जैसे जाँय हैं सो सब हमने कह्यो अब फिर और

और्ध्वदेहिकदानानियैर्नदत्तानिकश्यप ॥ एवं कष्टेन ते यान्ति गृहीता दृढबन्धनैः ॥ ८४ ॥ धर्मराजपुरेसन्तिचतुर्द्वाराणि खेचर ॥ तत्रायं दक्षिणद्वारमार्गस्तेपरिकीर्तितः ॥ ८५ ॥ अस्मिन्पथि महाघोरेक्षुत्तृषाश्रमपीडिताः ॥ यथायान्तितथाप्रोक्तंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ८६ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयममार्गनिरूपणंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ गरुडउवाच ॥ यममार्गमतिक्रम्यगत्वापापी यमालये ॥ कीदृशींयातनांभुंक्तेतन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आद्यंतंचप्रवक्ष्यामिशृणुष्वविनतात्मज ॥ कथ्यमानेपिनरकेत्वंभविष्यसिकम्पितः ॥ २ ॥

कहासुनो चाहोहो ॥ ८६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांगरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायांयममार्गनिरूपणो नामद्वितीयोऽध्यायः॥२॥ गरुडबोले यमके मार्गको उलांघिकै पापी यमके घरमें जायकै कैसी यातना भोगैहै, हे केशव ! सो मोसों कहो॥१॥श्रीभगवान् बोले मैं आदिते अंतलौं कहौंगो हे विनताके पुत्र ! तुम सुनो नरकके कहनेपै तुम कांपि उठोगे॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे काश्यप ! बहुभीतिपुरतें आगे चवालीस योजनपर बडो यमको पुर है॥३॥हाहाकारकरियुक्त देखिकै पापी चिल्लाय हैं वा चिल्लानेको सुनिकै यमपुरके विचरनहारे ॥४॥ सब वहां जायकै द्वारपालसों कहेहैं धर्मध्वजनाम द्वारपाल वहाँ सदा रहै हैं ॥५॥ वह जायके सब शुभ अशुभ चित्रगुप्तसों कहै हैं तापीछे वाको चित्रगुप्त धर्मराजसों कहै हैं ॥ ६॥ हे तार्क्ष्य ! नास्तिक है और सदा महापापनके कर

चत्वारिंशद्योजनानिचतुर्युक्तानिकाश्यप ॥ बहुभीतिपुरादग्रे धर्मराजपुरंमहत् ॥ ३ ॥ हाहाकारसमायुक्तं दृष्ट्वाक्रन्दतिपातकी ॥ तत्क्रन्दितंसमाकर्ण्ययमस्यपुरचारिणः ॥ ४ ॥ गत्वाचतत्रतेसर्वेप्रतीहारंवदन्तिहि॥ धर्मध्वजः प्रतीहारस्तत्रतिष्ठतिसर्वदा ॥ ५ ॥ सगत्वाचित्रगुप्तायब्रूतेतस्यशुभाशुभम् ॥ ततस्तंचित्रगुप्तोपिधर्मराजंनिवेदयेत् ॥ ६ ॥ नास्तिकायेनरास्तार्क्ष्य महापापरताः सदा ॥ तांश्चसर्वान्यथायोग्यं सम्यग्जानातिधर्मराट् ॥ ७ ॥तथापिचित्रगुप्तायतेषांपापंसपृच्छति ॥ चित्रगुप्तोपिसर्वज्ञः श्रवणान्परिपृच्छति ॥ ८ ॥ श्रवणाब्रह्मणःपुत्राःस्वर्भूपातालचारिणः ॥ दूरश्रवणविज्ञानदूरदर्शनचक्षुषः ॥ ९ ॥

नेमें लगे रहै हैं उन सबनको धर्मराज यथायोग्य भलीभाँतिसों जाने हैं ॥ ७ ॥ ताहूपै वे चित्रगुप्तसों उनके पापनको पूछैं हैं और चित्रगुप्तहू सर्वज्ञ हैं परंतु श्रवणनसों पूँछैहैं ॥ ८ ॥ स्वर्ग पृथिवी और पातालमें फिरनेवाले श्रवण ब्रह्माके पुत्र हैं उनको दूरहीते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुननेको विशेषज्ञान है और उनके नेत्रहू दूरिलों देखनेवाले हैं ॥ ९ ॥ और उनकी पत्नीहू उन्हींके समान हैं वे सब श्रवणी हैं परंतु उनके नाम जुदे २ हैं स्त्रीनको जितनें काम हैं उनको वे सब तत्त्वसों जानैं हैं ॥ १० ॥ मनुष्यनकरि छिपो भयो तथा प्रत्यक्ष जो कहोजायहै और करो जायहै ता सबको वे तथा उनकी स्त्री चित्रगुप्तसों कहिदेय हैं ॥११॥ वे धर्मराजके चार कहिये दूत मनुष्य-

तेषांपत्न्यस्तथाभूताः श्रवण्यः पृथगाह्वयाः ॥ स्त्रीणां विचेष्टितंसर्वंता विजानन्तितत्त्वतः ॥ १० ॥ नरैःप्रच्छन्नंप्रत्यक्षंयत्प्रोक्तंचकृतंचयत् ॥ सर्वमावेदयन्त्येवचित्रगुप्तायतेचताः ॥ ११ ॥ चारास्तेधर्मराजस्य मनुष्याणांशुभाशुभम् ॥ मनोवाक्कायजंकर्मसर्वंजानन्तितत्त्वतः ॥ १२ ॥ एवंतेषांशक्तिरस्तिमर्त्यामर्त्याधि कारिणाम् ॥ कथयन्तिनृणांकर्मश्रवणाः सत्यवादिनः ॥ १३ ॥ व्रतैर्दानैश्चसत्योक्त्यायस्तोषयतितान्नरः ॥ भवन्तितस्यतेसौम्याः स्वर्गमोक्षप्रदायिनः ॥ १४ ॥ पापिनांपापकर्माणिज्ञात्वातेसत्यवादिनः ॥ धर्म राजपुरःप्रोक्ताजायन्तेदुःखदायिनः ॥ १५ ॥

नको शुभ अशुभ मन वाणी तथा कायसों उत्पन्न पापको सब तत्त्वते जानेहैं ॥ १२ ॥ मर्त्य मनुष्य और अमर्त्य देवता इन सबनके अधिकारी सत्य बोलनहारे श्रवण मनुष्यनके कर्मनको कहिदेयहैं॥१३॥व्रत दान तथा सत्य बोलनेसों जो नर उनको प्रसन्न करैहैंवेसौम्य वाको स्वर्गमोक्षके देनेहारे होय हैं ॥१४॥ पापीनके पापकर्मनको जानिकै वे सत्यवादी धर्मराजके आगे कहे जानेसों दुःखदायी होय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं ॥ १५ ॥ सूर्य चंद्रमा पवन अग्नि आकाश पृथवी जल हृदय यम दिन राति तथा दोनों संध्या और ये सब मनुष्यके वृत्तांतको
जानै हैं ॥ १६ ॥ धर्मराज चित्रगुप्त श्रवण और भास्कर आदिका या जो शरीर है तामें स्थित सर्व पापपुण्यको देखै हैं ॥ १७ ॥

आदित्यचंद्रावनिलोनलश्चद्यौर्भूमिरापोहृदयंयमश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसन्ध्येधर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥१६॥ धर्मराजश्चित्रगुप्तःश्रवणाभास्कारादयः ॥ कायस्थंतत्रपश्यन्तिपापंपुण्यंचसर्वशः ॥१७॥ एवंसुनिश्चयं कृत्वापापिनांपातकंयमः॥ आहूयतान्निजरूपदर्शयत्यतिभीषणम् ॥ १८ ॥ पापिष्ठास्तेप्रपश्यन्तियमरूपंभयं करम् ॥ दण्डहस्तंमहाकायंमहिषोपरिसंस्थितम् ॥ १९ ॥ प्रलयाम्बुदनिर्घोषंकज्जलाचलसन्निभम् ॥ विद्यु त्प्रभायुधैर्भीमंद्वात्रिंशद्भुजसंयुतम् ॥ २० ॥ योजनत्रयविस्तारंवापीतुल्यविलोचनम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं रक्ताक्षंदीर्घनासिकम् ॥ २१ ॥

या प्रकार यम पापी मनुष्यनके पापनको अच्छे प्रकारसों निश्चयकरि उनको बुलायकै अतिभयंकर अपनो रूप दिखावै हैं ॥ १८ ॥ वे पापी दंड जिनके हाथमें बहुत बडो जिनको शरीर और भैंसेके ऊपर बैठे भये ऐसे यमके भयंकररूपको देखै हैं ॥१९॥प्रलयकालके मेघनकोसों जिनको शब्द और कज्जलके पर्वतके समान और बिजुलीकीसी जिनकी चमक ऐसे शस्त्रनसों भयानक और बत्तीस भुजा नकरि युक्त ॥ २० ॥ विस्तारमें तीनि योजन बावडीके समान हैं नेत्र जिनके और डाढोंसों भयंकरहै मुख जिनको और लाल जिनकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आँखे और लंबी नाक॥२१॥और मृत्यु तथा ज्वरआदिकनकरि युक्त चित्रगुप्तहू विशेषकरिकै भयानक हैं और उनके समीप यमके समान बहुतसे दूत गर्जे हैं ॥२२॥ उनसे भय भीत हो वह दुष्ट प्रेत हायहाय पुकारैहै और नहीं दियो है दान जाने ऐसो वह पापी, काँपै है और चिल्लायहै ॥२३॥ ता पीछे चिल्लाते भये और अपने कर्मनको शोचतेभये उन पापीनसों चित्रगुप्त यमकी आज्ञातें कहै हैं॥२४॥ अरे

मृत्युज्वराधिभिर्युक्तश्चित्रगुप्तोपिभीषणः ॥ सर्वेदूताश्चगर्जन्तियमतुल्यास्तदन्तिके ॥ २२ ॥ तंदृष्ट्वाभयभीतस्तुहाहेतिवदतेखलः ॥ अदत्तदानः पापात्माकम्पतेक्रन्दते पुनः ॥ २३ ॥ ततोवदंतितान्सर्वान्क्रन्दमानांश्चपापिनः ॥ शोचतःस्वानिकर्माणिचित्रगुप्तोयमाज्ञया ॥२४॥ भोभोःपापादुराचाराअहंकारप्रदूषिताः॥किमर्थमर्जितंपापंयुष्माभिरविवेकिभिः ॥ २५ ॥ कामक्रोधाद्यदुत्पन्नंसङ्गमेनचपापिनाम् ॥ तत्पापं दुःखदंमूढाः किमर्थंचरितंजनाः ॥ २६ ॥ कृतवन्तः पुरायूयंपापान्यत्यंतहर्षिताः ॥ तथैवयातनाभोग्याःकिमिदानींपराङ्मुखाः ॥ २७ ॥ कृतानियानिपापानियुष्माभिः सुबहून्यपि ॥ तानिपापानिदुःखस्यकारणंचनवञ्चना ॥२८॥

पापी दुराचारियो अविवेकियो तुमने अहंकारसों दूषित होकै काहेको पाप इकट्ठे किये॥२५॥कामतथा क्रोधतें और पापीनकी संगतितें जो पापउत्पन्न भयोहै हेमूढो!वह पाप दुःखदेनहारोहै हे जनो!तुमनें काहेको कियोहै॥२६॥पहले तुमने बहुतही हर्षित होकै जैसे पाप कियेहैं वैसेही यमकी यातना भोगनी योग्य है अब काहेको मुख मोडोहो॥२७॥तुमने जो बहुतसे पाप कियेहैं वेही पापदुःखके कारणहैं कुछ वंचना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं है॥२८॥मूर्खमेंभी अथवा पंडितमें दरिद्रीमें तथा लक्ष्मीयुक्तमें सबलमें तथा निर्बलमें यम समान वर्त्तनेवालेहैं॥२९॥वे पापी वा सम य चित्रगुप्तको यह वचन सुनिकै अपने कर्मनको शोचते भये चुपचाप निश्चल होकै बैठते हैं ॥३०॥ चोरकी भाँति निश्चल बैठेभये उनको यमराज हूँ देखकै उनके पापनकी यथायोग्य शासना जो दंड है ताकी आज्ञा देत हैं ॥३१॥ तां पीछे वे निर्दयी दुत ताडना देकरि कहैं

मूर्खेपिपण्डितेवापिदरिद्रेवाश्रियान्विते ॥ सबलेनिर्बलेवापिसमवर्तीयमः स्मृतः ॥ २९ ॥ चित्रगुप्तस्येतिवा
क्यंश्रुत्वातेपापिनस्तदा ॥ शोचन्तः स्वानिकर्माणितूष्णींतिष्ठंतिनिश्चलाः ॥ ३० ॥ धर्मराजोऽपितान्दृष्ट्वाचो
रवन्निश्चलान्स्थितान् ॥ आज्ञापयतिपापानांशांतिंचैवयथोचिताम् ॥ ३१ ॥ ततस्तेनिर्दयाद्दूतास्ताडयि
त्वावदन्तिच ॥ गच्छपापिन्महाघोरान्नरकानतिभीषणान् ॥ ३२ ॥ यमाज्ञाकारिणोदूताःप्रचण्डचण्डकादयः ॥
एकपाशेनतान्बध्वानयन्तिनरकान्प्रति ॥ ३३ ॥ तत्रवृक्षोमहानेकोज्वलदग्निसमप्रभः ॥ पंचयोजनविस्तीर्ण
एकयोजनमुच्छ्रितः ॥ ३४ ॥

कि, हे पापी ! तू बडे घोर और अति भयंकर नरकको जा ॥३२॥ यमकी आज्ञा करनेहारे वें प्रचंड चंडक आदि दूतउन सब पापीनको एक पाशमें बांधि नरकको लेजाय हैं॥३३॥वहां एक बडो वृक्ष है जलतीभई अग्निके समान वाकी कांति है और पांच योजन अर्थात् बीस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोश वाको फैलाव है और एक योजन अर्थात् चारकोशको ऊंचो है ॥ ३४ ॥ वा वृक्षमें सं कलनसों बांधिकै नीचेको है मुख जाको ऐसे पापीकी वे दूत ताडना करै हैं वा वृक्षमें जरते भये वे रोवै हैं उनकी रक्षा करनहारो कोई नहीं है॥ ३५ ॥ वा शालमलीके वृक्षमें बहुतसे पापी लटकै है वे क्षुधा पिपासासों पीडित हैं थके और यमके दूतनकरिकै ताडना किये जायहैं ॥ ३६ ॥ आश्रयरहित वे पापी हाथ

तद्वृक्षश्रृंखलैर्बद्धाधोमुखंताडयन्तिते ॥ रुदंतिज्वलितास्तत्रतेषांत्रातानविद्यते ॥ ३५ ॥ तस्मिन्वैशाल्मली वृक्षेलम्बन्तेनेकपापिनः ॥ क्षुत्पिपासापरिश्रान्तायमदूतैश्चताडिताः ॥ ३६ ॥ क्षमध्वंभोपराधंमेकृताञ्जलिपुटा इति ॥ विज्ञापयन्तितान्दूतान्पापिष्ठास्तेनिराश्रयाः ॥ ३७ ॥ पुनः पुनश्चतेदूतहन्यन्ते लोहयष्टिभिः ॥ मुद्गरैस्तोमरैःकुन्तैगदाभिर्मुसलैर्भृशम् ॥ ३८ ॥ ताडनाच्चैवनिश्चेष्टामूर्च्छिताश्चभवन्तिते ॥ तथानिश्चे ष्टितान्दृष्ट्वाकिङ्करास्तेवदन्तिहि ॥ ३९ ॥ भोभोः पापादुराचाराःकिमर्थंदुष्टचेष्टितम् ॥ सुलभानिनदत्तानिजला न्यन्यान्यपिकचित् ॥ ४० ॥

जोरिकै कहैहैं कि भो दूतो ! हमारो अपराध क्षमाकरो ॥३७॥ वारंवार वे पापी यमके दूतनकरि लोहकी लाठिनसों और मुद्गर तोमर गदा भाले तथा मूसरनसों बहुतही मारे जात भये॥३८॥मारनेसों वे चेष्टारहित और मूर्च्छित होजायहैं तब ऐसे चेष्टारहितउनपापीनको देखिकेदूत कहैं हैं ॥३९॥भोभो पापी दुराचारियो ! तुमने दुष्टकाम काहेको कियो अति सुलभहु जे जलआदि तथा अन्य वस्तु कबहुँ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं दीन्ही ॥४०॥ तैंन कबहूँ आधो ग्रासहू नहीं दियो और न कौआ कुत्तानको बलि दीन्हों और न कबहूँ अभ्यागतनको नमस्कार कियो और न पितरनको तप्पर्ण कियो ॥ ४१ ॥ और यम तथा चित्रगुप्तको कबहूँ उत्तम ध्यान नहीं कियो और न उनको मंत्र जप्यो जाते यातना न होय ॥ ४२ ॥ और न तौ कोई तीर्थ कियो और न देवता पूजे गृहस्थाश्रममें

ग्रासार्द्धमपिनोदत्तंनश्ववायसयोर्बलिम् ॥ नमस्कृतानातिथयोनकृतंपितृतर्पणम् ॥ ४१ ॥ यमस्यचित्रगुप्तस्यनकृतंध्यानमुत्तमम् ॥ नजप्तश्चतयोमन्त्रोनभवेद्येनयातना॥४२॥नापिकिञ्चित्कृतंतीर्थंपूजितानैवदेवताः ॥ गृहाश्रमस्थितेनापिहन्तकारोपिनोद्धृतः ॥ ४३ ॥ शुश्रूषिताश्चनोसन्तोभुंक्ष्वपापफलंस्वकम् ॥ यतस्त्वंधर्महीनोसि ततः संताड्यसेऽशुभम् ॥ ४४ ॥ क्षमापराध कुरुते भगवान्हरिरीश्वरः ॥ वय तु सापराधानां दण्डदाहितदाज्ञया ॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वाचतेदूतानिर्दयंताडयन्तितान्॥ज्वलदङ्गारसदृशाःपतितास्ताडनादधः ॥ ४६ ॥

स्थितहू जे तुम हौ तिनकरि हंतकार जो अन्नभाग है सोऊ नहीं दियो गयो ॥ ४३ ॥ और संतनहूकी सेवा नहीं कीन्ही तातें तू अपने पापके जो फल हैं ताको भोग और जाते तू धर्मकरिके हीन है ताहीसे बुरी मारसों मारो जाय है ॥ ४४ ॥ भगवान् जे हरि ईश्वर हैं वे अपराधनकी क्षमा करै और हम तौ उनकी अज्ञासों दंडके देनहारे हैं ॥ ४५ ॥ ऐसे कहिके वे दूत उनको निर्दय होके ताडना करने लगे और ताडन करनेसों जलतेभये अङ्गारेके समान वे नीचे गिरे ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गिरनेसों पतनकरिकै शरीर कटिजाय है सब उन नीचे गिरेभये मनुष्योंको कुत्ते खाय हैं और वे पापी रोवै हैं ॥ ४७ ॥ तब रोवते भये उन पापीनके मुखनमें दूत धूलिको भरै हैं और नाना प्रकारके पाशनसों बांधि कोई मुद्गरनसों मारे जाय हैं ॥४८॥ और कोई पापी काठकी भांति आरानसों चीरिकै दोफांक किये जाय हैं और कोई धरतीमें डारिकै कुल्हाडीसों टुकडे २ किये जायँ हैं

पतनात्तस्यपत्रस्यगात्रच्छेदोभवेत्ततः ॥ तानधः पतिताञ्छ्वानोभक्षयंति रुदन्तिते ॥ ४७ ॥ रुदन्तस्तेततोदूतै र्मुखमापूयरेणुभिः॥निबद्ध्यविविधः पाशैर्हन्यन्तेकेपिमुद्गरैः ॥४८॥ पापिनःकेपिभिद्यन्तेक्रकचैःकाष्ठवद्द्विधा ॥ क्षिप्त्वाचान्येधरापृष्ठेकुठारैः खण्डशः कृताः॥४९॥ अर्धखातावटेकेचिद्भिद्यन्तेमूर्तिसायकैः ॥ अपरेयन्त्रमध्य स्थाः पीडयन्तेचेक्षुदण्डवत् ॥ ५० ॥ केचित्प्रज्वलमानैस्तुसाङ्गारैः परितोभृशम्॥उल्मुकैर्वेष्टयित्वाचध्माय न्तेलोहपिण्डवत् ॥५१॥ केचिद्घृतमयेपाकेतैलपाकेतथापरे ॥ कटाहक्षिप्तवटवत्प्रक्षिप्यन्तेयतस्ततः ॥५२॥

॥ ४९ ॥ कोई पापी आधा गढिल्लेमें गाडदियो जाय है और वाके माथेमें तीर मारै हैं और कोऊ कोल्हूमें स्थित है और ईखकी भांति पेरेजाय हैं॥५०॥कोई जरतेभये अंगारन समेत अधजरी लकरीनसों चारों ओरसों लपेटि लोहेके पिंडके समान धौंके जायहैं ॥ ॥ ५१ ॥ कोई घीके पाकमें तथा और तेलके पाकमें कराहीमें डारेभये बडेके समान इतको उतको चलाये जायँ हैं ॥ ५२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोई मार्गमें मतवारे हाथिनके आगे डारे जायँ हैं और कोहूके हाथ पांव बांधिकै नीचेको मुख कियो जाय है ॥ ५३ ॥ कोई कुँवानमें डारे जाय हैं और कोई पर्वतके ऊपरसों डारे जायँ हैं और कीरनके कुण्डमें डुबे भये कोऊ कीरन करिकै व्यथा दिये जायँ हैं ॥५४॥ वज्रके समान जिनकी चोंचें ऐसे बडे कौआनकरि और मांसके चाहनहारे गीधनकरि शिरमें चोंथे जायँ हैं और नेत्रनमें तथा मुखमें चोंचें

केचिन्मत्तगजेन्द्राणां क्षिप्यन्तेपुरतः पथि ॥ बद्धाहस्तौचपादौचक्रियन्तेकेप्यधोमुखाः ॥५३॥ क्षिप्यन्तेकेपि कूपेषुपात्यन्तेकेपिपर्वतात् ॥ निमग्नाः कृमिकुण्डेषुतुद्यन्तेकृमिभिः परे ॥ ५४ ॥ वज्रतुण्डर्महाकाकैर्गृध्रैरामिषगृध्नुभिः॥ निष्कुप्यन्ते शिरोदेशेनेत्रेवास्येचचञ्चुभिः॥५५॥ऋणंवैप्रार्थयन्त्यन्येदेहिदेहिधनंमम॥यमलोके मयादृष्टोधनंमेभक्षितत्वया ॥ ५६ ॥ एवंविवदमानानांपापिनांनरकालये ॥ छित्त्वासंदंशकैर्दूतामांसखण्डान्ददन्तिच ॥५७॥ एवंसंताडयतान्दूताःसंकृष्य यमशासनात् ॥ तामिस्रादिषुघोरेषुक्षिप्यन्तेनरकेषुच ॥५८॥ नरकाद्दुःखबहुलास्तत्रवृक्षसमीपतः ॥ तेष्वस्तियन्महद्दुःखंतद्वाचामप्यगोचरम् ॥ ५९ ॥

मारैहैं॥५५॥कोई अपने ऋणको माँगै हैं और कोई कहै हैं कि, मेरो धन दे मेरो धन खालियोहै अब तोको मैंने यमलोकमें देखोहै॥ ॥ ५६ ॥ नरकमें ऐसे झगरो करते भये पापीनके मांसको सँडसीनसों काटि दूत उनको मांसके खंड देयँ हैं ॥ ५७ ॥ दूत या प्रकार उनकी ताडना करिकै यमकी आज्ञासों तामिस्र आदि जे घोर नरक हैं तिनमें डारि देय हैं ॥५८॥ नरकनमें तो बहुत दुःखहै परंतु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वहां वा वृक्षके समीप जो बडो दुःखहै वह वचननसोहूं नहीं कहो जाय है॥५९॥ हे गरुड़ ! चौरासीलक्ष नरक हैं तिनके मध्यमें बहुतही घोर इक्कीस मुख्य हैं ॥ ६० ॥ उनके नाम कहे हैं तामिस्र १ लोहशंकु २ महारौरव ३ शाल्मली ४ रौरव ५ कुड्मल ६ कालसूत्र ७ पूतिमृत्तिक८॥६१॥संघात९लोहितोद१०सविष११संप्रतापन१२महानिरय१३काकोल१४संजीवन १५ महापथ १६ ॥६२॥ अवीचि

चतुरशीतिलक्षाणिनरकाःसन्तिखेचर ॥ तेषांमध्येघोरतमाधौ यास्त्वेकविंशतिः ॥ ६० ॥ तामिस्रोलोहशं कुश्चमहारौरवशाल्मली ॥ रौरवः कुड्मलः कालसूत्रकः पूतिमृत्तिकः ॥ ६१ ॥ संघातोलोहितोदश्चसविषः संप्रतापनः ॥ महानिरयकाकोलौसंजीवनमहापथा ॥ ६२ ॥ अवीचिरन्धतामिस्रः कुम्भीपाकस्तथैवच ॥ संप्रतापननामैकस्तपनस्त्वेकविंशतिः ॥ ६३ ॥ नानापीडामयाः सर्वेनानाभेदः प्रकल्पिताः ॥ नानापापवि पाकाश्चकिङ्करौघरधिष्ठिताः ॥ ६४ ॥ एतेषुपतितामूढाः पापिष्ठाधर्मवर्जिताः॥तत्रभुञ्जन्तिकल्पान्तेतास्तानर कयातनाः॥६५॥यास्तामिस्रान्धतामिस्रारौरवाद्याश्चयातनाः॥ भुक्तेनरोवानारीवामिथः संगेननिर्मिताः॥६६॥

१७अंधतामिस्र१८कुंभीपाक१९संप्रतापन नाम२०और तपन२१ ये इक्कीस हुये॥६३॥नाना प्रकारकी हैं पीडा जिनमें ऐसे ये नरक हैं और नानाप्रकारके भेदनकरिकै कल्पना कियेगयेहैं और ये नानाप्रकारके पापनके फलनके देनहारेहैं और दूतनके समूह इनके अधिष्ठाताहैं ॥६४॥इनमें परे भये मूढ पापी धर्मकरि रहित वहां कल्पके अंतलौं उन उन नरकनकी यातनको भोगै हैं ॥६५॥ जो तामिस्र अंधता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिस्र और रौरव आदिकी आपसके संगते प्राप्तभई जे यातना तिनको नर और नारी भोगै हैं।६६॥ या प्रकार कुटुंबको पालन करनहारे अथवा आपनोही पेट भरनहारे दोनोंको अर्थात अपने देह और कुटुम्बको छोडिकै परलोकमें आयकै ऐसे फलको भोगै हैं॥६७। अपने शरीरको छोडकै एकही ध्वांत कहिये अन्धतम नरकको जायहै भागनेवाले नहीं जायहै और भूतनको द्रोहकरिकै जो पाथेय कहिये राहको खर्च सो वह अच्छा नहींहै॥६८॥वह कुटुम्बके पालनेको पाप दैवकरि पहुँचायो भयो वाहि मिलैहै वा पापको वहपुरुष नरकमें हरिलीगई

एवंकुटुम्बंबिभ्राणउदरम्भरएववा ॥ विसृज्येहोभयंप्रेत्यभुंक्तेतत्फलमीदृशम् ॥ ६७ ॥ एकःप्रपद्यतेध्वान्तं हित्वेदंस्वंकलेवरम् ॥ कुशलेतरपाथेयोभूतद्रोहेणयद्भृतम् ॥ ६८ ॥ दैवेनासादितंतस्यशमलेनिरयेपुमान् ॥ भुंक्तेकुटुम्बपोषस्यहृतद्रव्यइवातुरः ॥ ६९ ॥ केवलेनह्यधर्मेणकुटुम्बभरणोत्सुकः ॥ यातिजीवोऽन्धतामिस्र ञ्चरमन्तमसःपदम् ॥ ७० ॥ अधस्तान्नरलोकस्ययावतीर्यातनादयः ॥ क्रमशःसमनुक्रम्यपुनरत्राव्रजेच्छुचिः ॥ ७१ ॥इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयमयातनानिरूपणंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

हैद्रव्य जाकी ऐसे आतुरके समान भोग करै हैं ॥६९॥ जो केवल अधर्महीसों कुटुम्बके पालनेकों उद्यत रहै है वह जीव सबसों पिछलो तमको स्थान जो अन्धतामिस्र नामनरक है तामेंजायहै ॥७०॥नरकलोक जो मनुष्यदेहको पावनो है ताते पहले जितनी यातना हैं उनको क्रमसों उल्लंघन करि शुद्ध होकै फिर या भूलोकमें आवै है अर्थात् जन्म लेयहै ॥७१॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां यमयातनानिरूपणो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ गरुड बोले कौनसे पाप
नसों महामार्गमें जायँहैं और कौन कौनसों वैतरणीमें गिरैहैं और किन पापनसौं नरकमें जायहैं हे केशव ! सो मोसों कहौं॥१॥श्रीभग
वान् बोले जे मनुष्य शुभ कर्मनको छोडिकै अशुभकर्महीमें सदा लगेरहैं हैं वे एक नरकते दूसरे नरकमें जाय हैं और एक दुःखते दूसरो दुःख

गरुड उवाच ॥ कैर्गच्छन्तिमहामार्गेवैतरण्यांपतन्तिकैः ॥ कैःपापैर्नरकेयान्तितन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ सदैवाकर्मनिरताः शुभकर्मपराङ्मुखाः ॥ नरकान्नरकंयान्तिदुःखाद्दुःखंभयाद्भयम् ॥२॥
धर्मराजपुरेयान्तित्रिभिर्द्वारैस्तुधार्मिकाः ॥ पापास्तुदक्षिणद्वारमार्गेणैवव्रजन्तितत् ॥ ३ ॥ अस्मिन्ने
वमहादुःखेमार्गेवैतरणीनदी ॥ तत्रयेपापिनोयान्तितानहंकथयामिते ॥ ४ ॥ ब्रह्मघ्नाश्चसुरापाश्चगोघ्नावा
बालघातकाः ॥ स्त्रीघातीगर्भपातीचयेचप्रच्छन्नपापिनः ॥५॥ येहरन्तिगुरोर्द्रव्यंदेवद्रव्यंद्विजस्यवा ॥ स्त्रीद्रव्य
हारिणोयेचबालद्रव्यहराश्चये ॥ ६ ॥

होय है और एक भयते दूसरो भय होयहै॥२॥तीनि द्वारोंसे होकै धर्मात्मा यमपुरको जायहै और पापी तो दक्षिणद्वारहीके मार्गमें होकै वामें
जाय है॥३॥याही महादुःखको देनहारी मार्गमें वैतरणी नदी है वामें जे पापी जायँहैं तिनको मैं तुमसों कहौहौं॥४॥ब्रह्महत्यारे मदिरापीवन
हारे गौकी हत्या करनेहारे बालकके मारनहारे स्त्रीके मारनहारे गर्भके गिरावनहारे और जे छिपेभये पापके करनहारे हैं॥५॥और जे गुरुको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन हरनहारे अथवा देवताका तथा ब्राह्मणका धन लेनहारे और जे स्त्री तथा बालकको धन हरिलेय हैं ॥ ६ ॥ और जे ऋणको नहीं देय हैं और जे धरोहरको पचाय लेय हैं और जे विश्वासघाती हैं और जे अन्नमें विष मिलायकै देय मारते हैं॥७॥ और दोषका ग्रहण करनहारो और गुणनकी श्लाघा करनहारो और गुणवाननकों ईर्षा करनहारो और नीचसों प्रीति करनहारो मूर्ख और सत्संगतिसे जे दूरि

येऋणंनप्रयच्छन्तियेवैन्यासापहारकाः ॥ विश्वासघातकायेचसविषान्नेनमारकाः ॥ ७ ॥ दोषग्राहीगुणाश्लाघीगुणवत्सुसमत्सराः ॥ नीचानुरागिणोमूढाः सत्संगतिपराङ्मुखाः ॥ ८ ॥ तीर्थसज्जनसत्कर्मगुरुदेवविनिन्दकाः ॥ पुराणवेदमीमांसान्यायवेदान्तदूषकाः ॥ ९ ॥ हर्षितादुखितदृष्ट्वाहर्षितेदुःखदायकाः ॥ दुष्टवाक्यस्यवक्तारोदुष्टचित्ताश्चयेसदा ॥ १० ॥ नश्रृण्वन्तिहितंवाक्यंशास्त्रवार्ताकदापिन ॥ आत्मसंभविताःस्तब्धामूढाःपंडितमानिनः ॥ ११ ॥

रहैं हैं ॥८॥ तीर्थनकी सज्जननकी सत्कर्मनकी और गुरु तथा देवतानकी निंदा करनहारे और पुराण वेद मीमांसा और न्याय तथा वेदान्तके दूषित करनहारे ॥ ९ ॥ और जे दुःखीको देखि प्रसन्न होय हैं और प्रसन्नको दुःख देनहारे होय हैं और जे दुष्ट वचन कहनहारे हैं और जिनके चित्त सदा दुष्टही रहै हैं ॥१०॥ और जे हितवचनको नहीं सुनैहैं और शास्त्रकी वार्त्ताकी कबहूँ नहीं सुनै हैं और जे आपको कुछ योग्य समझिकरि घमंडमें भरे रहै हैं और जे मूर्ख हैं परंतु आपको पण्डित मानै हैं ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये सब तथा और बहुतसे धर्मकरि हीन पापी रातिदिन रोवत भये यमके मार्गमें जायहैं ॥ १२ ॥ और यमके दूतनकरि ताड़ना करे गये वे पापी वैतरणीको जाय हैं वा नदीमें जे पापी गिरैं तिनको मैं तुमसों कहौंहौं ॥ १३ ॥ और जे माता पिता तथा गुरुको और आचार्य तथा पूज्यको अपमान करैं हैं वे पापी वा वैतरणीमें डूबैं हैं॥ १४॥ पतिव्रता तथा सुन्दर जाको शील और कुलीन तथा विनयसोंयुक्त

एतेचान्येचबहवःपापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥गच्छन्तियममार्गेहिरोदमानादिवानिशम् ॥ १२ ॥ यमदूतैस्ताड्यमानायान्तिवैतरणींप्रति ॥ तस्यांपतन्तियेपापास्तानहंकथयामिते ॥ १३ ॥ मातरंयेवमन्यन्तेपितरंगुरुमेवच ॥ आचार्यंचापिपूज्यञ्चतस्यांमज्जन्तितेनराः ॥१४॥ पतिव्रतांसाधुशीलांकुलीनांविनयान्विताम् ॥ स्त्रियंत्यजन्तियेद्वेषाद्वैतरण्यांपतन्तिते ॥ १५ ॥ सतांगुणसहस्रेषुदोषानारोपयन्तिये ॥ तेष्ववज्ञांचकुर्वन्तिवैतरण्यांपतन्तिते ॥ १६ ॥ ब्राह्मणायप्रतिश्रुत्ययथार्थंनददातियः ॥ आहूयनास्तियोब्रूयात्तयोर्वसश्चसंततम् ॥ ॥ १७ ॥ स्वयंदत्तापहर्ताचदानंदत्त्वानुतापकः ॥ परवृत्तिहरश्चैवदानेदत्तेनिवारकः ॥ १८ ॥

ऐसे स्त्रीको जे द्वेष करिकै छोंडि देयहैं वे वैतरणीमें गिरैं हैं ॥ १५ ॥ और जे सज्जनके हजारन गुणनमें दोषनको आरोपण करैं हैं और उनको अनादर करैं हैं वे वैतरणी नदीमें गिरै हैं ॥१६॥ ब्राह्मणके लिये प्रतिज्ञा करिकै जो ठीक नहीं देय है और जो बुलायकै नाहीं करै है इन दोनोंको सदा वाहीमें वास रहै है ॥१७॥ जो आपही दान देकै फिरि छीनि लेयहै और जो दानको देकै पीछे पछिताय है और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो पराई जीविकाको हरिलेय है और जो दिये भये दानको रोकै है ॥१८॥ और यज्ञको विध्वंस करनहारो है और कथामें जो भंग करै है खेतकी सीमाको जो हरिलेय है तथा जो गौअनके चरिबेके स्थानको जोतै है ॥१९॥ और ब्राह्मण होके जो रस जे घी दूध नोंन आदि हैं तिनको बेचनहारो और पांच प्रकारकी जे वृषली हैं तिनको पति और वेदमें कहेभये यज्ञके विना अपने लिये पशुको मारनहारो

यज्ञविध्वंसकश्चैवकथाभङ्गकरश्चयः ॥ क्षेत्रसीमाहरश्चैवयश्चगोचरकर्षकः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणोरसविक्रेतायदि स्याद्वृषलीपतिः ॥ वेदोक्तयज्ञादन्यत्रस्वात्मार्थंपशुमारकः ॥ २० ॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टोमांसभोक्ताचमद्यपः उच्छृंखलस्वभावोयः शास्त्राध्ययनवर्जितः ॥ २१ ॥ वेदाक्षरंपठेच्छूद्रःकापिलंयःपयः पिबेत् ॥ धारयेद्ब्रह्मसूत्रंचभवेद्वाब्राह्मणीपतिः ॥ २२ ॥ राजाभार्याभिलाषीचपरदारापहारकः ॥ कन्यायांकामुकश्चैवसतीनां दूषकश्चयः ॥२३ ॥ एतेचान्येचबहवोनिषिद्धाचरणोत्सुकाः ॥ विहितत्यागिनोमूढावैतरण्यांपतन्तिते ॥२४ ॥

॥२०॥ ब्रह्मकर्मते जो भ्रष्ट है और मांसको खानहारो और मद्यको पीवनहारो और जाको स्वभाव निरंकुश है और जो शास्त्रके पढनेसों रहित है ॥ २१ ॥ और जो शूद्र वेदके अक्षरको पढै है तथा कपिला गौको दूध पीवै है अथवा यज्ञोपवीतको धारण करैहै वा ब्राह्मणीको पति होयहै ॥ २२ ॥ और राजाकी जो स्त्री है ताकी इच्छा करनहारो और पराई स्त्रीको जो हरिलेयहै और कन्यासों जो भोग करै है और सती जे पतिव्रताहैं तिनको जो दूषित करै है ॥२३॥ ये सब तथा और बहुतसे जो निषिद्ध आचरणको करैहै और कहे भयेको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्याग करै हैं वे वैतरणीमें गिरै हैं ॥२४॥ सब मार्गको उल्लंघन करिकै पापी यमके लोकको जायहैं फिरि यमकी आज्ञा पायकै दूत उन पापीनको वावैतरणीमें डारैं हैं ॥२५॥ हे खगाधिप ! सब नरकनमें मुख्य जो इक्कीस नरक हैं तिनमें धुरंधर कहिये सबसे अधिक है याहीते पापीनको यमदूत वामें डारैं हैं ॥ २६ ॥ जो कृष्णा गौ नहीं दान कीन्ही है और जाने ऊर्ध्वदेहकी क्रिया नहीं कीन्हीं वह वामें बडे दुःखको

सर्वंमार्गमतिक्रम्ययान्तिपापायमालये ॥ पुनर्यमाज्ञयागत्य दूतास्तस्यांक्षिपन्तितान् ॥ २५ ॥ यावैधुरंधरासवधौरेयाणांखगाधिप ॥ अतस्तस्यांप्रक्षिपन्तिवैतरण्यांचपापिनः ॥ २६ ॥ कृष्णागौर्यदिनोदत्तानोर्ध्वदेहक्रियाः कृताः॥ तत्र यान्तुक्त्वामहद्दुःखंयान्तिवृक्षंतटोद्भवम्॥२७॥कूटसाक्ष्यप्रदातारः कूटधर्मपरायणाः॥ छलेनार्जनसंसक्ताश्चौर्यवृत्त्याचजीविनः ॥ २८ ॥ छेदयन्त्यतिवृक्षांश्चवनारामविभञ्जकाः ॥ व्रतंतीर्थंपरित्यज्यविधवाशीलनाशकाः ॥ २९ ॥ भर्तारंदूषयेन्नारीपरंमनसिधारयेत् ॥ इत्याद्याःशाल्मलीवृक्षेभुञ्जते बहुताडनम् ॥ ३० ॥

भोगिकै वाके तटमें उत्पन्न जो वृक्ष है ताको जायहै ॥ २७ ॥ झूंठी गवाहीके देनहारे और झूंठे धर्ममें तत्पर और छलसों धनके जोरनेमें लगेभये अथवा चोरकी जीविकासों जीवनहारे ॥२८॥ जे ऊंचे वृक्षनको काटै हैं और जे बाग तथा फुलवारीको तोरै हैं और जे व्रत तथा तीर्थनको छोडिकै विधवाके शीलको नाश करै हैं ॥ २९ ॥ जो नारी अपने पतिको दोष लगायकै दूसरे पतिको मनमें धारण करै है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्यादिक पापी शाल्मलीके वृक्षमें बहुतसे ताडनाको भोगैहैं ॥ ३० ॥ ताडन करनेसों वामेंते गिर परै हैं उनको दूत नरकमें डारै हैं और वामेंते जे गिरै हैं उनके पापनको मैं तुमसों कहौंहौं ॥३१॥ नास्तिक जे ईश्वरको नहीं मानै हैं अथवा परलोकमें दानको कुछ फल नहीं होय है जो ऐसे कहै हैं और जे परंपराते चलीआई जो धर्मकी मर्यादा है ताको नहीं मानै हैं और कदर्य जे स्मृतिमें कहै हैं अर्थात आपको तथा धर्मके कामको और पुत्र तथा स्त्रीको और देवता अतिथि तथा भृत्य जे सेवक हैं इन सबनको दुःख दे वह और जाको

ताडनात्पतितान्दूताः क्षिपन्ति नरकेषुतान् ॥ पतन्तितेषुयेपापास्तानहंकथयामिते ॥ ३१ ॥ नास्तिका भिन्नमयादाः कदर्याविषयात्मकाः ॥ दाम्भिकाश्चकृतघ्नाश्चतेवैनरकगामिनः ॥ ३२ ॥ कूपानांचतडागानां वापीनांदेवसद्मनाम् ॥ प्रजागृहाणांभेत्तारस्तेवैनरकगामिनः ॥ ३३ ॥ विसृज्याश्नन्तियेदाराञ्छिशून्भृत्यां स्तथागुरून् ॥ उत्सृज्यपितृदेवेज्यांतेवैनरकगामिनः ॥ ३४ ॥

मन सदा संसारके विषयनमेंही लगो रहै है और दांभिक जे लोकके ठगनेके लिये झूंठे जप तप आदि करते हैं और कृतघ्न कहिये जे करेभये उपकारको नहीं मानै हैं ॥३२॥ कुआ तालाब बावडी देवालय और प्रजाके घरनको फोरनहारैहैं वे निश्चय नरकमें जाय हैं ॥ ॥ ३३ ॥ जे स्त्री बालक सेवक तथा गुरुनको छोडिकै भोजन करै हैं और जे पितृदेवता तथा वैश्वदेव यज्ञको छोडिकै भोजन करै हैं वे निश्चय नरकमें जाय हैं ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कीलनसों बांधनसों काठनसों पत्थरनसों तथा कांटनसों जे मार्गको रोकै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ३५ ॥ शिव शिवा कहिये गौरी विष्णु सूर्य गणेश सद्गुरु और बुध कहिये पंडित इन सबको जे मंद नहीं पूजै हैं वे निश्चय नरकमें जानहारे होयहैं॥३६॥ ब्राह्मण दासीको सेजपर सुवायके अधोगति जो नरक है ताहि प्राप्त होय है और शूद्रास्त्रीमें संतानको उत्पन्न करिके ब्राह्मणपनसेंजाय

शङ्कुभिः सेतुभिः काष्ठैः पाषाणैः कण्टकैस्तथा ॥ येमार्गमुपरुन्धन्तितेवैनरकगामिनः ॥३५ ॥शिवं शिवां हरिं सूर्यं गणेशं सद्गुरुंबुधम् ॥ नपूजयन्तियेमन्दास्तेवैनरकगामिनः ॥३६ ॥आरोप्यदासींशयनेविप्रोगच्छेदधोगतिम् ॥ प्रजामुत्पाद्यशूद्रायां ब्रह्मण्यादेव हीयते ॥ ३७ ॥ न नमस्कारयोग्योहि स कदापिद्विजाधमः ॥ नपूजयन्तियेमूढास्तेवैनरकगामिनः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणानांचकलहंगोयुद्धंकलहप्रियाः ॥ नवर्जन्त्यनुमोदन्तेते वैनरकगामिनः ॥ ३९ ॥ अनन्यशरणस्त्रीणामृतुकालव्यतिक्रमम्॥ येप्रकुर्वन्तिविद्वेषात्तेवैनरकगामिनः॥४०॥

है ॥३७॥ वह अधम ब्राह्मण कैसेहू नमस्कारके योग्य नहीं है और जे मूढ देवता आदिकी पूजा नहीं करै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥ ३८ ॥ जिनको कलह प्यारो है ऐसे जे मनुष्य ब्राह्मणनके कलहको और गौअनके युद्धको निवारण नहीं करते हैं और उलटो उनके युद्धको उत्साह देवे हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥३९॥ जिनको पतिके सिवाय और कोई शरण नहीं है ऐसी स्त्रीनके समीप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे वैरसों नहीं जाय है अर्थात् उनके ऋतुकालको व्यर्थ खोवै है वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥४०॥ जे कामसों अन्धे होके रजस्व
ला स्त्रीमें गमन करै हैं और पर्वमें तथा जलमें दिनमें तथा श्राद्धके दिन जे स्त्रीगमन करै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥४१॥ जे शरीरके
मलको आगिमें डारैहैं और बगीचेमें तथा गौअनके स्थानमें और पवनके सम्मुख मलमूत्रको करैहैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥४२॥

येपिगच्छन्तिकामान्धानरानारींरजस्वलाम् ॥ पर्वस्वप्सुदिवाश्राद्धेतेवैनरकगामिनः ॥ ४१ ॥ येशारीरं
मलंवह्नौप्रक्षिपन्तिजलेपिच ॥ आरामेप्रतिगोष्ठेवातेवैनरकगामिनः ॥ ४२ ॥ शस्त्राणांयेचकर्तारःशराणां
धनुषांतथा ॥ विक्रेतारश्चयेतेषांतेवैनरकगामिनः ॥ ४३ ॥ चर्मविक्रयिणोवैश्याः केशविक्रयकाः स्त्रियः॥
विषविक्रयिणः सर्वे तेवैनरकगामिनः ॥ ४४ ॥ अनाथंनानुकम्पन्तियेसतांद्वेषकारकाः ॥विनापराधंदण्डय
न्तितेवैनरकगामिनः॥४५॥ आशयासमनुप्राप्तान्ब्राह्मणानर्थिनोगृहे॥नभोजयंतिपाकेपितेवैनरकगामिनः॥४६॥

और शस्त्र जे तरवार आदिक हैं तिनके बनावनहारे तथा तीर और कमानके बनावनहारे और जे उनके बेचनहारे हैं वे निश्चय नरकमें
जायँ हैं ॥ ४३ ॥ चामके बेचनहारो वैश्य और केश जो भग है ताकी बेचनहारी स्त्री अर्थात् व्यभिचारिणी और
सब विषनके बेचनहारे हैं वे निश्चय नरकमें जाय हैं ॥४४॥ जे अनाथनपर दया नहीं करै हैं और जे सज्जनसों द्वेष मानैं हैं और जे
अपराधके विना दंड देवै हैं वे निश्चय नरकगामी होय हैं ॥४५॥ आशा लगाके घरमें आयेभये ब्राह्मणको जो रसोई तैयार होनेपैभी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भोजन नहीं देय है वह निश्चय नरकमें जाय है ॥ ४६ ॥ सब जीवनमें विश्वासरहित· और उनमें दयाकरि हीन और सब भूतनके
साथ कुटिलाई करनहारे वे निश्चय नरकके जानहारे होय हैं ॥४७॥ नियम जे संध्यावंदन कृच्छ्रचांद्रायण आदि हैं तिनके प्रतिज्ञासों
अंगीकार करके पीछे अजितेंद्रिय अर्थात् इंद्रियां जाके वशमें नहीं ऐसे हो नियमनको फिरि छोडि देय हैं वे निश्चय नरकगामी होय

सर्वभूतेष्वविश्वस्तास्तथातेषुत्रिनिर्दयाः ॥ सवभूतेषुजिह्मायेतेवैनरकगामिनः ॥ ४७ ॥ नियमान्स्समुपादा
ययेपश्चादजितेन्द्रियाः ॥ विग्लापयन्तितान्भूयस्तेवैनरकगामिनः ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्यादातारंनैवमन्य
न्तियेगुरुम् ॥ तथापुराणवक्तारंतेवैनरकगामिनः ॥ ४९ ॥ मित्रद्रोहकरायेचप्रीतिच्छेदकराश्चये ॥ आशा
च्छेदकरायेचतेवैनरकगामिनः ॥ ५० ॥ विवाहंदेवयात्रांचतीथसार्थान्विलुम्पति ॥ सवसेन्नरकेघोरेतस्मान्ना
वर्तनंपुनः ॥ ५१ ॥ अग्निंदद्यान्महापापीगृहेग्रामेतथावने ॥ सनीतोयमदूतैश्चवह्निकुण्डषुपच्यते ॥ ५२ ॥

हैं ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्याके देनहारे गुरुको जे नहीं मानै है तथा पुराणवक्ता जो पुराणके बांचनहारे हैं उनको गुरु नहीं मानै हैं वे निश्चय
नरकगामी होय हैं ॥ ४९ ॥ जे मित्रसों द्रोह करे हैं और जे प्रीतिको भंग करै हैं और जे आशाको छेदन करै हैं वे निश्चय नरकके
जानहारे होय हैं ॥ ५० ॥ विवाह और देवतानकी यात्राको तथा तीर्थके जे साथ हैं तिनको जो बिगारै है वह घोर नरकमें वसै है वाते
फिरि लौटनो न होय है॥५१॥जो महापापी घरमें गाममें तथा वनमें आगिलगावे है वाको लेके यमदूत अग्निके कुंडनमें पकावे हैं ॥५२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निसो जरोहै शरीर जाको ऐसो यह पापी जब छाया मांगै है तब दूत वाको असिपत्रबनमें लेजायहैं ॥५३॥ खांडके समान पैने पत्तनसों जब शरीर कटिजाय है तब दूत कहै हैं कि भो पापी ! शीतलछायामें सुखसों नींद लेले ॥५४॥ पानी पीनेकी इच्छा करतो भयो वह पापी जब प्याससों पीडित होकै पानी मांगै है तब दूत वाको पीनेकेलिये बहुतही गरम तेल देयहैं॥५५॥और तब वे दूत ऐसे

अग्निनादग्धगात्रोसौयदाच्छायांप्रयाचते ॥ नीयतेचतदादूतैरसिपत्रवनान्तरे ॥ ५३ ॥ खड्गतीक्ष्णश्चतत्पत्रै
र्गात्रच्छेदोयदाभवेत् ॥ तदोचुः शीतलच्छायेसुखंनिद्रांकुरुष्वभोः ॥ ५४ ॥ पानीयंपातुमिच्छन्वैतृषार्तोय
दियाचते ॥ पानार्थंतैलमत्युष्णंतदादूतैःप्रदीयते ॥ ५५ ॥ पीयतांभुज्यतांपानमन्नमूचुस्तदेतिते ॥ पीतमात्रे
णतेनैवदग्धान्त्रानिपतन्तिते ॥ ५६ ॥ कथञ्चित्पुनरुत्थायप्रलपन्तिसुदीनवत् ॥ विवशाउच्छ्वसन्तश्चते
वक्तुंमपिनाशकन् ॥ ५७ ॥ इत्येवंबहुशस्तार्क्ष्ययातनाः पापिनांस्मृताः ॥ किमेतैर्विस्तरात्प्रोक्तैः सर्वशास्त्रे
षुभाषितैः ॥ ५८ ॥ एवंवैक्लिश्यमानास्तेनरानार्यः सहस्रशः ॥ पच्यन्तेनरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम् ॥ ५९ ॥

कहैहैं कि पीजिये खाईये जल तथा अन्न वाके पीतेही उनकी आंतें जरिजायँ हैं और वे गिरिपडैहैं ॥ ५६ ॥ बडी कठिनाईसों फिरि उठिकै बडे दीनकी भांति कहैं हैं परवश होरहे हैं और लंबी श्वासें लेरहे हैं ऐसे वे कहनेकोभी समर्थ नहीं हैं ॥५७॥ हे तार्क्ष्य फिरि ! या प्रकार पापीनको बहुतसी यातना कही हैं और इनके विस्तारसों कहनेमें कहा है, सब शास्त्रनमें कही हैं ॥५८॥ याप्रकार हे गरुड !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुतसे हजारों नरनारी प्रलयकाललौं घोर नरकमें पचाये जाय हैं ॥ ५९ ॥ वा पापके अक्षय फलको भोगिके वे पापी फिर उत्पत्तिके समयमें नरकहीमें उत्पन्न होय हैं और वा पापके अक्षयफलको भोगै हैं अथवा यमकी आज्ञासों पृथ्वीमें आयकै स्थावर जे वृक्ष आदि हैं तिनमें जन्म लेय हैं॥६०॥ स्थावरही कहते हैं जैसे वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, पर्वत और तृण कहिये घास फूल महा अज्ञान करि घेरेभये

तस्याक्षयंफलम्भुक्त्वातत्रैवोत्पद्यतेपुनः ॥ यमाज्ञयामहींप्राप्यभवन्तिस्थावरादयः ॥६०॥ वृक्षगुल्मलतावल्लीगिरयश्चतृणानिच ॥ स्थावराइतिविख्यातामहामोहसमावृताः ॥ ६१ ॥ कीटाश्चपशवश्चैवपक्षिणश्चजलेचराः ॥ चतुरशीतिलक्षेषुकथितादेवयोनयः ॥ ६२ एताःसर्वाःपरिभ्रम्यततोयान्तिमनुष्यताम् ॥ मानुषपिश्वपाकेषुजायन्तेनरकागताः ॥ तत्रापिपापचिह्नैस्तेभवन्तिबहुदुःखिताः ॥ ६३ ॥ गलत्कुष्ठाश्चजन्मान्धामहारोगसमाकुलाः ॥ भवन्त्येवंनरानार्यः पापचिह्नोपलक्षिताः ॥ ६४ ॥

सब स्थावरनामसों विख्यात हैं ॥६१॥ कीट और पशु तथा पक्षी और जलचर मगर मच्छी आदि ये सब चौरासीलाख देवयोनी कहीगई हैं इन सब योनिनमें भ्रमणकरिकै तापीछे मनुष्यकी योनिको प्राप्त होयहै और मनुष्यनमेंहूँ नरकसे आये भये जीव चांडालकी योनिमें उत्पन्न होयहै वहांऊ पापके चिह्नसों वे बहुत दुःखी होयहैं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ गलतेभये कोढके रोगी और जन्मके अन्धे और बडे

४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रोगसों व्याकुल ऐसे नरनारी पापके चिह्नसों उपलक्षित होय हैं ॥ ६४ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ गरुड बोले हे केशव ! जौन जौन पापसों जो जो चिह्न उत्पन्न होय हैं और जौन जौनसी योनिमें जायहैं सो मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले नरकतें आये भये पापी जिन पापनसों जौनसी योनिमें जायहैं और जा पापते जो चिह्न होय हैं सो तुम मोते सुनो ॥ २ ॥ ब्रह्महत्यारो क्षय

इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेनरकप्रदपापचिह्ननिरूपणोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ गरुडउवाच ॥ येनयेन चपापेनयद्यच्चिह्नप्रजायते ॥ यांयांयोनिंचगच्छन्तितन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ येः पापैर्यान्तियांयोनिंपापिनोनरकागताः ॥ येनपापेनयच्चिह्नंजायतेममतच्छृणु ॥ २ ॥ ब्रह्महाक्षयरोगीस्याद्गोघ्नःस्यात्कुब्जकोजडः ॥ कन्याघातीभवेत्कुष्ठीत्रयश्चाण्डालयोनिषु ॥३॥ स्त्रीघातीगर्भपातीचपुलिन्दोरोगवान्भवेत् ॥ अगम्यागमनात्षण्ढोदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ ४ ॥

रोगी होयहै और गौको हत्यारो कुबेरो तथा जड होयहै और कन्याको मारनहारो कोढ़ी होयहै और ये तीनों चांडालकी योनिमें उत्पन्न होयहैं ॥३॥ स्त्रीको मारनहारो तथा गर्भको गिरावनहारो पुलिंदनाम म्लेच्छकी जातिमें रोगी होयहै. और अगम्या जे पुत्री पुत्रवधू आदि हैं तिनमें गमन करनेसों नपुंसक होयहै और गुरुकी स्त्रीसों गमन करनहारो दुश्चर्मरोगसों पीडित होयहै ॥४॥ ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मांस खानेहारेका अंग अतिलाल होयहै और मद्य पीवनहारेके दांत करे होयहैं जीभकी चंचलताईसों जो ब्राह्मण अभक्ष्यको खायहै ताको पेट बढिजायहै ॥५॥ जो दूसरेकी न देके आप मीठो खायहै वाके गलगंडरोग होय है और श्राद्धमें जो अशुद्ध अन्न देय है ताके श्वित्रनाम कोढ जासो शरीर सपेद हो जाय है ॥ ६ ॥ गर्वकरिकै गुरुको अपमान करनहारे मिरगीरोगसों पीडित होय है वेद तथा शास्त्रकी

मांसभोक्तातिरक्ताङ्गः श्यावदन्तस्तुमद्यपः ॥ अभक्ष्यभक्षकोलौल्याद्ब्राह्मणः स्यान्महोदरः ॥ ५ ॥ अदत्वामिष्टमश्नातिसभवेद्गलगण्डवान् ॥ श्राद्धन्नमशुचिदत्त्वाश्वित्रकुष्ठीप्रजायते ॥ ६ ॥ गुरोर्गर्वेणावमानादपस्मारीभवेन्नरः ॥ निन्दकोवेदशास्त्राणांपाण्डुरोगी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ कूटसाक्षीभवेन्मूकः काणःस्यात्पंक्तिभेदकः ॥ अनोष्ठः स्याद्विवाहघ्नोजन्मान्धः पुस्तकं हरेत् ॥ ८ ॥ गोब्राह्मणपदाघातात्खञ्जः पंगुश्चजायते ॥ गद्गदोऽनृतवादीस्यात्तच्छ्रोताबधिरोभवेत् ॥ ९ ॥ गरदःस्याज्जडोन्मत्तः खल्वाटोग्निप्रदायकः ॥ दुर्भगःपलविक्रेता रोगवान्परमांसभुक् ॥ १० ॥

निंदा करनहारो निश्चय पांडुरोगी होयहै ॥७॥ झूठी गवाही देनहारो गूँगा होय है और पंक्तिमें भेद करनहारो काना होय है विवाहको विगारनहारो विना ओठको होयहै और जो पुस्तक चुरावै है वह जन्मको अंधोहोयहै ॥८॥ गौ तथा ब्राह्मणके लातमारनेसों खंजा तथा पंगा होय है झूंठ बोलनहारो गद्गद होयहै और वाको सुननहारो बहिराहोयहै ॥९॥ और विषको देनहारो जड तथा उन्मत्त होयहैं और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आगि लगावनहारो खल्वाट अर्थात् गंजा होयहै और मांसको बेचनहारो दुर्लभ होय है और पराये मांसको खानहारो रोगी होय है॥१०॥ और रत्न जे हीरा मोती आदि हैं तिनके चुरावनहारो हीन जातिमें उत्पन्न होय है और सोनेको चुरावनहारो कुनखी अर्थात जाके नख काले और बिगडेसे होय हैं और धातुमात्रको चुरावनहारो निर्धन होय है ॥११॥ अन्नको चुरावनहारो मूसो होय है और धान्यसे भूसी समेत अन्न है जैसे धान जव कोदौं कँगनी आदि तिनको चुरावनहारो मनुष्य शलभ कही टीडी होय है और जलको चुरावनहारो पपैया

हीनजातौप्रजायेतरत्नानामपहारकः ॥ कुनखीस्वर्णहर्तास्याद्धातुमात्रहरोऽधनः ॥ ११ ॥ अन्नहर्ताभवे दाखुःशलभोधान्यहारकः ॥ चातकोजलहर्त्तास्याद्विषहर्ताचवृश्चिकः ॥ १२॥ शाकंपत्रंशिखीहृत्वागन्धाच्छु च्छुन्दरीशुभान् ॥ मधुदंशः पलंगृध्रोलवणंचपिपीलिका ॥ १३ ॥ ताम्बूलफलपुष्पादिहतास्याद्वानरावने ॥ उपानत्तृणकापासहर्तास्यान्मेषयानिषु ॥ १४ ॥

होय है और विषको चुरावनहारो बिच्छू होयहै ॥१२॥ साग पत्ते चुरायकै मोर होय है और उत्तम गंधनको जो चुरावै है वह छछूंदरि होय है और मधु जो सहतहै ताको चुरावनहारो दंश कहिये डांस होय है और मांसको बेचन हारो गीध होयहै और नोनको चुरायकै चींटी होयहै॥१३॥पान फल आदिको चुरावनहारो वनमें वानर होयहै जूता तृण और कपासको चुरावनहारोमेढाकीजातिमेंउत्पन्न होयहै ॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जो रौद्र जो हिंसाको कामहै तासों जीविका करनहारो और मार्गमें जो व्यापारी और तीर्थयात्रा आदि करनहारे मनुष्यके समूहको लूटै है और जाको मृगया जो अहेरि है ताको व्यसन है वह वधिकके घरमें बकरा होयहै॥१५॥ जो विषको पीकै मरै है वहपर्वतमें कारो सांप होय है और जाको स्वभाव निरंकुश है अर्थात काहूको दबाव नहीं मानैहै वह निर्जनवनमें हाथी होय है ॥१६॥ वैश्वदेवके न करनहारे जे द्विज सर्व भक्ष्य अर्थात् कुम्हार धोबि आदिकेभी अन्न खायँ हैं और अपरीक्षित कहिये लेने योग्य न लेने योग्यकी

यश्चरौद्रोपजीवीचमार्गेसाथान्विलुम्पति ॥ मृगयाव्यसनीयस्तुछागःस्याद्वधिकगृहे ॥ १५ ॥ योमृतोविषपानेनकृष्णसर्पोभवेद्गिरौ ॥ निरंकुशस्वभावः स्यात्कुंजरोनिर्जनेवने ॥ १६ ॥ वैश्वदेवमकर्तारःसर्वभक्षाश्चयेद्विजाः ॥ अपरीक्षितभोक्तारोव्याघ्राःस्युर्निर्जनेवने ॥ १७ ॥ गायत्रींनस्मरेद्यस्तुयोनसंध्यामुपासते ॥ अन्तर्दुष्टोबहिःसाधुः सभवेद्ब्राह्मणो बकः ॥ १८ ॥ अयाज्ययाजकोविप्रःसभवेद्ग्रामसूकरः ॥ खरोवैबहुयाजित्वात्काकोनिर्मन्त्रभोजनात् ॥ १९ ॥

परीक्षा विना किये भोजन करै हैं वे शून्य वनमें बाघ होयहैं ॥१७॥ जो गायत्रीको स्मरण नहीं करैहै संध्योपासन नहीं करै है और भीतरसों दुष्टहै, तथा बाहरसों साधुहै वह ब्राह्मण बगुला होयहै ॥१८॥ अयाज्य जो नहीं याजन कराने योग्यहै ताको जो याजन करावै है वह ब्राह्मण गाँवको सुअर होय है बहुतको पुरोहित गधा होयहै और मंत्ररहित भोजन करनेसों कौआ होयहै ॥ पात्रको जो विद्या नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देय है वह ब्राह्मण बलवान् बैल होय है जो शिष्य गुरुकी सेवा नहीं करे है वह गोखर पशु होयहै ॥१९॥२०॥ गुरुसे हुंकार तुंकार करिकै और ब्राह्मणको वादमें जीतकै निर्जल आरण्य देशमें ब्रह्मराक्षस होयहै ॥ २१ ॥ प्रतिज्ञा करिकै जो ब्राह्मणको दान नहीं देयहै वह जंबुक कहिये सियार होय है जो सज्जनको सत्कार नहीं करै है वह अग्निमुख फेत्कार होयहै ॥२२॥ मित्रसों द्रोहकरनहारो पहाडी

पात्रेविद्यामदाताचबलीवर्द्दोभवेद्द्विजः ॥ गुरुसेवामकर्ताचशिष्यःस्याद्गोखरःपशुः ॥२०॥ गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्यविप्रं निर्जित्यवादतः ॥ अरण्येनिर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ॥ २१ ॥ प्रतिश्रुतंद्विजेदानमदत्त्वाजम्बुकोभवेत् सतामसत्कारकरः फेत्कारोग्निमुखोभवेत् ॥ २२ ॥ मित्रध्रुग्गिरिगृध्रःस्यादुलूकःक्रयवञ्चनात् ॥ वर्णाश्रमपरीवादात्कपोतोजायतेवने ॥ २३ ॥ आशाच्छेदकरोयस्तुस्नेहच्छेदकरस्तुयः ॥ योद्वेषात्स्त्रीपरित्यागीचक्रवाकश्चिरंभवेत् ॥ २४ ॥ मातृपितृगुरुद्वेषीभगिनीभ्रातृवैरकृत् ॥ गर्भेयोनौविनष्टःस्याद्यावद्योनिसहस्रशः ॥२५॥

गीध होय है और क्रय जो खरीदनों है तामें धोखा देनेसों उल्लू होय है और वर्ण तथा आश्रमकी निंदा करनेसों वनमें कबूतर होयहै ॥ २३ ॥ जो आशाको छेद करै है अर्थात आशाको तोडदेय और जो स्नेहको बिगारी देय है और जो द्वेषसों स्त्रीको परित्याग करै है बहुत काललों चकवा चकवी होय है ॥ २४ ॥ माता पिता तथा गुरुतें द्वेषकरनहारो और बहिन तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भाईसों वैर करन हारे जीव जबताईं हजार योनि होय तबलग गर्भहीमें नष्ट होजाय हैं ॥ २५ ॥ सास श्वशुरेको गाली देनहारी और नित्य कलहकरनेहारी नारी और जो पतिको धिक्कार आदिसों धमकावैहै वह जोंक तथा जूं होयहै ॥ २६ ॥ जो अपने पतिको छोडकै परपुरुषसों प्रीति करै है वत्गुनी घरकी गोह होय है अथवा दोमुँहकी साँपिन होय है ॥ २७ ॥ जो अपने गोत्रकी स्त्रीको सेवन करनेसों अपने गोत्रको बिगारैहै वह तरक्षु और सल्लक होकै ऋक्षकी योनिमें उत्पन्न होय है ॥ २८ ॥ तामसी स्त्रीसों जो गमन

श्वश्वोर्गालिप्रदानारीनित्यंकलहकारिणी ॥ साजलौकाचयूकास्याद्भर्तारंभर्त्सतेचया ॥ २६ ॥ स्वपतिंचपरित्यज्यपरपुंसानुवर्तिनी ॥ वल्गुलीगृहगोधास्याद्द्विमुखीवाथसर्पिणी ॥ २७ ॥ यःस्वगोत्रोपघातीचस्वगोत्रस्त्रीनिषेवणात् ॥ तरक्षुः शल्लकोभूत्वाऋक्षयोनिषुजायते ॥ २८ ॥ तामसी गमनात्कामीभवेन्मरुपिशाचकः॥ अप्राप्तयौवनासङ्गाद्भवेदजगरोवने॥२९॥गुरुदाराभिलाषीचकृकलासो भवेन्नरः ॥ राज्ञींगत्वाभवेद्दुष्टोमित्रपत्नींचगर्दभः ॥३०॥ गुदगोविड्वराहः स्याद्वृषःस्याद्वृषलीपतिः॥महाकामीभवेद्यस्तुस्यादश्वःकामलम्पटः ॥३१॥

करैहै वह कामीपुरुष मरुदेशमें पिशाच होयहै जाको यौवन नहीं आयो है ऐसी स्त्रीके साथ भोग करन हारो वनमें अजगर होयहै ॥२९॥ गुरुकी स्त्रीसों भोगकी इच्छा करनहारो मनुष्य करकेटा होय है रानीसों गमन करि दुष्ट होयहै और मित्रकी पत्नीसों गमन करिकै गधा होयहै॥३०॥गुदामें गमनकरनहारो विष्ठा खानहारो सुअर होय है वृषलीको पति बैल होयहै और बडो कामी होयहै वह काममें लंपट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घोडा होयहै ॥३१॥ मरनेवालेके यहां जो ग्यारहें दिन खायहै वह कुत्ता होयहै और देवलक ब्राह्मण कुक्कुटकी योनिमें उत्पन्न होयहै ॥ ३२ ॥ जो अधम ब्राह्मण द्रव्यके लिये देवताकी पूजा करै है देवलकनाम वह निश्चयहव्य कव्य अर्थात् देवता और पितरोंके कर्ममें निंदित है ॥३३॥ महापातकसों प्राप्त घोर नरकनको प्राप्त होके कर्मके क्षीण होनेपै या संसारमें यह महापातकी होयहै॥३४॥ ब्रह्महत्यारो

मृतस्यैकादशाहंतुभुञ्जानः श्वाविजायते ॥ लभेद्देवलकोविप्रोयोनिकुक्कुटसंज्ञकाम् ॥३२॥ द्रव्यार्थंदेवतापूजांयःकरोतिद्विजाधमः ॥ सवैदेवलकोनामहव्यकव्येषुगर्हितः ॥ ३३ ॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्य दारुणान् ॥ कर्मक्षयेप्रजायन्तेमहापातकिनस्त्विह ॥ ३४ ॥ खरोष्ट्रमहिषीणांहिब्रह्महायोनिमृच्छति॥वृकश्वानश्रृगालानांसुरापायान्तियोनिषु ॥ ३५ ॥ कृमिकीटपतङ्गत्वंस्वर्णस्तेयीसमाप्नुयात् ॥ तृणगुल्मलतात्वंचक्रमशोगुरुतल्पगः ॥३६॥ परस्ययोषितंहृत्वान्यासापहरणनच ॥ ब्रह्मस्वहरणाच्चैवजायतेब्रह्मराक्षसः ॥३७॥

मनुष्य गधा ऊंट और भैंसीकी योनि पावैहै और मदिरा पीवनहारे भेडिया कुत्ता तथा स्यारकी योनि पावैं है ॥३५॥ और सुवर्णको चुरावनहारो कृमि कीट और पतंगनकी योनिको प्राप्त होय है और गुरुकी शय्यामें जानहारो क्रमसों तृण, गुल्म और लताकी योनिको प्राप्त होय है ॥३६॥ पराई स्त्रीके हरनेसों और धरोहरके दबाय लेनेसों और ब्राह्मणको द्रव्य हरलेनेसों ब्रह्मराक्षस होयहै ॥३७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कपटके स्नेहसों खायोभयो ब्राह्मणको धन सात पीढीनलौं जराय देयहै और बलात्कारसों तथा चोरीसों खायोभयो चंद्रतारापर्यंत जराय देयहै ॥३८॥ लोहके चूरेको पत्थरके चूरेको तथा विषको तौ मनुष्य पचायजाय परंतु ब्राह्मणके धनको तीनो लोकनमें कौन पचायसकै है ॥ ३९ ॥ ब्राह्मणके धनसों पुष्ट वाहन और सेना ये सब युद्धके समय ऐसे बिखरिजाय हैं जैसे बालूके बांध ॥ ४० ॥ देवतानके द्रव्यके

ब्रह्मस्वप्रणयाद्भुक्तंदहत्यासप्तमंकुलम् ॥ बलात्कारेणचौर्येणदहत्याचन्द्रतारकम् ॥ ३८ ॥ लोहचूर्णाश्मचूर्णंचविषचजरयेन्नरः ॥ ब्रह्मस्वंत्रिषुलोकेषुकः पुमाञ्जरयिष्यति ॥३९॥ ब्रह्मस्वरसपुष्टानिवाहनानिबलानि च ॥ युद्धकालेविशीयन्तेसैकतः सेतवोयथा ॥ ४० ॥ देवद्रव्योपभोगेनब्रह्मस्वहरणेनच ॥ कुलान्यकुलातांयान्तिब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ ४१ ॥ स्वमाश्रितंपरित्यज्यवेदशास्त्रपरायणम् ॥ अन्येभ्योदीयतेदानंकथ्यतेऽयमतिक्रमः ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिविप्रेवेदविवर्जिते ॥ ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ॥ ४३ ॥

भोगनेसों और ब्राह्मणको धन हरनेसों तथा ब्राह्मणके अतिक्रमसों कुल अकुल होजाय हैं अर्थात् नष्ट होजाय हैं ॥ ४१ ॥ अपनो आश्रित वेदशास्त्रको जाननहारो ब्राह्मण है ताको छोडिकै जो दान औरके लिये दियो जाय है वह ब्राह्मणको अतिक्रम है ॥ ४२ ॥ वेदकरि रहित जो ब्राह्मण है ताको अतिक्रम नहीं है काहेसों कि जरतीभई अग्निको छोडकै भस्ममें होम नहीं कियो जायहै ॥४३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! अतिक्रम करनेपै क्रमसों नरकनकों भोगि जन्मको अंधा वह दरिद्री होयहै देनेवालो नहीं होय है किंतु मांगनहारो होयहै ॥ ४४ ॥ अपनी दीभई अथवा औरकी दीभई पृथवीको जो छीनीलेयहैं वह साठि हजार वर्षलों विष्ठामें कीरा होयहैं ॥ ४५ ॥ जो आपही देकर और आपही छीनिलेयहै वह पापी प्रलयकालपर्यंत नरकमें वास करै है ॥

अतिक्रमेकृतेताक्ष्यभुक्त्वाचनरकान्क्रमात् ॥ जन्मान्धः सन्दरिद्रः स्यान्नदाताकिंतुयाचकः ॥ ४४ ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवायोहरेच्चवसुन्धराम् ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविष्ठायांजायतेकृमिः ॥ ४५ ॥ स्वयमेवचयोदत्त्वास्वयमेवापकर्षति ॥ सपापीनरकंयातियावदाभूतसंप्लवम् ॥ ४६ ॥ दत्त्वावृत्तिंभूमिदानंयत्नतः परिपालयेत् ॥ नरक्षतिहरेद्यस्तुसपंगुः श्वाभिजायते ॥ ४७ ॥ विप्रस्यवृत्तिकरणेलक्षधेनुफलभवेत् ॥ विप्रस्यवृत्तिहरणान्मर्कटः श्वा कपिर्भवेत् ॥ ४८ ॥ एवमादीनिचिह्नानियोनयश्चखगेश्वर ॥ स्वकर्मविहितालोकेदृश्यन्तेत्रशरीरिणाम् ॥ ४९ ॥

॥ ४६ ॥ भूमिको दान देकै दी हुई जीविकाकी यत्नसों रक्षा करै और जो रक्षा नहीं करताहै आपही लेलेता है वह पंगा कुत्ता होयहै ॥ ४७ ॥ ब्राह्मणकी जीविका करनेमें लाख गौ देनेको पुण्य होय है और ब्राह्मणकी जीविका हर लेनेसों मर्कट कुत्ता और बंदर होय है ॥ ४८ ॥ हे गरुड ! इत्यादिक चिह्न और योनि अपने कर्मनकरि दीभई देहीनकी देखि परै हैं ॥ ४९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या प्रकार बुरे कर्मनके करनहारे नरकनकी यातनानको भोगिकै बाकी रहे भये पापनसों इन कही भई योनिनमें जन्म लेय हैं ॥ ५०॥ ता पीछे हजारन जन्ममें पशु पक्षी आदिकी देहको प्राप्त होकै भारके ले चलने योग्य पशुकी देहको अर्थात् ऊंट गधा आदिकी देहको प्राप्त होय हैं ॥५१॥ ता पीछे वर्षा शीत घामसों उत्पन्न भये पक्षीनके दुःखको भोगिकै जब शुभ अशुभ शांत होजायहैं. तब पीछे

एवंदुष्कर्मकर्तारोभुक्त्वानिरययातनाम् ॥ जायन्तेपापशेषेणप्रोक्तास्वेतासुयोनिषु ॥ ५० ॥ ततोजन्मसहस्रेषु प्राप्यतिर्यक्छरीरिताम् ॥ दुःखानिभारवहनोद्भवादीनिलभन्तिते ॥ ५१ ॥ पक्षिदुःखंततोभुक्त्वावृष्टिशीतातपोद्भवम् ॥ मानुषंलभतेपश्चात्समीभूतेशुभाशुभ ॥ ५२ ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसंगेनभूत्वागर्भेक्रमादसौ ॥ गर्भादिमरणान्तंचप्राप्यदुखंम्रियेत्पुनः ॥ ५३ ॥ समुत्पत्तिर्विनाशश्चजायतेसर्वदेहिनाम् ॥ एवप्रवर्तितंचक्रंभूतग्रामेचतुर्विधे ॥ ५४ ॥ घटीयन्त्रंयथामर्त्याभ्रमन्तिममामायया ॥ भूमौकदाचिन्नरकेकर्मपाशसमावृताः ॥ ५५ ॥

मनुष्यदेह पावैहैं ॥५२॥ स्त्रीपुरुषको प्रसंगसों यह गर्भमें क्रमसों होकै गर्भसों आदि ले मरणपर्यंतलौं दुःख पाकै फिरि मरिजाय हैं ॥ ५३ ॥ सब देहनकी उत्पत्ति और विनाश होय है चारि प्रकारके जे भूतग्राम हैं अंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज और जरायुज तिनमें या प्रकारको चक्र चलि रहो है ॥ ५४ ॥ मर्त्य जे जीव हैं ते मेरी मायासों घटीयंत्रके समान भ्रमण करै हैं कर्मकी फांसीमें बँधे भये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कबहूं भूमिमें और कबहूं नरकमें जायहै ॥५५॥ नहीं दियो भयो जो दान है तासों दरिद्री होय है और दरिद्री होनेसों पाप करै है और पापके प्रभावसों नरकमें जायहै और वारंवार दरिद्री होयहै और वारंवार पापी होयहै ॥५६॥ कियो भयो शुभ, अशुभ अवश्यही भोगनो होयगो विना भोगे लाखन कल्पनताईं क्षीण नहीं होय है ॥ ५७ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां

अदत्तदानाच्चभवेद्दरिद्रोदरिद्रभावाच्चकरोतिपापम् ॥ पापप्रभावान्नरकंप्रयातिपुनर्दरिद्रः पुनरेव पापी ॥ ५६ ॥
अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ ५७ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेपापचिह्ननिरूपणोनामपञ्चमोध्यायः ॥ ५ ॥ गरुडउवाच ॥ कथमुत्पद्यतेमातुर्जठरेनरकागतः ॥
गर्भादिदुःखंयद्भुक्तेतन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ विष्णुरुवाच ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसंगेननिरुद्धेशुक्रशोणिते ॥ यथायं
जायतेमर्त्यस्तथावक्ष्याम्यहंतव ॥ २ ॥

गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ गरुड बोले, हे केशव ! नरकते आयो भयो प्राणी माताके पेटमें कैसे उत्पन्न होय है और गर्भआदिके दुःखको जो भोगै हैं सो मोसों कहो ॥१॥ श्रीभगवान् बोले स्त्री तथा पुरुषके प्रसंगसों वीर्य और रजके गर्भमें ठहर जानेपै जैसे यह प्राणी उत्पन्न होय है सो मैं तुमसों कहौंगो ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जा ऋतुके मध्यमें हत्या चतुर्थांश रहै है उन्हीं तीनि दिननमें पापीनके देहकी उत्पत्ति होयहै:अर्थात् जा तीनि दिननमें इन्द्रकी ब्रह्महत्या रहैहै उन तीनि दिननमें पापीनकी उत्पत्ति होयहै॥३॥ऋतुदर्शन होके पहले दिन तो स्त्री चांडाली और दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी तिसरे दिन रजकी अर्थात् धोबिनी ये नरकते आयेभये पापीनकी माता हैं अर्थाव नरकते आयेभये पापीनकी येही माता होय हैं वे इन्हींमें उत्पन्न होयहैं ॥४॥ दैव जो ईश्वर है सोईहै नेता कहिये प्रवर्त्तक जाको ऐसो प्राणी वा पूर्वके भये कर्मसों देहकी प्राप्तिके लिये पुरुषके

ऋतुमध्येहिपापानांदेहोत्पत्तिः प्रजायते ॥ इन्द्रस्यब्रह्महत्यास्तियस्मिंस्तस्मिन्दिनत्रये ॥३॥ प्रथमेऽहनिचा ण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी ॥ तृतीयेरजकीह्येतानरकागतमातरः ॥ ४ ॥ कर्मणादैवनेत्रेणजन्तुर्देहोपपत्तये ॥ स्त्रियाः प्रविष्टउदरंपुंसोरेतः कणाश्रयः ॥ ५ ॥ कललंत्वेकरात्रेणपञ्चरात्रेणबुद्बुदम् ॥ दशाहेनतुकर्कन्धूः पेश्यण्डंवाततः परम् ॥ ६ ॥

वीर्यको बून्द वाको आश्रय होकै स्त्रीके पेटमें प्रविष्ट हो जाय है यहां यह विशेष है शुक्र तथा शोणितके संयोगसों पिंडकी उत्पत्ति होयहै रक्तके अधिक होनेपै नारी उत्पन्न होय है और वीर्य अधिक होनेपै पुरुष होयहै और जो दोनों समान होय तौ नपुंसक होयहै और बहुधा वीर्यके भाग होनेपै कहीं दोहू उत्पन्न होय हैं ॥ ५ ॥ एक रात्रिकरिकै कळल पाँच रात्रिमें बुदबुद कहिये गोल होजाय है और दश रात्रिमें कर्कंधू जो बेरी है ताके फलके समान कठोर मांसकी पेशी कहिये मांसको पिंड होय है अथवा दूसरी योनिमें अंडा होयहै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ६ ॥ ता पीछे दो महीनेमें शिर होय है और बाँह आदि अंगनको विग्रह कहिये विभाग होय है और तीनि महीनेमें नख रोम हड्डी चामऔर लिंग छेद होयहैं॥७॥चारि महीनेमें सातों धातु होयहैं पांजव मांसमें क्षुधा तृषाकी उत्पत्ति होय है और छः महीनेमें झिल्ली जिसको जरायु कहै हैं वामें लपटा भयो दाहिनी कोखिमें भ्रमण करैहै॥८॥माताकरि खाये भये अन्नपान आदिसों बढी हैं रसरक्त आदि

मासेनतुशिरोद्वाभ्यांबाह्वङ्गाद्यङ्गविग्रहः ॥ नखलोमास्थिचर्माणिलिङ्गच्छिद्रोद्भवस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ चतुर्भिर्धातव स्सप्तपञ्चभिः क्षुत्तृडुद्भवः ॥ षड्भिर्जरायुणावीतः कुक्षौभ्राम्यतिदक्षिणे ॥ ८ ॥ मातुर्जग्धान्नपानाद्यैरेधद्धा तुरसंमते ॥ शतेविण्मूत्रयोगर्तेसजन्तुर्जन्तुसंभवे ॥ ९ ॥ कृमिभिः क्षतसर्वांगः सौकुमार्यात्प्रतिक्षणम् ॥ मूर्च्छामाप्नोत्युरुक्लेशस्तत्रत्यैः क्षुधितैर्मुहुः ॥ १० ॥

धातु जाकी ऐसो प्राणी असंमत कहिये जामें दुर्गंध आवै है और जामें जीवनको संभव है ऐसो गर्त जो गढिल्लों है तामें सोवैहै॥९॥ कैसे उत्पन्न होय है याप्रश्नकी उत्तर देकै "गर्भादिदुःखं यदुक्तं" याको उत्तर देय है कि वहां गर्भमें स्थित भूंखे खातेभये कीडोंकरि सुकुमार होनेके कारण क्षत हैं सब अंग जाको ऐसों प्राणी क्षण २ में मूर्च्छित होजाय है और वहां स्थित उन भूंखे कीडेनसों वारंवार उरुक्लेशसे जी मचलनो है सो होय है ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और माताकरि खाये भये कडुए तीक्ष्ण उष्ण नोन रूखे और खट्टे आदि उल्बण पदार्थनकरिकै छुए जानेसों सब अंगमें उठीहै पीडा जाके ऐसो वह उल्बण जो झिल्ली (जेर) है ताकरिकै परो भयो और बाहर आंतनकरिकै लपेटो गयो ॥११॥ शिरको कोखीमें करिकै टेढी हैं पीठि और ग्रीवा जाकी ऐसो वह प्राणी अपने अंगकी चेष्टा करनेमें असमर्थ हो पिंजरेमें पक्षीके समान रहै है ॥१२॥ वहां दैव जो पूर्वकर्मको वश है तासों पायोहै स्मरणजाने ऐसो वह प्राणी सौ जन्मके पापनको स्मरण करिकै दीर्घश्वास लेतोभयो सुखको नहीं

कटुतीक्ष्णोष्णलवणरूक्षाम्लादिभिरुल्बणैः ॥ मातृभुक्तैरुपस्पृष्टः सर्वांगोत्थितवेदनः ॥ उल्बेनसंवृतस्तस्मि न्नन्त्रैश्चबहिरावृतः ॥ ११ ॥ आस्तेकृत्वाशिरः कुक्षाभुग्नपृष्ठशिरोधरः ॥ अकल्पःस्वांगचेष्टायां शकुन्तइवप ञ्जरे ॥ १२ ॥ तत्रलब्धस्मृतिर्दैवात्कर्मजन्मशतोद्भवम् ॥ स्मरन्दीर्घमनुच्छ्वासंशर्मकिंनामविन्दते ॥ १३ ॥ नाथमानऋषिर्भीतः सप्तवध्रिः कृताञ्जलिः ॥ स्तुवीततंविक्लवयावाचायेनोदरेर्पितः ॥१४॥ आरभ्यसप्तमान्मा साल्लब्धबोधोपिवेपितः ॥ नैकत्रास्तेसूतिवातैर्विष्ठाभूरिवसोदरः ॥ १५ ॥

पावै है ॥ १३ ॥ नाथमान कहिये याचना किशो अथवा उपतप्यमान भयो वह ऋषि कहिये देहात्मदर्शी और सातवध्री कहिये बन्धनभूत हैं सातों धातु जाकी ऐसो वह हातजोरिके व्याकुल वाणीसों वाकी स्तुति करै है जाते पेटमें स्थापित कियो है ॥१४॥ सातमें महीनेको लगाकै लब्ध कहिये प्राप्त है बोध जाको ऐसो वह प्राणी सूतिके कारण ऐसे वात जे पवन हैं तिनकरिकै कँपायो गयो एक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थानमें नहीं ठहरे है समान उदरमें जन्म जाको ऐसी विष्ठामें उत्पन्न कृमिके समान॥१५॥जीव बोलो ॥ श्रीके पति, जगत्के आधार और अशुभके नाश करनहारे और शरणागत हैं प्यारे जिनको ऐसे विष्णुमहाराजकी शरणमें मैं जाउँ हों ॥१६॥ तुम्हारी मायाकरि मोहित मैं देहमें तथा पुत्र स्त्रीमें अहं मम यह जो अभिमान है ताकरिकै हे नाथ ! मैं संसारमें प्राप्त हूं॥१७॥कुटुंबके लिये, मैंने शुभ

जीवउवाच ॥ श्रीपतिंजगदाधारमशुभक्षयकारकम् ॥ व्रजामिशरणंविष्णुंशरणागतवत्सलम्॥१६॥त्वन्मायामोहितोदेहेतथापुत्रकलत्रके ॥ अहंममाभिमानेनगतोऽहंनाथसंसृतिम् ॥ १७ ॥ कृतपरिजनस्यार्थेमयाकर्मशुभाशुभम् ॥ एकाकीतेनदग्धोऽहंगतास्तेफलभागिनः ॥ १८ ॥ यदियोन्याः प्रमुच्येऽहंतत्स्मरिष्येपदंतव ॥ तमुपायंकरिष्यामियेनमुक्तिंव्रजाम्यहम् ॥ १९ ॥ विण्मूत्रकूपेपतितोदग्धोहंजठराग्निना ॥ इच्छन्नितोविवसितुंकदानिर्यास्यतेबहिः ॥ २० ॥

अशुभ कर्म कियो वाकरिके मैं अकेलो दग्ध भयो और फलके भोगनहारे वे गये॥१८॥ जो मैं योनिसों छूटों तौ आपके चरणनको स्मरण करोंगो और वा उपायको करौंगो जाते मुक्तिको प्राप्त होउँ॥१९॥ विष्ठामूत्रमें परो भयो मैं जठराग्निसों दग्ध होरहोहौं यहांते निकरनेकी इच्छा करतोभयो कब बाहर निकरोंगो ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जा दीनदयालुने मोंको ऐसो विज्ञान दियो है वाहीके मैं शरणमें जाऊँ हूं मोको फिरि संसार न होय ॥ २१ ॥ और गर्भतें बाहर में कदाचन नहीं निकरो चाहोहौं जहां गये भये मेरी पापसों दुर्गति होय ॥ २२ ॥ तातें यहां बडे दुःखमें स्थितभी मैं खेदरहितहूं तुम्हारे चरणका आश्रय लेकै मैं संसारते अपनो उद्धार करूंगो ॥ २३ ॥ श्रीभगवान् बोले, ऐसी की है मति

येनेदृशंमेविज्ञानंदत्तदीनदयालुना ॥ तमेवशरणंयामिपुनर्मेमाऽस्तुसंसृतिः ॥ २१ ॥ नचनिर्गन्तुमिछामिबहिर्गर्भात्कदाचन ॥ यत्रायातस्यमेपापकर्मणादुर्गतिर्भवेत् ॥ २२ ॥ तस्मादत्रमहद्दुःखेस्थितोपिविगतक्लमः ॥ उद्धरिष्यामिसंसारादात्मानंतेपदाश्रयः ॥२३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंकृतमतिर्गर्भेदशमास्यः स्तुवन्नृषिः ॥ सद्यः क्षिपत्यवाचीनंप्रसूत्यैसूतिमारुतः ॥२४॥ तेनावसृष्टः सहसाकृत्वावाक्शिरआतुरः ॥ विनिष्क्रामतिकृच्छ्रेणनिरुच्छ्वासोहतस्मृतिः ॥२५॥ पतितोभुविविण्मूत्रेविष्ठाभूरिवचेष्टते ॥ रोरूयतिगतेज्ञानेविपरीतांगतिंगतः ॥२६॥

जाने ऐसो दशमासको ऋषिकहिये जीव नीचेको है मुख जाको ऐसे सूतिको कारण जो वायु है वह शीघ्रही प्रसूतिके लिये प्रेरणा करै है ॥ २४ ॥ वा पवनकरि अव सृष्ट कहिये प्रेरणा कियो गयो प्रणी नीचेको शिरकरिकै उच्छ्वासरहित नष्ट होगई है स्मृति जाकी ऐसो कष्टसों निकरै है ॥ २५ ॥ पृथ्वीमें विष्ठामूत्रमें परो भयो विष्ठाभू जो कीरा है ताकीसी चेष्टा करै है ॥ ज्ञानके जानेपै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विपरीतगतिको प्राप्तहो बहुतही रोवे है ॥ २६ ॥ गर्भमें रोगमें श्मशानमें मृतकके साथ जानेमें और पुराणके सुननेमें जो मति होय है वह तो स्थिर बनी रहे तो कौन बंधनतें न छूटिजाय ॥ २७ ॥ कर्मभोगके पीछे जब गर्भतें बाहर आवे है तभी वैष्णवी माया पुरुषको मोहित करिदेय है ॥ २८ ॥ वह तब मायाकरि छुओगयो परवशहो कुछ नहीं कहे है बालकपन आदिसे भये दुखको

गर्भव्याधौश्मशानेचपुराणेयामतिर्भवेत् ॥ सायदिस्थिरतांयातिकोनमुच्येतबन्धनात् ॥ २७ ॥ यदागर्भाद्बहिर्यातिकर्मभोगादनन्तरम् ॥ तदैववैष्णवीमायामोहयत्येवपूरुषम् ॥ २८ ॥ सतदामाययास्पृष्टोनकिंचिद्वदतेऽवशः ॥ शैशवादिभवंदुःखंपराधीनतयाश्नुते ॥ २९ ॥ परच्छन्दनविदुषापुष्यमाणोजनेनसः ॥ अनभिप्रेतमापन्नःप्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोऽशुचिपर्यङ्केजन्तुस्वेदजदूषिते ॥ नेशःकण्डूयनेङ्गानामासनोत्थानचेष्टने ॥ ३१ ॥

पराधीनताईसों भोगै है ॥ २९ ॥ गर्भके दुःख कहिक अब बालकपनके दुःख कहैं हैं पराये अभिप्रायको नहीं जानतो भयो जो जन है ताकरि पालन कियो गयो और आपसों प्रतिकूलको पाकै मनेकरनेको असमर्थ होयहै॥३०॥स्वेदजजीव जे जूं आदिहैं तिनकरिकै दूषित अशुद्ध सज्जापर सुवायागया अंगोंके खुजानेको समर्थ नहीं होयहै और आसनते उठते तथाचेष्टाकरनेकोहू समर्थ नहीं होयहै॥३१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

डांस मसा खट कीरा आदि नरम त्वचामें काटे हैं और रोवते भये वा ज्ञानरहितको कृमि है ऐसी कंथाके कीडे काटै हैं ॥ ३२ ॥ या प्रकार बालकपन भोगिकै फिरि पौगंड अवस्थाके पढने आदिके दुःख भोगै है ता पीछे यौवनको आसुरी संपत्ति दंभ दर्प और अभिमानताको प्राप्त होयहै ॥ ३३ ॥ ता पीछे यौवनमें दुर्व्यसनमें आसक्त और नीचेके संगमें लगोभयो और शास्त्र तथा

तुदन्त्यामत्वचंदंशामशकामत्कुणादयः ॥ रुदन्तंविगतज्ञानंकृमयः कृमिकंयथा ॥ ३२ ॥ इत्येवंशशवंभुक्त्वादुःखंपौगण्डमेवच ॥ ततोयौवनमासाद्ययातिसंपदमासुरीम् ॥ ३३ ॥ तदादुर्व्यसनासक्तोनीचसंगपरायणः ॥ शास्त्रसत्पुरुषाणांचद्वेष्टास्यात्कामलम्पटः ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वास्त्रियंदेवमायांतद्भावैरजितेन्द्रियः॥प्रलोभितःपतत्यन्धेतमस्यग्नौपतंगवत् ॥ ३५ ॥ कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गमीनाहताः पचभिरेवपञ्च ॥ एकःप्रमादीसकथंनहन्यतेयः सेवते पञ्चभिरेवपञ्च ॥ ३६ ॥

सत्पुरुषनकी चेष्टा होती है और काममें लंपट होय है ॥ ३४ ॥ देवमाया जो स्त्री है ताहि देखिकै वाके कटाक्षआदि भावनकरि लुभायो गयो इन्द्रीनके वशमें हो आगमें पतंगके समान अंधतममें गिरै है ॥ ३५ ॥ कुरंग हरिण मातंग हाथी पतंग जो दीपकमें गिरै है भृङ्ग भँवर और मीन (मछली) ये पांचपांचही विषयनकरि मारे जांयहैं और एक यह प्रमादी पुरुष जो पांच इन्द्रीनसों पांच

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयनकी सेवा करे है वह काहे न मारो जाय ॥ ३६ ॥ दो श्लोकनसों वा इननकोही कहै हैं नहीं पायो है वांछित कामिनी आदिको सुखजानै और अज्ञान जो अविचार है तासों इद्ध कहिये बढोभयो जो क्रोध है तासों शुचार्पित कहिये शोक ताके साथही लगो भयो बढते भये क्रोधके साथही वृद्धिको प्राप्त होयहै ॥ ३७ ॥ अपनो अहित जो नाश है ताके लिये कामी जो और जारपुरुष हैं तिनमें कामिनी लिये विरोधको करे हैं तब वह कामी युवा बलमें अधिक ऐसे जन करि ऐसो मारोजायहै जैसे अन्यगजनकरि

अलब्धाभीप्सितोज्ञानादिद्धमन्युः शुचार्पितः ॥ सहदेहेनमानेनवर्धमानेनमन्युना ॥ ३७ ॥ करोतिविग्र हंकामी कामिष्वंतायचात्मनः ॥ बलाधिकः सहन्येतगजैरन्यैर्गजोयथा ॥ ३८ ॥ एवंयोविषयासक्त्यानर त्वमतिदुर्लभम् ॥ वृथानाशयतेमूढस्तस्मात्पापतरोहिकः ॥ ३९ ॥ जातीशतेषुलभतेभुविमानुषत्वंतत्रापिदुर्ल भतरंखलुभोद्विजत्वम् ॥ यस्तन्नपालयतिलालयतीन्द्रियाणितस्यामृतंक्षरतिहस्तगतंप्रमादात ॥ ४० ॥

गज मारो जाय है ॥ ३८ ॥ याप्रकार जो मूढ पुरुष विषयनकी आसक्तिसों अतिदुर्लभ जो नरत्व है ताहि वृथा नाश करैहै वातें अधिक पापी कौन है ॥ ३९ ॥ पशु भू आदि असंख्यात जातिनमें भुवि कहिये कर्मभूमिमें जो मनुष्यशरीर पावे है वह निश्चय दुर्लभ है । हे तपस्वी मनुष्यो ! वहांभी अर्थात् मनुष्य शरीरके पावनेमें वह दुर्लभ काहेसों कि यह भगवन्नामके स्मरणके योग्य होनेके कारण ऐसो उत्कृष्ट है वहां नरदेहमें द्विजत्व जो ब्राह्मण होनो है सो अतिदुर्लभ है यातें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! जो द्विज वा तरुणाईमें देहको पाले है अर्थात् विषयोंके भोगनेमें इंद्रीनको लंपट करै है वा ब्राह्मणके हाथमें आयो अमृतहै सो प्रमाद जो पीनेमें आलकस है तासों वृथाही गिरजायहै ॥४०॥ ता पीछे तरुणाईके अनंतर वा वृद्धताको प्राप्त हो महाव्याधीनसों व्याकुल हो बडो है दुःख जामें ऐसे मृत्युको प्राप्तहो पहलेकी भाँति नरकमें जाय है ॥४१॥ ऐसे गत आगत प्रकारनसों अर्थात् कबहूँ नरकमें और

ततस्तांवृद्धतांप्राप्यमहाव्याधिसमाकुलः ॥मृत्युंप्राप्यमहद्दुःखनरकंयातिपूर्ववत् ॥ ४१ ॥ एवंगतागतैःकर्मपाशैर्बद्धाश्चपापिनः ॥ कदापिनविरज्यन्तेममसायाविमोहिताः ॥४२॥ इतितेकथितातार्क्ष्यपापिनांनारकीगतिः ॥ अन्त्येष्टिकर्महीनानांकिंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ४३ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेपापिजन्मादिदुःखनिरूपणोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वातुगरुडःकम्पितोश्वत्थपत्रवत् ॥ जनानामुपकारार्थंपुनः पप्रच्छकेशवम् ॥ १ ॥

नरकनते पृथिवीमें या भाँति कर्मफाँसनमें बँधेभये पापी मेरी मायासों मोहित कबहूँ वैराग्यको नहीं प्राप्त होय हैं ॥ ४२ ॥ हे गरुड ! या प्रकार मैंने तुमसों नरककी गति कही और अंत्येष्टिकर्म करिकै हीन जे पापी हैं तिनकी गति फिर सुनो ॥४३॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ सूतजी बोले या प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनिके गरुड पीपलके पत्तेके समान कापनेलगा और जननके उपकारके लिये श्रीकेशव भगवानसों फिरि पूँछत भये ॥१॥ गरुड बोले मनुष्य जानकै अथवा बिन जाने पापनको करिकै यमकी यातनानको तजाय अर्थात् जिनको यमके दंड नहीं मिल ऐसे कौनसे उपायसों होय सो कहौ ॥२॥ संसाररूप समुद्रमें डूबेभये और निश्चयरहितहैं चित्त जिनके और विषयन करि ताडितहैं आत्मा जिनकी ॥३॥ हे स्वामि

गरुडवाच ॥ कृत्वापापानिमनुजाः प्रमादाद्बुद्धितोपिवा ॥ नयान्तियातनायाम्याः केनोपायेनकथ्यताम् ॥ ॥ २ ॥ संसारार्णवमग्नानांनराणांदीनचेतसाम् ॥ पापोपहतबुद्धीनांविषयोपहतात्मनाम् ॥ ३ ॥ उद्धारार्थंवद स्वामिन्पुराणार्थंविनिश्चयम् ॥ उपायंयेनमनुजाः सद्गतिंयान्तिमाधव ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टं स्त्वयाताक्ष्यंमानुषाणांहितायवै ॥ शृणुष्वावहितोभूत्वासर्वंतेकथयाम्यहम् ॥ ५ ॥ दुर्गतिःकथितापूर्वमपुत्राणांचपापिनाम् ॥ पुत्रिणांधार्मिकाणांतुनकदाचित्खगेश्वर ॥ ६ ॥

न् ! पापी नरकनके उद्धारके लिये पुराणके अर्थके जो निश्चयहै ताहि कहौ वह ऐसो उपाय है हे माधव!जातें मनुष्यसद्गतिको प्राप्तहोय॥४॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! तुमने मनुष्यनके हितके लिये बहुत अच्छो प्रश्न कियो अब तुम सावधान चित्त होकै सुनो मैं तुमसों सब कहोंगो॥५॥पहले मैंने पुत्रकरि रहित जे पापीहैं तिनकी दुर्गति कही हे खगेश्वर!पुत्रवाले जे धर्मात्मा उनकी कबहूँ दुर्गति नहीं होय है ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदि उन धर्मात्माके काहू कर्मके विरोधसों पुत्रकी उत्पत्ति न होय तो काहू उपायसों पुत्र उत्पन्न होनेकी उत्पत्तिको साधन करै ॥७॥ पुत्रके उत्पन्न होनेको उपाय कहै है हरिवंशपुराणकी कथाको सुनिकै और भक्तिसों शतचण्डीको विधानकरिकै और भक्तिसों शिवको आराधनकरि अच्छी बुद्धिवालो मनुष्य पुत्रको उत्पन्न करै ॥ ८ ॥ पुत्र जाते पुन्नामकनरकनते पिताको बचावे है तातें स्वयम्भूने

पुत्रजन्मनिरोधःस्याद्यदिकेनापिकर्मणा ॥ तदाकश्चिदुपायेनपुत्रोत्पत्तिंप्रसाधयेत् ॥ ७ ॥ हरिवंशकथांश्रुत्वा शतचण्डीविधानतः ॥ भक्त्याश्रीशिवमाराध्यपुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥ ८ ॥ पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायते सुतः ॥ तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तः स्वयमेवस्वयम्भुवा ॥९॥ एकोपिपुत्रोधर्मात्मा सर्वंतारयतेकुलम् ॥ पुत्रेणलोका ञ्जयति श्रुतिरेषासनातनी ॥ १० ॥ इतिवेदैरपिप्रोक्तंपुत्रमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वामुच्यतेपैतृ कादृणात् ॥ ११ ॥ पौत्रस्यस्पर्शनान्मर्त्योमुच्यतेचऋणत्रयात् ॥ लोकानंत्यंदिवप्राप्तिः पुत्रपौत्रप्र पौत्रकैः ॥ १२ ॥

आपही याको पुत्र कह्यो है ॥ ९ ॥ एकहू धर्मात्मा पुत्र सब कुलकोतारिदेय है और पुत्रकरि लोकनको जीतिलेय है यह सनातनी श्रुतिहै॥१०॥यह उत्तमपुत्रको माहात्म्य वेदनहूंते कह्यो है तातें पुत्रको मुख देखि पिता पैतृक कहिये पितरनको जो ऋण है ताते मुक्त होजायहै॥११॥पौत्रके स्पर्श करनसों मनुष्य तीनि प्रकारके ऋणसों छूटिजाय है और यमलोक आदि लोकनको उल्लंघि जाय है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और पुत्र पौत्र प्रपौत्रनसों स्वर्गकी प्राप्ति होयहै ॥१२॥ ब्राह्मविवाहसों व्याहीगई जो पत्नी है वातें उत्पन्न पुत्र ब्राह्मोढापुत्र होय है वह पुत्र ऊर्ध्व कहिये ऊपरके स्वर्गलोग आदिमें पहुँचावै है और संगृहीत कहिये विना विवाहितातें उत्पन्न पुत्र अधोगति जो नरक है तामें पहुँचावैहै. या बातको जानकै मनुष्य हीनजातिके पुत्रोंको त्याग करै ॥ १३ ॥ हे गरुड ! सबरीस्त्रीनमें सवर्णपतिनसों सवर्ण जे औरस

ब्राह्मोढापुत्रोन्नयतिसंगृहीतस्त्वधोनयेत् ॥ एवंज्ञात्वाखगश्रेष्ठहीनजातिसुतांस्त्यजेत् ॥ १३ ॥ सवर्णेभ्यःसवर्णासुयेपुत्राऔरसाःखग ॥ तएवश्राद्धदानेनपितॄणांस्वर्गहेतवः ॥ १४ ॥ श्राद्धेनपुत्रदत्तेनस्वर्यातीतिकिमुच्यते ॥ प्रेतोपिपरदत्तेनगतः स्वर्गमथोशृणु ॥१५॥ अत्रवोदाहरिष्येहमितिहासंपुरातनम् ॥ औधर्वदेहिकदानस्य परंमहात्म्यसूचकम् ॥१६॥ पुरात्रेतायुगेताक्ष्यराजासीद्बभ्रुवाहनः॥महोदय ेरम्येधर्मनिष्ठोमहाबलः ॥ १७ ॥

पुत्र उत्पन्न होय हैं वेही श्राद्धके दानसों पित्रनको स्वर्गके कारण होय हैं ॥ १४ ॥ यह तु कहा कि पुत्रकरी दियेभये श्राद्धसों मनुष्य स्वर्गको जाय प्रेतहू पराये दिये भये सों स्वर्गको गयो सो सुनो॥१५॥यहांही पुराने इतिहासको मैं उदाहरण देऊँगो. जो औधर्व देहिक दानको बडो माहात्म्य है ताको सूचित करनवारोहै॥१६॥हे गरुड ! पहले त्रेतायुगमें बभ्रुवाहन नाम राजा सुन्दर महोदयपुरमें महा बलवान् और धर्ममें निष्ठा राखनावालो होतभयो ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह यज्वाहो दानको पति हो लक्ष्मीवान् हो ब्राह्मणका भक्त हो और साधु जाके प्यारे हैं और शील आचार तथा गुणनकरिकै युक्त हो और दया तथा दाक्षिण्य जो चतुराई है ताकरिकै युक्त हो ॥ १८ ॥ धर्मसों प्रजानको अपने औरस पुत्रके समान पालन करै हो और दंड देने योग्यनको दंड देतो भयो वह राजा नित्यही क्षत्रियनके धर्ममें तत्पर रहतो भयो॥१९॥काहू समय वह महाबाहु राजा सेना समेत मृगया जो शिकार है ताको जात भयो और नाना प्रकारके वृक्षनकरियुक्त घने वनमें प्रवेश करत भयो ॥२०॥ वह वन कैसो

यज्वादानपतिः श्रीमान्ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ॥ शीलाचारगुणोपेतोदयादाक्षिण्यसंयुतः ॥ १८ ॥ पालयामास धर्मेणप्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ क्षत्रधर्मरतोनित्यंसदण्डचान्दण्डयन्नृपः ॥ १९ ॥ सकदाचिन्महाबाहुः स सैन्योमृगयांगतः। वनंविवेशगहनंनानावृक्षसमन्वितम् ॥२०॥ नानामृगगणाकीर्णनानापक्षिविनादितम् ॥ वनमध्येतदाराजामृगंदूरादपश्यत ॥ २१ ॥ तेनविद्धोमृगोतीवबाणेनसुदृढेनच ॥ बाणमादायतंतस्यवनेऽदर्शनमेयिवान् ॥ २२ ॥

है नाना प्रकारके जे मृगनके गण हैं तिनकरिकै भरो भयो है और नानाप्रकारके पक्षीनकरिकै शब्दायमान है वा समय तब राजा वनके मध्यमें दूरिसों मृग जो है ताहि देखत भयो॥२१॥वा राजाकरि अतिपुष्ट बाणसों वेध्योगयो वह मृग वा राजाके बाणको लेकै अदृश्य हो जात भयो ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह राजा रुधिरसों गीली घासको देखतो भयो वा हिरनके पीछे जात भयो तापीछे मृगके प्रसंगसों दूसरे वनमें प्रवेश करत भयो ॥ २३ ॥ क्षुधासों क्षामकहिये दुर्बल है कंठ जाको और श्रमको जो संतापहै तासों मूर्छित राजा जलाशय जो तालाव है तापै पहुँचि घोडेसमेतही स्नान करत भयो॥२४॥और कमलआदिके गंधसों सुगंधित वाको शीतल जल पियत भयो ता पीछे वह बभ्रुवाहन राजा जलतें बाहर निकरि श्रमरहित होजात भयो ॥२५॥ और शीतल है छाया जाकी ऐसे मनोहर वटके वृक्षको देखत

कक्षेणरुधिरार्द्रेणसराजानुजगामतम् ॥ ततोमृगप्रसङ्गेनवनमन्यद्विवेशसः ॥ २३ ॥ क्षुत्क्षामकण्ठोनृपतिः श्रमसंतापमूर्च्छितः ॥ जलाशयंसमासाद्यसाश्वएवव्यगाहत ॥ २४ ॥ पपौतदुदकंशीतंपद्मगंधादिवासितम् ॥ ततोवतीर्यसलिलाद्विश्रमोबभ्रुवाहनः ॥ २५ ॥ ददर्शन्यग्रोधतरुंशीतच्छायंमनोहरम् ॥ महाविटपविस्तीर्णपक्षिसंघविनादितम् ॥ २६ ॥ वनस्यतस्यसर्वस्यमहाकेतुमिवस्थितम् ॥ मूलंतस्यसमासाद्यनिषसाद महीपतिः ॥ २७ ॥

भयो बडी२ तौ वाकी शाखा हैं तिनसों बहुतही विस्तीर्ण कहिये चौडो हैं और नानाप्रकारके पक्षीनके समूहसों शब्दायमान होरहो है ॥ २६ ॥ वह वन कैसो है कि, सबसों ऊँचो होनेके कारणसों बडे भारी पताकाके समान स्थित है वाके मूलके समीप पहुँचिकै राजा बैठिजात भयो ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या छे वह राजा क्षुधा तृषासों पीडित होनेमें व्याकुल हैं इंद्रिय जाकी और ऊपरको हैं बाल जाके और मैले रूप कुबडा जाके मांस
नहीं और भयानक है दर्शन जाके ऐसे प्रेतका देखत भये ॥ २८ ॥ वा विरूप और घोरराक्षसको देखिकै बभ्रुवाहन बहुत
विस्मित होतभये और प्रेतहू वा घोर बनमें आयेभये वा राजाको देखि विस्मित होतभयो ॥ २९ ॥ और वह प्रेतहू उत्कंठित मन

अथप्रेतंददर्शासौक्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलेन्द्रियम् ॥ उत्कचंमलिनंकुब्जंनिर्मांसंभीमदर्शनम् ॥ २८ ॥ तंदृष्ट्वावि
कृतंघोरंविस्मितोबभ्रुवाहनः ॥ प्रेतोपिदृष्ट्वातंघोरामटवीमागतंनृपम् ॥२९॥ समुत्सुकमनाभूत्वातस्यान्तिक
मुपागतः ॥ अब्रवीत्सतदाताक्ष्र्यप्रेतराजोनृपंवचः ॥ ३० ॥ प्रेतभावोमयात्यक्तः प्राप्तोस्मिपरमांगतिम् ॥ त्व
त्संयोगान्महाबाहोजातोधन्यतरोस्म्यहम् ॥ ३१ ॥ राजोवाच ॥ ॥कृष्णवर्णकरालास्यप्रेतत्वंघोरदर्शनम् ॥
केनकर्मविपाकेनप्राप्तंतेबह्वमङ्गलम् ॥ ३२ ॥

होकै वा राजाके समीप आवत भयो और हे ताक्ष्र्य ! प्रेतराज वा समय राजासों बोलत भयो ॥ ३० ॥ प्रेतभाव मैंने छोडो और
परमगतिको प्राप्त भयो. हे महाबाहु ! तुम्हारे संयोगसों आज मैं अतिधन्य भयों ॥ ३१ ॥ राजा बोलो. कारो है वर्ण जाको और बडो
भयानक है मुख जाको और बहुतही घोर है दर्शन जाको ऐसो बडो अमंगलरूप प्रेतपन तैंने कौनसे कर्मके परिणामसों पायो है ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे तात ! तू मोसों सगरो प्रेतपनको कारण कह तू कौन है और कौनसे दानसों तेरो प्रेतपन दूरि होय ॥ ३३ ॥ प्रेत बोलो कि,हे राजनमें श्रेष्ठ ! मैं तुमसों सब आदिते लगाके कहौंगो और मेरे प्रेतपनके कारणको सुनिकै तुम दया करनेको योग्य हो ॥ ३४ ॥ सब सम्पत्तीनसों पूरोभयो वैदेशनाम एक नगर है वह नानाप्रकारके जननसों तथा रत्ननसों परिपूर्ण होरहो है ॥ ३५ ॥ हर्म्य जो राजानके घर हैं और प्रासाद जे धनवानके घर तिनकी शोभाकरिकै युक्त है और नाना प्रकारके जे धर्म श्रौत स्मार्त्त आदि हैं

प्रेतत्वकारणंतातब्रूहिसर्वमशेषतः ॥ कोसित्वंकेनदानेनप्रेतत्वंतेविनश्यति ॥ ३३ ॥ प्रेतउवाच ॥ कथयामि नृपश्रेष्ठसर्वमेवादितस्तव ॥ प्रेतत्वकारणंश्रुत्वादयांकर्तुंत्वमर्हसि ॥ ३४ ॥ वैदेशंनामनगरंसर्वसंपत्समन्वितम् ॥ नानाजनपदाकीर्णं नानारत्नसमाकुलम् ॥३५॥ हर्म्यप्रासादशोभाढ्यंनानाधर्मसमन्वितम् ॥ तत्राहंन्यवसंतातदेवार्चनरतः सदा ॥ ३६ ॥ वैश्योजात्यासुदेवोहंनाम्नाविदितमस्तुते ॥ हव्येनतर्पितादेवाः कव्येन पितरस्तथा ॥ ३७ ॥

तिनकरिकै युक्त है. हे तात ! वा पुरमें मैं सदा देवतानको पूजन करतो भयो वास करौंहौं ॥ ३६ ॥ वैश्य जातिको मैं सुदेव यह मेरो नाम आपको विदित होय और हव्य जो अन्न देवतानको दियोजाय है तासों देवतानको और कव्य जो अन्न पितरनको दियो जाय है तासों पितरनको संतुष्ट कियो ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और नाना प्रकारके दाननके योगसों मैंने ब्राह्मण संतुष्ट किये और दीन अंधे तथा कृपण मनुष्यनको मैंने अनेक प्रकारसों अन्नदान दियो ॥ ३८ ॥ हे राजा ! वह सब मेरो दैवयोगसों निष्फल होगयो और जैसे मेरो सुकृत निष्फल होगयो सो मैं तुमसों कहौ हौं ॥३९॥ मेरेही सन्तति नहीं नहीं कोई मित्र हो न बान्धवहो और मेरो ऐसो मित्र कोउ नहीं हो जो और्ध्वदेहिक अर्थात् परलोककी क्रिया करै ॥ ४० ॥ हे महाराज ! और जाको षोडश मासिक श्राद्ध नहीं होयहैं ताको पुत्रके होनेहूपै और सैकरन श्राद्ध

विविधैर्दानयोगैश्चविप्राः संतर्पितामया ॥ दीनान्धकृपणेभ्यश्चदत्तमन्नमनेकधा ॥ ३८ ॥ तत्सर्वंनिष्फलंरा
जन्ममदैवाद्दुपागतम् ॥ यथामेनिष्फलंजातंसुकृतंतद्वदामिते ॥ ३९ ॥ ममवैसंततिर्नास्तिनसुहन्नचबान्धवः ॥
नचमित्रंहिमेताद्दग्यःकुर्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ४० ॥ यस्यनस्यान्महाराजश्राद्धंमासिकषोडशम् ॥ प्रेतत्वंसु
स्थिरंतस्यदत्तैःश्राद्धशतैरपि ॥ ४१ ॥ त्वमौर्ध्वदेहिकंकृत्वामामुद्धरमहीपते ॥ वर्णानांचैवसर्वेषांराजाबन्धु
रिहोच्यते ॥ ४२ ॥ तन्मांतारयराजेन्द्रमणिरत्नंददामिते ॥ यथामेसद्गतिर्भूयात्प्रेतयोनिश्चगच्छति ४३ ॥

करनेहूपै प्रेतत्व स्थिरही रहै अर्थात् नहीं जाय है ॥ ४१ ॥ हे महीपते ! तुम और्ध्वदेहिक करिकै मेरो उद्धार करौ और या लोकमें सगरे वर्णनको राजा बन्धु कहो जायहै ॥ ४२ ॥ हे राजन् ! तातें मोकों तारो मैं तुमको मणिरत्न देउँगो जैसे मेरी सद्गति होय और प्रेतकी योनि छूटजाय ॥ ४३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे महाराज ! जो मेरो प्रिय कियो चाहतेहो तो तुमको वैसो करनो चाहिये भूखप्यास आदिके दुःखनसों प्रेतपनो मोको बहुतही दुःसह है ॥ ४४ ॥ या वनमें सुन्दर स्वादिष्ठ शीतल जल तथा फल है क्षुधासों पीडित मैं उन फलनको नहीं पाउँहौं और प्यासो कहूँ जलको नहीं पाउँहौं ॥४५॥ हे राजन् ! जो मेरी यह बडी नारायणविधि होय और वाके आगेकी सब विधि वेदके मन्त्रसों कीन्ही जाय ॥४६॥

तथाकार्यंत्वयावीरममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ क्षुधातृषादिभिर्दुःखैःप्रेतत्वंदुःसहंमम ॥ ४४ ॥ स्वादूदकंफलं चास्तिवनेस्मिञ्छीतलं शिवम् ॥ न प्राप्नोमिक्षुधार्तोऽहंतृषार्तोनजलंक्वचित् ॥ ४५ ॥ यदिमेहिभवेद्राजन्विधिनारायणोमहान् ॥ तदग्रेवेदमन्त्रैश्चक्रियासर्वौर्ध्वदेहिकी ॥ ४६ ॥ तदानश्यतिमेनूनंप्रेतत्वंनात्रसंशयः ॥ वेदामन्त्रास्तपोदानंदयासर्वत्र जन्तुषु ॥४७॥ सच्छास्त्रश्रवणंविष्णोःपूजासज्जनसंगतिः ॥ प्रेतयोनिविनाशाय भवन्तीतिमयाश्रुतम् ॥ ४८ ॥ अतोवक्ष्यामितेविष्णुपूजांप्रेतत्वनाशिनीम् ॥ सुवर्णद्वयमानीयसुवर्णंन्याय सञ्चितम् ॥ तस्यनारायणस्यैकांप्रतिमांभूपकल्पयेत् ॥ ४९ ॥

तौ निश्चय मेरो प्रेतपनो नष्ट होजाय यामें सन्देह नहींहै वेद मन्त्र तप दान तथा सब जीवनपर दया॥४७॥उत्तम शास्त्रकोसुननो विष्णुकी पूजा सज्जनकी सङ्गति येसब बातें प्रेतयोनिके नाशके लिये होयहैं यह मैंने सुनोहै॥४८॥यातें प्रेतत्वकी नाश करनहारी विष्णुकी पूजाको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुमसों कहोंगो न्यायसों जोडेभये सुवर्णमेंसे दो सुवर्ण अर्थात ३२मासे सुवर्ण लेकर हे राजन् ! वाकी एक नारायणकी प्रतिमा बनावे ॥ ४९ ॥ वा प्रतिमाको पीले कपरानके जोडासों आच्छादित करै और सब आभरणनसों शोभित करै और नाना प्रकारके जलनसों स्नान करायकै सिंहासनपर स्थापित करिकै पूजन करै ॥ ५० ॥ वा सुवर्णमयी प्रतिमाके पूर्वभागमें श्रीधरकी और दक्षिणमें मधुसूदनकी और वाके पश्चिममें वामनदेवकी और उत्तरमें गदाधरकी स्थापना करै ॥ ५१ ॥ और मध्यमें पितामह जो देव

पीतवस्त्रयुगच्छन्नांसर्वाभरणभूषिताम् ॥ स्नापितांविविधैस्तोयैरधिवास्ययजेत्ततः ॥ ५० ॥ पूर्वेतुश्रीधरंतस्यदक्षिणेमधुसूदनम् ॥ पश्चिमेवामनंदेवमुत्तरेचगदाधरम् ॥ ५१ ॥ मध्येपितामहंचैवतथादेवंमहेश्वरम् ॥ पूजयेच्चविधानेनगन्धपुष्पादिभिःपृथक् ॥ ५२ ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्यवह्नौ संतर्प्यदेवताः ॥ घृतेनदध्नाक्षीरेण विश्वेदेवांश्चतर्पयेत् ॥ ५३ ॥ ततः स्नातोविनीतात्मायजमानःसमाहितः ॥ नारायणाग्रेविधिवत्स्वांक्रियामौर्ध्वदेहिकीम् ॥ ५४ ॥

हैं ब्रह्मा तिनकी तथा महेश्वर देवको विधानसों गंध पुष्प आदिसों पृथक् पृथक् पूजन करै ॥ ५२ ॥ ता पीछे प्रदक्षिणा करिकै और अग्निमें देवतानको तृप्त करिकै घी दही और दूधसों विश्वे देवानको तृप्त करै ॥ ५३ ॥ ता पीछे न्हायो भयो और विनीतहै आत्मा जाको ऐसा सावधान यजमान नारायणके आगे विधिपूर्वक और्ध्वदेहिक क्रियाको करै ॥ ५४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रोध तथा लोभकरि रहित होकै शास्त्रकी रीतिसों आरम्भ करै सब श्राद्ध और वृषोत्सर्ग करै ॥५५॥ ता पीछे ब्राह्मणोंके लिये तेरह पदनको दान करै और शय्यादान करिकै प्रेतके लिये घटको दान करै॥५६॥ राजा बोले॥ हे प्रेत! कैसे घट करै और कौनसी विधिसों

आरभेतयथाशास्त्रंक्रोधलोभविवर्जितः ॥ कुर्याच्छ्राद्धानिसर्वाणिवृषस्योत्सर्जनंतथा ॥ ५५ ॥ततः पदानिवि प्रेभ्योदद्याच्चैवत्रयोदश ॥ शय्यादानंप्रदत्त्वाचघटंप्रेतस्यनिर्वपेत् ॥ ५६ ॥ राजोउवाच ॥ कथंप्रेतघटंकुर्याद्द द्यात्केनविधानतः ॥ ब्रूहिसर्वानुकम्पार्थंघटंप्रेतविमुक्तिदम् ॥ ५७ ॥ प्रेतउवाच ॥ साधुपृष्टंमहाराजकथयामिनिबोधते ॥ प्रेतत्वंनभवेद्येनदानेनसुदृढेनच ॥ ५८ ॥ दानंप्रेतघटंनामसर्वाशुभविनाशनम् ॥ दुर्लभंसर्वलोकानांदुर्गतिक्षयकारकम् ॥ ५९ ॥ संतप्तहाटकमयंतुघटंविधायब्रह्मेशकेशवयुतंसहलोकपालैः ॥ क्षीराज्यपूर्णविवरंप्रणिपत्यभक्त्याविप्रायदेहितवदानशतैः किमन्यैः ॥ ६० ॥

दान करै सो तू सब जीवनपर दयाकरिकै प्रेतकी मुक्तिके देनहारे घटको कहौ॥५७॥प्रेत बोला हे महाराज! तुमने अच्छो प्रश्न कियो सो मैं कहौहौं आप मन लगायके सुनिये जा सुदृढ दानसों प्रेतत्व न होय ॥५८॥ यह प्रेतघटनाम दान सब अशुभनको नाश करनहारोहै दुर्गतिनको क्षय करनहारो है यह सब लोकनकों दुर्लभ है॥५९॥तपाये भये सोनेको घट बनायकै ब्रह्मा, ईश, केशव और लोकपाल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जें इंद्र यम वरुण कुबेर आदि हैं तिनकरिकै युक्त करै फिरि वामें दूध और घी भरिकै ब्राह्मणको दान करै. इस घटते अन्य सैकरनदाननसों तुमको कौनसो प्रयोजन है ॥ ६० ॥ वा घटके मध्यमें ब्रह्मा तथा विष्णु और अविनाशी जे शंकर हैं तिनको पूजन करै और प्राची आदि दिशानमें और वा घटके कंठमें क्रमसों लोकपालनको पूजै ॥ ६१ ॥ हे राजन् ! धूप, फूल और चंदन इनसों विधिपूर्वक पूजन करिकै ता पीछे दूध और घीसमेत वा सोनेके घटको दान करनो चाहिये ॥ ६२ ॥ महापातकनको

ब्रह्मामध्येतथाविष्णुः शङ्करः शंकरोऽव्ययः ॥ प्राच्यादिषुचतत्कण्ठेलोकपालान्क्रमेणतु ॥ ६१ ॥ संपूज्यविधिवद्राजन्धूपैः कुसुमचन्दनैः ॥ ततोदुग्धाज्यसहितंघटंदेयंहिरण्मयम् ॥ ६२ ॥ सर्वदानाधिकंचैतन्महापातकनाशनम् ॥ कर्तव्यंश्रद्धयाराजन्प्रेतत्वविनिवृत्तये ॥ ६३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंसंजल्पतस्तस्यप्रेतेनसहकाश्यप ॥ सेनाजगामानुपदहस्त्यश्वरथसंकुला ॥ ६४ ॥

नाश करनहारो यह सब दाननते अधिक है तातें हे राजा ! प्रेतपन दूरि करिवेके लिये मनुष्यनको यह दान अवश्य करनो चाहिये ॥ ६३ ॥ श्रीभगवान बोले; हे काश्यप ! या प्रेतके साथ वह राजा बात करि रह्यो हो वाही समय हाथी घोडा तथा रथनसों भरीभई वा राजाकी सेनाहू पीछेसों आवत भई ॥ ६४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तापीछे सेनाके आवनेपै राजाको महामणि देकै और नमस्कार करि फिरि प्रार्थना करि प्रेत अतर्धान होजात भयो ॥६५॥ फिर वा वनते निकसिकै राजाहू अपने नगरको आवतभयो और अपने पुरमें पहुँचिकै वह सब प्रेतको कहोभयो ॥ ६६ ॥ हे गरुड ! सब और्ध्वदेहिक विधि अर्थात् मरनेके पीछेकी क्रियानको विधिसों करत भयो वाके पुण्यके देनेसों प्रेतयोनितें छूटिकै वह स्वर्गलोकको जातभयो ॥ ६७ ॥ पराये दियेभये श्राद्धसों प्रेतहू उत्तमगतिको प्राप्त होतभयो और जो पुत्रकरि दिये भये श्राद्ध करि पिता

ततोबलेसमायातेदत्त्वाराज्ञेमहामणिम् ॥ नमस्कृत्यपुनः प्रार्थ्यप्रेतोऽदर्शनमेयिवान् ॥ ६५ ॥ तस्माद्वनाद्वि
निष्क्रम्यराजापिस्वपुरंययौ ॥ स्वपुरंचसमासाद्यतत्सर्वंप्रेतभाषितम् ॥ ६६ ॥ चकारविधिवत्पक्षिन्नौ
र्ध्वदेहिकजंविधिम् ॥ तस्यपुण्यप्रदानेनप्रेतोमुक्तोदिवंययौ ॥ ६७ ॥ श्राद्धेनपरदत्तेनगतः प्रेतोपि सद्गतिम् ॥
किंपुनः पुत्रदत्तेनपितायातीतिचाद्भुतम् ॥ ६८ ॥ इतिहासमिमंपुण्यंशृणोतिश्रावयेद्द्वयः ॥ नतौप्रेतत्वमा
यातःपापाचारयुतावपि ॥६९॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेबभ्रुवाहनप्रेतसंस्कारोनामसप्तमोऽध्यायः ॥७॥

सद्गतिको प्राप्त होय तौ यामें कहा आश्चर्य है ॥ ६८ ॥ या पवित्र इतिहासको जो सुनैगो और सुनावैगो वे दोनों पापीहू होनेपै प्रेत योनिको नहीं प्राप्त होयगो ॥ ६९ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणभाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड बोले, हे महाराज ! परलोकमें सहाय करनहारी ऐसी सुकृत मनुष्यनकी आमुष्मिकी जो क्रिया है ता सबको कहो और वह जैसे पुत्रनको करनी चाहिये सो सब कहो ॥ १ ॥श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! तुमने मनुष्यनके हितके लिये अच्छो प्रश्न कियो जो कृत्य धर्मात्मा मनुष्यके योग्य है सब मैं तुमसों कहौंगो ॥ २ ॥ सुकृती पुरुष वृद्धअवस्थामें शरीरको रोगयुक्त देखि और सूर्यआदि

गरुडउवाच ॥ आमुष्मिकींक्रियांसर्वांवदसुकृतिनांमम ॥ कर्तव्यासायथापुत्रैस्तथाचकथयप्रभो ॥ १ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्यर्मानुषाणांहितायवै ॥ धार्मिकार्हंचयत्कृत्यंतत्सर्वंकथयामिते ॥२॥ सुकृतीवार्धकेदृष्ट्वाशरीरंव्याधिसंयुतम् ॥ प्रतिकूलान्ग्रहांश्चैवप्राणघोषस्यचाश्रुतिम् ॥ ३ ॥ तदास्वमरणंज्ञात्वानिर्भयःस्यादतन्द्रितः ॥ अज्ञातज्ञातपापानांप्रायश्चित्तसमाचरेत् ॥ ४ ॥ यदास्यादातुरः कालस्तदास्नानं समारभेत् ॥ पूजनं कारयेद्विष्णोःशालग्रामस्वरूपिणः ॥५॥

ग्रहनको प्रतिकूल अर्थात् मारक देखि और कानके रुकजानेपै भीतर शब्दके असुननेको देखि ॥३॥ तब अपने मरनको जानि निर्भय और आलस्यरहित हो जाने विना जानेभये पापनको प्रायश्चित्त करै ॥ ४ ॥ और जब आतुरकालकहिये अंतसमय होय तब स्नानको आरंभ करै और शालग्रामरूप जे विष्णुभगवान् हैं तिनको पूजन करावे ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

और गंध पुष्प तथा तुलसीदलनसों पूजनकरै, और धूप दीप नैवेद्य और बहुतसे मोदक आदिकनसों पूजन करै ॥६॥ और ब्राह्मणनको दक्षिणा देके नैवेद्यहीमेंते भोजन करावै और अष्टाक्षर अथवा द्वादशाक्षर मंत्रको जपकरै ॥ ७ ॥ और विष्णु तथा शिवके नामको स्मरण करै और सुनै हरिको नाम मनुष्यनके कानमें परनेसों पापनको हरिलेय है ॥८॥ रोगीके समीप जाके भाई बंधुओंको शोच न करना

अर्चयेद्गन्धपुष्पैश्चकुंकुमैस्तुलसीदलैः ॥ धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैर्बहुभिर्मोदकादिभिः ॥ ६ ॥ दत्त्वाचदक्षिणांविप्रा न्नैवेद्यादेवभोजयेत् ॥ अष्टाक्षरंजपेन्मन्त्रंद्वादशाक्षरमेवच ॥ ७ ॥ संस्मरेच्छृणुयाच्चैवविष्णोर्नामशिवस्यच ॥ हरेर्नामहरेत्पापंनृणांश्रवणगोचरम् ॥ ८ ॥ रोगिणोन्तिकमासाद्यशोचनीयंनबान्धवः ॥ स्मरणीयंपवित्रंमे नामधेयंमुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥ मत्स्यः कूर्मोवराहश्चनारसिंहश्चवामनः ॥ रामोरामश्चकृष्णश्चबुद्धः कल्की तथैवच ॥ १० ॥ एतानिदशनामानिस्मर्तव्यानिसदाबुधैः॥ समीपेरोगिणोब्रूयुर्बान्धवास्तेप्रकीर्तिताः ॥ ११ ॥

चाहिये और वारंवार मेरे पवित्रनामको स्मरण करनो योग्य है ॥९॥ मत्स्य १ कूर्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ परशुराम ६ रामचंद्र ७ कृष्ण ८ बुद्ध ९ कल्की १० ॥ १० ॥ ये दशनाम पंडितोंकरि सदा स्मरणकरने योग्य हैं और बांधव इन कहेहुए दश नामनको रोगिके समीप कहै ॥ ११ ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृष्ण यह मंगलनाम जाकी वाणीसों निकलहै ताके करोडों महापाप शीघ्रही भस्म होजाँय हैं॥१२॥पुत्रकरि कहे गये हरिके नामनको कहतोभयो मरनहारो पुरुष मुक्तिको प्राप्त होयहै अजामीलहू वैकुंठधामको गयो और श्रद्धासों जो हरिको कहै ताको कहा कहनोहै॥१३॥ दुष्ट जिनके चित्तहैं ऐसे पुरुषनकरिहू स्मरण करे गये हरि पापनको हरिलेयहैं यामें दृष्टांतहै कि विना इच्छाकेहू छूनेसो अग्नि जराही देय

कृष्णेतिमङ्गलंनामयस्यवाचिप्रवर्तते ॥ तस्यभस्मीभवन्त्याशुमहापातककोटयः ॥ १२ ॥ म्रियमाणो हरेर्नामगृणन्पुत्रोपचारितम् ॥ अजामिलोप्यगाद्धामकिंपुनःश्रद्धयागृणन् ॥ १३ ॥ हरिर्हरतिपापानि दुष्टचित्तैरपिस्मृतः ॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥ १४ ॥ हरेर्नाम्नश्चयाशक्तिः पापनिर्हरणे द्विज ॥ तावत्कर्तुंसमर्थोनपातकंपातकीजनः ॥ १५ ॥ किङ्करेभ्योयमः प्राहानयध्वंनास्तिकजनम् ॥ नैवा नयतभोदूताहरिनामस्मरंनरम् ॥ १६ ॥ अच्युतंकेशवंरामनारायणंकृष्णदामोदरंवासुदेवंहरिम् ॥ श्रीधरं माधवंगोपिकावल्लभंजानकीनायकरामचद्रंभजे ॥ १७ ॥

है॥१४॥हे पक्षीन्द्र! पापनके हरिलेनेमें जो सामर्थ्य है उतने पाप पापी मनुष्यहू करनेको समर्थ नहींहै ॥१५॥ यमने अपने दूतनसों कही कि, नास्तिक मनुष्यको लेआओ और हे दूतो! जो हरिको स्मरण करतो होय ता नरको मत लाना॥१६॥अच्युत केशव राम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारायण कृष्ण दामोदर वासुदेव हरि श्रीधर माधव गोपिकावल्लभ और जानकीके नायक ऐसे जे रामचंद्रहैं तिनकोमैं भजौंहौं॥१७॥कमलनयन वासुदेव विष्णु धरणिधर अच्युत शंखचक्रपाणि शरण हो या प्रकार उच्चारण करैं हैं हे दूतो ! उन पापरहित मनुष्यनको बहुत दूरसों त्याग करौ ॥ १८ ॥ और जे दुष्ट हैं तथा मुकुन्द जे श्रीभगवान् हैं तिनके चरणकमलका जो मकरंद है तातें जे सदा विमुख

कमलनयनवासुदेवविष्णोधरणिधराच्युतशंखचक्रपाणे ॥ भवशरणमितीरयन्तियेवैत्यजभटदूरतरेणतानपापान् ॥ १८ ॥ तानानयध्वमसतोविमुखान्मुकुन्दपादारविन्दमकरन्दरसादजस्रम् ॥ निष्किञ्चनैः परमहंसकुलैरसज्ञैर्जुष्टाद्गृहेनिरयवर्त्मनिबद्धतृष्णान् ॥ १९ ॥ जिह्वानवक्तिभगवद्गुणनामधेयंचेतश्चनस्मरति तच्चरणारविन्दम् ॥ कृष्णायनोनमतियच्छिरएकदापितानानयध्वमसतोऽकृतविष्णुकृत्यान् ॥ २० ॥ तस्मात्संकीर्तनंविष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् ॥ महतामपिपक्षीन्द्रविद्ध्येकान्तिकनिष्कृतिम् ॥ २१ ॥

अर्थात् हरिकी भक्तिसों रहित और दरिद्रियोंकरि सदा सेवित और नरकके मार्गमें बांधीहै तृष्णा जिन्होंने ऐसे मनुष्यनको लाओ ॥१९॥ और जिनकी जीभ हरिके नामका उच्चारण नहीं करेहै और जिनका चित्त उनके चरणारविंदको स्मरण नहीं करैहै और जिनका शिर एकबारहू श्रीकृष्णके चरणमें नहीं नमैं है ऐसे विष्णुके कृत्यके न करनहारे दुष्टनको लाओ ॥ २० ॥ तातें हे गरुड ! जगत्कोहू

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मङ्गलरूप और बडे भारी पापनको एकही प्रायश्चित्त रूप हरिको नामजानो॥२१॥जाने प्रायश्चित्त तौ कीन्हे हैं ओर नारायणते विमुख है ताको वे प्रायश्चित्त ऐसे शुद्ध नहीं करसके हैं जैसे मदिराके घटको नदी नहीं पवित्र करै है अर्थात् वे नरकहीमें जायहैं ॥२२॥ कृष्णके नामसों दूरिहोगये हैं पाप जिनके ऐसे मनुष्य नरकको नहीं देखैंहैं और यमको तथा उनके दूतनको स्वप्नहूमें कदापि नहीं देखै हैं ॥२३॥ मांस अस्थि रुधिर हैं जामें ऐसी कायाही वैतरणीनदी है क्योंकि वैतरणीभी कठिन है और मांसरुधिरकी वामें

प्रायश्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखम् ॥ ननिष्पुनन्तिदुर्बुद्धिंसुराकुम्भमिवापगाः ॥ २२ ॥ कृष्णनाम्ना ननरकंपश्यन्तिगतकिल्बिषाः ॥ यमंचतद्भटांश्चैवस्वप्नेपि न कदाचन ॥ २३ ॥ मांसास्थिरक्तवत्कायवैतरण्यांपतेन्नसः ॥ योऽन्तेदद्याद्द्विजेभ्यश्चनन्दनन्दनगामिति ॥२४॥ अतःस्मरेन्महाविष्णोर्नामपापौघनाशनम् ॥ गीतासहस्रनामानिपठेद्वाशृणुयादपि ॥ २५ ॥

कीच है वा वैतरणीमें ब्राह्मणको गोदान करनहारो मनुष्य नहीं गिरै है वैसेही जो अंतसमयमें नंदनन्दन यह जो गो वाणीहैं ताहि द्विज जे दाँत हैं तिनको देय है वह पुरुष कायारूपी वैतरणीमें नहीं गिरै हैं अर्थात् मुक्त होजायहै ॥२४॥ यातें पापनके समूहको नाश करनहारो जो विष्णुको नाम है ताको स्मरण करै अथवा गीता तथा विष्णुसहस्रनामको पाठ करै वा औरसों सुनै ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादशीको व्रत, गीताको पाठ, गंगाजल, तुलसीदल, विष्णुका चरणामृत और विष्णुके नाम ये सब मरण समयमें मुक्तिके देनहारे हैं ॥२६॥ ता पीछे घी और सुवर्णसमेत अन्नको संकल्प करै और वेदपाठी ब्राह्मणके लिये बछरा सहित गौवनको दान करै ॥ २७ ॥ अन्त समयमें जो मनुष्य थोडा अथवा बहुत दान करैहै हे गरुड! वह सब अक्षय होयहै और जो पुत्र देनो चाहै वहू अक्षय हो है॥२८॥

एकादशीव्रतंगीतागङ्गाम्बुतुलसीदलम् ॥ विष्णोःपादाम्बुनामानिमरणेमुक्तिदानिच ॥ २६ ॥ ततःसंकल्पये
दन्नंसघृतंचसकाञ्चनम् ॥ सवत्साधेनवोदेयाः श्रोत्रियायद्विजातये ॥ २७ ॥ अन्तेजनोयद्ददातिस्वल्पंवाय
दिवाबहु ॥ तदक्षयंभवेत्ताक्ष्ययत्पुत्रश्चानुमोदते ॥ २८॥ अन्तकालेतुसत्पुत्रः सर्वदानानिदापयेत् ॥ यत्तदर्थं
सुतोलोकेप्रार्थ्यतेधर्मकोविदः ॥ २९ ॥ भूमिष्ठंपितरंदृष्ट्वाअर्धोन्मीलितलोचनम् ॥ पुत्रैस्तृष्णानकर्तव्यात
द्धनेपूर्वसंचिते ॥३०॥ सतद्ददातिसत्पुत्रोयावज्जीवत्यसौचिरम् ॥ अतिवाहस्तुतान्मार्गेदुःखंनलभतेयतः॥३१॥

सत्पुत्र अंतसमयमें पितासे सब दान दिवावै जाते याही आतुरदान करनेके लिये धर्मज्ञ पुरुष पुत्रकी चाहना करैहै॥२९॥ आधे खुले हैं नेत्र जाके और भूमिमें पडेभये पिताको देखि पिताकरि पहले संचित धनमें पुत्रोंको तृष्णा न करनी चाहिये ॥ ३० ॥ वह सत्पुत्र जो देय है तासों जितनें कालपर्यन्त वह जीवै है तबलौं परलोकको जाननहारो मार्गमें उन पहले कहेभये दुःखनको नहीं पावै है ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतुर अर्थात् मरनेके समय और ग्रहणके समय ये दो दान सब दाननते अधिक हैं यातें तिल आदि आठ दान अवश्य देने चाहिये ॥ ३२ ॥ उनकोही गिनावैं हैं तिल १ लोह २ सोना ३ कपास ४ तथा नोंन ५ सतनजा ६ भूमि ७ गो ८ इनमें एकसौ एक पवित्र हैं ॥ ३३ ॥ ये आठ महादान महापातकनके नाश करनहारे हैं अंतकालमें देने चाहिये इनको जो फल है ताहि तुम सुनो ॥ ३४ ॥

आतुरेचोपरागेचद्वयंदानंविशिष्यते ॥ अतोवश्यंप्रदातव्यमष्टदानंतिलादिकम् ॥ ३२ ॥ तिलालोहंहिरण्यं चकार्पासोलवणंतथा ॥ सप्तधान्यंक्षितिर्गावोह्येकैकंपावनंस्मृतम् ॥ ३३ ॥ एतदष्टमहादानमहापातकनाशनम् ॥ अन्तकालेप्रदातव्यश्शृणुतस्यचसत्फलम् ॥ ३४ ॥ ममस्वेदसमुद्भूताः पवित्रास्त्रिविधास्तिलाः ॥असुरादानवादैत्यास्तृप्यन्तितिलदानतः ॥ ३५ ॥ तिलाः श्वेतास्तथाकृष्णादानेनकपिलास्तिलाः ॥ संहरन्तित्रिधापापंवाङ्मनःकायसंचितम् ॥ ३६ ॥ लोहदानंचदातव्यंभूमियुक्तेनपाणिना ॥ यमसीमांनचाप्नोतिनगच्छेत्तस्यवर्त्मनि ॥ ३७ ॥

मेरे पसीनेसों उत्पन्न पवित्र तिल तीनि प्रकारके होय है और असुर दानव दैत्य ये सब तिलनके दानसों तृप्त होय हैं ॥३५॥ सफेद काले और कपिल कहिये भूरे रंगके तिल दान करनेसों वाणी मन तथा कायासों करेभये तीनि प्रकारके पापनको नाश करनहारे हैं ॥ ३६ ॥ भूमिमें हाथ धरिकै लोहको दान करनो चाहिये या दानको करनहारो मनुष्य यमराजकी सीमामें नहीं जाय है और न वाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मार्गमें जाय है ॥ ३७ ॥ पापी मनुष्यनके दंड देनेके लिये यमके हाथमें कुल्हाडी अर्थात फरसा मूसल दंड खड्ग छुरी विद्यमान हैं ॥३८॥
यमके आयुध कहिये शस्त्रकी प्रसन्नताके लिये वह दान कहोगयो है तातें यमलोकमें सुख देनेहारे लोहके दानको करे ॥ ३९ ॥ ऊरन
और काला डोरा शुंडामर्क उदुंबर शेषंबल महादूत ये लोहके दानसों सुखके देनहारे होय हैं ॥ ४० ॥ हे गरुड ! परमगुह्य कहिये

कुठारोमुसलोदण्डः खड्गश्चच्छुरिकातथा ॥ शस्त्राणियमहस्तेचनिग्रहेपापकर्मणाम् ॥ ३८ ॥ यमायुधानां
सन्तुष्टचैदानमेतदुदाहृतम् ॥ तस्माद्द्याल्लोहदानंयमलोकेसुखावहम् ॥ ३९ ॥ ऊरणःश्यामसूत्रश्चशुण्डाम
र्कोप्युदुम्बरः ॥ शेषंबलोमहादूतालोहदानात्सुखप्रदाः ॥ ४० ॥ शृणुतार्क्ष्यपरंगुह्यंदानानांदानमुत्तमम् ॥दत्ते
नतेनतुष्यन्तिभूर्भुवःस्वर्गवासिनः ॥ ४१ ॥ ब्रह्माद्याऋषयोदेवाधर्मराजसभासदः ॥स्वर्णदानेनसन्तुष्टाभव
न्तिवरदायकाः ॥४२॥ तस्माद्देयस्वर्णदानप्रतोद्धरणहेतवे ॥ नयातियमलोकंसस्वर्गतितातगच्छति ॥४३॥

बहुतही छिपाने योग्य सब दाननमें उत्तम दानको सुनिये वा दानके करनेसों भूमिलोक भुवर्लोक और स्वर्गके वसनहारे संतुष्ट होय हैं
॥ ४१ ॥ ब्रह्मा आदि देवता ऋषि और इंद्र आदि देवता और धर्मराजाकी सभाके लोग सुवर्णके दानसों संतुष्ट होय हैं और वरके देनहारे
होय हैं ॥ ४२ ॥ जाते प्रेतके उद्धारके लिये सुवर्णको दान करनो चाहिये. हे तात ! वह यमलोकको नहीं जायहै स्वर्गकोग तिको प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होय है ॥ ४३ ॥ फिरि बहुतकालतक सत्यलोकमें वास करिकै या लोकमें राजा होय है और रूपवान् धर्मात्मा बोलनेमें चतुर लक्ष्मीवान् और बडो पराक्रमी होय है ॥४४॥ कपासके दानसों दूतनतें भय नहीं होय है और लवण जो दियो जाय है तातें यमतेभय नहीं होयहै ॥४५॥ लोहा नोन कपास तिल सुवर्णके दानसों यमपुरके वसनहारे चित्रगुप्त आदि सब संतुष्ट होयहैं ॥४६॥ सप्तनजाके

चिरंवसेत्सत्यलोकेततोराजाभवेदिह ॥ रूपवान्धार्मिकोवाग्मीश्रीमानतुलविक्रमः ॥ ४४ ॥ कार्पासस्यतुदाने नदूतेभ्योनभयंभवेत ॥ लवणंदीयतेयच्चतेननवभयंयमात् ॥ ४५ ॥ अयोलवणकर्पासतिलकाञ्चनदानतः ॥ चित्रगुप्तादयस्तुष्टायमस्यपुरवासिनः ॥ ४६ ॥ सप्तधान्यप्रदानेनप्रीतोधर्मध्वजोभवेत् ॥ तुष्टाभवन्तियेन्ये पित्रिपुद्वारेष्वधिष्ठिताः ॥ ४७ ॥ व्रीहयोयवगोधूमामुद्गामाषाः प्रियङ्गवः ॥ चणकाःसप्तमाज्ञेयाः सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ ४८ ॥ गोचर्ममात्रंवसुधादत्तापात्रेविधानतः ॥ पुनातिब्रह्महत्यायाद्दष्टमेतन्मुनीश्वरैः ॥ ४९ ॥

दानसों धर्मध्वज प्रसन्न होय हैं और जे यमपुरके तीनि द्वारनमें स्थित हैं वेहू प्रसन्न होय हैं ॥ ४७ ॥ धान १ जव २ गेहूं ३ मूंग ४ उरद ५ कँगुनी ६ और सातवें ७ चने ये सात धान्य कहे हैं ॥४८॥ भूमिके देनेको फल कहैहैं गोचर्म मात्र अर्थात् एक बैलसमेत सौं गौ जितनी भूमिमें बैठैं उतनी भूमिके प्रमाणको सोचर्म कहैहैं तौ जा पुरुषने गोचर्म प्रमाणभूमि विधिसों पात्रको दीहै वह ब्रह्महत्यासों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्र होजायहै यह मुनीश्वरने देखो है ॥ ४९ ॥ न तौ व्रतनसों न तीर्थनसों और अन्यदानसों राज्यमें कियो भयो महापाप नाशको प्राप्त होय है किंतु भूमिके दानसों दूरि होय है ॥ ५० ॥ जो मनुष्य धान्यसों भरीभई पृथिवीको ब्राह्मणको दान करै वह सुर असुरनकरि पूजित हो इंद्रलोकको जाय है ॥५१॥ हे काश्यप ! और दान बहुतही थोडे फलके देनहारे होय हैं और पृथिवीके दानसों

नव्रतेभ्योनतीर्थेभ्योनान्यदानाद्विनश्यति ॥ राज्येकृतंमहापापभूमिदानाद्विलीयते ॥ ५० ॥ पृथिवींसस्य सम्पूर्णांयोददातिद्विजातये ॥ सप्रयातीन्द्रभुवनेपूज्यमानः सुरासुरैः ॥ ५१ ॥ अत्यल्पफलदानिस्युरन्यदा नानिकाश्यप ॥ पृथिवीदानजंपुण्यमहन्यहनिवर्द्धते ॥५२॥ योभूत्वाभूमिपोभूमिंनोददातिद्विजातये ॥ सना प्नोतिकुटींग्रामेदरिद्रीस्याद्भवेभवे ॥५३॥ अदानाद्भूमिदानस्य भूपतित्वाभिमानतः ॥ निवसेन्नरकेयावच्छेषो धारयतेधराम् ॥५४॥तस्माद्भूमीश्वरोभूमिदानमेवप्रदापयेत् ॥ अन्येषांभूमिदानार्थंगोदानंकथितंमया ॥५५॥

उत्पन्न पुण्य दिन दिन बढैहै ॥५२॥ जो राजा होकै ब्राह्मणके लिये भूमिके दानको नहीं करै है वह गाँवमें कुटी नहीं पावै है और जन्मजन्ममें दरिद्री होय है ॥५३॥ भूमिको दान न देनेसों तथा भूपतिपनके अभिमानसों तबलौं नरकमें वास करैहै जबलौंशेषभूमिको धारण करैहै ॥ ५४ ॥ तातें भूमिको स्वामी होकै भूमिके दानहीको करै औरोंको भूमिदानके लिये मैंने गोदान कहो है क्योंकि ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिहू गोरूपही है ॥५५॥ अंतधेनु और आठ़दानमें कही भई रुद्रधेनु क्योंकि रुद्र मृत्युञ्जय हैं तातें मृत्युको दुःख दूरि होनेंके लिये रुद्रधेनु कही तापीछे ऋणधेनु अर्थात् जानेभये और विना जानेभये ऋणके दूरि होनेंके लिये और मोक्षधेनु अर्थात मोक्षके लिये धेनुको दान करै ॥५६॥ हेगरुड ! विशेषविधिसों वैतरणी धेनुको अर्थात् वैतरणी उतरनेके लिये दान करै हे गरुड ! गौयें तीनि प्रकारके पापतें

ततोन्तधेनुर्दातव्यारुद्रधेनुप्रदापयेत् ॥ ऋणधनुततोदत्वामोक्षधेनुंप्रदापयेत् ॥ ५६ ॥ दद्याद्वैतरणीधेनुंविशेषविधिनाखग ॥ तारयन्तिनरंगावस्त्रिविधाच्चैवपातकात ॥ ५७ ॥ बाल्त्वेयच्चकौमारेयत्पापंयौवनेकृतम ॥ वयःपरिणतौयच्चयच्चजन्मान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥ यन्निशायांतथाप्रातर्यन्मध्याह्नापराह्णयोः संध्ययोर्यत्कृतं पापंकायेनमनसागिरा ॥ ५९ ॥ दत्वाधेनुंसकृद्वापिकपिलांक्षीरसंयुताम् ॥ सोपस्करांसवत्सांचतपोवृत्तसमन्विते ॥६०॥ ब्राह्मणेवेदविदुषिसर्वपापः प्रमुच्यते ॥ उद्धरेदन्तकालेसदातारंपापसञ्चयात् ॥ ६१ ॥

तारै हैं ॥५७॥ बालकपनमें कुमार अवस्थामें और तरुणावस्थामें जे पाप किये हैं और बुढापेमें तथा दूसरे जन्ममें जे पाप किये हैं॥५८॥और जो रातिमें प्रातःकाल और मध्याह्न तथा अपराह्णमें और दोनों संध्यानमें मनवाणि तथा कायासों जेपाप करैहैं॥५९॥ जन्मभरमें एकवारहू दूधयुक्त कपिलागौको सब सामग्री तथा बच्चेसमेत तपस्वी ब्राह्मणको दानकरै ॥६०॥ वेदके जाननहारे ब्राह्मणके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये दान करिके सब पापनते छूटि जाय है वह अन्तकालमें दाताको पापके समूहने उद्धार करै है ॥६१॥ सावधान पुरुषको एक गौ आतुरको सौ गौवें और जो तत्काल मरनेंकोहै ताको दानको अनुसंधान न होनेसों एक हजार गौको दान है॥ ६२ ॥और मरेभयेको अर्थात् मरनेके पीछे एक लाख गौको विधिपूर्वक दानसमान फल देनहारो होयहै और तीर्थ तथा सत्पात्रयुक्त वह दान लाख प्रकारको

एकागौः स्वस्थचित्तस्यह्यातुरस्यचगोशतम् ॥ सहस्रंम्रियमाणस्यदत्तंचित्तविवर्जितम् ॥ ६२ ॥ मृतस्यैतत्पुनर्लक्षंविधिपूतंचतत्समम् ॥ तीर्थपात्रसमोपेतंदानमेकंचलक्षधा ॥ ६३ ॥ पात्रेदत्तंचयद्दानंतल्लक्षगुणितंभवेत ॥ दातुः फलमनन्तंस्यान्नपात्रस्यप्रतिग्रहः ॥ ६४ ॥ स्वाध्यायहोमसंयुक्तः परपाकविवर्जितः ॥ रत्नपूर्णामपि महींप्रतिगृह्यनलिप्यते ॥ ६५ ॥ विषशीतापहौमन्त्रवह्नीकिंदोषभागिनौ ॥ अपात्रेसाचगौर्दत्तादातारंनरकंनयेत ॥ ६६ ॥

होय है ॥ ६३ ॥ जो दान पात्रमें दियोजाय है वह लाखगुणो होय है और देनहारेको अनन्तफल होय है और पात्रको प्रतिग्रहको दोष नहीं लगै है ॥ ६४ ॥ स्वाध्याय कहिये वेदको पाठ और होमकरि युक्त तथा पराये पाकसों वर्जित अर्थात् स्वयंपाकी ब्राह्मण रत्नभरि भईहू पृथिवीको दान लेकर प्रतिग्रहके दोषकरि लिप्त नहीं होय है ॥६५॥ विष तथा शीतके दूरि करनहारे मंत्र और अग्नि क्या दोषभागी होय हैं अर्थात नहीं अपात्रमें दान करीगई गौ दाताको नरकमें पहुँचावे है ॥ ६६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और एक सौ एक कुलसमेत लेनहारेको नरकमें डारै है अपनो कल्याण चाहनहारे विद्वान्को अपात्रमें गौकोदान न करनो चाहिये ॥ ६७ ॥ एक गौ एकही मनुष्यको देनी योग्य है और बहुत मनुष्यनके कबहूँ न देनी चाहिये बेचीगई अथवा बाँटीगईवह गौ सातवें कुलपर्यंत नराय देयहै ॥ ६८ ॥ मैंने पहले जो तुमसों वैतरणीनाम नदी कही है ताके पार जानेको उपायरूप गोदानको मैं कहौं हौं ॥

कुलैकशतसंयुक्तंग्रहीतारंतुपातयेत् ॥ नापात्रेविदुषादेयाह्यात्मनःश्रेयइच्छता ॥ ६७ ॥ एकाह्येकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ साविक्रीताविभक्तावादहत्यासप्तमंकुलम् ॥ ६८ ॥ कथितायामयापूर्वंतववैतरणी नदी ॥ तस्याह्युद्धरणोपायंगोदानंकथयामिते ॥ ६९ ॥ कृष्णांवापाटलांवापिधेनुंकुर्यादलंकृताम् ॥ स्वर्णशृङ्गींरौप्यखुरींकांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥ ७० ॥ कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांकण्ठघण्टासमन्वितताम् ॥ कार्पासोपरिसंस्थाप्यताम्रपात्रंसचैलकम् ॥ ७१ ॥ यमंहैमंन्यसेतत्रलोहदण्डसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रेघृतंकृत्वासर्वंतस्योपरिन्यसेत ॥ ७२ ॥

॥६९॥ कृष्णवर्णा वा पाटलवर्णा गौको आभूषणनसों शोभित करै और सोनेकी सींगौटी चांदीकेखुर और कँसेको पात्र है दोहनी जाकी ऐसी होय ॥ ७० ॥ और काले वस्त्रनके जोडेसों ढकीभई और कंठमें सुंदर घंटासों शोभित गौको कपासके ऊपर ठाढी कर अथवा बैठायके वस्त्रनसमेत तांबेको पात्र धरै ॥ ७१ ॥ और वहाँ लोहेके दंडके लिये भये सुवर्णके बनभये यमराजकी स्थापना करै ता पीछे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काँसेके पात्रमें घीको डारि सब वाके ऊपर धरदेवै ॥७२॥ ईखकी नाव बनायके रेसमके सूतसों लपेटै और जलसमेत गढिल्लेमें वा नावको डारै ॥ ७३ ॥ सूर्यकी देहसों उत्पन्न वा गौंको वाके ऊपर स्थापित करि शास्त्रमें कहीभई विधिसों वहाँ धेनुको संकल्पकरै ॥ ७४ ॥ और अलंकारसमेत वस्त्र ब्राह्मणको दान करै और गंध पुष्प अक्षत आदिविधिपूर्वक पूजन करै ॥७५॥ गौकी पूंछ पकरि

नावमिक्षुमयींकृत्वापट्टसूत्रेणवेष्टयेत् ॥ गर्तंविधायसजलकृत्वातस्मिन्क्षिपेत्तरीम् ॥ ७३ ॥ तस्योपरिस्थितां कृत्वासूर्यदेहसमुद्भवाम् ॥ धेनुसंकल्पयेत्तत्रयथाशास्त्रविधानतः ॥ ७४ ॥ सालंकाराणिवस्त्राणिब्राह्मणाय प्रकल्पयेत् ॥ पूजांकुर्याद्विधानेनगन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥ ७५ ॥ पुच्छसंगृह्यधेनोस्तुनावमाश्रित्यपादतः ॥ पुरस्कृत्यततोविप्रमिमंमन्त्रमुदीरयेत् ॥ ७६ ॥ भवसागरमग्नानांशोकतापोर्मिदुःखिनाम् ॥ त्रातात्वंहिजगन्नाथशरणागतवत्सल ॥७७॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धरमहीसुर ॥ सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणीनमः ॥७८॥ ॥ ४८ ॥

पाँवको नावमें धरि ब्राह्मणको आगे करिकै या मंत्रको पढै॥७६॥हे जगन्नाथ ! हे शरणागतवत्सल ! संसाररूपीसागरमें डूबे भये और शोकसंतापरूपी लहरिन करि दुःखी मनुष्यके आप रक्षक हैं ॥ ७७ ॥ हे विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठ ! महीसुर ! मेरो उद्धार करो मैंने तुम्हारे अर्थ दक्षिणासमेत वैतरणी दीन्हीं तुमको नमस्कार है ॥ ७८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अतिघोर यमलोकके मार्गमें सौ योजन चौंडी वा नदीको उतरो चाहतो मैं तुम्हारे लिये या वैतरणीको देऊहौं तुमको नमस्कार है ॥ ७९ ॥ हे धेनुके ! यमद्वारके महापथमें हे देवेशि ! उतारनेके लिये तू मेरी राह देखियो तोकों नमस्कार है ॥ ८० ॥ गौ मेरे आगे होय और गौ मेरे पीछे होय और गौ मेरे हृदयमें होय और गौवनके मध्यमें मैं वास करौंहौं ॥ ८१ ॥ जो लक्ष्मी

यममार्गेमहाघोरेतांनदींशतयोजनाम् ॥ तर्तुकामोददाम्येतांतुभ्यंवैतरणींनमः ॥ ७९ ॥ धेनुकेमांप्रतीक्ष स्वयमद्वारमहापथे ॥ उत्तारणार्थंदेवेशिवैतरण्यैनमोस्तुते ॥ ८० ॥ गावोमेअग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ ८१ ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेप्रतिष्ठिता ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥ ८२ ॥ इतिमन्त्रैश्चसंप्रार्थ्यसाञ्जलिर्धेनुकांयमम् ॥ सर्वंप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ८३ ॥ एवंदद्याद्विधानेनयोगांवैतरणींखग ॥ सयातिधर्ममार्गेणधर्मराजसभान्तरे ॥ ८४ ॥

सब भूतनमें है और जो लक्ष्मी देवतानमें स्थित है वह धेनुके रूपसों मेरे पापनको नाश करौ ॥ ८२ ॥ हाथ जोरेभये इन मंत्रनको पढिकै धेनुकाकी और यमकी प्रार्थना करि प्रदक्षिणा करिकै सब ब्राह्मणनको देदेवै ॥ ८३ ॥ हे खग ! याप्रकार विधानसों जो गौको वैतरणीमें देयहै वह धर्मके मार्गमें होंकै धर्मराजकी सभाके मध्यमें जाय है ॥ ८४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वस्थ हैं अवस्था जाकी ऐसो शरीर होनेपै वैतरणीको व्रत करै और वा नदीके पार होवेकी है इच्छा जाकी ऐसे विद्वानकरि धेनुदान करनो चाहिये ॥ ८५ ॥ हे गरुड ! वह महानदी गोदान करनेसे महामार्गमें नहीं आवे है तातें पुण्यकालमें अवश्य गोदान करनो योग्य है ॥८६॥ गंगाआदि सब तीर्थनमें और ब्राह्मणनके स्थानमें और चंद्र सूर्यके ग्रहणमें संक्रांतिमें तथा अमावास्याको ॥८७॥ अयनोंमें

स्वस्थावस्थशरीरेतुवैतरण्याव्रतंचरेत् ॥ देयाचविदुषाधेनुस्तांनदींतर्तुमिच्छता ॥ ८५ ॥ सानायातिमहामार्गे गोदानेननदीखग ॥ तस्मादवश्यंदातव्यंपुण्यकालेषुसर्वदा ॥ ८६ ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषुब्राह्मणावसथेषुच ॥ चन्द्रसूर्योपरागेषुसंक्रान्तौदर्शवासरे ॥ ८७ ॥ अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेयुगादिषु ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदद्या द्गोदानमुत्तमम् ॥ ८८ ॥ यदैवजायते श्रद्धा पात्रंसम्प्राप्यतेयदा ॥ सएवपुण्यकालः स्याद्यतः सम्पत्तिर स्थिरा ॥ ८९ ॥ अस्थिराणिशरीराणिविभवोनैवशाश्वतः ॥ नित्यंसन्निहितोमृत्युःकर्तव्योधर्मसंचयः ॥९०॥

और मेष कर्क मकर और तुलाकी संक्रांतिमें व्यतीपातमें और युगादि जो अक्षयतृतीया आदि तिथि हैं तिनमें और सब पुण्यकालनमें उत्तम गोदान करनो योग्यहै ॥८८॥ जबही श्रद्धा उत्पन्न होतीहै तभी पात्र मिल जाताहै वही पुण्यकालहै कारण यह है कि जाते संपत्ति स्थिर नहीं है ॥८९॥ शरीर अस्थिरहै और विभव सदा नहीं रहैहै और मृत्यु सदा निकटही है तातें धर्मको संग्रह करनो चाहिये॥९०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने वित्तके अनुसार उन समयनमें दियोभयो दान अनंत होय है अपना कल्याण चाहनेवाले पुरुषको विद्वान् ब्राह्मणके लिये देनो योग्य है ॥ ९१ ॥ अपने हाथनसों अपने लिये कियोगयो थोरहू दान अक्षय होयहै और तत्काल प्राप्त होय है ॥ ९२ ॥ जाने दानरूपी राहको खरच ले लियो है वह महामार्गमें सुखसों जाय है अन्यथा राहको खरच विना प्राणी मार्गमें क्लेशको पावै है ॥

आत्मवित्तानुसारेणतत्रदानमनन्तकम् ॥ देयंविप्रायविदुषेस्वात्मनः श्रेयइच्छता ॥ ९१ ॥ अल्पेनापिहिवित्ते नस्वहस्तेनात्मनेकृतम् ॥ तदक्षय्यंभवेद्दानंतत्कालंचोपतिष्ठति ॥ ९२ ॥ गृहीतदानपाथेयःसुखयातिमहाध्व नि ॥ अन्यथाक्लिश्यते जन्तुः पाथेयरहितः पथि ॥ ९३ ॥ यानियानिचदानानिदत्तानिभुविमानवैः॥यमलो कपथेतानिह्युपतिष्ठन्तिचाग्रतः ॥ ९४ ॥ महापुण्यप्रभावेणमानुषंजन्मलभ्यते ॥ यस्तत्प्राप्यचरेद्धर्मंसयाति परमांगतिम् ॥९५॥ अविज्ञायनरोधर्मंदुःखमायातियातिच ॥ मनुष्यजन्मसाफल्यंकेवलंधर्मसेवनम् ॥९६॥

॥ ९३ ॥ जो जो दान पृथिवीमें मनुष्यनकरि दिये गये हैं वे वे यमलोकके मार्गमें आगे प्राप्त होय हैं ॥ ९४ ॥ बडे पुण्यके प्रभावसों मनुष्यजन्म मिले है जो वा मनुष्य देहको पायकै धर्म करै है वह परमगति जो मोक्ष है ताको प्राप्त होय है ॥ ९५ ॥ मनुष्य धर्मको न जानिकै दुःखसों आवै है और चलोजाय है मनुष्यजन्मको सफल होनो केवल धर्मको सेवन है ॥ ९६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन पुत्र स्त्री आदि और शरीरहू तथा भाई बंधु ये सब अनित्य हैं तातें धर्मको करे ॥ ९७ ॥ तबलौं बंधु पिता और माता हैं जबलौं मनुष्य जीवैहै मरेभयोंका अंतर जानिके क्षणमेंही स्नेह दूरि होजायहै ॥ ९८ ॥ अपनो आत्माही अपनो बंधु है या बातको बारंबार जानै जीवते भयेहू यह चिंतवन करके मरेभयोंको कौन देगो ॥ ९९ ॥ ऐसो जानतो भयो पुरुष यह सब अपने हाथहीसों दान करै यह

धनपुत्रकलत्रादि शरीरमपिबान्धवाः ॥ अनित्यंसर्वमेवेदंतस्माद्धर्मसमाचरेत् ॥ ९७ ॥ तावद्बन्धुः पिताता वद्यावज्जीवतिमानवः ॥ मृतानामन्तरंज्ञात्वाक्षणात्स्नेहोनिवर्तते ॥ ९८ ॥ आत्मैवह्यात्मनोबन्धुरितिविद्या न्मुहुर्मुहुः ॥ जीवन्नपीतिसंचिन्त्यमृतानांकः प्रदास्यति ॥९९॥ एवंजानन्निदंसर्वंस्वहस्तेनैवदीयताम्॥अनित्यं जीवितंयस्मात्पश्चात्कोपिनदास्यति ॥ १०० ॥ मृतंशरीरमुत्सृज्यकाष्ठलोष्ठसमंक्षितौ ॥ विमुखाबान्ध वायान्तिधर्मस्तमनुगच्छति ॥१०१॥ गृहादर्थानिवर्तन्तेश्मशानात्सर्वबान्धवाः ॥ शुभाशुभंकृतंकर्मगच्छन्त मनुगच्छति ॥ १०२ ॥

जीवनो अनित्य है पीछे कोई नहीं देयगो ॥१००॥ मरेभये शरीरको काष्ठ तथा कंकरके समान पृथ्वीमें छोडकै मुख मोरिकै बांधव चले जायँ हैं धर्मही वाके साथ जाय है ॥ १०१ ॥ घरसें तौ अर्थ निवृत्त होजाय हैं और श्मशानतें सब भाई लौटिजाय हैं केवल कियो भयो शुभ अशुभ कर्म जातेभये वाके साथ जाय है ॥ १०२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीर तौ आगिकरि जरायो गयो और कियोभयो कर्म साथ रहौ पुण्यको अथवा पापको मनुष्य सर्वत्र भोगै है॥१०३॥दुःखके साग रूप संसारमें कोई काहूको बंधु नहीं है कर्मके संबंधसों प्राणी आवै है और कर्मके क्षीण होनेपै फिर चलौजायहै॥१०४॥माता पिता पुत्र भ्राता बंधु और दारा आदिक सगम प्याऊमें जीवोंके समान और नदीमें काष्ठके समूहके समान चलायमान है ॥१०५॥ किसके

शरीरंवह्निनादग्धंकृतंकर्मसहास्थितम् ॥ पुण्यंवायदिवापापंभुङ्क्तेसर्वत्रमानवः ॥ १०३ ॥ नकोपिकस्यचिद्ब न्धुःसंसारेदुःखसागरे ॥ आयातिकर्मसम्बन्धाद्यातिकर्मक्षयेपुनः ॥ १०४ ॥ मातृपितृसुतभ्रातृबन्धुदारादि सङ्गमः ॥ प्रपायामिवजन्तूनांनद्यांकाष्ठौघवच्चलः ॥१०५॥ कस्यपुत्राश्चपौत्राश्चकस्यभार्याधनंचवा ॥ संसारेना स्तिकः कस्यस्वयंतस्मात्प्रदीयताम् ॥१०६॥ आत्मायत्तंधनंयावत्तावद्विप्रेसमर्पयेत् ॥ पराधीनेधनेजातेनकिं चिद्वक्तुमुत्सहेत् ॥१०७॥ पूर्वजन्मकृताद्दानादत्रलब्धंधनंबहु॥तस्मादेवंपरिज्ञायधर्मार्थेदीयतांधनम् ॥१०८॥

पुत्र और पौत्र किसकी भार्या तथा धन संसारमें कोई किसीका नहीं है तातें आप देनो चाहिये॥१०६॥ जबलौं धन आपने आधीन है तबलौं ब्राह्मणको समर्पण करै और धनके पराधीन होजानेपै कुछ कहनेको उत्साह न करै॥१०७॥पूर्वजन्ममें करेभये दानसों यहां धन बहुतसो प्राप्त भयो तातें ऐसो जानिकै धर्मके अर्थ धन देनो चाहिये ॥ १०८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मते अर्थ होयहै और धर्मते काम होयहै धर्महीं मोक्षके लिये होय है तातें धर्म करै॥१०९॥धर्म श्रद्धासों धारण कियोजायहै बहुतसे धनके समूहसों नहीं धनहीनमुनि श्रद्धाके कारण स्वर्गको गये ॥११०॥ पत्र पुष्प फल और जल जो मोकोंदेय है श्रद्धासों पवित्र है चित्त जाको ऐसे मनुष्यनकरि भक्तिसों समर्पण कियेगये वाको मैं भोजन करौं हौं ॥१११॥ तातें विधानसो दान अवश्य देनो चाहिये

धर्मात्संजायतेऽर्थश्चधर्मात्कामोभिजायते ॥ धर्मएवापवर्गायतस्माद्धर्मंसमाचरेत् ॥ १०९ ॥ श्रद्धयाधार्यतेधर्मोबहुभिर्नार्थराशिभिः ॥निष्किञ्चनाहिमुनयः श्रद्धावन्तोदिवंगताः ॥११०॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्या प्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥ १११ ॥ तस्मादवश्यंदातव्यंतदादानंविधानतः॥अल्पंवाबहुवेतीमांगणनांनैवकारयेत् ॥ ११२ ॥ धर्मात्माचसपुत्रोवैदेवतैरपिपूज्यते ॥ दापयेद्यस्तुदानानिपितरंह्यातुरंभुवि ॥११३॥ पित्रोर्निमित्तंयद्वित्तं पुत्रैःपात्रेसमर्पितम्॥ आत्मापिपावितस्तेनपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः ॥११४॥ पितुः शतगुणंपुण्यंसहस्रंमातुरेवच ॥ भगिनीदशसाहस्रंसोदरेदत्तमक्षयम् ॥ ११५ ॥

थोडा है अथवा बहुतहै या बातकी गिनती न करै ॥११२॥ धर्मात्मा और सुपुत्र देवतानकरीहू पूजो जाय है जोभूमिमें आतुर पिताको दान दिवावै है॥११३॥माता पिताके निमित्त जो धन पुत्रनकरि पात्रको दियोजायहै वा धनसों वाने पुत्र पौत्र प्रपौत्रलौं आत्माहू पवित्र कीन्हों॥११४॥पिताको सौगुनो पुण्य होयहै और माताको हजारगुनो और बहिनको दशहजारगुनो और सहोदरमें दियो अक्षयहै११५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देनहारेको कोई उपद्रव नहीं होय है और नरककी यातनाहू नहीं होय है और मरनेके समय यमके दूतनसों उत्पन्न भयहू नहीं होय है ॥ ११६ ॥ जे आतुरसमयमें लोभसों नहीं दान करे हैं हे गरुड ! वे कृपण पापी मरनेके पीछे शोच करे हैं ॥ ११७ ॥ भाईसमेत

नचैवोपद्रवादातुर्नवानरकयातनाः ॥ मृत्युकालेचनभयंयमदूतसमुद्भवम् ॥ ११६ ॥ यदिलोभान्नयच्छन्ति कालेह्यातुरसंज्ञके ॥ मृताः शोचन्तितेसर्वेकदर्याः पापिनः खग ॥ ११७ ॥ पुत्राः पौत्राःसहभ्रात्रासगोत्राःसुहृदस्तुये ॥ ददंतिनातुरेदानंब्रह्मघ्नास्तेनसंशयः ॥ ११८ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेआतुरदाननिरूपणोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ गरुडउवाच ॥ कथितंभवतासम्यग्दानमातुरकालिकम् ॥ म्रियमाणस्ययत्कृत्यं तदिदानींवदप्रभो ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिदेहत्यागस्यतद्विधिम् ॥ मृतायेनविधानेन सद्गतियान्तिमानवाः ॥ २ ॥

पुत्र पौत्र सगोत्री और जे मित्र हैं वे आतुरसमयमें दान नहीं देय हैं यातें वे निस्संदेह ब्रह्महत्यारे हैं ॥ ११८ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ गरुड बोले आपने आतुर कालको दान बहुत श्रेष्ठकहो. हे प्रभु ! मरतोभयो जो प्राणी है ताको जो कृत्य है ताको तुम या समय यथार्थकहो॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनो देहके त्यागकी वा विधिको मैं तुमसों कहौंगो जा विधानसों मरे भये नर सद्गतिको प्राप्त होय ॥ २ ॥ यहां जब देही कर्मके योगसों अपने शरीरको छोडे वा समय तुलसीके समीप गोबरको मंडल बनावै ॥ ३ ॥ वामें तिलनको फैलाकै वामें कुश डालै तब सफेद आसनपर शालग्राम शिलाको स्थापित करै ॥ ४ ॥ पाप दोष और भयकी नाश करनहारी शालग्रामकी शिला है

कर्मयोगाद्यदादेहीमुञ्चत्यत्रनिजवपुः ॥ तुलसीसन्निधौकुर्यान्मण्डलंगोमयेनतु ॥ ३ ॥ तिलांश्चैवविकीर्याथ दर्भांश्चैवविनिक्षिपेत् ॥ स्थापयेदासनेशुभ्रेशालग्रामशिलांतदा ॥ ४ ॥ शालग्रामशिलायत्रपापदोषभयापहा ॥ तत्सन्निधानमरणान्मुक्तिर्जन्तोः सुनिश्चिता ॥ ५ ॥ तुलसीविटपच्छायायत्रास्तिभवतापहा ॥ तत्रैव मरणान्मुक्तिः सर्वदा दानदुर्लभा ॥ ६ ॥ तुलसीविटपस्थानंगृहेयस्यावतिष्ठते ॥ तद्गृहंतीर्थरूपंहिनयान्तियम किंकराः ॥ ७ ॥ तुलसीमञ्जरीयुक्तोयस्तुप्राणान्विमुञ्चति ॥ यमस्तंनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ॥८॥

वाके समीप मरनेसों प्राणीकी निश्चय मुक्ति होयगी ॥ ५ ॥ संसारके तापके दूरिकरनहारी तुलसीके वृक्षकी छाया जहां विद्यामान हैं वहांई मरनेसों मुक्ति होय है वह सर्व दानसों दुर्लभ है ॥ ६ ॥ जाके घरमें तुलसीके वृक्षको स्थानहै वह गृह तीर्थरूप है वामें यमके दूत नहीं जावैहैं ॥७॥ जो तुलसीकी मंजरीकरि युक्त हो प्राणनको छोडे हैं तौ सैकरों पापनकरि युक्तहू वा प्राणीको यम नहीं देखिसकै है ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुलसीको दल मुखमें धरके तिल कुशके आसनपर मरो भयो प्राणी पुत्रहीन होनेहू पर निस्संदेह विष्णु पुरको जाय है ॥ ९ ॥ तीनि प्रकारके तिल दर्भ और तुलसीदल ये सब दुर्गतिको प्राप्त होतेभये आतुरको निवारण करैं हैं ॥ १० ॥ मेरे स्वेदसों उत्पन्न हैं यातें तिल पवित्र हैं तातें तिलनसों असुर दानव दैत्यसों भागै हैं ॥ ११ ॥ हे गरुड ! मेरे रोमसों उत्पन्न तिल मेरी विभूति है यातें

तस्यादलंमुखेकृत्वातिलदर्भासनेमृतः ॥ नरोविष्णुपुरंयातिपुत्रहीनोप्यसंशयः ॥९॥ तिलाःपवित्रास्त्रिविधादर्भाश्चतुलसी तथा ॥ नरंनिवारयन्त्येतेदुर्गतिंयान्तमातुरम् ॥ १० ॥ ममस्वेदसमुद्भूतायतस्तेपावनास्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्याविद्रवन्तितिलैस्ततः ॥ ११ ॥ दर्भाविभूतिर्मेताक्ष्र्यममरोमसमुद्भवाः अतस्तत्स्पर्शनादेवस्वर्गंगच्छन्तिमानवाः ॥१२॥ कुशमूलेस्थितोब्रह्माकुशमध्येजनार्दनः ॥ कुशाग्रेशङ्करो देवस्त्रयोदेवाःकुशेस्थिताः ॥१३॥ अतःकुशावह्निमन्त्रतुलसीविप्रधेनवः ॥ नैतेनिर्माल्यतांयान्तिक्रियमाणाः पुनःपुनः ॥१४॥

उनके स्पर्शमात्रहीसों नर स्वर्गलोकको जाय हैं ॥ १२ ॥ कुशके मूलमें ब्रह्मा स्थित है और कुशके मध्यमें जनार्दन और कुशके अग्र कहिये नोकमें शंकर देव या प्रकार तीनों देवता कुशमें स्थित हैं ॥ १३ ॥ यातें कुश अग्नि मंत्र तुलसी ब्राह्मण और गौ ये बारंबार काममें लगानेहूपर निर्माल्य नहीं होते हैं ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दर्भ पिंडनमें निर्माल्य होय हैं और ब्राह्मण प्रेतके भोजनमें निर्माल्य होयहैं मंत्र गो तुलसी नीचमें और चितामें अग्नि निर्माल्य हो जायहैं ॥१५॥ दर्भके बिछौनेसों संस्कारकरे भये और गोबरसों लिपेभये स्थानमें आतुरको परा मैं अंतरिक्षको त्याग करै ॥१६॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र और अग्नि, ये सब देवता मंडलके ऊपर बैठे हैं तातें मंडल करै॥१७॥विना लीपी सब भूमि पवित्र और जहां लिपी है वहां फिरि

दर्भाःपिण्डेषुनिर्माल्याब्राह्मणाः प्रेतभोजने ॥ मन्त्रागौस्तुलसीनीचेचितायांचहुताशनः ॥ १५ ॥ गोमयेनोपलिप्तेतुदर्भास्तरणसंकृते ॥ भूतलेह्यातुरंकुर्यादंतरिक्षविवर्जयेत् ॥ १६ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसर्वेदेवाहुताशनः ॥ मण्डलोपरितिष्ठन्तितस्मात्कुर्वीतमण्डलम् ॥ १७ ॥ सर्वत्रवसुधापूतालेपोयत्रनविद्यते ॥ यत्रलेपःकृतस्तत्रपुनर्लपेनशुध्यति ॥ १८ ॥ राक्षसाश्च पिशाचाश्चभूताः प्रेतायमानुगाः ॥ अलिप्तदेशेखट्वायामन्तरिक्षेविशंतिच ॥१९॥ अतोऽग्निहोत्रंश्राद्धंचब्रह्मभोज्यंसुरार्चनम् ॥ मण्डलेनविनाभूम्यामातुरंनैवकारयेत् ॥२०॥ लिप्तभूम्यामतः कृत्वास्वर्णरत्नंमुखेक्षिपेत ॥ विष्णोःपादोदकंदद्याच्छालग्रामस्वरूपिणः ॥ २१ ॥

लिपनेसों पवित्र होयहै॥१८॥पिशाच राक्षस भूत प्रेत और यमके दूत विना लिपेभये स्थानमें खाटमें और अंतरिक्षमें प्रवेश करैं हैं ॥१९॥ यातें अग्निहोत्र श्राद्ध ब्राह्मणभोजन और देवतानको पूजन इन सबको विना मंडलकी भूमिमें आतुरसों न करावैं ॥ २० ॥ तापीछे वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतुरको लिपीभई भूमिमें पराके वाके मुखमें सुवर्ण और रत्न डारै फिर शालग्रामस्वरूप जे विष्णु हैं तिनको चरणामृत डारै॥२१॥ फिर शालग्राम शिलाके जलको जो बिंदुमात्रहू पीवैहै वह सब पापनसों छूटिकै मुक्तिको प्राप्त होयहै ॥२२ ॥ता पीछे महापातकके नाश करनहारे गंगाजलको देय वह गंगाजल सब तीर्थनमें करेभये जो हैं स्नानदान और पुण्य तिनके फलको देनहारोहै ॥२३ ॥ जो कायाके

शालग्रामशिलातोयंयःपिबेद्बिन्दुमात्रकम् ॥ ससर्वपापनिर्मुक्तोवैकुण्ठभुवनंव्रजेत् ॥२२॥ ततोगङ्गाजलंदद्या
न्महापातकनाशनम्॥सर्वतीर्थकृतस्नानदानपुण्यफलप्रदम् ॥२३॥ चान्द्रायणंचरेद्यस्तुसहस्रंकायशोधनम् ॥
पिबेद्यश्चैवगङ्गाम्भःसमौस्यातामुभावपि ॥ २४ ॥ अग्निंप्राप्ययथाताक्ष्र्यतूलराशिर्विनश्यति ॥ तथागङ्गा
म्बुपानेनपातकभस्मसाद्भवेत् ॥ २५ ॥ यस्तुसूर्यांशुसन्तप्तंगङ्गायाः सलिलंपिबेत ॥ ससर्वयोनिनिर्मुक्तः प्रया
तिसदनंहरेः॥२६॥नद्योजलावगाहेनपावयन्तीतराञ्जनान्॥दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथागङ्गेति कीर्तनात् ॥२७॥

शुद्ध करनहारे एकहजार चांद्रायणव्रत करै है वह और गंगाजलको जो पीवै है वह ये दोनों पृथिवीमें समान होते हैं ॥ ॥ २४ ॥हे गरुड ! आगिको पाकै जैसे रुईको ढेर नष्ट हो जाय है तैसेही गंगाजलके पीनेसों संपूर्ण पाप भस्म होजायहै ॥२५॥ जो सूर्यकी किरणनसों तपे भये गंगाजलको पीवै है वह सब योनिनतें छूटिकै हरिके घरको जायहै ॥२६ ॥नदीजलमें स्नान करनेसों इतर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनुष्यनको पवित्र करती हैं और गंगा दशनसों स्पर्शनसों पीनेसों और गंगा या नामके कहनेसों ॥२७॥ सैकरन हजारन अपवित्र पुरुषनको पवित्र करे है. तातें संसारके तारनहारो जो वाको जलहै ताहि पीवै ॥२८॥ जो पुरुष कंठमें आये भयेहू प्राणनसों गंगा ऐसे कहै है वह मरिके विष्णुपुरको जाय है पृथिवीमें फिर नहीं उत्पन्न होय है ॥२९॥ श्रद्धायुक्त जो पुरुष निकलते भये प्राणनसों गंगाको

पुनात्यपुण्यान्पुरुषाञ्छतशोथसहस्रशः ॥ गंगातस्मात्पिबेत्तस्याजलंसंसारतारकम् ॥ २८ ॥ गंगागंगेतियो ब्रूयात्प्राणैःकण्ठगतैरपि॥मृतोविष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि॥२९॥उत्क्रामद्भिश्चयःप्राणैःपुरुषःश्रद्धयान्वितः ॥ चिन्तयेन्मनसागङ्गांसोपियातिपरांगतिम् ॥ ३० ॥ अतोध्यायेन्नमेद्गङ्गांसस्मरेत्तज्जलंपिबेत् ॥ ततोभागवतंकिंचिच्छृणुयान्मोक्षदायकम् ॥ ३१ ॥ श्लोकंश्लोकार्धपादवायोन्तेभागवतंपठेत् ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥ ३२ ॥ वेदोपनिषदांपाठाच्छिवविष्णुस्तवादपि ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांमरणमुक्तिदायकम् ॥३३॥

मनमें चिंतवन करै हैं वह मोक्षको प्राप्त होय है ॥ ३० ॥ यातें गंगाजीको ध्यान करै नमस्कार करै और वाके जलको पीवै तापीछे मोक्षको देनहारो कुछ भागवत सुनै॥३१॥एक श्लोक वा आधा श्लोक अथवा चौपाई श्लोकहू भागवतको जो अंतसमयमें पढै है वाको ब्रह्मलोकतें कबहूँ लौटनो नहीं होय ॥ ३२ ॥ उपनिषदोंके पाठसों और शिव तथा विष्णुके स्तोत्रनसों ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नकी मृत्यु मुक्तिकी देनहारी है ॥ ३३ ॥ हे गरुड ! प्राणनकी यात्राके समय अनशन व्रत करै अर्थात् कुछ न खाय और विरक्त द्विज
न्माको आतुर संन्यास देवै ॥ ३४ ॥ जो कंठमें आये भये प्राणनसों मैने संन्यास लियो ऐसे कहै है वह मरिकै विष्णुके लोकको जाय है
भूमिमें फिर नहीं उत्पन्न होय है ॥ ३५ ॥ या प्रकार जाको आतुर कृत्य भयो है ऐसे धर्मात्मा पुरुषके प्राण सुखसों ऊपरके छिद्रमें होकै

प्राणप्रयाणसमयेकुर्यादनशनंखग ॥ दद्यादातुरसंन्यासंविरक्तस्यद्विजन्मनः ॥ ३४ ॥ संन्यस्तमितियोब्रूया
त्प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ मृतोविष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि ॥ ३५ ॥ एवंजातविधानस्यधार्मिकस्यतदाखग ॥
ऊर्ध्वच्छिद्रेणगच्छन्तिप्राणास्तस्यसुखेनहि ॥ ३६ ॥ मुखंचचक्षुषीनासेकर्णौद्वाराणिसप्तच ॥ एभ्यःसुकृति
नोयान्तियोगिनस्तालुरन्ध्रतः ॥ ३७ ॥ अपानान्मिलितप्राणौयदाहिभवतः पृथक् ॥ सूक्ष्मीभूत्वातदावायुर्वि
निष्क्रामतिपुत्तलात् ॥ ३८ ॥ शरीरंपततेपश्चान्निर्गतेमरुतीश्वरे ॥ कालाहतंपतत्येवंनिराधारोयथाद्रुमः ॥३९॥

निकसैं हैं ॥ ३६ ॥ मुख आँख नाक और दोनों कान ये सात द्वार हैं इनमें होकै सुकृतीके प्राण जांय हैं और योगीके तालुके छिद्रमें
होकै जाय हैं ॥ ३७ ॥ मिले भये प्राण जब अपानते जुदे होय हैं तब वायु सूक्ष्म होकर पुतलेतें निकलजाय है ॥ ३८ ॥ या प्रकार कालकरि
आहत शरीर ईश्वर जो वायु तिसके निकल जानेपर वृक्षके निराधार समान पतित होजाय है ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणनकरिकै छोडो गयो शरीर चेष्टारहित और जुगुप्सित तथा नहीं छुने योग्य और शीघ्रही दुर्गंधयुक्त तथा निंदित होजाय है ॥ ४० ॥ कृमि विष्ठा और भस्म रूपसों शरीरकी तीनि प्रकारकी अवस्था होय हैं और क्षणमें विध्वंस होनेवाले शरीरपर मनुष्यनकरि काहेको गर्व कियो जाय है॥४१॥पृथिवीमें पृथिवी और जलमें जल और तेजमें तेज लीन हो है और पवनमें पवन लीन होजायहै॥४२॥वैसेही आकाश

निर्विचेष्टंशरीरंतुप्राणैर्मुक्तंजुगुप्सितम् ॥ अस्पृश्यंजायतेसद्योदुर्गन्धंसर्वनिन्दितम् ॥ ४० ॥ त्रिधावस्थाशरीरस्यकृमिविड्भस्मरूपतः ॥ किंगर्वः क्रियतेदेहेक्षणविध्वंसिभिर्नरैः ॥ ४१ ॥ पृथिव्यांलीयतेपृथ्वीआपश्चैव तथाप्सुच ॥ तेजस्तेजसिलीयेतसमीरस्तुसमीरणे ॥ ४२ ॥ आकाशश्चतथाकाशेसर्वव्यापीचशङ्करः ॥ नित्यमुक्तोजगत्साक्षीआत्मादेहेष्वजोमरः ॥ ४३ ॥ सर्वेन्द्रिययुतोजीवः शब्दादिविषयैर्वृतः ॥ कामरागादिभिर्युक्तः कर्मकोशसमन्वितः ॥४४॥ पुण्यवासनयायुक्तोनिर्मितंस्वेनकर्मणा ॥ प्रविशेत्सनवेदेहेगृहेदग्धेयथागृही ॥४५॥

में आकाश लीन होजाय है वह आकाश सर्व व्यापी और शिवरूप है नित्य मुक्त जगतका साक्षीरूप अपर आत्मा देहमें स्थित रहैहै ॥ ४३ ॥ सब इंद्रियोंकरिकै युक्त जीव शब्द आदिविषयों करि घेरागया कामराग आदि करिकै तथा कर्मकोशकरि युक्त हो ॥ ४४ ॥ पुण्यकी वासना करिकै युक्त हौ अपने कर्मकरि बनाये भये नवीन देहमें जैसे जरिजानेपर घरवाला दूसरे घरमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रवेश करै है ऐसे प्रविष्ट होजाय हैं ॥ ४९ ॥ तब किंकिणीके जालनकी है माला जामें ऐसे विमानको ले करि चलते भये चमरोंसों शोभित देवतानके दूत आवैं हैं ॥ ४६ ॥ धर्मको तत्व जाननहारे पंडित और जिनको सदा धर्मात्मा प्यारे हैं ऐसे देवतानके दूत तब कृतकृत्य या प्राणीको विमानमें बैठाय स्वर्गको लेजावे हैं ॥ ४७ ॥ सुन्दर दिव्य है देवतारूप देह जाको और निर्मल हैं वस्त्र तथा

तदाविमानमादायकिंकिणीजालमालियत्॥आयान्तिदेवदूताश्चलसच्चामरशोभिताः ॥ ४६ ॥ धर्मतत्त्वविदः प्राज्ञाःसदाधार्मिकवल्लभाः ॥ तदैनंकृतकृत्यंस्वर्विमानेननयन्तिते ॥ ४७ ॥ सुदिव्यदेहोविरजाम्बरस्रक्सुवर्णरत्नाभरणैरुपेतः ॥ दानप्रभावात्समहानुभावः प्राप्नोति नाकंसुरपूज्यमानः ॥ ४८ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेम्रियमाणकृत्यनिरूपणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ गरुडउवाच ॥ देहदाहविधानंचविभोसुकृतिनांवद ॥ सतीयदिभवेत्पत्नीतस्याश्चमहिमांवद ॥ १ ॥

माला जाकी और रत्नकरि जडे भये आभरणनकरि युक्त और दानके प्रतापसों महानुभाव वह पुरुष देवतानकरि पूज्यमान हो स्वर्गमें प्राप्त होय है ॥ ४८ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ गरुड बोले ॥ हे विभो ! समर्थ सुकृति पुरुषनकी देहके दाहको विधान कहिये और जो वाकी स्त्री सती होय तौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाकीहू महिमा कहिये ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड ! सुनो मैं सब और्ध्वदैहिक अर्थात् मरनेके पीछेके कर्म कहौंगो जाको करिकै पुत्र पौत्र पिताके ऋणतें मुक्त होजाय है ॥ २ ॥ दिये भये बहुतसे दाननसों कहा है माता पिताकी अंत्येष्टि करै तातें पुत्र अग्निष्टोमयज्ञके समान फलको प्राप्त होय ॥ ३ ॥ तापीछे शोकको छोडिकै पुत्र मुंडन करावै सब पापनके दूरि होनेके लिये सब भाई बंधुनसमेत मुंडन करावै ॥ ४ ॥ माता पिता जाके मरिगये और जाने मुंडन नहीं करायो वह संसारसमुद्रको तारनहारो पुत्र अपनी

श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिसर्वमेवौर्ध्वदैहिकम् ॥ यत्कृत्वापुत्रपौत्राश्चमुच्यन्तेपैतृकादृणात ॥ २ ॥ किंदत्तैर्बहुभिर्दानैः पित्रोरन्त्येष्टिमाचरेत् ॥ तेनाग्निष्टोमसदृशं पुत्रःफलमवाप्नुयात्॥३॥तदाशोकंपरित्यज्यकारयेन्मुंडनंसुतः ॥ समस्तबांधवैर्युक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥ ४ ॥ मातापित्रोर्मृतौयेनकारितंमुंडनंनहि ॥ आत्मजः सकथंज्ञेयःसंसारार्णवतारकः॥५॥अतोमुंडनमावश्यंनखकक्षविवर्जितम् ॥ ततःसबांधवः स्नात्वाधौतवस्त्राणिधारयेत॥६॥सद्योजलंसमानीयततस्तंस्नापयेच्छवम् ॥ मण्डयेच्चंदनैःस्रग्भिर्गङ्गामृत्तिकयाथवा॥७॥

आत्मातें उत्पन्न कैसे जानिये ॥ ५ ॥ यातें नख और काँखको छोडिकै मुंडन अवश्य करवानो चाहिये ता पीछे बांधवन समेत स्नान करिकै धुलेभये वस्त्रनको धारण करै ॥ ६ ॥ हालको नवीन जल मँगवाकै वा मृतकशरीरको स्नान करावै फिरि चन्दन माला आदिसों अथवा गंगाकी मृत्तिकासों शोभित करै ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवीन वस्त्रनसों वाहि ढाकि फिरि दक्षिणासमेत पिंड देवै नाम और गोत्रको उच्चारणकरि अपसव्य हो संकल्प करै ॥ ८ ॥ मृत्युस्थानमें शवनाम है ताके नामसों पिंड दिवावै ता पिंडसों भूमि और उसकी अधिष्ठातृ देवता प्रसन्न होय है ॥ ९ ॥ द्वारदेशमें वह पांथ हो ताके नामसों पिंडदान करै वा द्वार पिंडसों भूतनकी गणनामें दुष्ट अशुद्धस्थानमें प्राप्तभये वे विघ्नकरनेको समर्थ नहीं होयहैं ॥ १० ॥

नवीनवस्त्रैःसंच्छाद्यतदापिण्डंसदक्षिणम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्यसंकल्पेनापसव्यतः ॥ ८ ॥ मृत्युस्थानेशवोनामतस्यनाम्नाप्रदापयेत ॥ तेनभूमिर्भवेत्तुष्टातदधिष्ठातृदेवता ॥९॥ द्वारदेशेभवेत्पान्थस्तस्यनाम्नाप्रदापयेत ॥ तेननैवोपघातायभूतकोटिषुदुर्गताः ॥१०॥ ततःप्रदक्षिणां कृत्वापूजनीयः स्नुषादिभिः ॥ स्कंधःपुत्रेणदातव्यस्तदान्यैर्बान्धवैः सह ॥ ११ ॥ धृत्वास्कन्धेस्वपितरंयः श्मशानायगच्छति ॥ सोश्वमेधफलंपुत्रोलभतेच पदेपदे ॥ १२ ॥ नीत्वास्कधेस्वपृष्ठेंकेसदातातेनलालितः ॥ तदैवतदृणान्मुच्येन्मृतंस्वपितरंवहेत ॥ १३ ॥

ता पीछे प्रदक्षिणाकरि पुत्र, वधू आदिकरि पूजने योग्य है वा समय और बांधवोंसमेत पुत्रको कंधा लगानो चाहिये ॥ ११ ॥ पिताको कंधोंमें धरिकै जो श्मशानको जाय है वह पुत्र पदपदमें अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्त होयहै ॥ १२ ॥ सदा पिताकरि प्यार कियोगयो पुत्र अपने मरेभये पिताको कंधेमें अथवा अपनी पीठिपर लेजातो भयो तत्काल वा ऋणसों छूटि जाय है ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ता पीछे आधे मार्गमें भूमिको झारि छिरकाव करिके विश्राम करावै तापीछे भूत है संज्ञा जाकी ऐसे वा प्रेतके लिये पिंडदान करावै ॥१४॥ पिशाच राक्षस यक्ष तथा और जे अन्यदिशानमें स्थितहैं वाकी होम करनेके योग्य देहको अयोग्य करानेवालेहैं ॥१५॥ ता पीछे श्मशानमें लेजायके उत्तराभिमुख स्थापित करै वहां देहके दाहके लिये स्थलको शोधन करै ॥ १६ ॥ भूमि झाड़के और गोबरसों

ततोर्धमार्गेविश्रामंसंमाज्याभ्युक्ष्यकारयेत ॥ संस्नाप्यभूतसंज्ञायतस्मैतेनप्रदापयेत् ॥ १४ ॥ पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्येदिक्षुसंस्थिताः ॥ तस्यहोतव्यदेहस्यनैवायोग्यत्वकारकाः ॥१५॥ ततोनीत्वाश्मशानेषुस्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ तत्रदेहस्यदाहार्थंस्थलसंशोधयेद्यथा ॥ १६ ॥ संमार्ज्यभूमिंसंलिप्योल्लिख्योद्धृत्यचवेदिकाम् ॥ अभ्युक्ष्योपसमाधायवह्नितत्रविधानतः ॥ १७ ॥ पुष्पाक्षतैरथाभ्यर्च्यदेवंक्रव्यादसंज्ञकम् ॥ लोमभ्यस्त्वनुवाकेनहोमंकुर्याद्यथाविधि ॥ १८ ॥

लीपिकै वासे दर्भसों लकीरैं करै अर्थात दर्भसों ऊर्ध्वरेखा कर बीचमें अनामिका और अँगूठेसों उठाके जलसों छिरकि वहां अग्निको स्थापित करि क्रव्याद है नाम जाको अर्थात् कच्चे मांसके भक्षक वह्निको फूल आदिसों पूजन करि "लोमभ्यःस्वाहा त्वग्भ्यःस्वाहा मांसेभ्यः स्वाहा" इत्यादि अनुवाक वेदमंत्रकरि विधिपूर्वक होम करै ॥ १७ ॥ क्रव्याद है नाम जाको ऐसो देव अग्नि हैं तिनकी फूल अक्षतोंसे पूजा करि लोमनसों अनुवाक करि यथाविधि होमको करै ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम भूतनके धारण करनहारे हो और जगत्की योनि कहिये उत्पत्तिस्थान हो और तुम भूतनके पालनहारे हौ ताते मरोभयो जो यह सांसारिक है ताको तुम स्वर्गकी गतिको पहुँचाओ ॥ १९ ॥ ऐसे अग्निकी प्रार्थना करि वहांई चंदन तुलसीके काष्ठ पलाश तथा पीपलकी लकरीनसों चिता बनावै ॥ २० ॥ वा प्रेतको चितामें धरिकै वहां चितामें प्रेतके हाथपर प्रेतके नामसों दो पिंड देवै चिताके

त्वंभूतभृज्जगद्योनिस्त्वंभूतपरिपालकः ॥ मृतः सांसारिकस्तस्मादेनंत्वस्वगतिंनय ॥ १९ ॥ इतिसंप्रार्थयित्वाग्निचितांतत्रैवकारयेत् ॥ श्रीखण्डतुलसीकाष्ठैः पलाशाश्वत्थदारुभिः ॥ २० ॥ चितामारोप्यतंप्रेतंपिंडौद्वौ तत्रदापयेत् ॥ चितायांशवहस्तेचप्रेतनाम्नाखगेश्वर ॥ चितामोक्षप्रभृतिकंप्रेतत्वमुपजायते ॥ २१ ॥ केपितं साधकं प्राहुःप्रेतकल्पविदोजनाः ॥ चितायांतेननाम्नावाप्रेतनाम्नाथवाकरे ॥ २२ ॥ इत्येवंपञ्चभिः पिण्डैःशवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथाचोपघातायपूर्वोक्तास्तेभवंतिहि ॥ २३ ॥ प्रेतेदत्त्वापञ्चपिंडान्हुतमादायतंतृणैः अग्निपुत्रस्तदादद्यान्नभवेत्पञ्चकंयदि ॥ २४ ॥

छोडनेसे लगाके प्रेतत्व होय है ॥२१॥ कोई प्रेतकल्पके जाननहारे वाको साधक कहैं हैं चितामें वा नामसों अथवा प्रेतके नामसों हातहीमें देवै ॥ २२ ॥ या प्रकार पांच पिंडनसों शवकी आहुतिकी योग्यता होय है अन्यथा कहिये पांच पिंड न देनेसों पहले कहे भये वे विघ्नके लिये उपस्थित होय हैं ॥ २३ ॥ प्रेतको पांच पिंड देकै पहले "लोमभ्यः स्वाहा" या अनुवाकसों होमीगई वाही अग्निकोतृणनमेंलेके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुत्र अग्नि देवै और जे अग्निहोत्री हैं उनको अग्निहोत्रते लेक देवै जो पंचक न होय तो ॥ २४ ॥ और जो नर पंचकमें मरै है वह गतिको नहीं प्राप्त होय है पंचकमें दाह न करनो चाहिये जो कियोजाय तो दूसरेको मरण होय॥२५॥आदिमें आधी धनिष्ठाते लगाकै अंतमें रेवतीतक ये पांच नक्षत्र दाहमें योग्य नहीं हैं और जो दाह करै तौ शुभ न होय ॥ २६ ॥ जो इन पंचनक्षत्रमें मरैहै ताके घरमें

पञ्चकेषुमृतोयस्तुनगतिंलभतेनरः ॥ दाहस्तत्रनकर्तव्यः कृतेन्यमरणंभवेत् ॥ २५ ॥ आदौकृत्वाधनिष्ठार्धमे तन्नक्षत्रपञ्चकम्॥रेवत्यन्तंनदाहेर्हंदाहेचनशुभंभवेत् ॥ २६ ॥ गृहेहानिर्भवेत्तस्यऋक्षष्वेषुमृतोहि यः॥पुत्राणांगो त्रिणांचापिकश्चिद्विघ्नः प्रजायते ॥ २७ ॥ अथवाऋक्षमध्येहिदाहःस्याद्विधिपूर्वकः ॥ तद्विधिंतेप्रवक्ष्यामिस र्वदोषप्रशान्तये ॥ २७ ॥ शवस्यनिकटेताक्ष्यनिक्षिपेत्पुत्तलांस्तदा ॥ दर्भमयांश्चचतुरऋक्षमन्त्राभिमन्त्रि तान् ॥ २९ ॥ तप्तहेमप्रकर्त्तव्यंवहन्तिऋक्षनामभिः ॥ प्रेताजयतमन्त्रेणपुनर्होमस्तुसंपुटैः ॥ ३० ॥

हानि होय है पुत्रनमें तथा गोत्रवालेनमें कोई विघ्न होय है ॥ २७ ॥ अथवा नक्षत्रहीके मध्यमें विधिपूर्वक दाह होय है सब दोषनकी शांतिके लिये वा विधिको मैं तुमसों कहोंगो ॥ २८ ॥ हे गरुड ! शवके निकट चारिपुत्तलनको डारै वे पुत्तल दर्भके बने होय और नक्षत्रनके मंत्रनसों अभिमंत्रित होंय ॥ २९ ॥ सोना तपावनो चाहिये और 'प्रेताजयत' या मंत्रसों प्रेतना को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संपुटित करिकै होम करनो चाहिये ॥ ३० ॥ ता पीछे उन पुत्तलनके साथ दाह करनो और पुत्र सपिंडीके दिन बाकी शांति विधिको करै ॥ ३१ ॥ तिलको पात्र और सुवर्ण रूपा रत्न इनको यथाक्रम काँसेके पात्रमें घी भरिकै दोषकी शांतिके लिये दान करै ॥ ३२ ॥ ऐसे शांति विधानको करिकै जो दाह करै है ताके विघ्न नहीं होय हैं और प्रेत परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ३३ ॥ ऐसे पंचकमें

ततोदाहः प्रकर्तव्यस्तैश्चपुत्तलकैः सह ॥ सपिंडनदिनेकुर्यात्तस्यशान्तिविधिंसुतः ॥ ३१ ॥ तिलपात्रंहिरण्यंचरूप्यंरत्नंयथाक्रमम् ॥ घृतपूर्णकांस्यपात्रंदद्याद्दोषप्रशान्तये ॥ ३२ ॥ एवंशान्तिविधानंतुकृत्वादाहंकरोतियः ॥ नतस्यविघ्नोजायेतप्रेतायान्तिपराङ्गतिम् ॥ ३३ ॥ एवंपञ्चकदाहः स्यात्तद्विनाकेवलंदहेत्॥सती यदिभवेत्पत्नीतयासहविनिर्दहेत् ॥ ३४ ॥ पतिव्रतायदानारीभर्तुः प्रियहितेरता ॥ इच्छेत्सहैवगमनंतदास्नानंसमाचरेत् ॥३५॥ कुंकुमांजनसद्वस्त्रभूषणैर्भूषितांतनुम् ॥ दानंदद्याद्द्विजातिभ्योबन्धुवर्गेभ्यएवच ॥ ३६ ॥

दाह होय है वा पंचकके विना अकेलेहीको जरावै जो पत्नी सती स्त्री होय तो वाके साथ जरावै ॥ ३४ ॥ जो नारी पतिव्रता होय और पतिके हितमें तत्पर होय और साथही जानो चाहै तौ स्नान करै ॥ ३५ ॥ कुंकुम अंजन उत्तम वस्त्र भूषणसों शरीरको भूषितकरै और ब्राह्मणनको दान दे और बंधुवर्गको देय ॥ ता पीछे गुरुको नमस्कार करिकै तब घरतें बाहर निकलै ता पीछे देवालयमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाकै भक्तिसों उन हरिको प्रणाम करै ॥३६॥३७॥ वहां आभरण देकै और श्रीफलको ग्रहण करि लज्जा तथा मोहको छोडि श्मशान भव जो मुर्दघटा है ताको जाय ॥ ३८ ॥ वहां सूर्यको नमस्कार करि और चिताकी परिक्रमा करि तब फूलनकी सेजपर चढै और अपनी गोदीमें पतिको सुवावै ॥ ३९ ॥ सखीनको श्रीफल देय ता पीछे दाहकी आज्ञा देवे गंगास्नानके समान शीतल जानि शरीरको

गुरुंनमस्कृत्यतदानिर्गच्छेन्मन्दिराद्बहिः॥ ततोदेवालयंगत्वाभक्त्यातंप्रणमेद्धरिम् ॥ ३७ ॥ समर्प्याभरणं तत्रश्रीफलंपरिगृह्यच ॥ लज्जांमोहपरित्यज्यश्मशानभवनंव्रजेत् ॥ ३८ ॥ तत्रसूर्यंनमस्कृत्यपरिक्रम्यचितां तदा ॥ पुष्पशय्यांतदारोहेन्निजांकेस्वापयेत्पतिम् ॥ ३९ ॥ सखिभ्यः श्रीफलंदद्याद्दाहमाज्ञापयेत्ततः ॥ गङ्गास्नानसमंज्ञात्वाशरीरंपरिदाहयेत् ॥ ४० ॥ नदहेद्गर्भिणीनारीशरीरंपतिनासह ॥ जनयित्वाप्रसूतिंचबालंपोष्यसतीभवेत् ॥ ४१ ॥ नारीभर्तारमासाद्यशरीरंदहतेयदि ॥ अग्निर्दहतिगात्राणिनैवात्मानंप्रपीडयेत् ॥४२॥

जरावै ॥ ४० ॥ गर्भिणी स्त्री पतिके साथ शरीरको न जरावै किंतु संततिको उत्पन्न करि वाको पालन करिकै फिरि सती होय ॥४१॥ जो नारी भर्ताको प्राप्त हो जो शरीरको जरावै है तो अग्नि वाके शरीरको जराय देय है और आत्माको पीडा नहीं देय है ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जैसे आगिमें धौंकीभई धातूनको मल जरिजाय है वैसेही नारी अमृतके समान जो अग्नि है तामें पापको जराय देयहै ॥ ४३ ॥ दिव्य
जो शपथ आि हैं तिनमें सत्ययुक्त धर्मात्मा मनुष्य शुद्ध होय है और तपायेभये लोहके पिंडसों कभी नहीं जरे है ॥ ४४ ॥ ऐसेही
वह स्त्री पतिके साथ पतिसमेत कभी नहीं जरती है अंतरात्मा मरेभये भर्त्ताके आत्माके साथ एकताको प्राप्त होजायहै ॥ ४५ ॥ पतिके

दह्यतेध्मायमानानांधातूनांचयथामलः ॥ तथानारीदहेत्पापंहुताशेह्यमृतोपमे ॥ ४३ ॥ दिव्यादौसत्ययुक्त
श्चशुद्धोधर्मयुतोनरः ॥ यथानदह्यतेतप्तलोहपिण्डनकर्हिचित् ॥ ४४ ॥ तथासापतिसंयुक्तादह्यतेनकदाचन ॥
अन्तरात्मात्मनाभर्तुर्मृतस्यैकत्वमाप्नुयात् ॥ ४५ ॥ यावच्चाग्नौमृतेपत्यौस्त्रीनात्मानंप्रदाहयेत् ॥ तावन्नमुच्य
तेसाहिस्त्रीशरीरात्कथंचन ॥ ४६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनस्वपतिंसेवयेत्सदा ॥ कर्मणामनसावाचामृतेजीव
तितद्गता ॥४७॥ मृते भर्त्तरियानारीसमारोहेद्धुताशनम् ॥ साऽरुन्धतीसमाभूत्वास्वर्गलोकेमहीयते ॥ ४८ ॥

मरनेपै जबलौं स्त्री अपनी देहको नहीं जरावै है तबलौं वह स्त्रीके शरीरतें कभी नहीं छूटै है ॥ ४६ ॥ तातें सब यत्नसों कर्मसों मनसों
वचनसों सदा जीवते भये अपने पतिको सेवन करै और मरनेपै वाके साथ जाय ॥ ४७ ॥ भर्त्ताके मरनपै जो नारी अग्निमें प्रवेश
करै है वह अरुंधतीके समान होकै स्वर्गलोकमें आनंद करै है ॥ ४८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भर्तासेहू अधिक शोभायमान है रूप जाको ऐसी वह अप्सरानके गणनकरि स्तुति करीगई नारी जबलौं चौदह इंद्र रहैं हैं तबलौं पतिके साथ विहार करै है ॥ ४९ ॥ माताके पिताके और जहां वह व्याही जाय इन तीनों कुलनको भर्ताके साथ जानेवाली स्त्री पवित्र करै ॥ ५० ॥ साढे तीनि करोडि जो रोम मनुष्यनकी देहमें हैं उतने कालपर्यंत वह स्त्री स्वर्गलोकमें पतिके साथ आनंद करैहै ॥ ५१ ॥

तत्रसाभर्तृपरमास्तूयमानाप्सरोगणैः ॥ रमतेपतिनासार्धंयावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ४९ ॥ मातृकंपैतृकंचैवय त्रसाचप्रदीयते ॥ कुलत्रयंपुनात्यत्रभर्तारंयानुगच्छति ॥५०॥ तिस्रः कोटयोर्द्धकोटीचयानिरोमाणिमानुषे ॥ तावत्कालंवसेत्स्वर्गेपतिनासहमोदते ॥ ५१ ॥ विमानेसूर्यसंकाशेक्रीडतेरमणेनसा ॥ यावदादित्यचन्द्रौचभ र्तृलोकेचिरंवसेत् ॥ ५२ ॥ पुनश्चिरायुः साभूत्वाजायतेविमलेकुले ॥ पतिव्रतातुयानारीतमेवलभतेप तिम् ॥ ५३ ॥ याक्षणंदाहदुःखेनसुखमेतादृशंत्यजेत् ॥ सामूढाजन्मपर्यंतंदह्यतेविरहाग्निना ॥ ५४ ॥

सूर्यकीसी है कांति जाकी ऐसे विमानमें पतिके साथ विहार करैहै और जबलौं सूर्य चंद्रमा प्रकाश करै तबलौं भर्ताके लोकमें चिरकाल वास करै ॥५२॥ फिरि अधिक उमर पाकै निर्मल कुलमें उत्पन्न होय और पतिव्रता नारी वाही पतिको प्राप्त होय है ॥ ५३ ॥ जो क्षणभरके दाहके दुःखसों ऐसो सुखको छोडि देय है वह मूर्ख जन्मपर्यंत विरहकी आगिसों तपाई जाय है ॥ ५४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तातें पतिको शिव जानि वाके साथ शरीरको जरावै है हे गरुड ! जो सती न होय है तौ वाको या प्रकार जरावै ॥५५॥ आधा दग्ध होनेपै अथवा पूरा दग्ध होनेपै वा मृतकके मस्तकको फोडै गृहस्थोंके मस्तकको काष्ठसों और यतिनके मस्तकको श्रीफलसे फोडे ॥ ५६ ॥ ब्रह्मलोकनकी प्राप्तिके लिये वाके ब्रह्मरंध्रको भेदन करि तापीछे वाको पुत्र या मंत्रसों घीकी आहुति देय ॥ ५७ ॥ हे पावक!

तस्मात्पतिंशिवंज्ञात्वासहतेनदहेत्तनुम् ॥ यदिनस्यात्सतीतार्क्ष्यतमेवंप्रदहेत्तदा ॥ ५५ ॥ अर्धेदग्धेऽथवापूर्णेस्फोटयेत्तस्यमस्तकम् ॥ गृहस्थानांतुकाष्ठनयतीनांश्रीफलेनच ॥ ५६ ॥ प्राप्तयेपितृलोकानांभित्त्वातद्ब्रह्मरन्ध्रकम् ॥ आज्याहुतिंततोदद्यान्मन्त्रेणानेनतत्सुतः ॥ ५७ ॥ अकारादभिजातोसित्वदयंजायतांपुनः॥ असौस्वर्गायलोकायस्वाहाज्वलतुपावक ॥ ५८ ॥ एवमाज्याहुतिंदत्त्वातिलमिश्रांसमन्त्रकाम् ॥ रोदितव्यंततोगाढंतेनतस्यसुखं भवेत ॥ ५९ ॥ दाहादनन्तरंकार्यंस्त्रीभिःस्नानंततः सुतैः ॥तिलोदकंततोदद्यान्नामगोत्रोपकल्पितम् ॥ ६० ॥

तुम वासुदेवतें उत्पन्न हौ और तुमसों स्वगलोकके लिये अर्थात् स्वर्गमें जानेको तेजोमय दिव्यशरीरसों उत्पन्न होय है यह स्थूलदेह तुममें हवि होऊ यातें तुम प्रज्ज्वलित होऊ ॥५८॥ याप्रकार तिलयुक्त मंत्रसहित घीकी आहुति देकै ता पीछे खूब रोवनो चाहिये तासों प्राणीको सुख होय है ॥ ५९ ॥ दाहके पीछे पहले स्त्रीनको और पीछे पुत्रनको स्नान करनो चाहिये ता पीछे नाम और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोत्रको उच्चारण करि तिलांजलि देय ॥६०॥ नींबूकी पत्ती दांतनसों कतरै और मृतकके गुणनको कहै पहले स्त्रीजन घरको जांय तापीछे मनुष्यनको समूह जाय ॥ ६१ ॥ घरमें फिरि स्नान करिकै गोग्रास देय पत्रावलीमें भोजन करै घरको अन्न न खाय ॥ ६२ ॥ तापीछे दक्षिणको मुख करि मृतकके स्थानको लीपै फिर बारह दिनलौं रातदिन दीपक जगावै ॥ ६३ ॥ हे गरुड ! सूर्यके अस्त होनेपै

प्राशयेन्निम्बपत्राणिमृतकस्यगुणान्वदेत ॥ स्त्रीजनोग्रेगृहंगच्छेत्पृष्ठतोनरसञ्चयः ॥ ६१ ॥ गृहेस्नानंपुनः कृत्वागोग्रासंचप्रदायेत ॥ पत्रावल्यांचभुञ्जीयाद्गृहान्ननैवभक्षयेत् ॥ ६२ ॥ मृतकस्थानमालिप्यदक्षिणाभिमुखंततः ॥ द्वादशाहकपर्यन्तदीपंकुर्यादहर्निशम् ॥ ६३ ॥ सूर्येस्तमागतेतार्क्ष्यश्मशानेवाचतुष्पथे ॥ दुग्धंचमृन्मयेपात्रेतोयंदद्याद्दिनत्रयम् ॥६४॥ अपक्वमृन्मयंपात्रंक्षीरनीरप्रपूरितम् ॥ काष्ठत्रयंगुणैर्बद्धंधृत्वामन्त्रंपठेदिमम् ॥ ६५ ॥श्मशानानलदग्धोसिपरित्यक्तोसिबान्धवैः ॥ इदंनीरमिदंक्षीरमत्रस्नाहिइदंपिब ॥ ६६ ॥

श्मशानमें अथवा चौराहेमें मट्टीके पात्रमें दूध और जल तीनि दिनलौं देय ॥ ६४ ॥ दूध और जल भरोभयो कच्चो मट्टीको पात्र लेवै तामें सूतसों बँधाई तीनि लकरी धरिकै यह मंत्र पढै ॥ ६५ ॥ श्मशानमें आगिसों जराये गये हौ और बांधवों करिकै त्याग किये गयेहौ यह जल और यह दूध है यहां जलसों स्नान करो और दूधको पीवो ॥ ६६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निहोत्रवाले पुरुषनको चौथे दिन अस्थिसंचय करनो चाहिये और अग्निहोत्ररहित हैं तिनको तीसरे दिन अथवा दूसरे दिन करनो योग्य है विरोधके विना ॥ ६७ ॥ श्मशानभूमिमें जाकै स्नान करिकै शुद्ध होय है ऊनको सूत लपेटिकै पवित्रीको पहिरै ॥ ६८ ॥ ता पीछे पुत्र श्मशानवासिनके " यमाय त्वा " यामंत्रसों मांसबलि देवै और तीनि परिक्रमा करै ॥ ६९ ॥ हे गरुड !

चतुर्थेसञ्चयःकार्यःसाग्निकैश्चनिरग्निकैः ॥ तृतीयेह्निद्वितीयेवाकर्तव्यश्चाविरोधतः ॥ ६७ ॥ गत्वाश्मशानभूमिं चस्नानंकृत्वाशुचिर्भवेत् ॥ ऊर्णासूत्रंवेष्टयित्वापवित्रींपरिधायच ॥ ६८ ॥ दद्याच्छ्मशानवासिभ्यस्ततोमांसबलिंसुतः ॥ यमायत्वेतिमन्त्रेणतिस्रःकुर्यात्परिक्रमाः ॥ ६९ ॥ ततोदुग्धेनचाभ्युक्ष्यचितास्थानंखगेश्वर ॥ जलेनसेचयेत्पश्चादुद्धरेदस्थिवृन्दकम् ॥ ७० ॥ कृत्वापलाशपत्रेषुक्षालयेद्दुग्धवारिभिः ॥ संस्थाप्यमृन्मये पात्रेश्राद्धंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७१ ॥ त्रिकोणंस्थण्डिलंकृत्वागोमयेनोपलेपितम् ॥ दक्षिणाभिमुखोदिक्षु दद्यात्पिण्डत्रयंत्रिषु ॥ ७२ ॥

ता पीछे चिताके स्थानको दूधसे छिरकि पीछे जलसे छिरकि अस्थि संचय करै ॥ ७० ॥ उन अस्थिनको ढाकके पत्तेमें धरिकै दूधसों धोवै फिरि जलसों धोवै फिर मट्टीके पात्रमें रखकै विधिसों श्राद्ध करै ॥ ७१ ॥ तिकोना स्थंडिल करिकै गोबरसों लीपै फिरि दक्षिणाभिमुख हो तीन दिशानमें तीनि पिंड देवै ॥ ७२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चिताकी भस्मको इकट्ठे करिकै वहां त्रिपादुका करिकै वहां खुलोभयो घट जल भरिकै स्थापित करै ॥ ७३ ॥ ता पीछे तंडुलनको पाक करि दही और घी करिकै युक्त विधिपूर्वक जलसमेत मीठी बलि प्रेतके लिये देय ॥७४॥ और दश पांच पैंड उत्तरदिशाको चलै और वहां हे गरुड ! गढिछा खोदि हड्डीनके पात्रको स्थापित करै ॥ ७५ ॥ ताके ऊपर दाहकी पीडाके नाश करनहारे पिंडको

पुञ्जीकृत्यचिताभस्मतत्रधृत्वात्रिपादुकाम् ॥ स्थापयेत्तत्रसजलमनाच्छाद्यमुखघटम् ॥ ७३ ॥ ततस्त
ण्डुलपाकेनदधिघृतसमन्वितम् ॥ बलिंप्रेतायसजलंदद्यान्मिष्टंयथाविधि ॥७४ ॥ पदानिदशपञ्चैवचोत्तरस्यां
दिशिव्रजेत् ॥ गर्तंविधायतत्रास्थिपात्रंसंस्थापयेत्खग ॥ ७५ ॥ तस्योपरिततोदद्यात्पिंडंदाहार्तिनाशकम् ॥
गर्तादुद्धृत्यतत्पात्रंनीत्वागच्छेज्जलाशयम् ॥ ७६ ॥ तत्रप्रक्षालयेद्दुग्धजलादस्थि पुनः पुनः ॥ चर्चयेच्चन्दने
नाथकुङ्कुमेनविशेषतः ॥ ७७ ॥ धृत्वासम्पुटकेतानिकृत्वाचहृदिमस्तके ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यगङ्गामध्येवि
निक्षिपेत् ॥ ७८ ॥ अन्तर्दशाहंयस्यास्थिगङ्गातोयेनिमज्जति ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥७९॥

देय गढिछेते वा पात्रको निकारि जलाशय जो नदी तालाव आदि हैं तिनपर जाय ॥७६॥ वहां दूध और जलसों वारंवार हड्डीनको धोवै फिरि उनको चंदनसों चर्चै और विशेषकरि कुंकुमसों ॥७७॥ उनको संपुटमें धरिकै हृदय और मस्तकमें लगावै फिरि परिक्रमा और नमस्कारको करि गंगाके मध्यमें डारि देय ॥७८॥ दशदिनके भीतर जाकी हड्डी गंगाके जलमें डूबै है वाकी ब्रह्मलोकतें कबहूं पुनरावृत्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहिये फिर लौटनो नहीं होयहै॥७९॥ जितने वर्षनलौं मनुष्यकी हड्डी गंगाजलमें स्थित रहैहैं उतनेही हजार वर्षलौं स्वर्गलोकमें आनंद करे है ॥ ८० ॥ गंगाजलकी लहरोंको छूकै पवन जब मृतकको छुवै है तौ वाको पाप शीघ्रही नाशको प्राप्त होय है ॥ ८१ ॥ भगीरथ उग्रतपसों आराधन करि अपने पुरिखनके उद्धारके लिये गंगादेवीको ब्रह्मलोकते लाये ॥ ८२ ॥ गंगाको पवित्रकरनहारो यश

यावदस्थिमनुष्यस्यगङ्गातोयेषुतिष्ठति ॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ ८० ॥ गङ्गाजलोर्मिसंस्पृश्यमृतकंपवनोयदा ॥ स्पृशतेपातकंतस्यसद्यएवविनश्यति ॥ ८१ ॥ आराध्यतपसोग्रेणगङ्गादेवींभगीरथः ॥ उद्धारार्थंपूर्वजानामानयेद्ब्रह्मलोकतः ॥ ८२ ॥ त्रिषुलोकेषुविख्यातगंगायाः पावनंयशः ॥ यापुत्रान्सगरस्यैतान्भस्माख्याननयद्दिवम् ॥८३॥ पूर्वेवयसिपापानियेकृत्वामानवामृताः॥ गङ्गायामस्थिपतनात्स्वर्गलोकंप्रयान्तिते ॥८४॥ कश्चिद्व्याधोमहारण्येसर्वप्राणिविहिंसकः ॥ सिंहेननिहतोयावत्प्रयातिनरकालये ॥८५॥

तीनोंलोकनमें प्रसिद्ध है जो गंगा भस्मही है नाम जिनको ऐसे ६० हजार सगरके पुत्रनको स्वर्गमें पहुँचावत भई ॥ ८३ ॥ जे मनुष्य पहली अवस्थामें पापकरिकै मरिगये है वे गंगामें हड्डी गिरनेसों स्वर्गलोकको जांय हैं ॥ ८४ ॥ बडे वनमें सब प्राणीनको मारनहारो व्याध सिंह करि मारोगयो जबतांई नरकको जाय ॥ ८५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उतनेही कालमें वाकी हड्डी गंगामें गिरी तब वह दिव्य विमानपर चढके देवमंदिरको गयो ॥ ८६ ॥ गंगाही मुक्तिकी देनहारीहै याही कारणसों हड्डीनको सत्पुत्र गंगामें आप डारै और अस्थिसंचयनके पीछे दश गात्र करै ॥ ८७ ॥ कोई पुरुष विदेशमें वनमें अथवा चोरोंके भयसों मरिगयो होय और वाकी देह न मिलीहोय तौ जा दिन वाके मरनेको वृत्तांत सुनै वाही दिन ॥८८॥ दर्भनको पुत्तला

तावत्कालेनतस्यास्थिगङ्गायांपतितंतदा ॥ दिव्यंविमानमारुह्यसगतोदेवमन्दिरम् ॥ ८६ ॥ अतःस्वमेव सत्पुत्रोगङ्गायामस्थिपातयेत ॥ अस्थिसञ्चयनादूर्ध्वंदशगात्रंसमाचरेत् ॥ ८७ ॥ अथकश्चिद्विदेशेवावनेचो रभयेमृतः ॥ नलब्धस्तस्यदेहश्चेच्छृणुयाद्यद्दिनेतदा ॥ ८८ ॥ दर्भपुत्तलकंकृत्वापूर्ववत्केवलंदहेत ॥ तस्य भस्मसमादायगंगातोयेविनिक्षिपेत् ॥८९॥ दशगात्रादिकंकर्मतद्दिनादेवकारयेत् ॥ सएवदिवसोग्राह्यःश्राद्धेसां वत्सरादिके ॥ ९० ॥ पूर्णगर्भेमृतानारीविदार्यजठरंतदा ॥ बालंनिष्कास्यनिक्षिप्यभूमौतामेवदाहयेत् ॥९१॥

बनाय पहलेकी भाँति अकेलेहीको दाह करै वाकी भस्मको लेके गंगाके जलमें डारिदेय ॥ ८९ ॥ और वाही दिनतें दशगात्र विधान आदि करै और सांवत्सर श्राद्ध आदिमें वही दिन लेनो चाहिये ॥९०॥ जो गर्भ पूरा होनेपै नारी मरजाय तौ पेटको चीरि बालकको निकारिकै भूमिमें गाडदेय और वाहीको दाह करै ॥ ९१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गंगाके तीरमें जो बालक मरै ताको गंगाहीमें डारिदेय अन्यदेशमें सत्ताइस महीनेतकके बालकको भूमिमें गाडै ॥९२॥ यासत्ताईसमहीनेसों अधिक अवस्थाके बालकको दाह करै और वाकी हड्डी गंगामें पहुँचावै जलको घट और बालकको भोजन देनो चाहिये ॥ ९३ ॥ गर्भके नष्ट होनेपै क्रिया नहीं है और बालकके मरनेपै दूध देनो चाहिये घट और भोजनको खीर बालकके मरनेमें देनी चाहिये॥९४॥

गङ्गातीरेमृतंबालंगंगायामेवपातयेत॥अन्यदेशेक्षिपेद्भूमौसप्तविंशतिमासजम्॥९२॥ अतःपरंदहेत्तस्यगङ्गाया मस्थिनिक्षिपेत् ॥ जलकुम्भश्चदातव्यंबालानामेवभोजनम् ॥९३॥ गर्भेनष्टेक्रियानास्तिदुग्धंदेयंमृतेशिशौ ॥ घटंचपायसंभोज्यंदद्याद्बालविपत्तिषु ॥ ९४ ॥ कुमारेचमृतेबालान्कुमारानेवभोयेत ॥ सबालान्भोजयेद्वि प्रान्पौगण्डेसव्रतेमृते ॥ ९५ ॥ मृतश्चपञ्चमादूर्ध्वमव्रतः सव्रतोपिवा ॥ पायसेनगुडेनापिपिंडान्दद्याद्दशक्रमा त् ॥ ९६ ॥ एकादशंद्वादशंचवृषोत्सर्गविधिंविना ॥ महादानविहीनंचपौगण्डकृत्यमाचरेत् ॥ ९७ ॥

कुमारबालकके मरनेपै कुमारनकोही जिमावै और जो व्रतसमेत पौगंड मरे तौ बालकसमेत ब्राह्मणनको भोजन करावै ॥ ९५ ॥ पांचवें वर्षके उपरांत यज्ञोपवीत समेत अथवा बिना यज्ञोपवीतके मरे तौ वाको खीरसों वा गुड़सों क्रमसों दश पिंड देय॥९६॥ एकाद शाह और द्वादशाह करै और वृषोत्सर्गविधि न करै और महादान जे शय्यादान आदि हैं तिनके विना पौगंड अवस्थामें करै ॥९७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिकेत जीवते भये पौगण्ड अवस्थावालेको सपिंडक नहीं होय है याते वाको बारह दिनलों एकोद्दिष्ट श्राद्ध करै ॥ ९८ ॥ स्त्री और शूद्रनको यज्ञोपवीतके स्थानमें विवाह कहागया है व्रत जो यज्ञोपवीत है ताते पहले अवस्थाके तुल्य क्रिया होय है ॥ ९९ ॥ स्वल्प कहिये थोंडेकर्मके प्रसंगते और स्वल्पही विषयके बंधनसे और स्वल्पही अवस्थामें और देहकेहू स्वल्प होनेपै क्रियाकी

जीवमानेचपितरिनपौगण्डेसपिण्डनम् ॥ अतस्तस्यद्वादशाहन्येकोद्दिष्टंसमाचरेत् ॥ ९८ ॥ स्त्रीशूद्राणां विवाहस्तुव्रतस्थानेप्रकीर्तितः ॥ व्रतात्प्राक्सर्ववर्णानांवयस्तुल्याक्रियाभवेत् ॥ ९९ ॥ स्वल्पात्कर्मप्रसङ्गाच्च स्वल्पाद्विषयबंधनात् ॥ स्ल्पेवयसिदेहेचक्रियांस्वल्पामपीच्छति ॥ १०० ॥ किशोरेतरुणेकुर्याच्छय्या वृषमस्वादिकम् ॥ पदद्दानंमहादानगोदानमपिदापयेत् ॥ १०१ ॥ यतीनांचैवसर्वेषांनदाहोनोदकक्रिया ॥ दशगात्रादिकंतेषांनकर्त्तव्यसुतादिभिः ॥ १०२ ॥ दण्डग्रहणमात्रेणनरोनारायणोभवेत् ॥ त्रिदण्डग्रहणात्तेषांप्रेतत्वंनैवजायते ॥ १०३ ॥

स्वल्पही इच्छा करै है ॥ १०० ॥ किशोर अवस्था तथा तरुण अवस्थामें शय्या और वृषोत्सर्ग आदि करै पददान महादान और गोदानहू करावै ॥ १०१ ॥ सब यतीनको तौ दाह है और न उदकक्रिया है और सुत आदिनकरिकै उनके दशगात्र आदि न करने चाहिये ॥ १०२ ॥ दण्डके ग्रहण मात्रहीसों नरनारायणको रूप होजायहै और त्रिदण्डके ग्रहणसों उनको प्रेतत्व नहींहोयहै॥ १०३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्ञानी स्वरूपके अनुभवसों सदा मुक्त होयहैं याहीते वे दियेभये पिंडनकी चाहना नहीं राखैं हैं ॥१०४॥ तातें उनके पिंडदान आदि और जलदान आदि न करैं किंतु पिताकी भक्तिसों तीर्थश्राद्ध और गयाश्राद्ध करैं ॥ १०५ ॥ हंस परमहंस कुटीचक बहूदक इस संन्यासीनको हे गरुड ! मरनेपै भूमिमें स्थापित करै ॥ १०६ ॥ गंगा आदि नदियोंके न होनेपै पृथिवीमें स्थापन कहो है और जहां

ज्ञानिनस्तुसदामुक्ताः स्वरूपानुभवेनहि ॥ अतस्तेतुप्रदत्तानांपिंडानांनैवकांक्षिणः ॥ १०४ ॥ तस्मात्पिण्डादिकंतेषांनतुनोदकमाचरेत् ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंपितृभक्त्यासमाचरेत् ॥ १०५ ॥ हंसंपरमहंसंचकुटीचकबहूदकौ ॥ एतान्संन्यासिनस्तार्क्ष्यपृथिव्यांस्थापयेन्मृतान् ॥ १०६ ॥ गङ्गादीनामभावेहिपृथिव्यांस्थापनंस्मृतम् ॥ यत्रसन्तिमहानद्यस्तदातास्वेवनिक्षिपेत् ॥ १०७ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेदाहास्थिसंचयकर्मनिरूपणोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ गरुडउवाच ॥ दशगात्रविधिंब्रूहिकृतेकिंसुकृतंभवेत् ॥ पुत्राभावेतुकःकुर्यादितिमेवदकेशव ॥ १ ॥

महानदी हैं वहां उन्हींमें प्रवाह करदेय ॥ १०७ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांगरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ गरुड बोले; दशगात्रकी विधि कहौ वाके करनेसों कहा सुकृत होय है और पुत्रके न होनेपै कौन करै, हे केशव ! यह मोते कहौ ॥ १ ॥

९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! सुनो मैं तुमसों दशगात्रकी विधि कहौंगो जाको करिकै सत्पुत्र पिताके ऋणतें छूटि जाय है ॥ २ ॥ पुत्र शोकको छोडि सतोगुणी धैर्यको धरिकै पिताके पिंड आदि करै आंसूनको न गिरावै ॥ ३ ॥ बांधवोंकरिकै त्याग कियोगयो श्लेष्माको आंसूको अवश होके प्रेत खाय है यातें निरर्थक शोक होनेके कारण रोवनो न चाहिये ॥४॥ जो मनुष्य हजार वर्षलों रातिदिनशोच

श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिदशगात्रविधिंतव ॥ यद्विधायचसत्पुत्रोमुच्यतेपैतृकादृणात् ॥ २ ॥ पुत्रःशोकंपरित्यज्यधृतिमास्थायसात्विकीम् ॥ पितुःपिण्डादिकंकुर्यादश्रुपातंनकारयेत् ॥ ३ ॥ श्लेष्माश्रु बान्धवैर्मुक्तंप्रेतोभुंक्तेयतोऽवशः ॥ अतोनरोदितव्यंहितदाशोकान्निरर्थकात् ॥ ४ ॥ यदिवर्षसहस्राणिशोचतेह र्निशंनरः ॥ तथापिनैवनिधनंगतोदृश्येतकर्हिचित् ॥ ५ ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ तस्माद परिहार्यार्थेनशोकंकारयेद्बुधः ॥ ६ ॥ नहिकश्चिदुपायोस्तिदैवोवामानुषोपिवा ॥ योहिमृत्युवशंप्राप्तो जन्तुः पुनरिहाव्रजेत् ॥ ७ ॥

करै ताहू मरोभयो कबहू नहीं दिखाई देयगो॥ ५ ॥उत्पन्न भयेको निश्चय मौतहै और मरेभयेको निश्चय जन्म है तातें नहीं निवारण करने योग्य अर्थमें पंडित शोकको न करै ॥ ६ ॥दैवी अथवा मानुषी ऐसो कोई उपाय नहीं है जाते मरो भयो जीव फिरि यहां आ ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवश्य होनेवाले भावनको जो कुछ उपाय होतो तौ नलराजा रामचंद्र और युधिष्ठिर दुःखकरि युक्त न होते ॥ ८ ॥ स्वप्नके शरीर हूसा काहूको काहूके साथ यह अत्यंत सहवास नहीं होय है और पृथक् जननको कहा कहनो है॥९॥जैसे कोई बटोही छायाको सहारा लेकै विश्राम करै है और विश्राम लेकै फिरि चलदेय है ऐसेही प्राणीनको समागम है ॥१०॥प्रातःकाल जो भोजनयोग्य वस्तु बनाई

अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोभवेद्यदि ॥ तदादुःखैर्नयुज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ ८ ॥ नायमत्यन्तसंवासः कस्यचित्केनचित्सह ॥ अपिस्वप्नशरीरेणकिमुतान्यैः पृथग्जनैः ॥ ९ ॥ यथाहि पथिकः कश्चिच्छायामाश्रित्यविश्रमेत ॥ विश्रम्यचपुनर्गच्छेत्तद्वद्भूतसमागमः ॥ १० ॥ यत्प्रातः संस्कृतं भोज्यं सायंतच्चविनश्यति ॥ तदन्नरससंपुष्टेकायेकानामनित्यता ॥११॥ भैषज्यमेतद्दुःखस्यविचारंपरिचिन्त्यच ॥ अज्ञानप्रभवंशोकंत्यक्त्वाकुर्यात्क्रियांसुतः॥१२॥पुत्राभावेवधूःकुर्याद्भार्याभावेचसोदरः॥शिष्योवाब्राह्मणस्यैवसपिंडोवासमाचरेत् ॥१३॥

जाय है और सायंकालमें जो नष्ट होजायहै वा अन्नके रससों पालेभये शरीरमें कौनसी नित्यताहै अर्थात और कोई नहीं ॥११॥विचारको या दुःखकी औषध चिन्तवन करिकै अज्ञानतें उत्पन्न भये शोकको छोडिकै पुत्र क्रिया करै॥१२॥पुत्रके न होनेपै वधू करै वाकेहु न होनेपै सगा भाई करै अथवा ब्राह्मणकी क्रिया शिष्य करै अथवा सपिण्ड करै ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! मनुष्यके पुत्रहीन होनेपै जेठे भाई अथवा छोटे भाईके पुत्र पौत्र दशगात्र आदि करै ॥ १४ ॥ एक पितातें उत्पन्न भये भाईनमें जो एक पुत्रवान् होय तौ वाही पुत्रसों सब पुत्रवाले हैं यह मनुने कहाहै॥ १५॥ एकके जो बहुतसी पत्नी होयँ और उनमेंसों एकके पुत्र होय तो वा एक पुत्रसों सब पुत्रवती होयँ हैं॥ १६ ॥ सब पुत्रहीननको मित्र पिण्डदान करै क्रियाको लोप

ज्येष्ठस्यवाकनिष्ठस्यभ्रातुः पुत्रैश्चपौत्रकैः ॥ दशगात्रादिककार्यंपुत्रहीनेनरेखग ॥ १४ ॥ भ्रातॄणामेकजाता नामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत् ॥ सर्वेतेतेनपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत् ॥ १५ ॥ पत्न्यश्चबह्व्यएकस्यचैकापुत्रवती भवेत् ॥ सर्वास्ताः पुत्रवत्यःस्युस्तेनैकेनसुतेनहि ॥१६॥ सर्वेषांपुत्रहीनानांमित्रः पिण्डंप्रदापयेत ॥ क्रियालो पोनकर्तव्यः सर्वाभावेपुरोहितः ॥ १७ ॥ स्त्रीवाथपुरुषः कश्चिदिष्टस्यकुरुतेक्रियाम् ॥ अनाथप्रेतसंस्कारात्को टियज्ञफलंलभेत् ॥ १८ पितुःपुत्रेणकर्तव्यंदशगात्रादिकंखग ॥ मृतेज्येष्ठप्यतिस्नेहान्नकुर्वीतपितासुते ॥१९॥

न करनो चाहिये मित्रहू न होय तौ पुरोहित पिण्डदान करै ॥ १७ ॥ कोई स्त्री कोई पुरुष जो इष्टकी क्रियाकरै तौ वह अनाथ प्रेतके संस्कारसों कोटि यज्ञनके फलको प्राप्त होय ॥ १८ ॥ हे गरुड ! पुत्रकरि पिताके दशगात्रआदि करने चाहिये ज्येष्ठपुत्रके मरनेपै अतिस्नेहसों पिता न करे ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो बहुतसे पुत्र होंय तौ विधि एक पुत्र करै अर्थात् दशगात्र सपिंडी तथा और सोलह श्राद्ध इन सबनको एकही करै॥ २० ॥धनके विभाग होजानेपरहू एकहीको करने चाहिये और जिनमें विभाग होगयो है उनको संवत्सर श्राद्ध आदि पृथक् करने चाहिये ॥२१॥ तातें ज्येष्ठपुत्र भक्तिसों दशगात्र करै इन गात्रनके करनेमें एकवार भोजन करै भूमिमें सोवे और सदा शुद्ध तथा ब्रह्मके ध्यानमें तत्पर

बहवोपियदापुत्राविधिमेकः समाचरेत्॥ दशगात्रंसपिंडत्वंश्राद्धान्यन्यानिषोडश ॥२०॥ एकेनैवतुकार्याणिस विभक्तधनेष्वपि ॥ विभक्तैस्तुपृथक्कार्यंश्राद्धंसांवत्सरादिकम् ॥ २१ ॥ तस्माज्ज्येष्ठःसुतोभक्त्यादशगात्रंस माचरेत ॥ एकभोजीभूमिशायीभूत्वाब्रह्मपरः शुचिः ॥२२॥ सप्तवारंपरिक्रम्यधरणींयत्फलंलभेत् ॥ क्रियां कृत्वापितुर्मातुस्तत्फलंलभतेसुतः ॥ २३ ॥ आरभ्यदशगात्रंचयावद्वैवार्षिकंभवेत् ॥ तावत्पुत्रः क्रियांकुर्वन् गयाश्राद्धफलंलभेत् ॥२४॥ कूपेतडागेवारामेतीर्थेदेवालयेपिवा॥गत्वामध्यमयामेतुस्नानंकुर्यादमन्त्रकम्॥२५॥

रहै ॥ २२ ॥ सातवार पृथवीकी परिक्रमा करनेसों जा फलको प्राप्त होय है वा फलको माता पिताकी क्रियाको करिकै पुत्र प्राप्त होय है ॥ २३ ॥ दशगात्रनको आरंभ करि जबलौं बरसी होय तबलौं पुत्र क्रियाको करतो भयो गया श्राद्धके फलको प्राप्त होय है ॥ २४ ॥कुएँमें तालाबमें अथवा बगीचेमें तीर्थ और देवालयमें जायके मध्यम पहरमें विना मंत्र स्नान करै ॥२५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्ध हो वृक्षके मूलमें दक्षिणाभिमुख स्थित होय वहां वेदिका बनावै और गोबरसों लीपै ॥ २६ ॥ वामें पत्तेपर कुशाके विश्वामित्रको स्थापित करै वसुनकी पाद्य आदिसों पूजाकरि 'अतसीपुष्पसंकाशम्' इत्यादि मंत्रको पढकै प्रणाम करै ॥ २७ ॥ तापीछे उनके आगे पिंडके लिये कुशको आसन डारै ताके ऊपर नाम गोत्रको उच्चारण करि पिंडको धरै ॥२८॥ चावलोंके पाकसों अथवा जवके

शुचिर्भूत्वावृक्षमूलेदक्षिणाभिमुखः स्थितः ॥ कुर्याच्चवेदिकांतत्रगोमयेनोपलिप्यताम् ॥ २६ ॥ तस्यांपर्णेदर्भमयंस्थापयेत्कौशिकंद्विजम् ॥ तंपाद्यादिभिरभ्यर्च्यप्रणमेदतसीतिच ॥ २७ ॥ तदग्रेचततोदत्त्वापिण्डार्थंकौशमासनम् ॥ तस्योपरिततः पिण्डनामगोत्रोपकल्पितम् ॥ २८ ॥ दद्यात्तण्डुलपाकेनयवपिष्टेनवासुतः ॥ उशीरंचन्दनंभृंगराजपुष्पंनिवेदयत् ॥ धूपदीपंनैवेद्यंमुखवासंचदक्षिणाम् ॥ २९ ॥ काकान्नंपयसोःपात्रवर्धमानजलांजलीन् ॥ प्रेतायामुकनाम्नेचमद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥ ३० ॥

चूनसों पुत्र वा पिंडको बनावै तापीछे उशीर चंदन और भांगरेके फूल वाके ऊपर चढावै फिरि धूप दीप नैवेद्य मुखवास और दक्षिणा वाके आगे धरै ॥ २९ ॥ दूध-और पानीके पात्रमें काकके लिये अन्न धरै और वर्द्धमान जलकी अंजली देय और कहै कि अमुकनाम्ने प्रेताय मद्दत्तम् उपतिष्ठतु" अर्थात् अमुकनामप्रेतके लिये मेरो दियोभयो प्राप्त हो ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्न वस्त्र और जल अथवा अन्य वस्तु जो प्रेत शब्दसों दीजाय है व मृतकको आनंद फल देनहारो होय है ॥३१॥ तातें आदिके दिनसों लगाकै सपिंडी विधानतें पहले स्त्रीको और पुरुषको प्रेतशब्दको उच्चारण करै ॥ ३२ ॥ पहले दिन पिंड विधिपूर्वक दियोजाय वाही विधिसों अन्नकरि नव पिंडनको देय ॥ ३३ ॥ नवमें दिन सब सपिंडलोग मृतकके स्वर्गकी कामना करकै तैलाभ्यंग करैं अर्थात् सब

अन्नंवस्त्रंजलंद्रव्यमन्यद्वादीयतेचयत् ॥ प्रेतशब्देनयद्दत्तंमृतस्यानन्त्यदायकम् ॥ ३१ ॥ तस्मादादिदिना द्रूध्वंप्राक्सपिण्डीविधानतः ॥ योषितःपुरुषस्यापिप्रेतशब्दंसमुच्चरेत् ॥ ३२ ॥ प्रथमेहनियत्पिण्डोदीयतेवि धिपूर्वकम् ॥ तेनैवविधिनान्नेननवपिण्डान्प्रदापयेत ॥ ३३ ॥ नवमेदिवसेचैवसपिण्डःसकलैर्जनैः ॥ तैलाभ्य ङ्गःप्रकर्तव्योमृतकस्वर्गकाम्यया ॥ ३४ ॥ बहिःस्नात्वागृहीत्वाचदूर्वालाजसमन्विताः ॥ अग्रतःप्रमदांकृत्वा समागच्छेन्मृतालयम ॥ ३५ ॥ दूर्वावत्कुलवृद्धिस्तेलाजाइवविकासता ॥ एवमुक्तात्यजेद्गेहेलाजान्दूर्वासम न्वितान् ॥ ३६ ॥ दशमेहनिमांसेनपिण्डंदद्यात्खगेश्वर ॥ माषेणतन्निषेधाद्वाकलौनपलपैतृकम् ॥ ३७ ॥

तेल लगावैं॥ ३४ ॥ बाहर न्हायकै खीलन समेत दूबको ले आगे स्त्रीको करिकै मृतकके घरमें जाय ॥३५॥ दूबके समान तेरे कुलकी वृद्धि होय और खीलनके समान तेरे विकास होय ऐसे कहिकै वाके घरमें दूबसमेत खीलैं डारि देय ॥३६॥ हे गरुड ! दशमें दिन मांसके पिंड देय वा मांसको कलियुगमें निषेध है तौ उरदके देवै कारण यह है कि कलियुगमें पितरनको मांसके पिंड नहीं दिये जायहैं ॥३७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशवें दिन सब बांधव मुंडन करावें और क्रिया करनहारो पुत्रकोहू फिरि मुडन करावै ॥ ३८ ॥ दश दिनलौं एक ब्राह्मणको मिष्टान्न भोजन करावै और हाथ जोरि हरिको ध्यान करि प्रेतके मुक्तिकी प्रार्थना करै ॥ ३९ ॥अलसीके फूलके समान है कांति जिनकी और पीले जिनके वस्त्र और अच्युत कहिये अविनाशी जो विष्णु भगवान् गोविंद हैं तिनको जे नमस्कार करै हैं तिनको भय नहीं है॥४०॥

दशमेदिवसेक्षौरंबान्धवानांचमुण्डनम् ॥ क्रियाकर्तुःसुतस्यापिपुनर्मुण्डनमाचरेत ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नभोंजयेदेकंदिनेषुदशसुद्विजम् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचहरिंध्यात्वाकृताञ्जलिः ॥ ३९ ॥ अतसीपुष्पसंकाशंपीतवाससमच्युतम् ॥ येनमस्यन्तिगोविन्दंनतेषांविद्यतेभयम् ॥ ४० ॥ अनादिनिधनोदेवःशंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यःपुण्डरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ४१ ॥ इतिसंप्रार्थनामन्त्रंश्राद्धान्तेप्रत्यहंपठेत ॥ स्नात्वागत्वागृहेदत्त्वागोग्रासंभोजनंचरेत् ॥ ४२ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेदशगात्रविधिनिरूपणनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

नहीं हैं आदि और अंत जिनको और शंख चक्र तथा गदाको धारण किये भये ऐसे अक्षय्य पुण्डरीकाक्ष देव विष्णु तुम प्रेतको मुक्ति देनहारे होउ॥४१॥या प्रार्थनाके मंत्रको श्राद्धके अंतमें प्रतिदिन पढै न्हायके घरमें जायकै और गोग्रास देकै आप भोजन करै ॥४२॥

इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड बोले ॥ हे सुरेश्वर ! एकादश दिनकीहू विधि कहो हे जगदीश्वर ! वृषोत्सर्ग विधानहूको मोतें कहौ ॥ १ ॥ श्रीभगवान् बोले ग्यारहें दिन प्रातःकालही जलाशयपर जानो चाहिंये और सब और्ध्वदेहिक प्रयत्नसों करनो चाहिये ॥ २ ॥ और वेदशास्त्रमें परायण ब्राह्मणको निमंत्रण करै हाथ जोरि नमस्कार करिकै प्रेतकी मुक्तिकी चाहना करै ॥३॥ स्नान संध्या आदि करिकै आचार्यहू शुद्ध होय और

॥ गरुडउवाच ॥ एकादशदिनस्यापिविधिंब्रूहिसुरेश्वर ॥ वृषोत्सर्गविधानंचवदमजगदीश्वर ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एकादशेऽह्निगन्तव्यंप्रातरेवजलाशये ॥ और्ध्वदेहिक्रियासर्वाकरणीयाप्रयत्नतः ॥ २ ॥ निमन्त्रयेद्ब्राह्मणांश्चवेदशास्त्रपरायणान् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचनमस्कृत्यकृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वाह्याचार्योऽपिशुचिर्भवेत् ॥विधानंविधिवत्कुर्यादेकादशदिनोचितम् ॥४॥ अमन्त्रंकारयेच्छ्राद्धंदशाहंनामगोत्रतः॥ एकादशेह्निप्रेतस्यदद्यात्पिण्डंसमन्त्रकम् ॥ ५ ॥ सौवर्णंकारयेद्विष्णुंब्रह्माणंरौप्यकंतथा ॥ रुद्रस्ताम्रमयःकार्योयमोलोहमयःखग ॥ ६ ॥

एकादश दिनका जो विधान है ताकों विधिवत्त करै॥४॥और विना मंत्रके नामगोत्रको उच्चारण करि दशदिन श्राद्ध करै और ग्यारहें दिन प्रेतको पिंडदान करै ॥५॥ सुवर्णकी विष्णुकी मूर्ति बनावै और ब्रह्माकी रूपेकी बनावै और रुद्रकी मूर्ति तांबेकी बनावै और हे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड ! यमकी मूर्ति लोहेकी बनावे ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशामें गंगाजलसमेत विष्णुको कलश धरै ताके ऊपर पीले कपडेमें लपेटिकै विष्णुमूर्ति स्थापित करै॥७॥और पूर्वदिशामें दूध और जलसमेत ब्रह्माको कलश धरै वापै सफेद कपरा लपेटि ब्रह्माकी मूर्ति स्थापित करै॥८॥ और उत्तरमें सहत और घीसों भरेभये रुद्रके कलशको धरै ताके ऊपर लालवस्त्रसों लपेटि श्रीरुद्रको स्थापित करै ॥ ९ ॥

पश्चिमेविष्णुकलशंगङ्गोदकसमन्वितम् ॥ तस्योपरिन्यसेद्विष्णुंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥७॥ पूर्वेतुब्रह्मकलशंक्षीरोदकसमन्वितम्॥ब्रह्माणंस्थापयेत्तत्रश्वेतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥८॥ उत्तरस्यांरुद्रकुम्भमपूरितमधुसर्पिषा ॥ श्रीरुद्रंस्थापयेत्तत्ररक्तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥९॥ दक्षिणस्यांयमघटमिन्द्रोदकसमन्वितम् ॥ कृष्णवस्त्रेणसंवेष्ट्यतस्योपरियमंन्यसेत ॥ १० ॥ मध्येतुमण्डलंकृत्वास्थापयेत्कौशिकंसुतः ॥ दक्षिणाभिमुखोभूत्वाऽपसव्येनचतर्पयेत् ॥ ११ ॥ विष्णुंविधिंशिवधर्मंवेदमन्त्रैश्चतर्पयेत् ॥ होमंकृत्वाचरेत्पश्चाच्छ्राद्धंदशघटादिकम् ॥ १२ ॥

और दक्षिणदिशामें इंद्रके जलसे भरेभये यमके घटको धरै ताके ऊपर काले कपरासों लपेटि यमकी मूर्ति स्थापित करै ॥ १० ॥ और मध्यमें मंडल करिकै पुत्र कौशिकको स्थापित करै और दक्षिणाभिमुख होकै अपसव्यसों तर्पण करै ॥११॥ विष्णु ब्रह्मा शिव और धर्म इनको वेदके मंत्रसों तर्पण करै और होमकरिकै पीछे दशघट आदि श्राद्ध करै ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिरि पितरनके तारनेको गोदान दे हे माधव ! मोकरिकै दिईभई यह गौ तुम्हारी प्रसन्नताके लिये होय ॥ १३ ॥ और वा मृतकके भोगे भये जे वस्त्र भूषण तथा वाहन होंय उनको और घीसों भरोभयो कांसेको पात्र और सतनजा तथा वाकी प्यारी वस्तु ॥ १४ ॥ और तिल आदि आठ महादान और जो अंतकालमें कियोगयो होय इन सबको शय्याके समीप धरिकै दान करै ॥ १५ ॥ ब्राह्मणके चरण

गोदानञ्चततोदद्यात्पितॄणांतारणायवै ॥ गौरेषाहिमयादत्ताप्रीतयेतेऽस्तुमाधव ॥ १३ ॥ उपभुक्तंतुतस्यासीद्व
स्त्रभूषणवाहनम् ॥ घृतपूर्णंकांस्यपात्रंसप्तधान्यंतदीप्सितम् ॥१४॥ तिलाद्यष्टमहादानमन्तकालेनचेत्कृतम्॥
शय्यासमीपेधृत्वैतद्दानंतस्याः प्रदापयेत् ॥ १५ ॥ प्रक्षाल्यविप्रचरणौपूजयेदम्बरादिभिः ॥ सिद्धान्नंतस्यदा
तव्यंमोदकाऽपूपकाः पयः ॥ १६ ॥ स्थापयेत्पुरुषंहैमंशय्योपरितदासुतः ॥पूजयित्वाप्रदातव्यामृतशय्याय
थोदिता ॥ १७ ॥ प्रेतस्यप्रतिमायुक्तासर्वोपकरणैर्वृता ॥ प्रेतशय्यामयाह्येषातुभ्यंविप्रनिवेदिता ॥ १८ ॥

धोयकै वस्त्रआदिसों पूजन करै और लड्डू पुआ आदि सिद्ध अन्न तथा दूध वाको देनो चाहिये ॥१६॥ वा समय पुत्र शय्याके ऊपर सुवर्णके पुरुषको स्थापित करै वाको पूजन करिकै कहेके अनुसार मृतशय्या देनी चाहिये ॥ १७ ॥ हे विप्र ! प्रेतकी प्रतिमा करि युक्त और संपूर्ण सामग्री समेत यह प्रेतशय्या मैंने तुमसों कही ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या प्रकार कुटुंबी आचार्यके लिये देनी चाहिये ता पीछे प्रदक्षिणा करिकै नमस्कार करि विसर्जन करै ॥ १९ ॥ या प्रकार शय्याके देनेसों और नवकादि श्राद्धसों और वृषोत्सर्गके विधानसों प्रेत परमगतिको प्राप्त होय है ॥ २० ॥ ग्यारहें दिन विधिसों वृषोत्सर्ग करै हीन अंगवालेको रोगीको बच्चोंको छोडकै सलक्षण अर्थात् चिह्नसमेत करै ॥ २१ ॥ लाल जाकी आंखैं और पिंगल वर्ण और सींग

इत्याचार्यायदातव्याब्राह्मणायकुटुम्बिने ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ १९ ॥ एवंशय्याप्रदानेनश्राद्धेननवकादिना ॥ वृषोत्सर्गविधानेनप्रेतोयातिपरांगतिम् ॥ २० ॥ एकादशेह्निविधिनावृषोत्सर्गंसमाचरेत् ॥ हीनाङ्गंरोगिणंबालंत्यक्त्वाकुर्यात्सलक्षणम् ॥ २१ ॥ रक्ताक्षःपिंगलोयस्तुरक्तःशृङ्गेगलेखुरे॥श्वेतोदरःकृष्णपृष्ठोब्राह्मणस्यविधीयते ॥२२॥ सुस्निग्धवर्णोयोरक्तः क्षत्रियस्यविधीयते॥पीतवर्णश्चवैश्यस्यकृष्णःशूद्रस्यशस्यते ॥२३॥ यस्तुसर्वाङ्गपिंगःस्याच्छ्वेतःपुच्छेपदेषुच॥सपिंगोवृषइत्याहुःपितॄणांप्रीतिवर्द्धनः ॥२४ ॥

तथा खुर जाके लाल और पेट सफेद पीठ काली ऐसो वृष ब्राह्मणको कहो है ॥२२॥ अच्छा चिकना लालरंगका क्षत्रियके लिये कहो है और पीले रंगका वैश्यको और शूद्रको काला कहा है ॥ २३ ॥ जाको सब अंग तौ पिंगवर्ण होय और पूंछ तथा पांय सफेद होंय वाको पिंगवृष कहैं हैं वह पितरनकी प्रीतिको बढावनहारो है ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जा बैलके पाँव मुख और पूँछसफेद होंय और लाखके रसके समान देहको रंग होय ताको नील कहे हैं ॥२५॥ जो रंगमें लाल होय और जाके मुख तथा पूँछ पांडुवर्ण होय और खुर तथा सींग पिंगलवर्ण होय वाको रक्तनील कहै हैं ॥२६॥ सब अंगमें जो एक रंग होय और खुर तथा पूँछमें पिंगवर्ण होय वाको नीलपिंग कहै हैं वह पुरुषोंको उद्धार करनहारो है ॥२७॥ जाको कबूतरकोसोरंग होय

चरणास्तुमुखंपुच्छंयस्यश्वेतानिगोपतेः ॥ लाक्षारससवर्णोयस्सनीलइतिकीर्तितः ॥ २५ ॥ लोहितोयस्तुवर्णेन मुखेपुच्छेचपाण्डुरः ॥पिंगःखुरविषाणाभ्यांरक्तनीलोनिगद्यते ॥ २६ ॥ सर्वांगेष्वेकवर्णोयः पिंगःपुच्छेखुरेषुयः ॥ तंनीलपिंगमित्याहुः पूर्वजोद्धारकारकम् ॥ २७ ॥ पारावतंसवर्णस्तुललाटेतिलकान्वितः ॥ तबभ्रुनीलमित्याहुःपूर्णंसर्वांगशोभनम् ॥ २८ ॥ नीलःसर्वशरीरेषुरक्तश्चनयनद्वये ॥ तमप्याहुर्महानीलंनीलःपञ्चविधःस्मृतः ॥ ॥ २९ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्योनसधार्योगृहेभवेत् ॥ तदर्थमेषाचरतिलोकेगाथापुरातनी ॥ ३० ॥

और माथेमें जाके तिलक होय वाको बभ्रुनील कहै हैं वह पूर्ण है और सब अंगनसों शोभन है ॥२८॥ जाको सब शरीर नीलाहोय और दोनों आँखैं लाल होंय वाको महानील कहै हैं; नील पाँच भाँतिको होय है ॥२९॥ अवश्यही छोडने योग्य होय है वह घरमें राखन योग्य नहीं होय है ताके लिये पुरानी गाथा लोकमें प्रचलित होरही है ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुतसे पुत्रकी इच्छा करने योग्य है इसलिये कि, उनमेंसों एकहू गयाको जाय गौरी कन्याको ब्याहै अथवा नील बैलको छोडै ॥३१॥
वही पुत्र मानने योग्य है जो वृषोत्सर्ग करै और जो गयाके श्राद्ध करै वह पुत्र है अन्य विष्ठाके समान हैं ॥ ३२ ॥ जे कोई जाके
पुरखें रौरवादि नरकमें पचाये जांय हैं उन सबनको वृषोत्सर्ग करिकै इक्कीस पीढीनको तारदे ॥ ३३ ॥ स्वर्गमें गयेभयेहू पितर

एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत ॥गौरींविवाहयेत्कन्यांनीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ ३१ ॥ सएवपुत्रोमन्तव्यो
वृषोत्सर्गंतुयश्चरेत् ॥ गयायांश्राद्धदाताचयोऽन्योविष्ठासमः किल ॥३२॥ रौरवादिषुयकेचित्पच्यन्तेयस्यपूर्व
जाः ॥ वृषोत्सर्गेणतान्सर्वांस्तारयेदेकविंशतिम् ॥३३॥ वृषोत्सर्गंकिलेच्छन्तिपितरःस्वर्गताअपि ॥ अस्मद्वं
शेसुतःकोपिवृषोत्सर्गंकरिष्यति ॥३४॥ तदुत्सर्गाद्वयंसर्वेयास्यामःपरमांगतिम् ॥ सर्वयज्ञेषुचास्माकंवृषयज्ञोहि
मुक्तिदः ॥ ३५ ॥ तस्मात्पितृविमुक्त्यर्थंवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ यथोक्तेनविधानेनकुर्यात्सर्वंप्रयत्नतः ॥ ३६ ॥

निश्चय वृषोत्सर्गकी इच्छा करै हैं कि, हमारे वंशमें कोई पुरुष वृषोत्सर्ग करैगो ॥ ३४ ॥ वाके उत्सर्गसों हम सब परमगतिको प्राप्त
होयँगे सब यज्ञमें वृषयज्ञ हमको निश्चय मुक्ति देनहारो है ॥ ३५ ॥ तातें पितरनकी मुक्तिके लिये वृषयज्ञको करै यथोक्त विधानसों
सब यत्नपूर्वक करै ॥ ३६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रहनको स्थापन करिकै उनके मंत्रनसों पूजनकरै और शास्त्रके अनुसार होम करै और आतुर वृषको पूजन करै ॥ ३७ ॥ बछरा और बछियाको लायकै उन दोनोंके कंकण बांधै और विवाहके विधानसों तब खंभ गाडै ॥ ३८ ॥ वृषको और बछियाको रुद्र कुंभके जलसों स्नान करावै फिरी गंध और मालासों पूजन करि प्रदक्षिणा करावै ॥ ३९ ॥ दाहिनी ओर त्रिशूल और बांई ओर चक्र लगावै

ग्रहाणांस्थापनंकृत्वातत्तन्मन्त्रैश्चपूजनम् ॥ होमंकुर्याद्यथाशास्त्रंपूजयद्वृषमातुरः ॥ ३७ ॥ वत्संवत्सींसमानाय्यबध्नीयात्कङ्कणंतयोः ॥ वैवाह्येनविधानेनस्तम्भमारोपयेत्तदा ॥ ३८ ॥ स्नापयेच्चवृषंवत्सींरुद्रकुम्भोदकेनच ॥ गन्धमाल्यैश्चसंपूज्यकारयेच्चप्रदक्षिणाम् ॥३९॥ त्रिशूलंदक्षिणेपार्श्वेवामेचक्रंप्रदापयेत् ॥ तंविमुच्याञ्जलिंबद्ध्वापठेन्मन्त्रमिमंसुतः ॥ ४० ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणब्रह्मणानिर्मितः पुरा ॥ तवोत्सर्गप्रदानेनतारयस्वभवार्णवात् ॥ ४१ ॥इतिमन्त्रान्नमस्कृत्यवत्संवत्सींसमुत्सृजेत ॥ वरदोहंसदातस्यप्रेतमोक्षंददामिच ॥ ४२ ॥ तस्मादेषप्रकर्त्तव्यस्तत्फलंजीवतोभवेत् ॥ अपुत्रस्तुस्वयंकृत्वासुखंयातिपरांगतिम् ॥ ४३ ॥

वाको छोडिकै हाथ जोरि पुत्र यह मंत्र पढै ॥ ४० ॥ तू धर्म है पहले ब्रह्माकरि बैलके रूपमें बनायो गयो है तेरे उत्सर्ग प्रदान करि भवरूपी समुद्रते तार ॥ ४१ ॥ या मंत्रसों नमस्कार करि बछरा और बछियाको छोडदे मैं सदा वाको वर देनहारो हौं प्रेतके मोक्षको देउहौं ॥ ४२ ॥ तातें यह करनो चाहिये कि जीवते भरेहू वाको फल होय है पुत्ररहित पुरुष आपही याविधिको करिकै सुखपूर्वक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ४३ ॥ कार्तिक आदि शुभ महीनेमें सूर्यके उत्तरायण होनेपै शुक्लपक्षमें अथवा कृष्णपक्षमें तथा द्वादशी
आदि तिथिमें ॥४४॥ सूर्य चन्द्रके ग्रहणमें पवित्र तीर्थमें दोनों अयननमें और दोनों विषुवत्‌में वृषोत्सर्ग करै ॥४५॥ शुभलग्नमें तथा
शुभमुहूर्तमें शुद्धदेशमें सावधान हो विधिके जाननेवाले शुभलक्षण ब्राह्मणको बुलाय ॥ ४६ ॥ जप होम तथा दाननसों देहको शोधन

कार्तिकादौशुभेमासेचोत्तरायणगेरवौ ॥ शुक्लपक्षेऽथवाकृष्णेद्वादश्यादितिथौतथा ॥ ४४ ॥ ग्रहणद्वितयेचैव
पुण्यतीर्थेऽयनद्वये ॥ विषुवद्वितयेचापिवृषोत्सर्गंसमाचरेत् ॥ ४५ ॥ शुभलग्नेमुहूर्तेचशुचौदेशेसमाहितः ॥
ब्राह्मणंतुसमाहूय विधिज्ञंशुभलक्षणम् ॥ ४६ ॥ जपैर्होमैस्तथादानैःप्रकुर्याद्देहशोधनम् ॥ पूर्ववत्सकलंकृत्यं
कुर्याद्धोमादिलक्षणम् ॥ ६७ ॥ शालग्रामंचसंस्थाप्यवैष्णवंश्राद्धमाचरेत् ॥ आत्मश्राद्धंततः कुर्याद्दद्याद्दानं
द्विजन्मने ॥ ४८ ॥ एवंयः कुरुतेपक्षिन्नपुत्रश्चापिपुत्रवान् ॥ सर्वकामफलंतस्यवृषोत्सर्गात्प्रजायते ॥ ४९ ॥

करै और पहलेकी भाँति होमादिलक्षण सब विधिको करै ॥ ४७ ॥ शालग्रामको स्थापित करि वैष्णव श्राद्ध करै ता पीछे अपनो
श्राद्धकरै और ब्राह्मणके लिये दान देय ॥ ४८ ॥ हे पक्षिन् ! पुत्रवान तथा अपुत्र जो या प्रकार करै है वाको वृषोत्सर्गते
सब कामनाके फल मिलै हैं ॥ ४९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निहोत्र आदि यज्ञनकरिके और नानाप्रकारके दाननकरिके वा गतिको नहीं पावे है जाको वृषोत्सर्गते प्राप्त होय है ॥ ५० ॥ बालक अवस्थामें कुमार अवस्थामें और पौगंड अवस्थामें यौवनमें तथा बुढापेमें कियोभयो जो पाप वह वृषोत्सर्गते दूरि होजाय है यामें संदेह नहीं है ॥ ५१ ॥ मित्रको द्रोही कृतघ्न जो कियेभये उपकारको न मानै और सुवर्ण चुरावनहारो येसब वृषोत्सर्गते मुक्त होजाय हैं॥५२॥

अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्चविविधैरपि ॥ नतांगतिमवाप्नोतिवृषोत्सर्गेणयांलभेत् ॥ ५० ॥ बाल्येकौमारेपौगण्डेयौवनेवार्धकेकृतम् ॥ यत्पापंतद्विनश्येतवृषोत्सर्गान्नसंशयः ॥५१॥ मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चसुरापोगुरुतल्पगः ॥ ब्रह्महाहेमहारीचवृषोत्सर्गात्प्रमुच्यते ॥ ५२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ वृषोत्सर्गसमंपुण्यंनास्तितार्क्ष्यजगत्त्रये ॥ ५३ ॥ पतिपुत्रवतीनारीद्वयोरग्रेमृतायदि ॥ वृषोत्सर्गंनैवकुर्याद्दद्याद्गांचपयस्विनीम् ॥ ५४ ॥ वृषभंवाहयेद्यस्तुस्कन्धेपृष्ठेचखेचर ॥ सपतेन्नरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥ ५५ ॥

तातें सब यत्ननसों वृषोत्सर्ग करै हे गरुड! तीनों लोकनमें वृषोत्सर्गके समान पुण्य नहीं है ॥५३॥ पति पुत्रवाली स्त्री जो दोनोंते पहिले मरिजाय तो वह वृषोत्सर्ग न करै किंतु दूध देती भई गौको दान करै ॥५४॥ हे गरुड! जो बैलको कंधेमें जोते है और जो पीठिपर लादै हैं वह महाप्रलयपर्यंत घोरनरकमें पडो रहै है ॥ ५५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो निर्दयी घूँसनसों अथवा लाठीनसों बलको मारै है वह मनुष्य कल्पपर्यंत यमकी यातनानको भोगैहै ॥ ५६ ॥ या प्रकार वृषो त्सर्ग करिकै सोलह श्राद्ध करै सपिंडीकरणसों पहले सो मैं तुमसों कही हौं ॥ ५७ ॥ स्थानमें द्वारपर आधे मार्गमें चितापर मृतकके हाथपर अस्थिके संचयमें छठो और दशदिनके दश पिंड देवै ॥ ५८ ॥ मैने जो तुमसो यह षोडश प्रथम कहो सो मलिन

वृषभंताडयेद्यस्तुनिर्दयोमुष्टियष्टिभिः ॥ सनरःकल्पपर्यन्तमुनक्तियमयातनाम् ॥ ५६ ॥ एवंकृत्वावृषोत्सर्गं कुर्याच्छ्राद्धानिषोडश ॥ सपिंडीकरणादर्वाक्तदहंकथयामिते ॥ ५७ ॥ स्थानेद्वारेर्धमार्गेचचितायांशवह स्तके ॥ अस्थिसंचयनेषष्ठोदशपिंडादशाह्निकाः ॥ ५८ ॥ मलिनंषोडशचैतत्प्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ अन्यच्च षोडशंमध्येद्वितीयंकथयामिते ॥ ५९ ॥ प्रथमंविष्णवेदद्याद्वितीयंश्रीशिवायच ॥ याम्यायपरिवारायतृतीयंपि ण्डमुत्सृजेत् ॥६०॥ चतुर्थंसोमराजायहव्यवाहायपञ्चमम् ॥ कव्यवाहायषष्ठंचदद्यात्कालायसप्तमम् ॥ ६१॥ रुद्रायचाष्टमंदद्यान्नवमंपुरुषायच ॥ प्रेतायदशमंचैवैकादशंविष्णवेततः ॥ ६२ ॥

है औरहू दूसरो षोडश मध्यमें तुमसों कहौ हौं ॥ ५९ ॥ पहलो विष्णुके निमित्त देय और दूसरो श्रीशिवके निमित्त और तीसरो परिवार समेत यमके लिये पिंडदान करै ॥ ६० ॥ चौथो सोमराजके लिये और पंचम हव्यवाहके लिये छठा कव्यवाहके लिये और सातवाँ कालके निमित्त पिंडदान करै ॥ ६१ ॥ रुद्रके लिये आठवां पिंडदान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै और नववाँ पुरुषके प्रेतके लिये दशमा और ग्यारहवां विष्णुके निमित्त दान करै ॥ ६२ ॥ बारहवां ब्रह्माके निमित्त और तेरहवां विष्णुके लिये चौदहवां शिवके लिये और पंद्रहवां यमके लिये पिंडदान करै ॥ ६३ ॥ हे गरुड ! सोलहवां पिंड वा पुरुषके लिये दान करै तत्त्वके जाननहारे पुरुष याको मध्यषोडशक कहै हैं ॥ ६४ ॥ बारहौं महीनेमें पाक्षिक त्रैपक्षिक और न्यूनषा

द्वादशंब्रह्मणेदद्याद्विष्णवेचत्रयोदशम ॥ चतुर्दशंशिवायैवयमायदशपञ्चकम् ॥ ६३ ॥ दद्यात्तत्पुरुषायैवपिण्डंषोडशकंखग ॥ मध्यंषोडशकंप्राहुरेतत्तत्त्वविदोजनाः ॥ ६४ ॥ द्वादशप्रतिमासेषुपाक्षिकंचत्रिपाक्षिकम् ॥ न्यूनषाण्मासिकंपिण्डंदद्यान्न्यूनाब्दिकंतथा ॥६५॥ उत्तमषोडशंचैतन्मयातेपरिकीर्तितम ॥ श्रपयित्वाचरुंताक्ष्यंकुर्यादेकादशाहनि ॥ ६६ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाष्टौश्राद्धंप्रेतत्वनाशनम ॥ यस्यजातंविधानेनसभवेत्पितृपंक्तिभाक् ॥ ६७ ॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थंकारयेत्षोडशत्रयम् ॥ एतच्छ्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतोभवतिसुस्थिरम ॥ ६८ ॥

ण्मासिक पिंड तथा न्यूनाब्दिक पिंडको दान करै ॥ ६५ ॥ यह उत्तम षोडश मैंने तुमसों कहो हे गरुड ! खीरको पककरि ग्यारहेंदिन करै ॥ ६६ ॥ चालीस और आठ कहिये ४८ श्राद्ध प्रेतपनके नाश करनहारे जाके ये विधिपूर्वक होय हैं वह पितरनकी पंक्तिमें गिनो जाय है ॥६७॥ पितरनकी पंक्तिमें प्रवेश करनेके लिये षोडशत्रय करावे वा श्राद्धकरिकै जो हीन है वह सुस्थिर प्रेत होय है॥६८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षोडशत्रय है संज्ञा जाकी ऐसो श्राद्ध जबलौं नहीं दियो जाय है तबलौं स्वदत्त कहिये अपनो दियो और परदत्त कहिये दूसरेको दियो नहीं प्राप्त होय है ॥६९॥ तातें पुत्रकरि विधिसों षोडशत्रय करनो चाहिये और भर्ताको जो पत्नी करै तौ वाको अनंत कल्याणहोय ॥ ७० ॥ जो स्त्री मरेभये पतिको और्ध्वदेहिक कर्म करै है अर्थात् क्षयाह और पाक्षिक श्राद्ध वह मुझकरिकै सती कही जाती है

यावन्नदीयतेश्राद्धंषोडशत्रयसंज्ञकम् ॥ स्वदत्तंपरदत्तंचतावन्नैवोपतिष्ठते ॥ ६९ ॥ तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंविधिनाषोडशत्रयम् ॥ भर्तुर्वाकुरुतेपत्नीतस्याःश्रेयोह्यनन्तकम् ॥७०॥ संपरेतस्ययापत्युः कुरुतेचौर्ध्वदेहिकम् ॥ क्षयाहंपाक्षिकश्राद्धंसासतीह्युच्यतेमया ॥ ७१ ॥ उपकारायसाभर्तुर्जीवत्यैषापतिव्रता ॥ जीवितंसफलंतस्यायामृतंस्वामिनंभजेत् ॥ ७२ ॥ अथकश्चित्प्रमादेनम्रियतेवह्निवारिभिः ॥ संस्कारप्रमुखंकर्मसर्वंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७३ ॥ प्रमादादिच्छयावापिनागाद्वाम्रियतेयदि ॥ पक्षयोरुभयोर्नागंपञ्चमीषुप्रपूजयेत् ॥ ७४ ॥

॥ ७१ ॥ वह पतिव्रता जो जीवै है वह भर्ताके उपकारके लिये जीवै है वाको जीवनो सफल है जो मरेभये स्वामीको भजती है ॥७२॥ और जो कोई प्रमादसों आगि वा जलसों मरिजाय ताको संस्कार आदि सब कर्म विधिपूर्वक करै॥७३॥प्रमादसों इच्छाकरिकै अथवा साँपसे जो मनुष्य मरै तो दोनों पक्षनमें ५ तिथिमें नागको पूजन करै ॥ ७४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथिवीमें सर्पके शरीरकी आकृति चूनकी बनावे ताकों सफेद फूलनसों और सुगंधी तथा चंदनसों पूजै ॥ ७५ ॥ धूप दीप दे और तंडुलनको और तिलनको डारै कच्चो पिसोभयो नैवेद्य और दूध निवेदन करै ॥७६॥ शक्तिके अनुसार सुवर्णको नाग और गो ब्राह्मणको दान करै ता पीछे हाथ जोरिकै नागराज प्रसन्न होउ ऐसे कहै ॥ ७७ ॥ फिरि उनकी नारायणबलिकी क्रिया करै वाको करिकै

कुर्यात्पिष्टमयींलेख्यांनागभोगाकृतिंभुवि ॥ अर्चयेत्तांसितैः पुष्पैःसुगन्धैश्चन्दनेनच ॥ ७५ ॥ प्रदद्याद्धूपदीपौचतण्डुलांश्चतिलान्क्षिपेत् ॥ आमपिष्टंचनैवेद्यक्षीरंचविनिवेदयेत् ॥ ७६ ॥ सौवर्णंशक्तितोनागंगांचदद्याद्द्विजन्मने ॥ कृतांजलिस्ततोब्रूयात्प्रीयतान्नागराडिति ॥ ७७ ॥ पुनस्तेषांप्रकुर्वीतनारायणबलिक्रियाम् ॥ तयालभन्तेस्वर्वासंमुच्यन्तेसर्वपातकैः ॥ ७८ ॥ एवंसर्वंक्रियांकृत्वाघटंसान्नंजलान्वितम् ॥ दद्यादाब्दंयथासंख्यान्पिण्डान्वासजलान्क्रमात् ॥ ७९ ॥ एवमेकादशेकृत्वाकुर्यात्सापिंडनंततः ॥ शय्यापदानांदानंच कारयेत्सूतकेगते ॥ ८० ॥ इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

स्वर्गवासको पावै है और सब पापनतें छूटि जायहै ॥ ७८ ॥ या प्रकार सब क्रिया करिकै अन्न तथा जल समेत घट वर्षपर्यंत दानकरै अथवा अर्घ्य समेत क्रमसों पिंड देय ॥ ७९ ॥ ऐसे एकादशमें दिन करिकै ता पीछे सपिंडन करै और सूतकके जानेपै शय्या तथा पदनको दान करै ॥ ८० ॥ इति श्रीगरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड बोले, सपिंडनकी विधि कहौ और सूतकको निर्णय कहौ और शय्या तथा पदनकी सामग्रीको और हे प्रभो ! उनकी महिमाको कहौ ॥१॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! सुनो सापिण्ड्य आदि संपूर्ण क्रिया मैं तुमसों कहौंहौं जा क्रियासों प्राणी प्रेतको नाम छोडिकै पितृगणमें प्रवेश करैहै ॥२॥ जिनको पिण्ड पितामह शिव आदिकनमें नहीं मिलो है उनको पुत्रकरिकै दिये भये नानाप्रकारके दान

गरुडउवाच ॥ ॥ सपिण्डनविधिंब्रूहिसूतकस्यचनिर्णयम् ॥ शय्यापदानांसामग्रींतेषांचमहिमांप्रभो ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुताक्ष्यंप्रवक्ष्यामिसापिंड्याद्यखिलांक्रियाम् ॥ प्रेतनामपरित्यज्ययथापितृगणेविशेत ॥ २ ॥ नपिण्डोमिलितोयेषांपितामहशिवादिषु ॥ नोपतिष्ठन्तिदानानिपुत्रैर्दत्तान्यनेकधा ॥ ३ ॥ अशुद्धः स्यात्सदापुत्रोनशुध्यतिकदाचन ॥ सूतकंननिवर्तेतसपिण्डीकरणंविना ॥ ४ ॥ तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंसूतकान्तेसपिण्डनम् ॥ सूतकंतेप्रवक्ष्यामिसर्वेषांचयथोचितम् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणस्तुदशाहेनक्षत्रियोद्वादशेहनि ॥ वैश्यः पञ्चदशाहेनशूद्रोमासेनशुध्यति ॥ ६ ॥

नहीं मिलैं हैं ॥३॥ पुत्र सदा अशुद्ध रहै है कदाचन शुद्ध नहीं होय है कारण यह है कि सपिंडी करनेके विना सूतक नहीं जायहै ॥४॥ तातें पुत्रको सूतकके अंतमें सपिण्डन करनो चाहिये और सबको यथोचित सूतक मैं तुमसों कहौंहौं ॥५॥ ब्राह्मण तौ दश दिनकरिकै और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षत्रिय बारह दिनकरिकै वैश्य पंद्रह दिनकरिक और शूद्र एक महीनेकरिकै शुद्ध होय है॥ ६॥ दश दिनकरिकै सपिंड प्रेतके सूतकमें शुद्ध होय हैं और कुलके लोग तीनि रात्रिमें शुद्ध होय हैं और गोत्रके स्नानकरिकै शुद्ध होयहैं ॥ ७॥ चौथी पीढीमें दशरात्रिलों सूतक रहैहै और पांचमी पीढीमें छःरात्रि और छठी पीढीमें चारदिन और सातमीमें तीनि [illegible]न सूतक रहै है॥ ८॥

दशाहेनसपिण्डास्तुशुध्यन्तिप्रेतसूतके ॥ त्रिरात्रेणसकुल्यास्तुस्नात्वाशुद्ध्यन्तिगोत्रजाः ॥७॥ चतुर्थेदशरात्रंस्यात्षण्निशाः पुंसिपञ्चमे ॥ षष्ठेचतुरहःप्रोक्तसप्तमचदिनत्रयम् ॥ ८॥ अष्टमदिनमकृतुनवमेप्रहरद्वयम् ॥ दशमेस्नानमात्रंहिमृतकजन्मसूतकम् ॥ ९॥ देशान्तरगतःकश्चिच्छृणुयाद्योह्यहर्निशम ॥ यच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् ॥ १०॥ अतिक्रान्तेदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत ॥ संवत्सरेव्यतीतेतुस्नानमात्राद्विशुध्यति ॥ ११॥ आद्यभागद्वययावन्मृतकस्यचसूतक ॥ द्वितीयेपतितेचाद्यात्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १२॥

आठमीमें एक दिन नवमीमें दो पहर और दशमीमें स्नान करनेहीसों मृतकसूतक और जन्मसूतक जायँ हैं॥९॥ परदेशमें गयोभयो कोई जो दशदिनके भीतर सुनै तौ दशरात्रिमें जो बाकी दिन रहैं उतनाही सूतक जानिये ॥ १०॥ दश दिनके बीति जानेपै वर्षसों पहले तीनि रात्रिको सूतक जानिये और वर्षके बीतिजानेपर स्नानमात्रतें शुद्ध होय है॥ ११॥ मृतकके सूतकके पहले दो भाग बीति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जानेपर जो दूसरो सूतक होय तौ पहले सूतकते शुद्धि कही है॥ १२ ॥ बालकके दांत उत्पन्न होनेसों पहले सद्यःशौंच अर्थात् स्नानमात्रहीसो शुद्धि होयहै और मुंडनपर्यंत एकरात्रि कहीहै और यज्ञोपवीतपर्यन्त तीनिरात्रियाते परे दशरात्रिमें शुद्धि होयहै॥१३॥ जन्मसों लगाके मुंडनपर्यंत जो कन्या मरजाय तो सब वर्णनमें सदा सद्यःशौच अर्थात स्नानमात्रसों शुद्धि होय हैं ॥१४॥ ता पीछे वाग्दानपर्यंत अर्थात् सगाईलौं एकही दिनको सूतक होयहै यातेपरे बढीभई कन्याको तीनिरात्रिको सूतक होय है यह निश्चयहै॥१५॥

आदन्तजननात्सद्यआचौलान्नैशिकीस्मृता ॥ त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम् ॥ १३ ॥ आजन्मनस्तु चौलान्तंयत्रकन्यापिपद्यते सद्यः शौचभवेत्तत्रसर्ववर्णेषुनित्यशः ॥ १४ ॥ ततोवाग्दानपर्यन्तंयावदेकाह मेवहि ॥ अतः परं प्रवृद्धानांत्रिरात्रमितिनिश्चयः ॥ १५ ॥ वाक्प्रदानेकृतेत्वत्रज्ञेयंचोभयतस्त्र्यहम् ॥ पितुर्वर स्यचततोदत्तानांभर्तुरेवहि ॥ १६ ॥ षण्मासाभ्यन्तरेयावद्गर्भस्रावोभवेद्यदि ॥ तदामाससमैस्तासां दिवसैःशुद्धिरिष्यते ॥ १७ ॥

और वाग्दान करनेपर तौ दोनों ओर तीनिदिनको जानिये अर्थात् तीनिदिनको पिताके कुलमें और तीनिदिनको वरके कुलमें सूतक जानिये और जो ब्याहीभई हैं उनको सूतक भर्ताहीके कुलमें होयहै पिताकेमें नहीं होय है॥ १६ ॥ छः महीनेके भीतर जो गर्भस्राव होय तौ उनकी महीननके बराबर दिननमें शुद्धि कहीहै अर्थात् जितने महीनेको गर्भ होय उतनेही दिननमें शुद्धि होयहै ॥१७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यातें उपरांत अपनी जातिमें कहो भयो आशौच उन यातानमें विद्यमान है और गर्भके पतन होनेपै सपिंडनको सद्यःशौच कहोहै ॥१८॥ सब वर्णनके सूतकमें और मृतकमें दशदिननमें शुद्धि होय है कलियुगमें यह शास्त्रको निश्चय है ॥ १९ ॥ आशीर्वाद देवतानकी पूजा प्रत्युत्थान अभिवंदन शय्यापर सोवना और स्पर्श इन सबनकों मृतक सूतकमें न करै ॥ २० ॥ संध्या, दान, जप, होम, वेदका पढना

अतऊर्ध्वंस्वजात्युक्तमाशौचंतासुविद्यते ॥ सद्यःशौचंसपिण्डानांगर्भस्यपतनेसति ॥ १८ ॥ सर्वेषामेववर्णानांसूतकेमृतकेपिवा ॥ दशाहाच्छुद्धिरित्येषकलौशास्त्रस्यनिश्चयः ॥ १९ ॥ आशीर्वादंदेवपूजांप्रत्युत्थानाभिवन्दनम् ॥ पर्यङ्केशयनंस्पर्शनकुर्यान्मृतसूतके ॥ २० ॥ संध्यांदानंजपहोमंस्वाध्यायंपितृतर्पणम् ॥ ब्रह्मभोज्यंव्रतंनैवकर्तव्यंमृतसूतके ॥ २१ ॥ नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंसूतकेयः समाचरेत् ॥ तस्यपूर्वकृतंनित्यादिकंकर्मविनश्यति ॥ २२ ॥ व्रतिनोमन्त्रपूतस्यसाग्निकस्यद्विजस्यच ॥ ब्रह्मनिष्ठस्ययतिनोनहिराज्ञांचसूतकम् ॥ २३ ॥

पितरोंका तर्पण, ब्राह्मणभोजन और व्रत इन सबको मृतसूतकमें न करै ॥ २१ ॥ जो सूतकमें नित्यनैमित्तक और काम्य जो काहु वस्तुकी कामनासों कियो गयो होय इत सबनको जो सूतकमें करैहै वाको पहले कियो भयो नित्यआदि सब कर्म नाशको प्राप्त होयहै ॥२२॥व्रतीको और जो मंत्रसों पवित्रहै ताको अग्निहोत्री और ब्रह्मनिष्ठ गृहस्थीको और यतीको तथा राजाको सूतक नहीं लगैहै ॥ २३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विवाह उत्सव और यज्ञमें मृतसूतक होनेपै वाको पहले कियोभयो अन्नखानो चाहिये यह मनुने कहाहै ॥२४ ॥ सूतकको न जानकर जो सूतकको ग्रहण करै है वह दोषभागी नहीं होय है और याचकको देतो भयोहू दाता दोषको प्राप्त होय है ॥ २५ ॥ जो सूतकको छिपायकै ब्राह्मणको अन्न देय है और जे ब्राह्मण जानिकै लेय हैं वेभी दोषभागी हैं ॥ २६ ॥ तातें सूतककी शुद्धिके

विवाहोत्सवयज्ञेषुजातेचमृतसूतके ॥ तस्यपूर्वकृतंचान्नंभोज्यंतन्मनुरब्रवीत ॥ २४ ॥ सूतकेयस्तुगृह्णातितदज्ञानान्नदोषभाक् ॥ दातादोषमवाप्नोतियाचकायददन्नपि ॥२५॥ प्रच्छाद्यसूतकंयस्तुददात्यन्नंद्विजायच ॥ ज्ञात्वागृह्णन्तियेविप्रादोषभाजस्तुतेअपि ॥ २६ ॥ तस्मात्सूतकशुद्ध्यर्थंपितुःकुर्यात्सपिण्डनम् ॥ ततःपितृगणैःसार्द्धंपितृलोकंसगच्छति ॥ २७ ॥ द्वादशाहेत्रिपक्षेवाषण्मासेवत्सरेपिवा ॥ सपिंडीकरणंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २८ ॥ मयातुप्रोच्यतेताक्ष्यंशास्त्रधर्मानुसारतः ॥ चतुर्णामेववर्णानांद्वादशाहेसपिण्डनम् ॥ ॥ २९ ॥ अनित्यात्कलिधर्माणांपुंसांचैवायुषःक्षयात् ॥ अस्थिरत्वाच्छरीरस्यद्वादशाहेप्रशस्यते ॥ ३० ॥

लिये पिताको सपिंडन करै तापीछे पितृगणनके साथ पितृलोकको जाय है ॥ २७ ॥ बारहें दिन वा तीनि पाखमें छः महीनेमें अथवा वर्षमें तत्त्वके देखनहारे मुनीश्वरनने सपिंडीकरण कहो है ॥ २८ ॥ हे गरुड ! मैंने तो धर्मशास्त्रके अनुसार चारों वर्णनको बारहें दिन सपिंडन कहो है ॥ २९ ॥ कलिधर्मनकी अनित्यतासों और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरुषनकी आयु कम होनेसों और शरीरके स्थिर न होनेसों बारहे दिन करनो ठीक है ॥ ३० ॥ व्रतबंध कहिये यज्ञोपवीत और उत्सव यज्ञ आदिकनके और आदिशब्दसो होली आदिकोहू और व्रत और उद्यापन और विवाह आदि गृहमेधी जो वृद्ध है ताके मरनेपै नहीं होय है ॥ ३१ ॥ संन्यासी भिक्षाको नहीं लेय है और हंतकार कहिये वैश्वदेवके न करनहारे मनुष्य न पंचसूनाको दूरि करनहारे अन्नको विभाग नहीं ग्रहण कियोजाय है जबलौं पिंड नहीं मिलायो जायहै तबलौं नित्य और नैमित्तिक सब लुप्त हो जांय हैं॥३२॥

व्रतबन्धोत्सवादीनिव्रतस्योद्यापनानिच ॥ विवाहादिभवेन्नैवमृतेचगृहमेधिनि ॥ ३१ ॥ भिक्षुर्भिक्षांनगृह्णाति हन्तकारोनगृह्यते ॥ नित्यंनैमित्तिकंलुप्येद्यावत्पिंडोनमेलितः ॥ ३२ ॥ कर्मलोपात्प्रत्यवायीभवेत्तस्मात्स पिंडनम् ॥ निरग्निकः साग्निकोवाद्वादशाहेसमाचरेत् ॥ ३३ ॥ यत्फलंसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुयत्फलम् ॥ तत्फ लंसमवाप्नोतिद्वादशाहेसपिण्डनात् ॥ ३४ ॥ अतःस्नात्वामृतस्थानेगोमयेनोपलेपिते ॥ शास्त्रोक्तेनविधानेन सपिण्डींकारयेत्सुतः ॥ ३५ ॥

और कर्मके लोपसे प्रत्यवायी होयहै तातें सपिंडन करनो चाहिये चाहै निरग्निक होय और चाहै साग्निक होय बारहे दिन सपिंडन करै ॥ ३३ ॥ जो फल सब तीर्थनमें होय है और जो फल सबयज्ञनमें वा फलको बारहेंदिन सपिंडन करनेसों प्राप्त होय है ॥ ३४॥ यातेंस्नान करिकै मृतक स्थानमें गोबरसों लीपै और शास्त्रमें कहेभये विधानसों पुत्र सपिंडी करावै ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाद्य अर्घ्य आचमन आदिसों विश्वेदेवानको पूजन करै और कुत्सित पितृको विकिरपिंड देकै फिरि जलसों आचमन करै ॥ ३६ ॥ वसुरुद्रादि स्वरूप पितामह आदिकनकों यथाक्रम तीनि पिंड देय और चौथा मृतकको देय ॥३७॥ चंदन तुलसीपत्र धूप दीप उत्तम भोजन मुखवास इलायची आदिउत्तम वस्त्र और दक्षिणासों पूजन करै ॥ ३८ ॥ सोनेकी शलाकासों प्रेतके

पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्विश्वेदेवांश्चपूजयेत् ॥ कुपित्रेविकिरंदत्त्वापुनश्चापउपस्पृशेत् ॥ ३६ ॥ दद्यात्पितामहादीनांत्रीन्पिडांश्चयथाक्रमम् ॥ वसुरुद्रार्करूपाणांचतुर्थंमृतकस्यच ॥ ३७ ॥ चन्दनैस्तुलसीपत्रैर्धूपैर्दीपैःसुभोजनैः ॥ मुखवासैःसुवस्त्रैश्चदक्षिणाभिश्चपूजयेत् ॥ ३८ ॥ प्रेतपिंण्डंत्रिधाकृत्वासुवर्णस्यशलाकया ॥ पितामहादिपिण्डेषुमेलयेत्तंपृथक्पृथक् ॥ ३९ ॥ पितामह्यासमंमातुः पितामहसमपितुः ॥ सपिण्डीकरणंकुर्यादितिताक्ष्यमतंमम ॥ ४० ॥ मृतेपितरियस्याथविद्यतेचपितामहः ॥ तेनदेयास्त्रयःपिंडाःप्रपितामहपूर्वकाः ॥४१॥

पिंडके तीनि भाग करके पितामह आदिके पिंडनमें वाको पृथक् पृथक् मिलावै ॥ ३९ ॥ पितामहीके समान माताको और पितामहके समान पिताको सपिंडीकरण करै हे गरुड ! मेरो मतयह है ॥४०॥ पिताके मरनेपै पितामह विद्यमान होयतौ वा करिके प्रपितामहको पहले देकै तीनि पिंड देने चाहिये ॥ ४१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिताके पिंडके तीनिभाग करिकै उनमें क्रमसों मिलाय दे माताके पहले मरजानेप पितामही विद्यमान होय तौ ॥४२॥ मातृकश्राद्ध मेंहू पिताके पिंडकीसी विधि करै अर्थात् पितामही आदिके तीनि पिंड देकै उनके साथ माताके पिंडके तीनिभाग करिकै उनमें क्रमसों मिलावै पक्षांतर कहते हैं ॥ अथवा उन मातापिताके पितामहरूप जो मैं हौं तामें पिताको और पितामहीरूप जे लक्ष्मीहैं तिनमें

तेभ्यश्चपैतृकंपिण्डंमेलयेत्तंत्रिधाकृतम् ॥ मातर्यग्रेप्रशान्तायांविद्यतेचपितामही ॥ ४२ ॥ तदामातृकश्राद्धे
पिकुर्यात्पैतृकवद्विधिम् ॥ यद्वामयिमहालक्ष्म्यांतयोःपिंण्डचमेलयेत् ॥ ४३ ॥ अपुत्रायाः स्त्रियाःकुर्यात्पतिः
सापिण्डनादिकम् ॥ श्वश्र्वादिभिः सहैवास्याः सपिण्डीकरणंभवेत ॥ ४४ ॥ भर्त्रादिभिस्त्रिभिः कार्यं सपि
ण्डीकरणंस्त्रियाः ॥ नैतन्ममममतंताक्ष्र्यपत्यासापिण्ड्यमर्हति ॥ ४५ ॥ एकांचितांसमारूढौदम्पतीयदि
काश्यप ॥ तृणमन्तरतः कृत्वाश्वशुरादेस्तदाचरेत् ॥ ४६ ॥

माताको पिंड मिलावै ॥ ४३ ॥ पुत्ररहित स्त्रीको सपिंडन आदि पति करै सास आदिके साथही याको सपिंड होयहै ॥४४॥ स्त्रीको सपिंडीकरण भर्त्ता आदि तीनके साथ करनो चाहिये हे गरुड! यह मेरो मत नहींहै वह पतिके साथ सपिंडताके योग्य नहींहै ॥४५॥ हे गरुड ! जो स्त्रीपुरुष दोनों एक चितापर चढे हौंय तौ श्वशुर आदिकनके तृण बीचमें करकै वह सतीको सपिंडन करै ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पहले एकही पुत्र पिताको पिंडआदि करे ताके पीछे सतीको करै ता पीछे स्नान करै ॥ ४७ ॥ जो सती दश दिनके भीतर अग्निमें प्रवेश करै वाको भर्ताके दिनही शय्यादान और सपिंडन करनो चाहिये॥४८॥ हे गरुड ! सपिंडन और पितरोंका तर्पण करै और

एकएवसुतः कुर्यादादौपिण्डादिकपितुः ॥ तदूर्ध्वंचप्रकुर्वीतसत्याः स्नानंपुनश्चरेत् ॥ ४७ ॥ हुताशंया समारूढादशाहाभ्यन्तरेसती ॥ तस्याभर्तुर्दिनेकार्यंशय्यादानंसपिण्डनम् ॥ ४८ ॥ कृत्वासपिंडनंता क्ष्र्यप्रकुर्यात्पितृतर्पणम् ॥ उदाहरेत्स्वधाकारं वेदमन्त्रैः समन्वितम् ॥ ४९ ॥ अतिथिंभोजयेत्पश्चाद्ध न्तकारंचसर्वदा ॥ तेनतृप्यन्तिपितरोमुनयोदेवदानवाः ॥ ५० ॥ ग्रासमात्राभवेद्भिक्षाचतुर्ग्रासंतुपुष्कलम् ॥ पुष्कलानिचचत्वारिहन्तकारोविधीयते॥ ५१ ॥सपिण्डयांविप्रचरणौपूजयेच्चन्दनाक्षतैः ॥ दानंतस्मैप्रदातव्य मक्षय्यतृप्तिहेतवे ॥ ५२ ॥

वेदके मंत्रनके साथ स्वधाकारको उच्चारण करै॥४९॥पीछे अतिथिको भोजन कराके और हंतकारजो बलिवैश्वदेवहै ताको सदा करै तासों पितर मुनि देवता औ ानव सब तृप्त होयहैं॥५०॥एकग्रास मात्र भिक्षा होय है और चारिग्रासको एक पुष्कल होयहै और चारि पुष्कलको एक हंतकार होय है॥५१॥सपिंडीमें चंदन अक्षतसों ब्राह्मणके चरण पूजै अक्षय तृप्तिके लिये वाको दान देनो चाहिये ॥५२॥ ॥ ७९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षकी जीवि । घी अन्न सुवर्ण चांदी गौ घोडा हाथी रथ भूमि ये सब आचार्यकेलिये दान करै ॥ ९३ ॥ तापीछे स्वस्तिवाचन करिकै मंत्रनसों कुंकुम अक्षत और नैवेद्य करिकै नवग्रहोंको देवीको और विनायकको पूजन करै ॥ ९४ ॥ तापीछे आचार्य मंत्रसहित अभिषेक करै और हाथमें सूत बांधकै मंत्रनसों पवित्र अक्षत देय ॥ ९५ ॥ तापीछे नानाप्रकारके सुन्दर मिष्टान्नसों ब्राह्मणनको भोजन

वर्षवृत्तिघृतंचान्नंसुवर्णंरजतंसुगाम् ॥ अ गजरथंभूमिमाचार्यायप्रदापयेत् ॥ ९३ ॥ ततश्चपूजयेन्मंत्रैःस्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥ कुङ्कुमाक्षतनैवेद्यैर्ग्रहान्देवींविनायकम् ॥९४॥ आचार्यस्तुततःकुर्यादभिषेकंसमन्त्रकम् ॥ बद्धासूत्रंकरेदद्यान्मंत्रपूतांस्तथाक्षतान् ॥९५॥ ततश्च भोजयेद्विप्रान्मिष्टान्नैर्विविधैः शुभैः ॥ दद्यात्सदक्षिणांस्तेभ्यः सजलान्नान्द्विषड्घटान् ॥९६॥ वार्यायुधप्रतोदस्तुदण्डस्तुद्विजभोजनात ॥ स्प्रष्टव्यानन्तरंवर्णैःशुद्ध्येरंस्ते ततःक्रमात ॥९७॥ एवंसपिडनकृत्वाक्रियावस्त्राणिसंत्यजेत् ॥ शुक्लाम्बरधरोभूत्वाशय्यादानंप्रदापयेत् ॥९८॥

करावे और उनको दक्षिणाके साथ जल और अन्न सहित छः घट दान करै ॥९६॥ ब्राह्मणभोजनके पीछे चारों वर्णनलो क्रमसों जल आयुध प्रतोद और दंड छूने योग्य हैं अर्थात ब्राह्मण जलको क्षत्रिय आयुधको वैश्य प्रतोदको और शूद्र दंडको छुवै तब शुद्ध होय है ॥ ९७ ॥ या प्रकार सपिंडनकरिकै क्रियाके वस्त्रनको त्याग करै और शुक्ल वस्त्र धारण करिके शय्यादान करै ॥ ९८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्रसमेत सब देवता शय्यादानकी प्रशंसा करै हैं तासों मरनेपै अथवा जीवते शय्या दान करनी योग्य है ॥ ५९ ॥ पुष्ट काष्ठकी बनी भई मनोहर चित्रनकरिकै चित्रित पुष्ट रेशमी सूतोंसों बनीभई और सुवर्णके पत्रनसों शोभित होय ॥ ६० ॥ हंसके समान सफेद रुईसों ढकी होय और सुन्दर जामें शिरके नीचेको तकिया होय और ऊपर ढाकनेके वस्त्र करिकै युक्त गंध आदिसों सुगंधित होय ॥ ६१ ॥

शय्यादानंप्रशंसन्तिसर्वेदेवाः सवासवाः ॥ तस्माच्छय्याप्रदातव्यामरणेजीवितेपिवा ॥ ५९ ॥ सारदारुमयींरम्यांसुचित्रैश्चित्रितांदृढाम् ॥ पट्टसूत्रैर्वितानितांहेमपत्ररलंकृताम् ॥६०॥ हंसतूलीप्रतिच्छन्नांशुभशीर्षोपधानिकाम् ॥ प्रच्छादनपटीयुक्तांपुष्पगन्धैःसुवासिताम् ॥ ६१ ॥ दिव्यबन्धैः सुबद्धांचसुविशालांसुखप्रदाम् । शय्यामेवंविधांकृत्वाह्यास्तृतायांन्यसेद्भुवि ॥ ६२ ॥ छत्रंदीपालयंरौप्यंचामरासनभाजनम् ॥ भृङ्गारकरकादर्शंपञ्चवर्णवितानकम् ॥ ६३ ॥ शयनस्यभवेत्किंचिद्यच्चान्यदुपकारकम् ॥ तत्सर्वंपरितस्तस्याःस्वेस्वेस्थानेनियोजयेत् ॥ ६४ ॥

सुन्दर दिव्य बंधनसों बँधीहोय विशाल होय सुखको देनहारी होय ऐसी शय्या बनायकै आस्तृत भूमिमें स्थापित करै ॥ ६२ ॥ छाता चांदीकी दीवट चमर आसन पात्र झारी गडुआ दर्पण और पांचरंगका शामियाना ॥ ६३ ॥ और जो कुछ वस्तु शय्याकी उपकारक होंय वे सब वाके चारों ओर अपने स्थानमें स्थापित करै ॥ ६४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा शय्यापर सुवर्णके बनेभये लक्ष्मीसमेत विष्णुको स्थापित करै विष्णुकी मूर्ति कैसी बनावै संपूर्ण गहने और आभूषणकरिकै युक्त होय और चक्र आदि आयुधनकरिकै तथा वस्त्रनकरिकै युक्त होय ॥ ६५ ॥ स्त्रीनकी शय्यापर काजल महावर रोली वस्त्र और जो भूषण आदिहैं वे सब स्थापित करै ॥६६॥ ता पीछे गंध और फूलनसों भूषित ब्राह्मणको कानके भूषण अँगूठी आदि भूषणनसों और

तस्यांसंस्थापयेद्धैमंहरिंलक्ष्मीसमन्वितम् ॥ सर्वाभरणसंयुक्तमायुधाम्बरसंयुतम् ॥ ६५ ॥ स्त्रीणांचशयने धृत्वाकज्जलालक्तकुंकुमम् ॥ वस्त्रंभूषादिकंयच्चसर्वमेवप्रदापयेत् ॥ ६६ ॥ ततोविप्रंसपत्नीकंगन्धपुष्पैरलंकृतम् ॥ कर्णाङ्गुलीयाभरणैःकण्ठसूत्रश्च काञ्चनैः ॥६७ ॥ उष्णीषमुत्तरीयंचचोलकंपरिधायच॥स्थापयेत्सुखशय्यायांलक्ष्मीनारायणाग्रतः ॥६८॥ कुंकुमैः पुष्पमालाभिहरिंलक्ष्मींसमर्चयेत् ॥ पूजयेल्लोकपालांश्चग्रहान्देवींविनायकम्॥६९॥ उत्तराभिमुखोभूत्वागृहीत्वाकुसुमाञ्जलिम्॥उच्चारयेदिममंन्त्रंविप्रस्यपुरतःस्थितः॥७०॥

सोनेंके गलेके तोडेसों शोभित कर ॥ ६७ ॥ पगडी दुपट्टा और जामा पहिराय सुखशय्यापर लक्ष्मीनारायणके आगे बैठावै ॥ ६८॥ कुंकुम और फूलनकी मालानसों हरिकी तथा लक्ष्मीकी पूजा करै और लोकपाल ग्रह देवी और विनायककी पूजा करै ॥ ६९ ॥ उत्तराभिमुख हो फूलनकीअंजली ले ब्राह्मणके आगे स्थित हो या मंत्रको उच्चार करै ॥ ७० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे कृष्ण ! क्षीरसागरमें जैसी तुम्हारी शय्या है वैसेही जन्म जन्ममें मोको यह अशून्य होय ॥७१॥ याप्रकार पुष्पांजलिको विप्रपर हरिकी प्रतिमापर छोडि देवै और तापीछे सामग्रीसमेत शय्यापर सुखसों सोवनेके लिये संकल्पपूर्वक अतिसुन्दरदान करै ॥७२॥ व्रतके उपदेश करनहारे ब्रह्मवादी गुरुको देवै ऐसा कहै, हे ब्राह्मण ! तू याको कौन देयहै ऐसे कहतो भयो दान करै ॥७३॥ शयनपर बैठेभये

यथाकृष्णत्वदीयास्तिशय्याक्षीरोदसागरे ॥ तथाभूयादशून्येयंममजन्मनिजन्मनि ॥ ७१ ॥ एवंपुष्पाञ्जलिंविप्रप्रतिमायांहरेः क्षिपेत ॥ ततः सोपस्करंशय्यादानंसंकल्पपूर्वकम् ॥ ७२ ॥ दद्याद्व्रतोपदेष्ट्रेचगुरवेब्रह्मवादिने ॥ गृहाणब्राह्मणैनांत्वंकोददातीतिकीर्तयन् ॥ ७३ ॥ आन्दोलयेद्विजंलक्ष्मींहरिंचशयनेस्थितम् ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ ७४ ॥ सर्वोपस्करणैर्युक्तंप्रदद्यादतिसुन्दरम् ॥ शय्यायांसुखसुप्त्यर्थंगृहंचविभवेसति ॥ ७५ ॥ जीवमानःस्वहस्तेनयदिशय्यांददातियः ॥ तज्जीवतावृषोत्सर्गंपर्वणीषुसमाचरेत् ॥ ७६ ॥

हरि ब्राह्मण लक्ष्मी और हरिको आंदोलन करै तापीछे प्रदक्षिणा करिकै नमस्कार करि विसर्जन करै ॥ ७४ ॥ सब सामग्रीयुक्त अति सुंदर करै शय्यामें सुखसों सोवनेके लिये और विभव होय तौ घरकोहू दान करै ॥७५॥ जीवतो भयो पुरुष अपने हाथसों जो शय्या दान करै है तो जीवतेही भये वाको पर्वनमें वृषोत्सर्ग करनो चाहिये ॥ ७६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह शय्या एकको देनी चाहिये बहुतनको कबहुं न देवै- बाँटीगई अथवा वेंचीगई वह दाताको नरकमें डारै है ॥ ७७ ॥ पात्रमें शय्यादान करिकै वांछित फलको प्राप्त होय है पिता और दातापुत्र परलोकमें और यालोकमें प्रसन्न होय है ॥ ७८ ॥ शय्यादानके प्रभावसों सुन्दर दिव्य इंद्रके घरमें और सूर्यपुत्र जे यम हैं तिनके घरमें उपस्थित होय यामें संदेह नहीं है ॥ ७९ ॥

इयमेकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ साविभक्ताचविक्रीतादातारंपातयत्यधः ॥ ७७ ॥ पात्रेप्रदायशयनंवाञ्छितंफलमाप्नुयात् ॥ पिताचदातातनयः परत्रेहचमोदते ॥ ७८ ॥ पुरन्दरगृहेदिव्येसूर्यपुत्रालयेपिच ॥ उपतिष्ठेन्नसन्देहः शय्यादानप्रभावतः ॥ ७९ ॥ विमानवरमारूढः सेव्यमानोप्सरोगणैः ॥ आभूतसम्प्लवंयावत्तिष्ठत्यातङ्कवर्जितः ॥ ८० ॥ सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यंसर्वपर्वदिनेषुच ॥ तेभ्यश्चाप्यधिकपुण्यंशय्यादानोद्भवं भवेत् ॥ ८१ ॥ एवंदत्त्वासुतः शय्यांपददानंप्रदापयेत् ॥ तच्छृणुष्वमयाख्यातंयथावत्कथयामिते ॥ ८२ ॥

श्रेष्ठ विमानमें चढोभयो अप्सरानके गणनकरि सेवन कियोगयो महाप्रलयपर्यंत पीडारहित स्थित रहै है ॥ ८० ॥ सब तीर्थनमें और सब पर्वनमें जो पुण्य होय है तातें अधिक शय्यादानके प्रभावसों प्राप्त होय है ॥ ८१ ॥ पुत्र या प्रकार शय्यादान करि पदनको दान करै सो तुम मोतें सुनो मैं तुमसों यथावत् कहूँ हूँ ॥ ८२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छाता जूता वस्त्र अंगूठी कमंडलु आसन पंचपात्र यह पद पांच प्रकारको कह्यो है ॥ ८३ ॥ दंडकरि तांबेके पात्रकरि आम अन्नन करि भोजननकरि और यज्ञोपवीतनकरि पद सम्पूर्ण होय है ॥ ८४ ॥ या प्रकार यथाशक्ति तेरह पदनको करिकै बारहें दिन तेरह ब्राह्मणनको दान तेरह करै ॥ ८५ ॥ या पददानकरिकै धार्मिकपुरुष सद्गतिको प्राप्त होय है और जे यमके

छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमण्डलुः ॥ आसनंपञ्चपात्राणिपदंपञ्चविधंस्मृतम् ॥ ८३ ॥ दण्डेनताम्रपात्रेणह्यामान्नैर्भोजनैरपि ॥ अथयज्ञोपवीतैश्चपदंसंपूर्णतांव्रजेत ॥ ८४ ॥ त्रयोदशपदानीत्थंयथाशक्त्याविधाय च ॥ त्रयोदशेभ्योविप्रेभ्यः प्रदद्याद्द्वादशेहनि ॥ ८५ ॥ अनेनपददानेनधार्मिकायान्तिसद्गतिम् ॥ यममार्गगतानांचपददानंसुखप्रदम् ॥ ८६ ॥ आतपस्तत्ररौद्रोदह्यतेयेनमानवः ॥ छत्रदानेनसुच्छायाजायतेतस्यमूर्द्धनि ॥ ८७ ॥ अतिसङ्कटसङ्कीर्णेयमलोकस्यवर्त्मनि ॥ अश्वारूढाश्चतेयान्तिददन्तेयद्युपानहौ ॥ ८८ ॥ शीतोष्णवातदुःखानितत्रघोराणिखेचर ॥ वस्त्रदानप्रभावेणसुखंनिस्तरतेपथि ॥ ८९ ॥

मार्गमें गये हैं उनको वह पददान सुख देनहारो है ॥ ८६ ॥ वहां निश्चय बडा रौद्र घाम जासो मनुष्य जरिजाय है तौ वामें छातेनको दान करनेसों वाके माथेपै सुंदर छाया होय है ॥ ८७ ॥ बडी सकरईसों घिरे भये यमके मार्गमें घोडेपर चढिकै वे जाय हैं जे उपानह कहिये जूतेको दान करै हैं ॥ ८८ ॥ हे गरुड ! वहां शीत उष्ण और पवनके घोर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुःख हैं परंतु वस्त्रदानके प्रभावसों मनुष्यसुखसों पार होयजाय है ॥ ८९ ॥ यमके दूत महारौद्र भयंकर और कृष्णपिंगल वर्णके हैं वे मुद्रिका दान करनहारेको मार्गमें पीडा नहीं देय हैं ॥ ९० ॥ बहुतसे घामसों भरेभयेके पवन तथा जलकरिकै रहित वा यमके मार्गमें कमंडलु दान करनेसों प्यासो जलको पीवे है ॥ ९१ ॥ मरेभयेके लिये जो तांबेके जलपात्रको दान करै है वह हजार प्याऊ लगानेके

यमदूतामहारौद्राः करालाः कृष्णपिङ्गलाः ॥ नपीडयन्तितंमार्गेमुद्रिकायाः प्रदानतः ॥९०॥ बहुघर्मसमाकीर्णेनिर्वातेतोयवर्जिते ॥ कमडलुप्रदानेनतुषितः पिबते जलम् ॥ ९१ ॥ मृतोद्देशेनयोदद्यादुदपात्रंचताम्रजम् प्रपादानसहस्रस्ययत्फलंसोऽश्नुतेध्रुवम् ॥ ९२ ॥ आसनेभोजनेचैवदत्तेसम्यग्द्विजातये ॥ सुखेनभुंक्तेपाथेयं पथिगच्छञ्छनैःशनैः ॥ ९३ ॥ एवंसपिंडनदिनेदत्त्वादानंविधानतः ॥ बहून्संभोजयेद्विप्रान्यः श्वपाकादिकानपि ॥ ९४ ॥ ततः सपिंडनादूर्ध्वमर्वाक्संवत्सरादपि ॥ प्रतिमासंप्रदातव्योजलकुम्भःसपिंडकः ॥ ९५ ॥

फलके समान फलको प्राप्त होय है ॥९२॥ आसन और पात्र ब्राह्मणको देनेसों मार्गमें हौले २ जातो भयो प्राणी पाथेय जो राहको खरच है ताको सुखसों खाय है ॥ ९३ ॥ या प्रकार सपिंडके दिन विधानसों दान देकै बहुतसे ब्राह्मणनको जिमावै और चांडाल आदिकोभी खवावै ॥ ९४ ॥ तापीछे सपिंडनके उपरांत और वर्षके भीतर पिंडसमेत जलको कुंभदान करनो चाहिये ॥ ९५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! प्रेतकार्यके विना कियेको करनो नहीं है और प्रेतके लिये तो अक्षय तृप्तिके निमित्त फिरि करै ॥९६॥ यातें मासिक और वार्षिक को विशेष कहौंगो और पाक्षिकको विशेष तिथिनमें मरनेपर॥९७॥पूर्णमासीको जो परो है ताकी चौथि ऊनिका कहिये पाक्षिक श्राद्ध तिथिहै॥९८॥नवमीको जो मरोहै वाकी रिक्ता चतुर्दशी पाक्षिक श्राद्धतिथिहै या प्रकार वीसमें दिन पाक्षिक श्राद्धकरै ॥९९॥ जब एकही

कृतस्यकरणंनास्तिप्रेतकार्याहृतेखग ॥ प्रेतार्थंतुपुनः कुर्यादक्षय्यतृप्तिहेतवे ॥ ९६ ॥ अतोविशेषंवक्ष्यामि मासिकस्याब्दिकस्यच ॥ पाक्षिकस्यविशेषंचविशेषतिथिषुमृते ॥ ९७ ॥ पौर्णमास्यांमृतोयस्तुचतुर्थीतस्यऊनिका ॥ चतुर्थ्यांमृतोयस्तुनवमीतस्यऊनिका ॥ ९८ ॥ नवम्यांतुमृतोयस्तुरिक्तातस्यचतुर्दशी ॥ इत्येवं पाक्षिकंश्राद्धंकुर्याद्विंशतिमेदिने ॥ ९९ ॥ एकएवयदामासः संक्रान्तिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतंश्राद्धंमलमासेहिशस्यते ॥ १०० ॥ एकस्मिन्मासिमासौद्वौयदिस्यातांतयोर्द्वयोः ॥ तावेवपक्षौताएवतिथयस्त्रिंशदेवहि ॥ ॥ १०१ ॥ तिथ्यर्धेप्रथमेपूर्वोद्वितीयोऽर्धेतदुत्तरः ॥ मासाविितिबुधैश्चिन्त्यौमलमासस्यमध्यगौ ॥ १०२ ॥

मासमें दो संक्रांति होयँ तब दोनों महीनेको श्राद्ध मलमासमें विधान कियो जायहै ॥ १०० ॥ एक महीनेमें जो दो महीने होयँ तौ दोनों मासोंमें वेही पक्ष, तिथि जाननी योग्यहै ॥ १०१ ॥ जो प्रथम तिथ्यर्द्ध होय तौ पूर्व जानिये और दूसरा आधा होय तौ वातें आगेको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मास जानिये या प्रकार पंडितन करि मलमासके मध्यके मास चिंतवनकरने योग्य हैं॥१०२॥ हे खग! संक्रान्तिरहितमासमेंसपिंडीकरण करनो चाहिये तैसेही मासिक श्राद्ध और वार्षिक तथा प्रथम करनो चाहिये ॥ १०३॥ वर्षके मध्यमें जो अधिक मास होय तो प्रेतकी वार्षिकी क्रिया तेरहें महीना करनी चाहिये ॥१०४॥ संक्रांतिरहित मासमें पिंडवर्जित और संक्रातिसहित मासमें पिंडसहित ऐसेदोनों

असंक्रान्तेचकर्त्तव्यंसपिण्डीकरणखग ॥ तथैवमासिकं श्राद्धंवार्षिकंप्रथमंतथा ॥ १०३ ॥ संवत्सरस्यमध्येतु यदिस्यादधिमासकः ॥ तदात्रयोदशेमासिक्रियाप्रेतस्यवार्षिकी ॥१०४॥ पिण्डवर्ज्यमसंक्रान्तेसंक्रान्तेपिण्ड संयुतम् ॥ प्रतिसंवत्सरंश्राद्धमेवंमासद्वयेपिच ॥ १०५ ॥ एवंसंवत्सरेपूर्णेवार्षिकंश्राद्धमाचरेत् ॥ तस्मिन्नपिवि शेषेणभोजनीयाद्विजातयः ॥ १०६ ॥ कुर्यात्संवत्सरादूर्ध्वंश्राद्धपिंडत्रयंसदा ॥एकोद्दिष्टंनकर्तव्यंतेनस्यात्पि तृघातकः ॥ १०७ ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंगजच्छायंचपैतृकम् ॥ अब्दमध्येनकुर्वीतग्रहणेनयुगादिषु ॥१०८॥

मासनमें प्रतिवर्ष श्राद्धकरनों चाहिये ॥१०५॥ या प्रकार संवत्सरके पूरे होनेपै वार्षिक श्राद्ध करै वामेंहू विशेषकरि ब्राह्मण भोजन करानो योग्य है ॥ १०६ ॥ संवत्सरके उपरांत श्राद्ध पिंड सदा करने चाहिये एकोद्दिष्ट न करै वाके करनेसों पितृघातक होयहै ॥ १०७ ॥ तीर्थश्राद्ध गयाश्राद्ध गजच्छाय पितृसंबंधी वर्षके मध्यमें न करनेचाहिये न ग्रहणमें और न युगादिमें ॥ १०८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! जब पुत्रको गयाश्राद्ध करनो होय तौ संवसरके उपरांत पिताकी भक्तिसों करनो चाहिये ॥ १०९ ॥ गयाश्राद्ध करनेसों पितर भवसागरते छूटि जाय हैं गदाधरके अनुग्रहसों वे परमगतिको प्राप्त होय हैं ॥ ११० ॥ तुलसीकी मंजरिनसों विष्णुकी पादुकानको पूजन करै और उनके आलवादि तीर्थनमें यथाक्रम पिंडदान करे ॥ १११ ॥ जो गयाके शिरमें शमीके पत्तेके प्रमाणसों पिंड दे वह

यदापुत्रेणवैकार्यंगयाश्राद्धंखगेश्वर ॥ तदासंवत्सरादूर्ध्वंकर्तव्यपितृभक्तितः ॥ १०९ ॥ गयाश्राद्धात्प्रमुच्यन्ते पितरोभवसागरात् ॥ गदाधरानुग्रहेणतेयान्तिपरमांगतिम् ॥ ११० ॥ तुलसीमञ्जरीभिश्चपूजयेद्विष्णुपादुकाम् ॥ तस्यालवादितीर्थेषुपिण्डान्दद्याद्यथाक्रमम् ॥ १११ ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ ११२ ॥ गयामुपेत्ययः श्राद्धं करोतिकुलनन्दनः ॥ सफलंतस्यतज्जन्मजायतेपितृतुष्टिदम् ॥ ११३ ॥ श्रूयतेचापिपितृभिर्गीतागाथाखगेश्वर ॥ इक्ष्वाकोर्मनुपुत्रस्यकलापोपवनेसुरैः ॥ ११४ ॥

सात गोत्र और एक ऊपर सौ कुलनको उद्धार करै ॥ ११२ ॥ कुलको आनंद देनेहारो जो पुरुष गयामें प्राप्त होकै पिंडदान करै है पितरनको संतोष देनेहारो वह वाको जन्म सफल हैं ॥ ११३ ॥ हिमालयके समीप वर्तमान कलाप नाम ग्राम है ताके उपवनमें मनुके पुत्र इक्ष्वाकुकी पितरनकरि गाई गई गाथा सुनी जाती है ॥ ११४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारे कुलमें वे सन्मार्गशील होयँगे जे गयामें जायके हमको आदरसों पिंड देंयगे ॥११५॥ हे गरुड ! याप्रकार जो पुत्र आमुष्मिकी कहिये यालोककी क्रियाको करै है वह सुखी और मुक्त हो जायहै जैसे कौशिकके पुत्र ॥ ११६ ॥ भरद्वाजके सात पुत्र जन्मकी परंपराको भोगिकै हे गरुड ! गौको वध करकैहू पितरनके प्रतापसों मुक्त होगये ॥११७॥ सात व्याध दशार्ण देशनमें और कालिंजराप

अपिनस्तेभविष्यन्तिकुलेसन्मार्गशीलिनः ॥ गयामुपेत्ययेपिण्डान्दास्यन्त्यस्माकमादरात् ॥ ११५ ॥ एवमामुष्मिकींतार्क्ष्ययःकरोतिक्रियांसुतः ॥ सस्यात्सुखीभवेन्मुक्तःकौशिकस्यात्मजायथा ॥ ११६ ॥ भरद्वाजात्मजाःसप्तभुक्त्वाजन्मपरंपराम् ॥ कृत्वापिगोवधंतार्क्ष्यमुक्ताःपितृप्रसादतः ॥ ११७ ॥ सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाःकालिंजरेगिरौ ॥ चक्रवाकाः शरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे ॥ ११८ ॥ तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः ॥ पितृभक्त्याचतेसर्वेगतामुक्तिंद्विजात्मजाः ॥ ११९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपितृभक्तोभवेन्नरः ॥ इहलोकेपरेवापिपितृभक्त्यासुखीभवेत् ॥ १२० ॥

र्वतमें मृग शरद्वीपमें चक्रवाक और मानससरोवरमें हंस ॥ ११८ ॥ वही कुरुक्षेत्रमें वेदके पारगामी ब्राह्मणभये वेब्राह्मणनके पुत्र पिताकी भक्तिसों मुक्तिको प्राप्त भये॥११९॥यासों सर्व यत्नकरि नर पितृभक्त होय यालोक तथा परलोकमें पितृभक्तिसों सुखी होय है ॥१२०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! मैंने यह सब और्ध्वदेहिक कहो यह पुत्रकी वांछाको देनहारो पवित्र और मुक्तिको देनहारो है ॥१२१॥ निर्धनहू जो कोई मनुष्य या कथाको सुनैगो वह पापनतें छूटिकै दानके फलको प्राप्त होय है॥१२२॥जो कोई मेरोकहोभयो श्राद्ध और दान करैगो गरुड पुराणको सुनैगो ताकोहू फल सुनो ॥ १२३ ॥ पिता सत्पुत्रनको देय है और पितामह गोधन, धन दाता प्रपितामह होयहै ॥

एतत्तार्क्ष्यमयाख्यातंसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ पुत्रवाञ्छाप्रदंपुण्यंपितुर्मुक्तिप्रदायकम् ॥ १२१ ॥ निधनोपिनरः कश्चिद्यः श्रृणोतिकथामिमाम् ॥ सोपिपापविनिर्मुक्तोदानस्यफलमाप्नुयात् ॥ १२२ ॥ विधिनाकुरुतेयस्तुश्राद्धंदानंमयोदितम् ॥ श्रृणुयाद्गारुडंचापिश्रृणुतस्यापियत्फलम् ॥१२३॥ पिताददातिसत्पुत्रान्गोधनानिपितामहः॥धनदाताभवेत्सोपियस्तस्यप्रपितामहः ॥ १२४ ॥ दद्याद्विपुलमन्नाद्यंवृद्धस्तुप्रपितामहः ॥ तृप्ताः श्राद्धेन तेसर्वेदत्त्वापुत्रस्यवाञ्छितम् ॥ १२५ ॥ गच्छन्तिधर्ममार्गैश्चधर्मराजस्यमन्दिरम् ॥ तत्रधर्मसभायांतेतिष्ठन्तिपरमादरात् ॥ १२६ ॥

॥ १२४ ॥ वृद्ध प्रपितामह बहुतसे अन्न आदिको देय है और श्राद्धकरि तृप्त भये वे सब पुत्रको वांछित देकर ॥ १२५ ॥ धर्मके मार्गनमें होकर धर्मराजके मंदिरको जाय हैं वहां वे धर्मसभामें बडे आदरसों स्थित होय हैं ॥ १२६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूत बोले, याप्रकार श्रीविष्णु करि कहोभयो और्ध्वदैहिक दानको जो माहात्म्य है ताको सुनिके गरुड बडे आनंदको प्राप्त होतभयो ॥ १२७ ॥ इति श्रीपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ गरुड बोले, यमलोक कितनो है और कैसो है और कौनने वाही बनायो है और सभा कैसी है वा सभामें धर्म किनके साथ रहैहै ॥ १ ॥

सूतउवाच ॥ एवंश्रीविष्णुनाप्रोक्तमौर्ध्वदानसमुद्भवम् ॥ श्रुत्वामाहात्म्यमतुलंगरुडोहर्षमागतः ॥ १२७ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेसपिंडनादिसर्वकर्मनिरूपणंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ गरुडउवाच ॥ यमलोकःकियन्मात्रःकीदृशःकेननिर्मितः ॥ सभाचकीदृशीतस्यांधर्मआस्तेचकैःसह ॥ १ ॥ येधर्ममार्गैर्गच्छन्ति धार्मिकाधर्ममन्दिरम् ॥ तान्धर्मानपिमार्गांश्चममाख्याहिदयानिधे ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्य प्रवक्ष्यामियद्गम्यंनारदादिभिः ॥ तद्धर्मनगरंदिव्यंमहापुण्यैरवाप्यते ॥ ३ ॥ याम्यनैर्ऋतयोर्मध्येपुरंवैवस्वतस्ययत् ॥ सर्ववज्रमयंदिव्यमभेद्यंतत्सुरासुरैः ॥ ४ ॥

जे धार्मिक जिन धर्ममार्गनहींकरिकै धर्मके मंदिरको जाय हैं उनधर्मनको और मार्गनको हे दयानिधे ! मोसें कहो ॥२॥ श्रीभगवान् बोले, हे गरुड ! जो नारद आदि देवर्षिनकरिके जाने योग्य है वह दिव्य धर्मनगर बडे पुण्यनसों मिलैहै ॥ ३॥ याम्य और नैर्ऋतयकेबीचमें जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैवस्वतको पुर है वह संपूर्ण वज्रमय है और दिव्य है वह सुर और असुरनकरिकै भेदनकरने योग्य नहीं है अर्थात् वाको देवता औ असुर कोई नहीं तोडिसकै हैं ॥४॥ चौखुटो है और चारिवाके द्वार हैं और ऊंचे परकोटेसों घिरो है और सहस्रयोजन अर्थात् चार हजार कोसको वाके विस्तारको प्रमाण कहो जाय है ॥ ५ ॥ वा पुरमें बहुत सुन्दर चित्रगुप्तको मंदिर है और पच्चीस योजन अर्थात् सौ कोसको लंबो चौडो है ॥ ६ ॥ दशयोजनऊंचो है बडो दिव्य है और लोहेके परकोटेसों घिरो भयो है सैकरों गलीनमें चलनो फिरनो

चतुरस्रंचतुर्द्वारमुच्चप्राकारवेष्टितम् ॥ योजनानांसहस्रंहिप्रमाणेनतदुच्यते ॥ ५ ॥ तस्मिन्पुरेऽस्तिसुभगंचित्रगुप्तस्यमन्दिरम् ॥ पञ्चविंशतिसंख्याकैर्योजनैर्विस्तृतायतम् ॥६॥ दशोच्छ्रितंमहादिव्यंलोहप्राकारवेष्टितम् ॥ प्रतोलीशतसंचारंपताकाध्वजभूषितम् ॥७॥ विमानगणसंकीर्णंगीतवादित्रनादितम् ॥ चित्रितंचित्रकुशलैर्निर्मितंदेवशिल्पिभिः ॥८॥ उद्यानोपवनैरम्यंनानाविहगकूजितम् ॥ गन्धर्वैरप्सरोभिश्चसमन्तात्परिवारितम् ॥९॥

है और पताका तथा ध्वजानसों शोभित है ॥ ७ ॥ विमाननके गणसों संकीर्ण कहिये भरोभयो है और गावने बजानेसोंशब्दायमान होरहो है और चतुर चितारिनकरिकै जामें चित्र बनाये गये हैं और देवतानके शिल्पीनकरि कैबनायो गयो है ॥ ८ ॥ बाग और फुलवारीनसों मनोहर होरहोहै और अनेकप्रकारके पक्षी उनमें बोल रहे हैं गंधर्व और अप्सरानकरिकै चारों ओरसों शोभायमानहै ॥ ९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह सभा है जामें चित्रगुप्त परम अद्भुत आसनपरबैठेभये मनुष्यनकी यथार्थ आयुकी गणना करै हैं ॥१०॥वे चित्रगुप्त पाप तथा पुण्यमें कबहूँ नहीं भूलै हैं जो शुभ अथवा अशुभ कर्म इकट्ठो कियो है ॥ ११ ॥ जहां चित्रगुप्तकी आज्ञासों वह सब भोगे है और चित्रगुप्तके घरसों पूर्व दिशामें ज्वरको बडो भारी घर है ॥ १२ ॥ और दक्षिणमें शूलको और लूता तथा विस्फोटको घर है और

तत्सभायांचित्रगुप्तःस्वासनेपरमाद्भुते ॥ संस्थितोगणयेदायुर्मानुषाणांयथातथम् ॥ १० ॥ नमुह्यतिकथंचित्ससुकृतेदुष्कृतेपिवा ॥ यद्येनोपार्जितंकर्मशुभंवायदिवाशुभम् ॥ ११ ॥ तत्सर्वंभुञ्जतेयत्रचित्रगुप्तस्यशासनात् ॥ चित्रगुप्तालयात्प्राच्यांज्वरस्यास्तिमहागृहम् ॥ १२ ॥ दक्षिणस्यांचशूलस्यलूताविस्फोटयोस्तथा ॥ पश्चिमेकालपाशस्यचाजीर्णस्यारुचेस्तथा ॥ १३ ॥ उदीच्यांराजरोगोस्तिपाण्डुरोगस्तथैवच ॥ ऐशान्यांतु शिरोर्तिःस्यादाग्नेय्यामस्तिमूर्च्छना ॥ १४ ॥ अतिसारोनैर्ऋतेतुवायव्यांशीतदाहकौ ॥ एवमादिभिरन्यैश्च व्याधिभिःपरिवारितः ॥ १५ ॥

पश्चिममें कालपाशको अजीर्णको तथा अरुचिको घर है ॥ १३ ॥ उत्तरदिशामें राजरोगको और पांडुरोगको घर है और ईशानदिशामें शिरकी पीडाको और अग्निकोणमें मूर्च्छाको घर हैं ॥ १४ ॥ और नैर्ऋतकोणमें अतिसारको और वायव्यमें शीत और दाहको घर इत्यादि अनेक रोगनकरि घिरोभयो है ॥ १५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चित्रगुप्त मनुष्यनके शुभअशुभ कर्मनको लिखेहै और चित्रगुप्तके घरके आगे बीस योजनपर॥१६॥पुरके मध्यमें महा दिव्यधर्मराजको रत्नमय मंदिर है बहुत दिव्य है और बिजलीकी ज्वाला और सूर्यके समान वाको तेजहै ॥१७॥ लंबाई चौडाईमें दोसौ योजन स्फुट है और पचास योजनके प्रमाणमें ऊंचो है ॥१८॥ हजारन खंभनकरि धारण कियोहै और वैदुर्यकेमणिनकरि भूषितहै सुवर्णसोंअलंकृतहै

लिखतेचित्रगुप्तस्तुमानुषाणांशुभाशुभम् ॥ चित्रगुप्तालयादग्रेयोजनानांचविंशतिः ॥ १६ ॥ पुरमध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमन्दिरम् ॥ अस्तिरत्नमयंदिव्यंविद्युज्ज्वालार्कवर्चसम् ॥ १७ ॥ द्विशतंयोजनानांचविस्तारोयामतःस्फुटम्॥पञ्चाशच्चप्रमाणेनयोजनानांसमुच्छ्रितम् ॥१८॥ धृतंस्तम्भसहस्रैश्चवैडूर्यमणिमण्डितम् ॥काञ्चनालंकृतंनानाहर्म्यप्रासादसंकुलम्॥१९॥शारदाभ्रनिभंरुक्मकलशैःसुमनोहरम् ॥ चित्रस्फटिकसोपानंवज्रकुट्टिमशोभितम्॥२०॥मुक्ताजालगवाक्षंचपताकाध्वजभूषितम्॥घंटानकनिनादाढ्यंहेमतोरणमण्डितम्॥२१॥

और नानाप्रकारके हर्म्य और प्रासादनसों संकुल कहिये भरोभयोहै॥१९॥ शरत्कालके मेघके समान है और सुवर्णके कलशनसोंसुंदर मनोहर है चित्र विचित्र स्फटिककी सीढियाँ बनी है और वज्रकी कुट्टिमनसों शोभायमानहै ॥२०॥ और झरोखनमें मोतीनकी झालरैं लटक रहीं हैं और पताका तथा ध्वजानसों शोभित है घंटा और नगारनके शब्दकरि युक्तहै और सोनेके तोरण शोभायमानहैं ॥२१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नानाप्रकारके आश्चर्यरूप है और सोनेके सैकरन किवाँरनसों भरो है जिनमें कांटे नहीं ऐसे नानाप्रकारके वृक्ष लता और गुल्मनसों विराजित है ॥ २२ ॥ इत्यादिक तथा औरहू भूषणसों सदा शोभित है और अपने योगके प्रभावसों विश्वकर्माकरि बनायो गयो है ॥ २३ ॥ वामें सौयोजनकी चौडी दिव्यसभा है सूर्यकेसो जाको प्रकाश है चमकीली और सर्वत्र कामरूप है ॥ २४ ॥ न तौ बहुत

नानाश्चर्यमयंस्वर्णकपाटशतसंकुलम् ॥ नानाद्रुमलतागुल्मैर्निष्कण्टैःसुविराजितम् ॥ २२ ॥ एवमादिभि रन्यैश्चभूषणैर्भूषितंसदा ॥ आत्मयोगप्रभावैश्चनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥ २३ ॥ तस्मिन्नस्तिसभादिव्याशतयो जनमायता॥अर्कप्रकाशाभ्राजिष्णुःसर्वतःकामरूपिणी ॥२४ ॥ नातिशीतानचात्युष्णामनसोत्यन्तहर्षिणी ॥ नशोकोनजरातस्यांक्षुत्पिपासेनचाप्रियम् ॥ २५ ॥ सर्वेकामाःस्थितायस्यांयेदिव्यायेचमानुषाः ॥ रसवच्चप्र भूतंचभक्ष्यंभोज्यंचसर्वशः ॥ २६ ॥ रसवन्तिचतोयानिशीतान्युष्णानिचैवहि ॥ पुण्याः शब्दादयस्तस्यां नित्यंकामफलद्रुमाः ॥ २७ ॥

गरम है मनको अत्यंत आनंद देनहारी है वामें न तौ शोक है और न बुढापा है और क्षुधा पिपासा तथा अप्रिय नहीं है ॥ २५ ॥ और दिव्य तथा मानुष सब काम वामें स्थित हैं और बडो स्वादिष्ठ तथा बहुतसों भोजन सर्वत्र है ॥२६॥ बहुत मीठे स्वादिष्ठ जल शीतल और उष्ण दोनोंप्रकारके पवित्र शब्द आदि विषय और सदा कामनाके देनहारे वृक्ष वा सभामें वर्तमान हैं ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हे गरुड ! वह सभा असंबाधा कहिये सांकरी नहीं मनोहर है और कामनाकी देनहारी है और बहुतकालतक तपकरिकै विश्वकर्माने बनाई है ॥२८॥ वामें उग्रतपके करनहारे जांय हैं और सुंदरव्रतके करनहारे तथा सत्यके बोलनहारे शांतस्वभाव संन्यासी और सिद्ध पवित्रकर्मकरिकै वा सभामें जाय हैं॥२९॥सब जिनके तेजोमय देह हैं और अलंकृत हैं और निर्मल जिनके वस्त्र हैं ऐसे पुरुष अपने

असंबाधाचसाताक्ष्यैरम्याकामागमासभा ॥ दीर्घकालंतपस्तप्त्वानिर्मिताविश्वकर्मणा ॥२८॥ तामुग्रतपसोया
न्तिसुव्रताःसत्यवादिनः ॥ शान्ताः संन्यासिनः सिद्धाःपूताःपूतेनकर्मणा॥२९॥ सर्वेभास्वरदेहास्तेऽलंकृताविर
जोम्बराः ॥ स्वकृतैःकर्मभिःपुण्यैस्तत्रतिष्ठन्तिभूषिताः ॥३०॥ तस्यांसधर्मोभगवानासनेऽनुपमेशुभे॥दशयोज
नविस्तीर्णेसर्वरत्नैः सुमण्डिते॥३१॥उपविष्टःसतांश्रेष्ठश्छत्रशोभितमस्तकः॥कुण्डलालंकृतःश्रीमान्महामुकुट
मंडितः ॥ ३२ ॥ सर्वालङ्कारसंयुक्तोनीलमेघसमप्रभः ॥ बालव्यजनहस्ताभिरप्सरोभिश्चवीजितः ॥ ३३ ॥

किये भये पुण्यकर्मनकरि वामें अलंकृत हो स्थित रहै हैं ॥३०॥ वा सभामें वहभगवान् धर्म जाकी उपमा नहीं और सुन्दर दशयोजन चौडे सब रत्नकरिकै मंडित ऐसे आसनपर॥३१॥बैठे भये सज्जनमेंश्रेष्ठ औरछत्रसों शोभितहै मस्तकजिनको औरकुंडलनसों भूषित और बडे मुकुटसों शोभितहैं॥३२॥ फिरि कैसे हैं सब अलंकारनसों युक्त और नीले मेघके समान है कांति जिनकी और चमर हैं हाथनमें

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिनके एसी अप्सरानकरिकै पवन करेगये हैं॥३३॥गंधवनके समूह और अप्सरानके समूह गाने बजानेसों चहूँ ओरसे जिनकी सेवा करिरहे हैं ॥ ३४ ॥ पाश जाके हाथमें ऐसे मृत्यु करि और बलवान् काल करिकै और चित्र है रूप जिनको ऐसे चित्रगुप्तकरि और कृतांतकरि सेवित हैं ॥ ३५ ॥ आज्ञामें चलनहारे पाश तथा दंडको धारण कियेभये उग्र हैं रूप जिनके और अपने तुल्य है बल

गन्धर्वाणांसमूहाश्चसंघशश्चाप्सरोगणाः ॥ गीतवादित्रनृत्याद्यैः परितः सेवयन्ति तम् ॥ ३४ ॥ मृत्युनापा शहस्तेनकालेनचबलीयसा ॥ चित्रगुप्तेनचित्रेण कृतान्तेननिषेवितः ॥ ३५ ॥ पाशदण्डधरैरुग्रैर्निदेशवशवर्ति भिः ॥ आत्मतुल्यबलैर्नानासुभटैःपरिवारितः ॥ ३६ ॥ अग्निष्वात्ताश्चपितरःसोमपाश्चोष्मपाश्चये ॥ स्वधाव न्तोबर्हिषदोमूर्ताऽमूर्ताश्चयेखग ॥३७॥ अर्यमाद्याः पितृगणामूर्तिमन्तस्तथापरे ॥ सर्वेतेमुनिभिःसार्धंधमराज मुपासते ॥ ३८ ॥ अत्रिर्वसिष्ठःपुलहोदक्षःक्रतुरथाङ्गिराः ॥ जामदग्न्योभृगुश्चवपुलस्त्यागस्त्यनारदाः॥३९॥

जिनमें ऐसे नानाप्रकारके सुन्दर योद्धानकरिकै वेष्टित हैं ॥ ३६ ॥ हे गरुड ! अग्निष्वात्तपितर और जे सोमपा तथा उष्मप हैं और स्वधावन्त तथा बर्हिषद मूर्तिमान् और जे अमूर्तिमान् ॥३७॥ अर्यमा आदि पितृगण हैं तथा और मूर्तिमान् हैं वे सब मुनिनसमेत धर्मराजकी उपासना करै हैं ॥३८॥ अत्रि, वसिष्ठ, पुलह, दक्ष, क्रतु, अंगिरा, जामदग्न्य, भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य और नारद ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये तथा और बहुतसे पितृराजके सभासद हैं उनकी नामसों और कर्मनसों संख्या नहीं होसकै है ॥ ४० ॥ धर्मशास्त्रकी व्याख्यानसो यथार्थ निर्णय करनहारे वे सब परमेष्ठीकी आज्ञासों धर्मराजको सेवन करै हैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ मनु, दिलीप, मांधाता, सगर, भगीरथ, अंबरीष, अनरण्य, मुचुकुंद, निमि और पृथु ॥४३॥ ययाति, नहुष, पुरु, दुष्यंत, शिबि, नल, भरत, शंतनु, पांडु और सहस्रार्जुन

एतेचान्येचबहवःपितृराजसभासदः ॥ नशक्याः परिसख्यातुनामभिःकर्मभिस्तथा ॥ ४० ॥ व्याख्याभिर्धर्मशास्त्राणांनिर्णेतारोयथातथम् ॥ सेवन्तेधर्मराजंतेशासनात्परमेष्ठिनः ॥ ४१ ॥ राजानःसूर्यवंशीयाः सोमवंश्यास्तथापरे ॥ सभायांधर्मराजतेधमज्ञाः पर्युपासते ॥ ४२ ॥ मनुर्दिलीपोमान्धातासगरश्चभगीरथः ॥ अम्बरीषोनरण्यश्चमुचुकुन्दोनिमिः पृथुः ॥ ४३ ॥ ययातिनहुषः पूरुर्दुष्यन्तश्चशिबिर्नलः ॥ भरतः शंतनुः पांडुः सहस्राजुनएवच ॥ ४४ ॥ एतेराजर्षयः पुण्याः कीर्तिमन्तो बहुश्रुताः ॥ इष्ट्वाश्वमेधैर्बहुभिर्जाता धर्मसभासदः ॥ ४५ ॥ सभायां धमराजस्यधमएवप्रवर्तत ॥ नतत्रपक्षपातोहिनानृतंनचमत्सरः ॥ ४६ ॥

॥ ४४ ॥ पवित्र कीर्तिमान् और बहुश्रुत ये राजा बहुतसे अश्वमेधनसों यजन करिकै धर्मके सभासद भये ॥ ४५ ॥ धर्मराजकी सभामें धर्मही प्रवृत्त होय है वहां पक्षपात नहीं है न झूठ है न मत्सर है ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सब सभाके बैठनेहारे शास्त्रके ज्ञाता हैं और धर्ममें परायण हैं वा सभामें सदा वैवस्वत जे धर्मराज हैं तिनकी उपासना करै हैं ॥ ४७ ॥ हे गरुड ! धर्मराज महात्माकी वह ऐसी सभा है वाको जे पापी हैं और दक्षिणके मार्गमें होके गये हैं वे नहीं देखै हैं ॥ ४८ ॥ धर्मराजके पुरमें जानेको चारि मार्ग होय हैं पहले पापीनके जानेमें वह तौ तुमसों कहचुका ॥ ४९ ॥ पूर्व आदि तीनि मार्गनसों जे

सभ्याः सर्वे शास्त्रविदः सर्वे धर्मपरायणाः ॥ तस्यां सभायांसततंवैवस्वतमुपासते ॥ ४७ ॥ ईदृशीसासभाता क्ष्यधर्मराजमहात्मनः ॥ नतांपश्यन्तियपापादक्षिणेनपथागताः ॥४८॥ धर्मराजपुरेगन्तुंचतुर्मार्गाभवन्तिच ॥ पापिनांगमनेपूर्वसतुतेपरिकीर्तितः ॥ ४९ ॥ पूर्वादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्येगताधममन्दिरे ॥ तेहि सुकृतिनः पुण्यैस्त स्यांगच्छन्तिताञ्छृणु ॥ ५० ॥ पूर्वमार्गस्तुतत्रैकः सर्वभोगसमन्वितः ॥ पारिजाततरुच्छायाच्छादितो रत्नमण्डितः ॥ ५१ ॥ विमानगणसङ्कीर्णोहंसावलिविराजितः ॥ विद्रुमारामसंकीर्णपीयूषद्रवसंयुतः ॥५२॥

धर्मके मंदिरमें गये हैं वे सुकृती पुण्यनसों वामें जाय हैं उनको सुनो ॥ ५० ॥ यहां एक पूर्वको मार्ग है वह सब भोगनकरिकै युक्त है और पारिजात जो देवतनको वृक्ष है ताकी छायासों आच्छादित है और रत्नसों शोभित है ॥ ५१ ॥ विमानके गणसों भरोभयो हैं और हंसनकी पंक्तिनकरि विराजमान है मूंगनको जो बाग है तासों भरो है और अमृतरूपी जलकरिकै युक्तहै॥५२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा द्वारमें होकै पवित्र देवार्षि जाय हैं निर्मल राजार्षि जाय हैं और वाहीमें होकै अप्सरानके गण गंधर्व विद्याधर और बडे सप जायँ हैं ॥ ५३ ॥ तथा और जे देवतानके आराधन करनहारे हैं तथा अन्य पुरुष जे शिवकी भक्तिमें तत्पर हैं और ग्रीष्मऋतुमें जे जलकी प्याऊ लगावे हैं और माघमें जे लकरी देकै तपावे हैं ॥ ५४ ॥ और जे वर्षाऋतुमें विरक्तनकी दान और मानसों विश्राम देय हैं और

तेनब्रह्मर्षयोयान्तिपुण्याराजर्षयोमलाः ॥ अप्सरोगणगन्धर्वविद्याधरमहोरगाः ॥ ५३ ॥ देवताराधकाश्चान्ये शिवभक्तिपरायणाः ॥ ग्रीष्मेप्रपादानरतामाघेकाष्ठप्रदायिनः ॥ ५४ ॥ विश्रामयन्तिवर्षासुविरक्तान्दानमानतः ॥ दुःखितस्यामृतंब्रूतेददतेह्याश्रमंतुये ॥ ५५ ॥ सत्यधर्मरतायेचक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृमातृषुयेभक्तागुरुशुश्रूषणेरताः ॥ ५६ ॥ भूमिदागृहदागोदाविद्यादानप्रदायकाः ॥ पुराणवक्तृश्रोतारः पारायणपरायणाः ॥ ५७ ॥ एतेसुकृतिनश्चान्येपूर्वद्वारेविशन्तिच ॥ यान्तिधर्मसभायांतेसुशीलाः शुद्धबुद्धयः ॥ ५८ ॥

दुःखीसों जे अमृतसमान वचन बोले हैं और आश्रम देय हैं ॥ ५५ ॥ और जे सत्यधर्ममें रत हैं और क्रोध लोभसों रहित हैं और पितामाताके जे भक्त हैं और गुरुकी सेवामें जे रत हैं ॥५६॥ भूमिके देनहारे गोके देनहारे और विद्यादानके देनहारे पुराणके कहनहारे तथा सुननहारे और पारायणमें तत्पर ॥ ५७ ॥ये सुकृती तथा अन्य पूर्वके द्वारमें होकै प्रवेश करै हैं अर्थात् भीतर जाय हैं और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुशील और शुद्धबुद्धि वे धर्मसभामें जाय हैं ॥ ५८ ॥ दूसरो उत्तरको माग सैकरन महारथसों युक्त है और नरयान जे पालकी हैं तिनकरिकै युक्त है और हरिचंदन जो देवतानको वृक्ष है ताकरिकै भूषित है ॥ ५९ ॥ हंस और सारसनसों भरोभयो है और चकई चकवानसों शोभित है अमृतरूप जलसों भरो भयो सरोवर वहां शोभायमान है ॥ ६० ॥ या द्वारमें वैदिक अर्थात् वेदके पढनहारे

द्वितीयस्तूत्तरोमार्गोमहारथशतैर्वृतः ॥ नरयानसमायुक्तोहरिचन्दनमण्डितः ॥ ५९ ॥ हंससारससंकीर्णश्चक्रवाकोपशोभितः ॥ अमृतद्रवसंपूर्णस्तत्रभातिसरोवरः ॥ ६० ॥ अनेनवैदिकायान्तितथाभ्यागतपूजकाः ॥ दुर्गाभान्वोश्चयेभक्तास्तीर्थस्नाताश्चपर्वसु॥६१॥येमृताधमसंग्रामेऽनशनेनमृताश्चये ॥ वाराणस्यांगोग्रहेचतीर्थतोयेमृताविधेः ॥ ६२ ॥ ब्राह्मणार्थेस्वामिकार्येतीथक्षेत्रेषुयेमृताः ॥ येमृतादेवविध्वंसेयोगाभ्यासेनयेमृताः ॥ ६३ ॥ सत्पात्रपूजकानित्यं महादानरताश्चये ॥ प्रविश्यन्त्युत्तरेद्वारेयान्तिधर्मसभांचते ॥ ६४ ॥

और अभ्यागतकी पूजा करनहारे जाय हैं और दुर्गा तथा सूर्य्यके जे भक्त हैं और जे पर्वनमें न्हाये वे जाय हैं ॥ ६१ ॥ जे धर्मयुद्धमें मारेगये हैं और जे अनशन जो लंघनहै तिनसों जे मरे हैं और काशी गौके घरमें और तीर्थके जलमें जे मरे हैं॥६२॥ब्राह्मणकेलिये स्वामीके कार्यमें तथा क्षेत्रमें जे मरेहैं और जे देवताके विध्वंसमें मरेहैं औरयोगाभ्याससों जे मरेहैं॥६३॥और जे सत्पात्रके पूजनहारेहैं और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे नित्य महादानमें रत रहे हैं ये सब उत्तरके द्वारमें होके प्रवेशकरिकै धर्मसभामें जाय हैं ॥६४ तीसरो पश्चिमको मार्गहै वह रत्नके बनेभये मंदिरसों शोभित है और सदा अमृतरूपजलसों भरीभई बावरीनसों शोभायमान है ॥६५॥ और ऐरावतके कुलमें उत्पन्न मत्त हाथीनसों भरोभयो है और उच्चैःश्रवासों उत्पन्न अश्वरत्नकरिकै युक्त है ॥६६॥ या द्वारमें होके आत्मामें जे परायण हैं वे और उत्तम

तृतीयः पश्चिमोमार्गोरत्नमन्दिरमंडितः ॥ सुधारससदापूणदीर्घिकाभिर्विराजितः ॥ ६५ ॥ ऐरावतकुलोद्भूत मत्तमातङ्गसंकुलः ॥ उच्चैःश्रवःसमुत्पन्नहयरत्नसमन्वितः ॥ ६६ ॥ एतनात्मपरायान्तिसच्छास्त्रपरिचिन्तकाः ॥ अनन्यविष्णुभक्ताश्चगायत्रीमन्त्रजापकाः ॥ ६७ ॥ परहिंसापरद्रव्यपरवादपराङ्मुखाः ॥ स्वदारनिरताःसन्तःसाग्निकावेदपाठकाः ॥६८॥ ब्रह्मचर्यव्रतधरावानप्रस्थास्तपस्विनः ॥ श्रीपादसंन्यासपराःसमलोष्टाश्मकाञ्चनाः ॥ ६९ ॥ ज्ञानवैराग्यसंपन्नाः सवभूतहितेरताः ॥ शिवविष्णुव्रतकराःकर्मब्रह्मसमर्पकाः ॥७०॥

शास्त्रके चितवन करनहारे जाय हैं और अनन्य विष्णुके भक्त और गायत्रीमंत्रके जपनेहारे जायहैं॥६७॥पराई हिंसा परायो द्रव्य और परायो वादते जे पराङ्मुख हैं और अपनी स्त्रीमें भोग करनहारे सज्जन अग्निहोत्रके कर्त्ता और वेदके पढनहारे॥६८॥ब्रह्मचर्यव्रतके धारण करनहारे और वानप्रस्थ तथा तपस्वी श्रीपाद जो संन्यासहै तामें लगेभये और जिनको कंकर पत्थर और सोना बराबर है॥६९॥ज्ञान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वैराग्यसों संपन्न और सब भूतनके हितमें लगे भये और शिव तथा विष्णुके जे व्रतहैं तिनके करनहारे और कर्मनको ब्रह्ममें समर्पण करनहारे ॥ ७० ॥ तीनि ऋणनते छूटेभये और सदा पंचयज्ञमें रत और पितृनको श्राद्ध देनेके कालमें सध्योपासनके करनहारे॥७१॥ नीचनके संसर्गतें बचेभये और सत्संगतिमें लगेभये ये अप्सरानके गणसों युक्त श्रेष्ठ विमाननमें बैठेभये ॥ ७२ ॥ अमृतके पानको करते

ऋणैस्त्रिभिर्विनिर्मुक्ताः पञ्चयज्ञरताः सदा ॥ पितृणांश्राद्धदातारःकालेसंध्यामुपासकाः ॥ ७१ ॥ नीचसंगविनिर्मुक्ताः सत्संगतिपरायणाः ॥ एतेप्सरोगणैर्युक्ताविमानवरसंस्थिताः ॥ ७२ ॥ सुधापानंप्रकुर्वन्तोयान्तितेधममंदिरम् ॥ विशन्तिपश्चिमद्वारेयान्तिधर्मसभान्तरे ॥ ७३ ॥ यमस्तानागतान्दृष्ट्वास्वागतंवदतेमुहुः ॥ समुत्थानंचकुरुतेतेषांगच्छतिसंमुखम् ॥७४॥ तदाचतुर्भुजोभूत्वाशंखचक्रगदासिभृत् ॥ पुण्यकर्मरतानांचस्नेहान्मित्रवदाचरेत् ॥ ७५॥ सिंहासनंचददतेनमस्कारंकरोतिच ॥ पाद्यार्घंकुरुतेपश्चात्पूजतेचन्दनादिभिः ॥७६॥

भये धर्ममंदिरमें प्रवेश करेहैं और पश्चिमके द्वारमें होके भीतर जाय हैं और धर्मसभाके मध्यमें जाय हैं ॥ ७३ ॥ यम उनको आये भये देखि वारंवार स्वागत करै और उनके सन्मुख आवनेपै यम अभ्युत्थान करैहै ॥७४॥ वा समय चतुर्भुज होके शंख चक्र गदा और खड्गको धारण करेभये पुण्यकर्ममें जे रतहैं उनको स्नेहसों मित्रकोसो आचरण करैहै ॥७५ ॥सिंहासन देयहैं और नमस्कार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै है पाद्यार्घ करैहै और पीछे चंदन आदिसों पूजन करै है ॥७६॥ भो सभाके लोगो ! ज्ञानीको बडे आदरसों नमस्कार करो यह मेरे मंडलको फोडकै ब्रह्मलोकको जायगो ॥ ७७ ॥ भोभो बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ और नरकके क्लेशसों डरेभये तुमने पुण्यकरिकै सुखको देनेहारो देवत्व सिद्ध कियो ॥७८॥दुर्लभ मनुष्यशरीर पायकै जो नित्यसाधन नहीं करै हैं वह घोरनरकमें जायहै वातें अन्य जड

नमस्कुर्वन्तुभोःसभ्याज्ञानिनंपरमादरात् ॥ एषमेमण्डलभित्त्वाब्रह्मलोकंप्रयास्यति ॥ ७७ ॥ भोभोबुद्धिमतांश्रेष्ठानरकक्लेशभीरवः ॥ भवद्भिःसाधितंपुण्यैर्देवत्वंसुखदायकम् ॥ ७८ ॥ मानुषंदुर्लभंप्राप्यनित्यंयस्तुन साधयेत् ॥ सयातिनरकघोरंकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥ ७९ ॥ अस्थिरेणशरीरेणयोऽस्थिरैश्चधनादिभिः ॥ संचिनोतिस्थिरंधर्मंसएकोबुद्धिमान्नरः ॥ ८० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकर्तव्योधर्मसंचयः ॥ गच्छध्वंपुण्यवत्स्थानंसर्वभोगसमन्वितम् ॥ ८१ ॥ इतिधर्मवचः श्रुत्वा तंप्रणम्यसभांचताम् ॥ अमरैः पूज्यमानास्तेस्तूयमाना मुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥

कौन है ॥७९ ॥ अस्थिर शरीरकै और अस्थिर धनादिकनकरिकै जो पुरुष स्थिरधर्मको इकट्ठे करै वही एक बुद्धिमान् है ॥ ८० ॥ तातें सब यत्नसों धर्मको संग्रह करनो चाहिये सब भोगनकरिकै युक्त पुण्यवानके स्थानको जाइये ॥ ८१ ॥ याप्रकार धर्मको वचन सुनिकै उनको और वा सभाको प्रणाम करि देवतानकरिकै पूजा कियेभये वे और मुनीश्वरकरिकै स्तुति किये गये ॥ ८२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विमानके गणसों संकीर्ण हो परमपदको जांय हैं और कोई बडे आदरसों धर्मसभामें स्थित रहैं हैं ॥ ८३ ॥ वहां कल्पके अंतलौं वास करिकै और दिव्य भोगनको भोगिकै पुण्यके शेषसों पुण्य कहिये पवित्र है दर्शन जाको ऐसो वह जीव मनुष्यलोकमें प्राप्त होय है ॥ ८४ ॥ महाधनी और सर्वज्ञ तथा सब शास्त्रमें चतुर ऐसो वह जीव फिरि अपने आत्माके विचारसों ता पीछे परमगति जो मुक्ति

विमानगणसंकीर्णाः प्रयान्तिपरमंपदम् ॥ केचिद्धर्मसभायांहितिष्ठन्तिपरमादरात् ॥ ८३ ॥ उषित्वातत्रकल्पांतंभुक्त्वाभोगानमानुषान् ॥ प्राप्नोतिपुण्यशेषेणमानुष्यंपुण्यदर्शनम् ॥ ८४ ॥ महाधनीचसर्वज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः ॥ पुनःस्वात्मविचारेणततोयातिपरांगतिम् ॥८५॥एतत्तेकथितंसर्वंत्वयापृष्टंयमालयम्॥ इदंशृण्वन्नरोभक्त्याधर्मराजसभांव्रजेत्॥८६॥इतिश्रीसारोद्धारेगरुडपुराणेधर्मराजनगरनिरूपणोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ गरुडउवाच ॥ धर्मात्मास्वर्गतिंभुक्त्वाजायतेविमलेकुले ॥ अतस्तस्यसमुत्पत्तिंजननीजठरेवद ॥ १ ॥

है ताको प्राप्त होय है॥८५॥ तुम करिकै पूँछो गयो यमालय मैंने तुमसों सब कह्यो याको भक्तिसों सुनतो भयो मनुष्य धर्मराजकी सभामें जाय है ॥ ८६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥गरुड बोले धर्मात्मा स्वर्गकी गतिको छोडके निर्मल कुलमें उत्पन्न होय है यातें माताके पेटमें वाकी उत्पत्ति कहौ ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुकृती मनुष्य या देहमें जैसे विचार करै है वैसे मैं सुनो चाहौंहौं हे करुणानिधि मोसों कहो ॥ २ ॥ श्रीभगवान् बोले हे गरुड ! तुमने अच्छो प्रश्न कियो परम गोप्य मैं तुमसों कहैं हैं जाके जाननेही मात्रसों सर्वज्ञपन हो जाय है ॥ ३ ॥ और शरीरको परमार्थिक स्वरूप कहौंगो ब्रह्मांडके गुणनसों संपन्न है योगिनको धारणको आस्पदहै॥४॥योगी जैसे यामें षट्चक्रको चिंतवन करै है और ब्रह्मरंध्रमें चिदानं

याथविचारंकुरुतेदेहेस्मिन्सुकृतीजनः ॥ तथाहंश्रोतुमिच्छामिवदमेकरुणानिधे ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्र्यपरंगोप्यंवदामिते ॥ यस्यविज्ञानमात्रेणसर्वज्ञत्वंप्रजायते ॥ ३ ॥ वक्ष्यामिचशरीरस्यस्वरूपंपारमार्थिकम् ॥ ब्रह्मांडगुणसंपन्नंयोगिनांधारणास्पदम् ॥४॥ षट्चक्रचिन्तनंयस्मिन्यथाकुर्वन्तियोगिनः॥ ब्रह्मरन्ध्रेचिदानन्दरूपध्यानन्तथाशृणु ॥ ५ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेजायसुकृतीयथा ॥ तथाविधानंनियमंतत्पित्रोः कथयामिते ॥६॥ ऋतुकालेतुनारीणांत्यजेद्दिनचतुष्टयम् ॥ तावन्नालोकयेद्वक्त्रंपापंत्रपुषिसंभवेत्॥७॥ ॥१९३॥

दरूपको जैसे ध्यान करै है सो सुनो ॥ ५ ॥ जैसो सुकृती शुद्ध और श्रीमान्के घरमें उत्पन्न होय है वैसो विधान और नियम उनके मातापिताको कहौंगो ॥ ६ ॥ ऋतुकालमें नारीनके चार दिन त्याग करै और जबलौं शरीरमें पाप अर्थात् इंद्रकी ब्रह्महत्यातें उत्पन्न रहै तबलौं स्त्रीनको मुख न देखै ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा नारी सचैल स्नान करिकै चौथे दिन शुद्ध होय है और सातदिन पीछे पितृ और देवतानके व्रत तथा पूजनके योग्य होय है॥८॥
सातदिनके भीतर जो गर्भ होय है वह मलिन है अपाय कहिये नाश जाको ऐसो होय है यहां बहुधा पुत्र आठदिनके मध्यमें होय है
॥ ९ ॥ युग्मरात्रिनमें पुत्र उत्पन्न होय है तातें पहलेके सात दिन छोडिकै युग्मरात्रिनमें स्त्रीसों गमन करै ॥ १०॥ सोलह ऋतुकी रातैं

स्नात्वासचैलंसानारी चतुर्थेहनिशुध्यति ॥ सप्ताहात्पितृदेवानांभवेद्योग्याव्रतार्चने ॥ ८ ॥ सप्ताहमध्येयोगर्भः
संभवेन्मलिनाशयः ॥ प्रायशःसंभवन्त्यत्रपुत्रास्त्वष्टाहमध्यनः ॥ ९ ॥ युग्मासुपुत्राजायन्तेस्त्रियोऽयुग्मासुरा
त्रिषु ॥ पूर्वसप्तकमुत्सृज्यतस्माद्युग्मासुसंविशेत् ॥ १० ॥ षोडशर्तुर्निशाःस्त्रीणांसामान्याःसमुदाहृताः॥ यावै
चतुर्दशीरात्रिर्गर्भस्तिष्ठतितत्रवै ॥ ११ ॥ गुणभाग्यनिधिःपुत्रस्तदाजायेतधार्मिकः ॥ सानिशाप्राकृतैर्जीवैर्न
लभ्येतकदाचन ॥ १२ ॥पञ्चमेहनिनारीणांकार्यंमधुरभोजनम्॥कटुक्षारंचतीक्ष्णंचत्याज्यमुष्णंचदूरतः॥१३॥

स्त्रीनकी सामान्यसों कहीगईं हैं और निश्चयकरिकै जो चौदहवीं रात्रि है वामें गर्भकी स्थिति होय है ॥११॥तब गुण और भाग्यको
निधि कहिये स्थान धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न होय है यह रात्रि प्राकृतजीवनको कबहूं नहीं मिलै है ॥ १२ ॥ पांचवें दिन नारीनको मधुर
भोजन करनो चाहिये और कडुआ खारी तीक्ष्ण और उष्ण दूरसों त्यागनो चाहिये ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह क्षेत्र औषधीनको पात्र है और बीज अमृत है स्वामी नर वाको वा क्षेत्रमें अच्छे फलको प्राप्त होय है ॥१४॥ पान खायेभये फूल तथा चंदनको धारणकियेभये और शुद्ध वस्त्र पहिरेभये पुरुष मनमें धर्मको धारण करि उत्तम शय्यापर सोवै॥१५॥वीर्यके निषेक समयमें जैसी चित्तकी कल्पना होय है वैसेही स्वभावको जंतु कोखिमें प्रवेश करैहै॥१६॥बीजहुआ चैतन्य सदा वीर्यमें स्थित रहैहै कामचि तऔर

तत्क्षेत्रमोषधीपात्रबीजंचाप्यमृतायनम् ॥ तस्मिन्नुप्त्वानरः स्वामीसम्यक्फलमवाप्नुयात् ॥ १४ ॥ ताम्बूल पुष्पश्रीखण्डैःसंयुक्तःशुचिवस्त्रभृत् ॥ धर्ममादायमनसिसुतल्पंसंविशेत्पुमान् ॥ १५ ॥ निषेकसमयेयादृङ्नर चित्तविकल्पना ॥ तादृक्स्वभावसंभूतिजन्तुर्विशतिकुक्षिगः ॥ १६ ॥ चतन्यंबीजभूतंहिनित्यंशुक्रेप्यवस्थितम् ॥ कामश्चित्तंचशुक्रंचयदाह्यकत्वमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ तदाद्रावमवाप्नोतियोषिद्गर्भाशयेनरः॥शुक्रशोणितसंयोगात्पिण्डोत्पत्तिःप्रजायते ॥१८॥ परमानन्ददःपुत्रोभवेद्गभगतःकृती ॥ भवन्तितस्यनिखिलाःक्रियाः पुंसवनादिकाः ॥१९॥ जन्मप्राप्नोतिपुण्यात्माग्रहेषूच्चगतेषुच ॥ तज्जन्मसमयेविप्राःप्राप्नुवन्तिधनंबहु ॥२०॥

शुक्र जब एकताको प्राप्त होयहै॥ १७॥ तब मनुष्य स्त्रीके गर्भाशयमें द्रावको प्राप्त होयहै और शुक्र तथा शोणित जो रुधिर है ताके संयोगसों पिंडकी उत्पत्ति होय है॥ १८॥ गर्भमें प्राप्त सुकृती पुत्र परमआनंदको देनेहारो होयहै वाकी संपूर्ण पुंसवन आदि क्रिया होय है॥ १९॥ पुण्यात्मा ऊंचेघरनमें जन्म पावैहै वाके जन्मसमयमें ब्राह्मण बहुतसों धन पावैं हैं॥ २०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्या और विनयसों संपन्न वह पिताके घरमें बढै है और सज्जनके संगसों वह सब शास्त्रनमें चतुर होयहै ॥ २१ ॥ पहले जन्ममें कियेभये जे तप तीर्थ और महापुण्य हैं तिनके फलके उदय होनेसों युवा अवस्थामें दिव्य अंगना आदिको भोगनहारो होय है ॥ २२ ॥ ता पीछे आत्मा और अनात्माके विचारमें सदा यत्न करै है और अध्यारोप तथा अपवादकरिकै

विद्याविनयसंपन्नोवर्धतेपितृवेश्मनि ॥ सतांसङ्गेनसभवेत्सर्वागमविशारदः ॥ २१ ॥ दिव्याङ्गनादिभोक्तास्यात्तारुण्येदानवान्धनी ॥ पूर्वकृततपस्तीर्थमहापुण्यफलोदयात् ॥२२॥ ततश्चयततेनित्यमात्मानात्मविचारणे ॥ अध्यारोपापवादाभ्यांकुरुतेब्रह्मचिन्तनम् ॥ २३ ॥ अस्यासंगावबोधायब्रह्मणोन्वयकारिणः ॥ क्षित्याद्यनात्मवर्गस्यगुणांस्तेकथयाम्यहम् ॥ २४ ॥ क्षितिर्वारिहविर्भोक्तावायुराकाशएवच ॥ स्थूलभूताइमेप्रोक्ताःपिण्डोयंपाञ्चभौतिकः ॥ २५ ॥ त्वगस्थिनाड्योरोमाणिमांसचैवखगेश्वर ॥ एतेपञ्चगुणाभूमर्मयातेपरिकीर्तिताः॥२६॥

ब्रह्मको चिंतवन करै है ॥ २३ ॥ अन्वयकरनहारेहू या ब्रह्मके असग यह पुरुष संगरहित है या वार्ताके जाननेको क्षिति आदि जे अनात्मवर्ग पंचभूत हैं तिनके गुणनको मैं तुमसों कहौंहौं ॥ २४ ॥ क्षिति पृथिवी और वारि जल हविर्भोक्ता अग्नि वायु पवन और आकाश ये पांचों स्थूल भूत कहे यह पिंड पांचभूतनसों बनाहै ॥ २५ ॥ हे गरुड ! त्वचा हड्डी नाडी रोम और मांस ये पांच गुण भूमिके मैंने तुमसों कहे ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लार मूत्र वीर्य मज्जा और पांचमों रक्त ये पांचगुण जलके कहे अब तेजकेभी सुनिये ॥ २७ ॥ क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा और कांति हे गरुड ! ये पांच तेजके गुण सर्वयोगीश्वरोंने कहेहैं ॥२८॥ आकुंचन कहिये समेटनो दौडनो उलांघनो फैलानो और चेष्टित ये पांच गुण वायुके कहेगये हैं ॥२९॥ शब्द चिंता शून्यता मोह और संदेह ये पांचगुण आकाशके हैं वे प्रयत्नसे जानने योग्यहैं ॥३०॥ मन बुद्धि अहं

लालामूत्रंतथाशुक्रंमज्जारक्तंचपञ्चमम् ॥ अपांपञ्चगुणाः प्रोक्तास्तेजसोपिनिशामय ॥ २७ ॥ क्षुधातृषातथा लस्यंनिद्राकान्तिस्तथैवच ॥ तेजः पञ्चगुणंतार्क्ष्यप्रोक्तंसर्वत्रयोगिभिः ॥२८॥ आकुञ्चनंधावनचलंघनंचप्रसारणम् ॥ चेष्टितंचेतिपञ्चैवगुणावायोःप्रकीर्तिताः ॥२९॥ घोषश्चिन्ताचशून्यत्वंमोहश्चिन्ताचसंशयः ॥ आकाशस्यगुणाः पञ्चज्ञातव्यास्तेप्रयत्नतः ॥ ३० ॥ मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तंचेतिचतुष्टयम् ॥ अन्तःकरणमुद्दिष्टंपूर्वकर्माधिवासितम् ॥ ३१ ॥ श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वाघ्राणंज्ञानेंद्रियाणिच ॥ वाक्पाणिपादपायूपस्थानिकर्मेन्द्रियाणिच ॥ ३२॥ दिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नीन्द्रोपेन्द्रमित्रकाः ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रियाणांचदेवताःपरिकीर्तिताः ॥३३॥

कार और चित्त ये चारि अंतःकरणके कहे भये हैं वह अंतःकरण पूर्वजन्मके कर्मनसों अधिवासित कहिये वासनायुक्त होय है ॥३१॥ कान, त्वचा, आंखैं, जीभ, नाक, ज्ञानेंद्रिय हैं और वाक्, पाणि, पाद, गुदा और लिंग ये कर्मेंद्रियहैं ॥३२॥ दिशा, वात, अर्क, प्रचेता, अश्विनीकुमार,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह्नि, इंद्र और उपेंद्र और मित्र ये ज्ञानेन्द्रियनके देवता कहे गये हैं ॥ ३३ ॥ इडा, पिंगला और तीसरी सुषुम्ना, गांधारी गजजिह्वा, पूषा, यशस्विनी ॥ ३४ ॥ अलंबुषा, कुहू तथा दशमी शंखिनी ये प्रधान दश नाडी मध्यमें स्थित हैं ॥ ३५ ॥ प्राण अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय ॥३६॥ हृदयमें प्राण, गुदामें अपान, समान नाभिमंडलमें स्थित

इडाचपिङ्गलाचैवसुषुम्नाख्यातृतीयका ॥ गान्धारीगजजिह्वाचपूषाचैवयशस्विनी ॥ ३४ ॥ अलम्बुषाकुहूश्चा
पिशंखिनीदशमीतथा ॥ पिंडमध्येस्थिताह्येताःप्रधानादशनाडिकाः ॥ ३५ ॥ प्राणोपानःसमानाख्यउदानो
व्यानएवच ॥ नागःकूमश्चकृकलोदवदत्तोधनञ्जयः ॥ ३६ ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिमंडले ॥ उदा
नः कंठदेशेस्याद्व्यानः सर्वशरीरगः॥३७॥ उद्गारेनागआख्यातः कूर्मउन्मीलनेस्मृतः॥कृकलःक्षुत्करोज्ञेयोदेव
दत्तोविजृम्भणे ॥ ३८ ॥ नजहातिमृतवापिसर्वव्यापीधनञ्जयः ॥ कवलैर्भुक्तमन्नंहिपुष्टिदंसर्वदेहिनाम् ॥३९॥

है उदान कंठदेशमें और व्यान सब शरीरमें स्थितहै॥ ३७॥उद्गार जो डकारहै वह नागहै और उन्मीलनमें कूर्म कहो गयो है कृकल क्षुधा को करनहारो जाननो चाहिये और विजृंभणमें देवदत्त जानिये ॥ ३८ ॥ सर्वव्यापी जो धनंजय वायुहै और सो मरे भयेकोहु नहीं छोडेहै कवलनसो खायो अन्न सब देहिनको पुष्टि देनेहारो है ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यान वायु सारांशको सब नाडीनमें पहुँचाय देय है भुक्तमात्र आहारके वायु दो भाग करिदेयहै ॥ ४० ॥ गुदामें अच्छे प्रवेशकरि अन्नको पृथक् और जलकोपृथक् करिदेय है अग्निके ऊपर जलको करिके और अन्नको जलके ऊपर करिके ॥ ४१ ॥ और आप प्राण अग्निके नीचे स्थित होके हौले २ धौंकेहै और वायुकरिके धौंकीगई अग्नि रसको और मलको पृथक करिदेय है ॥ ४२ ॥ और

नयतेव्यानकोवायुः सारांशंसर्वनाडिषु ॥ आहारोभुक्तमात्रोहिवायुनाक्रियतेद्विधा ॥ ४० ॥ सप्रविश्यगुदेस म्यक्पृथगन्नंपृथग्जलम् ॥ ऊर्ध्वमग्नेर्जलंकृत्वाकृत्वान्नंचजलोपरि ॥ ४१ ॥ अग्नेश्चाधः स्वयंप्राणः स्थित्वाग्निं धमतेशनैः ॥ वायुनाध्मायमानोग्निःपृथक्किट्टंपृथग्रसम् ॥ ४२ ॥ कुरुतेव्यानकोवायुर्विष्वक्संप्रापयेद्रसम् ॥ द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नंकिट्टंदेहाद्बहिःस्रवेत ॥ ४३ ॥ कर्णाक्षिनासिकाजिह्वादन्तानाभिर्नखागुदम् ॥ गुह्यंशि रावपुर्लोममलस्थानानिचक्षते ॥ ४४ ॥ एवंसर्वेप्रवर्तन्तेस्वस्वकर्माणिवायवः ॥ उपलभ्यात्मनः सत्तां सूर्यालोकंयथाजनाः ॥ ४५ ॥

व्यान शरीरमें सब ओर रसको पहुँचावै है बारह द्वारनकरिके भिन्न करेभये मलको बाहर निकालैहै॥४३॥ कान, आंख, नाक, जीभ, दांत, नाभि,नख,गुदा, लिंग, शिरा, वपु और लोम इनको मलस्थान कहैहैं ॥ ४४ ॥ याप्रकार सब वायु अपने कर्मनमें प्रवृत्त होयहैं जैसे सूर्यके प्रकाशको पायकै अपनी सत्ताको जन ॥ ४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे खग ! नरदेहके दोरूप सुनो एक व्यावहारिक और दूसरो पारमार्थिक ॥४६॥ साढे तीन करोड रोम व्यावहारिक शरीरमें हैं और सातलाख केश हैं और नख बीस कहेगये हैं॥४७॥और हे गरुड ! सामान्यसों बत्तीस दांत कहेगये हैं और हजार पल मांसहै और सौपल रक्तहै॥४८॥और मेदाके दश पलहैं और सत्तरि पल त्वचाके हैं और बारह पल मज्जाके हैं और तीनि पल महारक्तके हैं॥४९॥ शुक्रदो

इदानींनरदेहस्यशृणुरूपद्वयंखग ॥ व्यावहारिकमेकंचद्वितीयंपारमार्थिकम् ॥ ४६ ॥ तिस्रः कोटयोर्धकोटीचरोमाणिव्यावहारिके ॥ सप्तलक्षाणिकेशाःस्युर्नखाःप्रोक्तास्तुविंशतिः ॥ ४७ ॥ द्वात्रिंशद्दशनाःप्रोक्ताः सामान्याद्विनतासुत ॥ मांसंपलसहस्रंतुरक्तंपलशतंस्मृतम् ॥४८॥ पलानिदशमेदस्तुत्वक्पलानिचसप्ततिः ॥ पलद्वादशकंमज्जामहारक्तंपलत्रयम् ॥ ४९ ॥ शुक्रंद्विकुडवंज्ञेयंकुडवंशोणितंस्मृतम् ॥ षष्ट्युत्तरंचत्रिशतमस्थ्नांदेहेप्रकीर्तितम् ॥ ५० ॥ नाड्यःस्थूलाश्चसूक्ष्माश्चकोटिशःपरिकीर्तिताः ॥ पित्तंपलानिपञ्चाशत्तदर्धंश्लेष्मणस्तथा ॥ ५१ ॥ सततंजायमानंतुविण्मूत्रंचाप्रमाणतः ॥ एतद्गुणसमायुक्तंशरीरंव्यावहारिकम् ॥ ५२ ॥

कुडव है और एक कुडव शोणित कहो है और देहमें तीनिसों साठि हड्डी कहीगई हैं ॥ ५० ॥ स्थूल तथा सूक्ष्म नाडी शरीरमें करोरन कहीगई हैं और पचासपल पित्तके हैं और वाके आधे अर्थात् पचीसपल कफके हैं ॥५१॥ और सदा उत्पन्न होनेवाली विष्ठा और मूत्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अप्रमाण है इन गुणनकरिकै युक्त व्यावहारिक शरीर है ॥५२॥ सब भुवन और पर्वत द्वीप सागर और आदित्य आदिग्रह पारमार्थिक शरीरमें हैं ॥५३॥ पारमार्थिक देहमें निश्चय छः चक्र होय हैं जे गुण ब्रह्मांडमें कहे हैं वे सब यामें स्थित हैं ॥५४॥ योगिनकी धारणाके आस्पद गुण हैं तिनको मैं तुमसों कहौंगो जिनकी भावना करिकै जीव विराट्रूपको भजनहारो होय है ॥५५॥ विराट्रूपहीको कहै

भुवनानिचसर्वाणिपर्वतद्वीपसागराः ॥ आदित्याद्याग्रहाःसन्तिशरीरेपारमार्थिके ॥ ५३ ॥ पारमार्थिकदेहेहि षट्चक्राणिभवन्तिच ॥ ब्रह्माण्डेयेगुणाः प्रोक्तास्तेप्यस्मिन्नेवसंस्थिताः ॥५४॥ तानहंतेप्रवक्ष्यामियोगिनांधारणास्पदान् ॥ येषांभावनयाजन्तुर्भवेद्वैराजरूपभाक् ॥५५॥ पादाधस्तात्तलंज्ञेयंपादोर्ध्वंवितलंतथा ॥ जानुनोः सुतलंविद्धिसक्थिदेशेमहातलम्॥५६॥तलातलंसक्थिमूलेगुह्यदेशेरसातलम् ॥ पातालंकटिसंस्थंचसप्तलोकाः प्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ भूर्लोकंनाभिमध्येतुभुवर्लोकंतदूर्ध्वके ॥ स्वर्लोकंहृदयेविद्यात्कण्ठदेशेमहस्तथा ॥ ५८॥

हौं पायनके नीचे तल जानिये और पायनके ऊपर वितल है और घोटूनमें सुतल जानो और सक्थिदेशमें महातल जानो॥५६॥और सक्थिके मूलमें तलातल और गुह्यदेशमें रसातल जानो और कटिमें पाताल ये सातलोक कहे॥५७॥ नाभिके मध्यमें भूलोक ताके ऊपर भुवर्लोक और हृदयमें स्वर्लोक जानो और कंठदेशमें महर्लोक जानो ॥ ५८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मुखमें जनलोक और ललाटमें तपलोक और ब्रह्मरंध्रमें सत्यलोक जानो ये चौदहभुवन भये ॥ ५९ ॥ त्रिकोणमें मेरु स्थित है और नीचेके कोणमें मन्दराचल और दक्षिणरेखामें कैलास और वायव्य कोणमें हिमाचल है ॥ ६० ॥ और ऊर्ध्वरेखामें निषध पर्वत और दक्षिणरेखामें गंधमादन और वामरेखामें रमणाचल ये सात कुलपर्वत कहेहैं॥६१॥ हड्डीनके स्थानमें जंबूद्वीप और मज्जामें शाक

जनलोकंवक्रदेशेतपोलोकंललाटके ॥ सत्यलोकंब्रह्मरन्ध्रेभुवनानिचतुदश ॥ ५९ ॥ त्रिकोणेसंस्थितोमेरु रधःकोणेचमन्दरः ॥ दक्षकोणेचकैलासोवामकोणेहिमाचलः ॥ ६० ॥ निषेधश्चोर्ध्वरेखायांदक्षायांगन्धमादनः ॥ रमणोवामरेखायांसप्तेतेकुलपर्वताः ॥६१॥ अस्थिस्थानेभवेज्जम्बूःशाकोमज्जासुसंस्थितः ॥ कुशद्वीपस्थितोमांसेक्रौञ्चद्वीपःशिरासुच ॥६२॥ त्वचायांशाल्मलीद्वीपो गोमेदोरोमसञ्चये ॥ नखस्थंपुष्करंविद्यात्सागरास्तदनंतरम्॥६३॥क्षारोदोहिभवेन्मूत्रक्षीरेक्षीरोदसागरः ॥ सुरोदधिः श्लेष्मसंस्थोमज्जायांघृतसागरः ॥६४॥

द्वीप और मांसमें कुशद्वीप और शिरानमें क्रौंचद्वीप स्थित है ॥ ६२ ॥ त्वचामें शाल्मलीद्वीप और रोमसमूहमें गोमेदद्वीप पुष्करको नखमें स्थित जानो ताके पीछे सागरनको सुनो ॥६३ ॥ खारीसमुद्र मूत्रमें स्थित है और दूधमें दूधको समुद्र और सुरा जो मदिरा है ताको समुद्र श्लेष्मामें स्थित है और मज्जामें घीको समुद्र स्थित है ॥ ६४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रसमें रसको समुद्र जानिये और रुधिरमें दहीको समुद्र जानिये हे विनताके पुत्र ! स्वादिष्ट जल लंबिका जो कंठके भीतर होयहै ताके स्थानमें जानिये ॥ ६५ ॥ नादचक्रमें सूर्य स्थित हैं और बिंदुचक्रमें चंद्रमा स्थितहैं मंगल नेत्रनमें स्थितहै और हृदयमें बुध स्थित है ॥६६॥विष्णुस्थान जो नाभिगोल है तामें गुरुको स्थित जानिये और शुक्रमें शुक्र स्थितहै और नाभिके स्थानमें शनैश्वर स्थित

रसोदधिंरसेविद्याच्छोणितेदधिसागरः ॥ स्वादूदोलंबिकास्थानेजानीयाद्विनतासुत ॥६५॥ नादचक्रेस्थितःसूर्योबिन्दुचक्रेचचन्द्रमाः॥ लोचनस्थःकुजोज्ञेयोहृदयेज्ञःप्रकीर्तितः॥६६॥ विष्णुस्थानेगुरुंविद्याच्छुक्रेशुक्रोऽव्यवस्थितः ॥ नाभिस्थानेस्थितोमन्दोमुखेराहुःप्रकीर्तितः ॥६७॥ वायुस्थानेस्थितःकेतुःशरीरेग्रहमण्डलम्॥एवंसवस्वरूपेणचिन्तयेदात्मनस्तनुम् ॥ ६८ ॥ सदाप्रभातसमयेबद्धपद्मासनस्थितः॥षट्चक्रचिन्तनंकुर्याद्यथोक्तमजपाक्रमम् ॥६९॥ अजपानामगायत्रीमुनीनांमोक्षदायिनी ॥ अस्याःसङ्कल्पमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७०॥

जानिये और मुखमें राहु स्थित है ॥ ६७ ॥ वायुके स्थानमें केतु स्थितहै या प्रकार शरीरमें ग्रहमंडल है या प्रकार सर्वस्वरूपसों अपने तनुको चिंतवन करै ॥६८॥ सदा प्रभातके समय बाँधेभये पद्मासनमें स्थित हो षट्चक्रनको चिंतवव करै और कहेभये अजपाके क्रमको चिंनवन करै ॥ ६९ ॥ मुनिनको मोक्ष देनहारी अजपानाम गायत्री याके संकलपमात्रसों सब पापनतें छूटिजाय है ॥ ७० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड सुनो मैं अजपाको उत्तम क्रम कहौंहौं जाको करि जीव जीवभावको छोडिदेय है ॥ ७१ ॥ मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूर अनाहत विशुद्धाख्य आज्ञा यह षट्चक्र कहोजाय हैं ॥ ७२ ॥ मूलाधारमें लिंगदेशमें नाभिमें हृदयमें कंठमें भौंहोंके मध्यमें और ब्रह्म

शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्येहमजपाक्रममुत्तमम् ॥ यंकृत्वासवदाजीवोजीवभावंविमुञ्चति ॥ ७१ ॥ मूलाधारः स्वधिष्ठानंमणिपूरकमेवच ॥ अनाहतंविशुद्धाख्यमाज्ञाषट्चक्रमुच्यते ॥ ७२ ॥ मूलाधारेलिङ्गदेशेना भ्यांहृदिचकण्ठगे ॥ भ्रुवोर्मध्येब्रह्मरन्ध्रेक्रमाच्चक्राणिचिन्तयेत ॥ ७३ ॥ आधारंतुचतुर्दलानलसमंवा सान्तवर्णाश्रयंस्वाधिष्ठानमपिप्रभाकरसमंबालान्तषट्पत्रकम् ॥ रक्ताभंमणिपूरकंदशदलंडाद्यंफकारान्त कंपत्रैर्द्वादशभीरनाहतपुरंहैमंकठान्तावृतम् ॥ ७४ ॥ पत्रैःसस्वरषोडशैःशशधरज्योतिर्विशुद्धाम्बुजंहंसेत्यक्ष रयुग्मकंद्वयदलंरक्ताभमात्राम्बुजम् ॥ तस्मादूर्ध्वगतंप्रभासितमिदंपद्मंसहस्रच्छदंसत्यानंदमयंसदाशिवम यंज्योतिर्मयंशाश्वतम् ॥ ७५ ॥ गणेशंचविधिंविष्णुंशिवंजीवंगुरुंततः ॥ व्यापकंचपरंब्रह्मक्रमाच्चक्रेषुचिन्तये त ॥ ७६ ॥ एकविंशत्सहस्राणिषट्शतान्यधिकानिच ॥ अहोरात्रेणश्वासस्यगतिःसूक्ष्मास्मृताबुधैः ॥ ७७ ॥

रंध्रमें क्रमसों चक्रनको चिंतवन करै ॥७३॥७४॥७५॥७६॥रातिदिनमें पंडितनने श्वासकी गति इक्कीस हजार छः सौ कहीहै ॥ ७७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हकारसों बाहर आवे हैं और सकारसों फिरि भीतर प्रवेश करे हैं और "हंसो हंस" या मंत्र करिके जीवतत्त्वसों जपै है ॥ ७८ ॥ छः सौ गणेशके लिये और छः हजार ब्रह्माके लिये और छः हजार हरिके लिये और छः हजार हरके लिये ॥ ७९ ॥ जीवात्माके लिये एक हजार तैसेही एक हजार गुरुकेलिये और चैतन्यरूप आत्माके लिये एक हजार या प्रकार जपकी संख्याको निवेदन करै ॥८०॥

हकारेणबहिर्यातिसकारेणविशेत्पुनः ॥ हंसोहंसेतिमन्त्रेणजीवोजपतितत्त्वतः ॥ ७८ ॥ षट्शतंगणनाथाय षट्सहस्रंतुवेधसे ॥ षट्सहस्रंचहरयेषट्सहस्रंहरायच ॥ ७९ ॥ जीवात्मनेसहस्रंचसहस्रंगुरवेतथा ॥ चिदात्मनेसहस्रंचजपसंख्यांनिवेदयेत् ॥ ८० ॥ एतांश्चक्रगतान्ब्रह्ममयूखान्मुनयोमरान् ॥ सत्संप्रदायवेत्तारश्चिन्तयन्त्यरुणादयः॥८१॥ शुकादयोपिमुनयःशिष्यानुपदिशन्तिच ॥ अतःप्रवृत्तिमहतांध्यात्वाध्यायेत्सदा बुधः ॥ ८२ ॥ कृत्वाचमानसींपूजांसर्वचक्रेष्वनन्यधीः ॥ ततोगुरूपदेशेनगायत्रीमजपांजपेत ॥ ८३ ॥

सत्संप्रदायके जाननहारे अरुणादिक मुनीश्वर चक्रमें स्थित ब्रह्मकी अमर किरणनको चिंतवन करैं हैं ॥८१॥ और शुक आदिमुनीश्वर वह शिष्यनको उपदेश करै हैं यातें बुध बडेनकी जो प्रवृत्ति है ताको ध्यान करिकै फिरि ध्यान करै हैं ॥ ८२ ॥ एकाग्रचित्त हो सब चक्रनमें मानसी पूजन करि ता पीछे गुरुके उपदेशसों अजपानाम गायत्रीको जप करै ॥ ८३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नीचेको है मुख जाको और हजार दलके छिद्रयुक्त कमलमें हंसपर चढेभये और वर अभय जिनके हाथनमें ऐसे गुरुको ध्यान करै ॥८४॥ उन गुरुके चरणामृतकी धारासों अपनी देहको धोवै और पंचोपचारनसों पूजन करि उनके स्तोत्रसों प्रणाम करै ॥ ८५ ॥ छहू वक्रनमें संचार करनहारी और साढे तीनि हैं वलय जामें ऐसी कुंडलिनीको आरोह और अवरोहके क्रमसों स्थित ध्यान करै ॥ ८६ ॥ ब्रह्मरन्ध्रते बाहर गयेभये सुषुम्नानाम धामको ध्यान करै वा मार्गमें होकर गयेभये जीव वा विष्णुके परमपदको प्राप्त

अधोमुखेततोरन्ध्रेसहस्रदलपङ्कजे ॥ हसगंश्रीगुरुंध्यायेद्वराभयकराम्बुजम् ॥ ८४ ॥ क्षालितंचिन्तयेद्देहंतत्पादामृतधारया ॥ पञ्चोपचारैः संपूज्यप्रणमेत्तत्स्तवेनच ॥८५॥ ततः कुण्डलिनींध्यायेदारोहादवरोहतः ॥ षट्चक्रकृतसंचारांसार्धत्रिवलयांस्थिताम् ॥ ८६ ॥ ततोध्यायेत्सुषुम्नाख्यंधामरन्ध्राद्बहिर्गतम् ॥ पथातेन गतायान्तितद्विष्णोः परमंपदम् ॥ ८७ ॥ ततोमच्चिन्तितंरूपंस्वयंज्योतिः सनातनम् ॥ सदानन्दंसदाध्यायेन्मुहूर्तेब्राह्मसंज्ञके ॥ ८८ ॥ एवंगुरूपदेशेनमनोनिश्चलतांनयेत् ॥ नतुस्वेनप्रयत्नेनतद्विनापतनंभवेत् ॥८९॥

होय हैं ॥ ८७ ॥ ता पीछे मोकरिकै चिंतवन कियो स्वयंज्योतिः सनातनरूप जो सदा आनंदमय है ताको ब्राह्ममुहूर्तमें सदा ध्यान करै॥८८॥ऐसे गुरुके उपदेशकरिकै मनको निश्चल करै अपने प्रयत्नसों न करै तद्विना वा गुरुके उपदेश विना पतन अर्थात् संसारमें फिरि जन्म होय है ॥ ८९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

याप्रकार अंतर्याग करिके बहिर्यागको आरंभ करै संध्या आद करिके हरि हरको पूजन करै ॥ ९० ॥ देहके अभिमानी पुरुषकी अंतर्मुखी वृत्ति नहीं होती है याहीते उनको मेरी भक्ति सहज और मोक्षकी देनहारी है ॥ ९१ ॥ यद्यपि लय योग आदि मोक्षके मार्ग हैं तथापि या संसारमें आवने जानेहारे पुरुषनको मेरी भक्तिके मार्ग समीचीन हैं॥९२॥ब्रह्मा आदि सर्वज्ञने यही निश्चय

अन्तर्यागंविधायैवंबहिर्यागंसमाचरेत् ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वाकुर्याद्धरिहरार्चनम् ॥ ९० ॥ देहाभिमानिना मन्तर्मुखीवृत्तिर्नजायते ॥ अतस्तेषांतुमद्भक्तिः सुकरामोक्षदायिनी ॥ ९१ ॥ तपोयोगादयामोक्षमार्गाः सन्तितथापिच ॥ समीचीनस्तुमद्भक्तिमार्गःसंसरतामिह ॥ ९२ ॥ ब्रह्मादिभिश्चसर्वज्ञैरयमेवविनिश्चितः ॥ त्रिवारंवेदशास्त्राणिविचार्यचपुनः पुनः ॥ ९३ ॥ यज्ञादयोपिसद्धर्माश्चित्तशोधनकारकाः ॥ फलरूपाचमद्भक्ति स्तांलब्ध्वानावसीदति ॥ ९४ ॥

किया है कि तीनिवार वेदशास्त्रको वारंवार विचार करिके ॥९३॥ यज्ञ आदि वह श्रेष्ठ धर्म चित्तके शोधनहारे हैं और मेरी भक्ति फलरूप है वाको पायके कबहूँ दुःखी नहीं होय है ॥ ९४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! जो सुकृती नर या प्रकारके आचरणको करे है और मेरी भक्तिके संयोगसों सनातन मोक्षको प्राप्त होय है ॥ १५ ॥
इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां गरुडपुराणसारोद्धारभाषाटीकायां पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥
गरुड बोले ॥ हे दयासिंधु ! अज्ञानसों जीवको संसार सुनो अब मैं सनातन मोक्षके उपायको सुनो चाहौं हौं ॥१॥ हे भगवन् ! हे देव

एवमाचरणंतार्क्ष्यकरोतिसुकृतीनरः ॥ संयोगेनचमद्भक्त्यामोक्षंयातिसनातनम् ॥ १५ ॥ इति श्रीगरु० सा०
सुकृतिजनजन्माचरणनिरूपणंनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ गरुडउवाच ॥ श्रुतामयादयासिन्धोह्यज्ञाना
ज्जीवसंसृतिः ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिमोक्षोपायंसनातनम् ॥१॥ भगवन्देवदेवेशशरणागतवत्सल ॥ असारे
घोरसंसारेसर्वदुःखमलीमसे ॥ २ ॥ नानाविधशरीरस्थाह्यनन्ताजीवराशयः ॥ जायन्तेचम्रियन्तेचतेषाम
न्तोनविद्यते ॥ ३ ॥ सदादुःखातुराएवनसुखीविद्यते क्वचित ॥ केनोपायेनमोक्षेशमुच्यन्तेवदमेप्रभो ॥ ४ ॥

हे ईश ! हे शरणागतवत्सल ! सब दुःखनसों अति मैले या असार घोर संसारमें ॥ २ ॥ नानाप्रकारके शरीरनमें स्थिर अनंत
जीवनके समूह उत्पन्न होय हैं और मरे हैं उनको अंत नहीं है ॥ ३ ॥ सदा दुःखहीमें व्याकुल रहै हैं कबहूं सुखी नहीं होय हैं वे
कौनसे उपायसों या संसारते छूटैं हैं हे प्रभु ! सो कहो ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीभगवान् बोले॥सुनो गरुड जो तुम मोसों पूंछोहो ताहि मैं तुमसों कहौंगो जाके सुननेहीमात्रसों मनुष्य संसारसे छूटिजायहै ॥५॥
परब्रह्मस्वरूप कलारहित और सर्वज्ञ तथा सबके कर्त्ता और सबके स्वामी निर्मल अद्वय शिव हैं ॥६॥ स्वयंज्योति आदि अंतरहित
विकाररहित परते पर निर्गुण सत् चित् आनंदरूप परमेश्वरहैं ताके अंश जीवनामक हैं ॥७॥ अनादि जो विद्या है ताकरिकै उपहत

श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥ यस्य श्रवणमात्रेणसंसारान्मुच्यते नरः ॥५॥
अस्तिदेवःपरब्रह्मस्वरूपीनिष्कलः शिवः ॥ सर्वज्ञः सर्वकर्ताचसर्वेशोनिर्मलोऽद्वयः ॥ ६ ॥ स्वयंज्योतिरना
द्यन्तोनिर्विकारःपरात्परः ॥ निर्गुणःसच्चिदानन्दस्तदंशाजीवसंज्ञकाः ॥ ७ ॥ अनाद्यविद्योपहतायथाग्नौविस्फु
लिङ्गकाः ॥ देहाद्युपाधिसंभिन्नास्ते कर्मभिरनादिभिः ॥ ८ ॥ सुखदुःखप्रदैःपुण्यपापरूपैर्नियन्त्रिताः ॥ तत्त
ज्जातियुतंदेहमायुर्भोगंचकर्मजम् ॥ ९ ॥ प्रतिजन्मप्रपद्यन्तेतेषामपिपरंपुनः ॥ ससूक्ष्मलिंगशारीरमामो
क्षादक्षरखग ॥ १० ॥

होनेपै जैसे अग्निमें चिनगारी उठै है ऐसेही वे जीव अनादिकर्मनसों देह आदि उपाधि करि भिन्न होय हैं ॥ ८ ॥ सुख तथा दुःखको
देनहारे पुण्य तथा पापरूप कर्मनसों बँधेभये वा जातिकरि युक्त देहको और वायुको और कर्मसों पाये भोगको प्राप्त होय हैं ॥ ९ ॥
हे गरुड ! फिर उतनेहू परे मोक्षताई प्रत्येक जन्ममें अविनाशी सूक्ष्मलिंग शरीरको प्राप्त होय है ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थावर वृक्ष आदि कीडे पक्षी पशु मनुष्य धर्म करनहारे देवता ये क्रमसों मोक्षपावनहारे होय हैं ॥११॥ हजारन वार चार प्रकारके शरीरनको धारण करिकै तथा छोडिकै गये और सुकृतसों मनुष्य होके जो ज्ञानी होय तौ मोक्षको प्राप्त होय ॥ १२ ॥ देहधारिनके चौरासी लाख शरीरनमें मनुष्य शरीरके विना काहू शरीरमें तत्त्वज्ञान नहीं होयहै और तत्त्वज्ञानके विना मुक्ति नहीं होय है ॥१३॥

स्थावराः कृमयश्चाब्जाः पक्षिणः पशवोनराः ॥ धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्चयथाक्रमम् ॥ ११ ॥ चतुर्विधशरीराणिधृत्वामुक्त्वासहस्रशः ॥ सुकृतान्मानवोभूत्वाज्ञानीचेन्मोक्षमाप्नुयात ॥ १२ ॥ चतुरशीतिलक्षेषुशरीरेषुशरीरिणाम् ॥ नमानुषंविनान्यत्रतत्त्वज्ञानंतुलभ्यते ॥१३॥ अत्रजन्मसहस्राणांसहस्रैरपिकोटिभिः॥ कदाचिल्लभतेजन्तुर्मानुष्यपुण्यसञ्चयात ॥ १४ ॥ सोपानभूतंमोक्षस्यमानुष्यप्राप्यदुर्लभम् ॥ यस्तारयतिनात्मानंतस्मात्पापतरोत्रकः ॥१५॥ नरः प्राप्योत्तरंजन्मलब्ध्वाचेन्द्रियसौष्ठवम् ॥ नवेत्त्यात्महितंयस्तुसभवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १६ ॥

यहां हजारन जन्मके हजारन करोडनमें कबहूं जीव मनुष्यके कर्मनके संचयको प्राप्त होय है॥ १४ ॥ मोक्षके सिड्ढी रूप या दुर्लभ मनुष्यदेहको पायके जो आपको नहीं तारे है वातें अधिक पापी कौनहै॥१५॥ मनुष्य सबते अधिक नरदेह और इंद्रियके सुन्दरता को पायकै जो अपनो हित नहीं जानै है वह ब्रह्महत्यारो होय है ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देहके विना काहूको पुरुषार्थ नहीं होय है तातें देह और धनकी रक्षा करि पुण्यकर्मनके साधन करे ॥ १७ ॥ सदा अपनी रक्षा काहेसो कि आत्मा सबको पात्र है तातें आत्माको रक्षामें यत्न करै काहेसों कि जीवन रहैगो तौ अनेक कल्याणनको देखैगो ॥१८॥ फिरि ग्राम फिरि क्षेत्र, फिरि धन, फिरि घर और फिरि शुभ अशुभकर्म वारंवार होयहैं और शरीर वारंवार नहीं है ॥ १९ ॥ पंडितनकरि सदा

विनादेहेनकस्यापिपुरुषार्थोनविद्यते ॥ तस्माद्देहंधनंरक्षेत्पुण्यकर्माणिसाधयेत् ॥ १७ ॥ रक्षयेत्सर्वदात्मा
नमात्मासर्वस्यभाजनम् ॥ रक्षणेयत्नमातिष्ठेज्जीवन्भद्राणिपश्यति ॥ १८ ॥ पुनर्ग्रामः पुनः क्षेत्रंपुनर्वित्तंपुन
र्गृहम् ॥पुनः शुभाशुभंकर्मनशरीरंपुनः पुनः ॥ १९ ॥शरीररक्षणोपायाः क्रियन्तेसर्वदाबुधैः ॥ नेच्छन्तिचपुन
स्त्यागमपिकुष्ठादिरोगिणः ॥२०॥ तद्गोपितस्याद्धर्मार्थंधर्मोज्ञानार्थमेवच ॥ ज्ञानंतुध्यानयोगार्थमचिरात्प्रवि
मुच्यते ॥२१॥ आत्मैवयदिनात्मानमहितेभ्योनिवारयेत ॥ कोन्योहितकरस्तस्मादात्मानंकारयिष्यति॥२२॥

शरीरकी रक्षाके उपाय किये जांय हैं और कोढी आदिहू या शरीरके त्यागकी इच्छा नहीं करैहै ॥२०॥ ता कारणसों रक्षा किये गयो यह शरीर धर्मके अर्थ होयहैं और धर्म ज्ञानके अर्थ होयहै और ज्ञान तौ ध्यानके योगके अर्थ होयहै और शीघ्रही मुक्त होजाय है ॥ २१ ॥ जो आत्माही आत्माको अहिततें न बचावै तौ वातें और कौन हित करनहारो आत्माको करावैगो ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो यहांही नरकरूप रोगकी चिकित्सा नहीं करै है तौ निरौषधदेशमें रोगी जायके कहा करैगो ॥ २३ ॥ व्याघ्रीके समान तौ जरा है और फूटेभये घटमें सों पानीके समान आयु घटती है शत्रुके समान रोग चोटदेय हैं तातें कल्याण देनहारी वार्ताका अभ्यास करै॥२४॥ जबताँई दुःख अपनो आश्रय न करै और जबलौं आपत्ति न आय जांय और जब तांई इंद्रिय व्याकुल न होंय अर्थात न बिगडैं तबलौं

इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरौषधंदेशंव्याधिस्थः किंकरिष्यति ॥ २३ ॥ व्याघ्रीवास्ते जराचायुर्यातिभिन्नघटाम्बुवत् ॥ निघ्नन्तिरिपुवद्रोगास्तस्माच्छ्रेयःसमभ्यसेत ॥ २४ ॥ यावन्नाश्रयतेदुःखंयावन्नायान्तिचापदः ॥ यावन्नेन्द्रियवैकल्यंतावच्छ्रेयःसमभ्यसेत ॥ २५ ॥ यावत्तिष्ठतिदेहोयंतावत्तत्त्वं समभ्यसेत् ॥ सन्दीप्तकोणभवनेकूपंखनतिदुर्मतिः ॥२६॥ कालोनज्ञायतेनानाकार्यैःसंसारसम्भवैः ॥ सुखंदुःखंजनोहंतनवेत्तिहितमात्मनः ॥ २७ ॥ जातानार्तान्मृतानापद्ग्रस्तान्दृष्ट्वाचदुःखितान् ॥ लोकोमोहसुरांपीत्वानबिभेतिकदाचन ॥ २८ ॥

तत्त्वको अभ्यास करैं ॥ २५ ॥ जबताँई यह देह रहै अभ्यास करै घरके कोनेमें अग्नि लगनेंपै दुर्बुद्धि कुआँ खोदनेको उपाय करै है ॥ २६ ॥ संसारमें उत्पन्नभये कार्यनसों काल नहीं जानो जाय है हंत इति खेदे अर्थात् बडे खेदकी बात है कि मनुष्य सुख दुःखको तथा अपने हितको नहीं जानै है ॥ २७ ॥ उत्पन्न भये दुःखी भये मरेभये आपत्तिके घेरेभये और दुःखितनको देखि यह लोक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मोहरूपी मदिराको पीके कबहूं नहीं भय माने है ॥ २८ ॥ संपत्तियां स्वप्नके समान हैं और यौवन फूलके समान है और आयुष्य बिजलीके समान चंचलहै या वार्ताको जानते भये कौन पुरुषको धीरज होय ॥ २९ ॥ सौवर्षको जीवनही बहुत थोरो है ताको आधा निद्रा और आलस्यमें जाय है और बालक अवस्था है तामें और रोग जरा बुढापा इनके दुःखनसों कुछ अल्पभयो वह निरर्थक है ॥ ३० ॥ जो काम अर्थात् मोक्षको उपाय प्रारंभ करने योग्य है उसमें उद्योगरहित और जागने योग्य है अर्थात् ब्रह्मको चिंतवन

सम्पदःस्वप्नसंकाशायौवनंकुसुमोपमम् ॥ तडिच्चपलमायुष्यंकस्यस्याज्जानतोधृतिः ॥ २९ ॥ शतंजीवितमत्यल्पंनिद्रालस्यैस्तदर्धकम् ॥ बाल्यरोगजरादुःखैरल्पंतदपिनिष्फलम् ॥ ३० ॥ प्रारब्धव्येनिरुद्योगोजागर्तव्येप्रसुप्तकः ॥ विश्वस्तव्योभयस्थानेहानरः कोनहन्यते ॥ ३१ ॥ तोयफेनसमेदेहेजीवेनाक्रम्यसंस्थिते ॥ अनित्यप्रियसंवासेकथंतिष्ठतिनिर्भयः ॥ ३२ ॥ अहितेहितसंज्ञः स्यादध्रुवेध्रुवसज्ञकः ॥ अनर्थेचार्थविज्ञानः स्वमर्थंयोनवेत्तिसः ॥ ३३ ॥

तामें सोवतो भयो और भयको स्थान जो संसार है तामें विश्वास करनहारो कौन मनुष्य यमकरि नहीं मारो जाय है किंतु सभी मारें जाय हैं ॥३१॥ जलके फेनसमान देहमें जीवको दबाके स्थित होनेपै जो सदा न रहैगो ऐसे प्यारेके संवासमें निर्भय कैसे रहै है ॥ ३२ ॥ अहित कहिये परिणाममें विषके समान जे विषय है उनको जो इष्टलाभ जाने है और अध्रुव जे देह आदि तिनको ध्रुव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जानै हैऔर अनर्थ जे दंभझूठ आदि पंद्रह अनर्थोंको मूलजो धनहै तामेंजो धनहै तामेंजो प्रयोजनको सिद्धमानैंहै ऐसो नर मुक्तिकेदेनहारेआत्मज्ञानरूप अपने प्रयोजनको नहीं जानै है ॥३३॥ पश्यन्नपि अर्थात आत्मज्ञानते मोक्ष होय है या वार्ताको जानतो भयो हू मोक्षमार्गते नष्ट हो जायहै और देवकी मायासों मोहित वह नर सुनते भयेहू नहीं जानैहै और पढते भयेहू नहीं जानैहै ॥३४॥ यह जगत् मरण आदि ग्राहनकरि गंभीर कालसागरमें डूबतो भयोहू नहीं जानै है॥ ३५॥ क्षण क्षणमें क्षीण होतो भयो यह काल नहीं जानो जाय है

पश्यन्नपिप्रस्खलतिशृण्वन्नपिनबुध्यति ॥ पठन्नपिनजानातिदेवमायाविमोहितः ॥ ३४ ॥ तन्निमज्जज्जगदिदंगंभीरेकालसागरे ॥ मृत्युरोगजराग्राहैर्नकश्चिदपिबुध्यते ॥ ३५ ॥ प्रतिक्षणमयंकालः क्षीयमाणोनलक्ष्यते ॥ आमकुम्भइवाम्भःस्थोविशीर्णेनविभाव्यते ॥ ३६ ॥ युज्यतेवेष्टनंवायोराकाशस्यचखण्डनम् ॥ ग्रथनंचतरङ्गाणामास्थानायुषियुज्यते ॥ ३७ ॥ पृथिवीदह्यतेयेनमेरुश्चापिविशीर्यते ॥ शुष्यतेसागरजलंशरीरस्यचकाकथा ॥ ३८ ॥

जलमें स्थित कच्चेघटके समान बिखरतो भयो नहीं लक्षित होयहै ॥३६॥पवनको बांधनो होसकै है और आकाशको खंडन होसकै है तरंगनको गूँथनो होसकै है परंतु आयुष्यमें आस्था नहीं है ॥३७॥ जा काल करिकै पृथिवी जराई जाय है और जासों सुमेरुपर्वत बिखरि जाय है और जाकरिकै समुद्रको जल सुखि जाय है तौ शरीरकी कहाचलाई है॥ ३८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरी संतति है मेरी स्त्री है और भाई बन्धु मेरे हैं ऐसे कहते भये मनुष्यरूपी बकराको कालरूपी भेडिया बलसों मारेहै ॥ ३९ ॥यह
कियो है यह करनेको है और यह कियो अनकियो है ऐसी चेष्टा करिकै युक्त पुरुषको कृतांत वेवशकरिलेयहै॥४०॥कालिहके काम
को आज करै और दोपहर पीछेके कामको दोपहर करै मौत किये अनकियेकी प्रतीक्षा नहीं करे है ॥ ४१ ॥ बुढापेने दिखायो

अपत्यंमेकलत्रंमेधनंमेबान्धवाश्चमे ॥ जल्पन्तमितिमर्त्याजंहन्तिकालवृकोबलात् ॥ ३९ ॥ इदंकृतमिदंका
र्यमिदमन्यत्कृताकृतम् ॥ एवमीहासमायुक्तंकृतान्तः कुरुतेवशम् ॥ ४० ॥ श्वःकार्यमद्यकुर्वीतपूर्वाह्णेचापरा
ह्णिकम् ॥ नहिमृत्युः प्रतीक्षेतकृतंवाप्यथवाकृतम् ॥ ४१ ॥ जरादर्शितपन्थानंप्रचण्डव्याधिसैनिकम् ॥ मृत्यु
शत्रुमधिष्ठोसित्रातारंकिंनपश्यसि ॥ ४२ ॥ तृष्णासूचीविनिर्भिन्नंसिक्तंविषयसर्पिषा ॥ रागद्वेषानलेपक्वंमृ
त्युरश्नातिमानवम् ॥४३॥बालांश्चयौवनस्थांश्चवृद्धान्गर्भगतानपि॥सर्वानाविशतेमृत्युरेवंभूतमिदंजगत् ॥४४॥

है मार्ग जाको और प्रचंड रोगहैं ते जाके सेनावाले हैं ऐसे मृत्युरूपी सामंतकरि दबायोगयो तू रक्षक जो परमेश्वर है ताको क्योंनहीं
देखै है॥४२॥तृष्णारूपी सूचीनसों छेदेगये और विषयरूप पानीसों सींचेगये और रागद्वेषरूप अग्निमें पकाये गये मनुष्यनको मौत
खाय है ॥४३॥ बालकनमें तरुणमें और वृद्धनमें तथा गर्भमें स्थित है उनमें मृत्यु अवश्य आवे है यह जगत् ऐसो है ॥ ४४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह जीव अपने देहकोहूं छोडिकै यमके घरको जाय है स्त्री माता पिता पुत्र आदिके संबंधकी तौ कहा चलाई है ॥ ४५ ॥ दुःखमूल यह संसार जाके है वही दुःखी है वा संसारको जाने त्याग कियो वह सुखी है और नहीं ॥ ४६ ॥ सब दुःखनके उत्पन्न करनहारो और सब आपदानको घर और सब पापनको आश्रय ऐसो जो यह संसार है ताको क्षणहीमें छोडि देवै ॥ ४७ ॥ लोहे तथा

स्वदेहमपिजीवोयंमुक्त्वा याति यमालयम् ॥ स्त्रीमातृपितृपुत्रादिसंबन्धः केनहेतुना ॥ ४५ ॥ दुःखमूलंहिसंसारः सयस्यास्तिसदुःखितः ॥ तस्यत्यागः कृतोयेनससुखीनापरः क्वचित् ॥ ४६ ॥ प्रभवंसर्वदुःखानामालयंसकलापदाम् ॥ आश्रयंसर्वपापानांसंसारंवर्जयेत्क्षणात् ॥ ४७ ॥ लोहदारुमयैः पाशैः पुमान्बद्धोविमुच्यते ॥ पुत्रदारमयैः पाशैर्मुच्यतेनकदाचन ॥ ४८ ॥ यावतःकुरुतेजन्तुःसंबन्धान्मनसः प्रियान् ॥ तावन्तोस्यनिखन्यन्तेहृदयेशोकशङ्कवः ॥ ४९ ॥ वञ्चिताशेषवित्तैस्तैर्नित्यंलोकोविनाशितः ॥ हाहन्तविषयाहारैर्देहस्थेन्द्रियतस्करैः ॥ ५० ॥

लकरीसों बनेभये पाशनतें बांधोभयो मनुष्य छूटि जाय है और पुत्र स्त्रीमयी पाशनतें कबहूँ नहीं छूटै है ॥ ४८ ॥ जीव जितने मनके प्यारे संबंधनको करै है उतनीही शोकरूपी कीलें याके हृदयमें गाडी जाय हैं ॥४९॥ छले हैं संपूर्ण धन जिनने हाय! हाय! विषयरूप आहारके करनहारे देहमें स्थित इंद्रियरूप तस्करनकरिकै सदा यह लोक नाश कियोगयो ॥ ५० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जैसे मांसको लोभी मत्स्य लोहकी कीलको नहीं देखै है ऐसेही सुखको लोभी देही यमकी बाधाको नहीं देखै है ॥ ५१ ॥ हित अहितको नहीं जानते और सदा कुमार्गमें चलनहारे और जे पेटके भरनेमें लगेभये हैं हे गरुड ! वे मनुष्य नरकके जानेहारेहैं ॥५२॥ निद्रा आदि मैथुन आहार सब प्राणीनके सदा समान हैं ज्ञानवान् मनुष्य कहो जाय है और ज्ञानहीन पशु कहो जायहै ॥५३॥ प्रभात

मांसलुब्धोयथामत्स्योलोहशंकुंनपश्यति ॥ सुखलुब्धस्तथादेहीयमबाधांनपश्यति ॥ ५१ ॥ हिताहितेनजानन्तोनित्यमुन्मार्गगामिनः ॥ कुक्षिपूरणनिष्ठायेतेनरानारकाः खग ॥ ५२ ॥ निद्रादिमैथुनाहाराः सर्वेषांप्राणिनांसमाः ॥ ज्ञानवान्मानवः प्रोक्तोज्ञानहीनःपशुःस्मृतः ॥ ५३ ॥ प्रभाते मलमूत्राभ्यांक्षुत्तृड्भ्यांमध्यगे रवौ ॥ रात्रौ मदननिद्राभ्यांबाध्यन्तेमूढमानवाः ॥५४॥ स्वदेहधनदारादिनिरताः सर्वजन्तवः ॥ जायन्तेच म्रियन्तेचहाहन्ताज्ञानमोहिताः ॥ ५५ ॥ तस्मात्सङ्गः सदात्याज्यः सर्वस्त्यक्तुंनशक्यते ॥ महद्भिः सहकर्तव्यः सन्तः सङ्गस्यभेषजम् ॥ ५६ ॥

समय मल और मूत्रकरिकै और मध्याह्नमें क्षुधा पिपासा करिकै और रात्रिमें मदन तथा निद्राकरिकै मूढमनुष्य बांधादिये जाय हैं ॥ ५४ ॥ अपनो देह धन दारा आदिमें लगेभये सब जीव हाय ! अज्ञानसों मोहित होकै उत्पन्न होय हैं और मरे हैं ॥५५॥ तातें संग सदा त्याग करने योग्य है और जो सब न छोडसकै तौ बडेनको संग करनो चाहिये सज्जन संगकी औषध हैं ॥ ५६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्संग और विवेक दोंनों निर्मल नेत्र हैं जाके ये नहीं है वह अंधा कुमार्गमें जानेहारो काहेसों न होय ॥ ५७ ॥ सब मनुष्य अपने अपने वर्णाश्रम और आचारमें तत्पर हैं दूसरे धर्मको नहीं जानै हैं और दंभी मनुष्य वृथा नाशको प्राप्त होय हैं ॥ ५८ ॥ कर्मनमें श्रम करनहारे और कोई व्रत करनेमें क्षुधा तृषाकरि पीडित अज्ञानसों घिरे हैं चित्त जिनके वे वंचकही विचरैं ॥ ५९ ॥ नाममात्रसों

सत्सङ्गश्चविवेकश्चनिर्मलंनयनद्वयम् ॥ यस्यनास्तिनरःसोऽन्धः कथंनस्यादमार्गगः ॥ ५७ ॥ स्वस्ववर्णाश्रमाचारनिरताः सर्वमानवाः ॥ नजानन्तिपरंधर्मंवृथानश्यन्तिदाम्भिकाः ॥५८॥ क्रियायासपराःकेचिद्व्रतचर्यादिसंयुताः ॥ अज्ञानसंवृतात्मानःसंचरन्तिप्रतारकाः ॥ ५९ ॥ नाममात्रेणसन्तुष्टाःकर्मकाण्डरतानराः ॥ मन्त्रोच्चारणहोमाद्यैर्भ्रामिताःक्रतुविस्तरैः ॥ ६० ॥ एकभुक्तोपवासाद्यैर्नियमःकायशोषणैः ॥ मूढाः परोक्षमिच्छन्तिममामायाविमोहिताः ॥ ६१ ॥ दहदण्डनमात्रेणकामुक्तिरविवेकिनाम् ॥ वल्मीकताडनादेवमृतः कुत्रमहोरगः ॥ ६२ ॥

संतुष्ट और कर्म कांडमें रत और मंत्रका उच्चारण होम आदिकरि यज्ञनके विस्तारकरि भ्रमाये गये ॥६०॥ एकवार भोजन करने आदि उपवासन करि और शरीरके सुखानेवाले नियमनकरिकै मेरी मायाकरि मोहित मूढमनुष्य परोक्ष जो मोक्ष है ताकी इच्छा करै है ॥ ६१ ॥ देहके दंड देनेही मात्रसों अविवेकिनकी कहां मुक्ति होय है जैसे बाँबीके ताडन करनेसों कहीं बडो सर्प मरै है ॥ ६२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जटानको भार मृगचर्मकरि युक्त वेषधारण करनहारे दंभी ज्ञानीके समान लोकमें भ्रमण करैं हैं और अन्य जनकोहूं भ्रमावै हैं ॥६३॥
संसारते उत्पन्न सुखमें सक्त और मैं ब्रह्मज्ञ हौं ऐसे कहनहारो और कर्म तथा ब्रह्म दोनोंते भ्रष्टपुरुषको अंत्यजकेसमानत्याग करै ॥६४॥
घर और वन जिनके एकसौं है और लोकमें निर्लज्ज हो जे गर्दभ आदि विचरे हैं वे कहां विरक्त होय हैं ॥६५॥जो मनुष्य मट्टी भस्म

जटाभाराजिनैर्युक्तादाम्भिकावेषधारिणः ॥ भ्रमन्तिज्ञानवल्लोकेभ्रामयन्तिजनानपि ॥ ६३ ॥ संसारजसुखा
सक्तंब्रह्मज्ञोस्मीतिवादिनम् ॥ कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टंतंत्यजेदन्त्यजंयथा ॥ ६४ ॥ गृहारण्यसमालोकेव्रतव्रीडादि
गम्बराः ॥ चरन्तिगदभाद्याश्चविरक्तास्तेभवन्तिकिम् ॥ ६५ ॥ मृद्भस्मोद्धूलनादेवमुक्ताःस्युर्यदिमानवाः ॥मृद्भ
स्मवासीनित्यंश्वासकिंमुक्तोभविष्यति ॥ ६६ ॥ तृणपर्णोदकाहाराः सततंवनवासिनः ॥ जम्बूकाखुमृगा
द्याश्चतापसास्तेभवन्तिकिम् ॥ ६७ ॥ आजन्ममरणान्तंचगङ्गादितटिनीस्थिताः ॥ मण्डूकमत्स्यप्रमुखायो
गिनस्तेभवंतिकिम् ॥ ६८ ॥

आदिके देहमें लगानेहीसों मुक्त हो तौ नित्य मट्टी और भस्ममें वसनहारो कुत्ता कहाँ मुक्त होय है ॥ ६६ ॥ घास पत्र और जल हैं
आहार जिनको ऐसे जंबुक मूसे मृग आदि कहां तपस्वी होय हैं ॥६७॥ जन्मसों लगाके मरनेके अंतलौं गंगा आदि नदीनमें स्थित
मेढक मछली आदि कहां वे योगी हो जांय हैं अर्थात नहीं ॥ ६८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पारावत कंकरनको आहार करैहैं और पपैआ भूमिमें गिरे जलको कबहूँ नहीं पीवै है तौ क्या वे व्रती हो जाय हैं ॥६९॥ तातें ये सब कर्म लोकरंजनके लिये हैं. हे गरुड ! मोक्षकारण तो साक्षात तत्त्वज्ञान है ॥७०॥ हे गरुड ! षट्दर्शनरूप महाकूपमें गिरे भये पशु परमार्थको नहीं जानै हैं और वे पशूनके पाशमें बँधेभये हैं ॥७१॥वेदशास्त्ररूप घोरसमुद्रमें इतस्ततः अर्थात एक ग्रंथके पढनेसों दूसरेके पढनेकरि व्याकुल किये गये और शोक छः जो ऊर्मि हैं तिनके रोकनेसे व्याकुल ऐसे कुतार्किककुतर्कके बलसों द्वैतज्ञानहीमें रहैं हैं

पारावताः शिलाहाराः कदाचिदपिचातकाः ॥ नपिबन्तिमहीतोयंव्रतिनस्तेभवंतिकिम् ॥६९॥ तस्मादित्यादिकंकर्मलोकरंजनकारकम् ॥ मोक्षस्यकारणंसाक्षात्तत्त्वज्ञानंखगेश्वर ॥ ७० ॥ षड्दर्शनमहाकूपेपतिताः पशवः खग ॥ परमार्थंनजानन्तिपशुपाशनियन्त्रिताः ॥ ७१ ॥ वेदशास्त्रार्णवेघोरेऊह्यमानाइतस्ततः ॥ षड्डर्मिनिग्रहग्रस्तास्तिष्ठन्तिहिकुतार्किकाः ॥ ७२ ॥ वेदागमपुराणज्ञः परमार्थंनवेत्तियः ॥ विडम्बकस्यतस्यैवतत्सर्वंकाकभाषितम्॥७३॥इदंज्ञानमिदंज्ञेयमितिचिन्तासमाकुलाः ॥पठन्त्यहर्निशंशास्त्रंपरतत्त्वपराङ्मुखाः॥७४॥

वाको नहीं जानै हैं ॥७२॥ वेद आगम और पुराणको जाननहारो जो परमार्थको नहीं जानै हैं वा विडंबकको वह सब बोलनो कौआके बोलनेके समान व्यर्थ हैं ॥ ७३ ॥ यह ज्ञान है और जानने योग्य है या चिंतासों व्याकुल और परतत्त्वतें पराङ्मुख वे राति दिन शास्त्रको पढै हैं ॥ ७४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काव्य अलंकारसों शोभित ऐसे वाक्य और छंदो निबंध करिकै उत्पन्न भये चितासोंदुःखी मूढ व्याकुल हैं इंद्रिय जिनकी ऐसे रहैं हैं७५
परमतत्त्व तो अन्यथा है अर्थात् तत्त्वमसि या गुरुके उपदेशसों जानने योग्य है और जन तो अन्यथा अर्थात कुतर्कके बलसोंशास्त्रके
पठनसों वाके जाननेको क्लेश करै हैं शास्त्रका सद्भाव तो अन्यथा है और व्याख्या अन्यथा करै हैं ॥७६॥कोई उन्मनीभाव जो उपशम
मुद्रा हैं ताकरिकै ब्रह्मपरत्त्वको करैहैं अहंकारमें रत गुरुके उपदेश आदिकरि वर्जित पण्डित हम कहाँ पूछैं सेवन करैहै या अभिमानसों

वाक्यच्छन्दोनिबन्धेनकाव्यालङ्कारशोभिताः ॥ चिन्तयादुःखितामूढास्तिष्ठन्तिव्याकुलेन्द्रियाः ॥ ७५ ॥
अन्यथापरमंतत्त्वजनाः क्लिश्यन्तिचान्यथा ॥ अन्यथाशास्त्रसद्भावोव्याख्यांकुर्वन्तिचान्यथा ॥ ७६ ॥ कथ
यन्त्युन्मनीभावंस्वयंनानुभवन्तिच ॥ अहंकाररताःकेचिदुपदेशादिवर्जिताः ॥ ७७ ॥ पठन्तिवेदशास्त्राणिबो
धयन्तिपरस्परम् ॥ नजानन्तिपरंतत्त्वंदर्वीपाकरसंयथा ॥ ७८ ॥ शिरोवहतिपुष्पाणिगंधंजानातिनासिका ॥
पठन्तिवेदशास्त्राणिदुर्लभोभावबोधकः ॥ ७९ ॥

॥ ७७ ॥ वेद और शास्त्रनको पढै है और परस्पर बोध करावै हैं परंतु परमतत्त्वको नहीं जाने जैसे करछी पाक जे दालि आदि हैं
तिनके स्वादको रस नहीं जानै हैं ॥ ७८ ॥ शिर फूलनको धारण करै है और गंधको नासिका जानै है और वेदशास्त्रनकों ता पढै हैं
परंतु भावको बोध करावनहारो दुर्लभ है ॥ ७९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने शरीरमें स्थित तत्त्वको न जानकै मूर्ख शास्त्रनमें मोहित होयहै दुष्टहै मति जाकी ऐसो गोप बकरेको कोखिमें स्थित होनेपै कुएमें देखै है ॥८०॥संसारके अज्ञानके नाश करनेको शब्दबोध नहीं समर्थहै यामें दृष्टांत देयहैं कि दीपकी वार्त्ता करनेसों अंधकार नहीं जाय है॥८१॥ प्रज्ञा जो श्रेष्ठबुद्धिहै ताकरिकै रहित मनुष्यको पढनो ऐसेहै जैसे अंधको दर्पण याहीतें प्रज्ञावाननको शास्त्र तत्त्व

तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वामूढःशास्त्रेषुमुह्यति ॥ गोपःकुक्षिगतेछागेकूपेपश्यतिदुर्मतिः ॥८०॥ संसारमोहनाशाय शब्दबोधोनहिक्षमः ॥ ननिवर्तेततिमिरंकदाचिद्दीपवार्तया ॥ ८१ ॥ प्रज्ञाहीनस्यपठनंयथान्धस्यचदर्पणम् अतःप्रज्ञावतांशास्त्रंतत्त्वज्ञानस्यलक्षणम् ॥ ८२ ॥ इदंज्ञानमिदंज्ञेयंसर्वंतु श्रोतुमिच्छति ॥ दिव्यवर्षसहस्रायुः शास्त्रान्तंनैवगच्छति ॥ ८३ ॥ अनेकानिचशास्त्राणिस्वल्पायुर्विघ्नकोटयः तस्मात्सारंविजानीयात्क्षीरंहंसइवाम्भसि ॥८४॥ अभ्यस्यवेदशास्त्राणितत्त्वंज्ञात्वाथबुद्धिमान्॥पललमिवधान्यार्थीसर्वंशास्त्राणिसंत्यजेत् ॥८५॥

ज्ञानको लक्षणहै ॥८२॥ यह ज्ञानहै और यह जानने योग्यहै या सबकी सुननेकी इच्छा करैहै और देवतानके हजार वर्षकी आयुहोय परंतु शास्त्रके अंतको नहीं प्राप्त होय है ॥ ८३ ॥ अनेक तौ शास्त्र हैं और आयु स्वल्प है तामेंहू करोडन विघ्न हैं तातें सारको जानै जैसे जलमेंसे हंस दूधको जानिलेयहै ॥८४॥बुद्धिमान् पुरुष वेदशास्त्रनको अभ्यास करिकै तत्त्वको जानि सब शास्त्रनको ऐसे छोडिदेजैसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धानको चाहनहारो पलालको छोडिदेय है ॥ ८५ ॥ जैसे अमृतसों तृप्त पुरुषको आहारसों कुछ प्रयोजन नहीं है हे गरुड! ऐसेही तत्त्वज्ञानीको शास्त्रसों कुछ प्रयोजन नहीं है ॥ ८६ ॥ वेदके पढनेसों भक्ति नहीं है और न शास्त्रके पठनसों ज्ञानहीसों कैवल्यमुक्ति होय है हे गरुड! अन्यथा नहीं होय है ॥ ८७ ॥ आश्रम मुक्तिको कारण नहीं है न दर्शन कारण है तैसेही सब कर्म जानो केवल ज्ञानहीका

यथामृतेनतृप्तस्यनाहारेणप्रयोजनम् ॥ तत्त्वज्ञस्यतथाताक्ष्यनशास्त्रेणप्रयोजनम् ॥ ८६ ॥ नवेदाध्ययनान्मुक्तिर्नशास्त्रपठनादपि ॥ ज्ञानादेवहिकैवल्यंनान्यथाविनतात्मज ॥ ८७ ॥ नाश्रमःकारणंमुक्तेर्दर्शनानिनकारणम् ॥ तथैवसर्वकर्माणिज्ञानमेवहिकारणम् ॥ ८८ ॥ मुक्तिदागुरुवागेकाविद्यासर्वाविडम्बिका ॥ काष्ठभारसहस्रेषुह्येकंसंजीवनंपरम् ॥ ८९ ॥ अद्वैतंहिशिवंप्रोक्तंक्रियायासविवर्जितम् ॥ गुरुवक्त्रेणलभ्येतनाधीतागमकोटिभिः ॥ ९० ॥ आगमोक्तंविवेकोत्थंद्विधाज्ञानंप्रचक्षते ॥ शब्दब्रह्मागममयंपरब्रह्मविवेकजम् ॥ ९१ ॥

कारण है ॥ ८८ ॥ एक गुरुकी वाणी मुक्तिकी देनेहारी है और सब विद्या विडंबन करनहारी है काष्ठके हजारन गट्ठनमें संजीवन काष्ठ एकही श्रेष्ठहै ॥ ८९ ॥ क्रियामें जोआयास कहिये श्रमहैं ताकरिकै रहित अद्वैत शिवरूप कह्यो है वह गुरुके मुखते मिलैहैपढेभये करोरन आगमन करिकै नहीं मिलै है ॥९०॥ज्ञान दो प्रकारको कहैहैं एक आगममें कह्योभयो और दूसरो विवेकसों उत्पन्न, आगममय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तौ शब्दब्रह्म है और विवेकसों उत्पन्न परब्रह्मरूप है॥९१॥कोई अद्वैतकी इच्छा करे हैं और अन्य द्वैतकी इच्छाकरे हैं द्वैतअद्वैत करि रहित समतत्त्वको नहीं जाने हैं ॥९२॥मेरो नहीं और मेरो है ये दो पद बंध और मोक्षके लियेहैं मम यातें जंतु बँधिजाय है और न मम याते छूटि जायहै॥९३॥वह कर्म है जो बंधनके लिये न होय और जो मुक्तिकी देनेहारी है वह विद्या है और अन्या कहिये

अद्वैतंकेचिदिच्छन्तिद्वैतमिच्छन्तिचापरे ॥ समतत्त्वंनजानन्तिद्वैताद्वैतविवर्जितम् ॥ ९२ ॥ द्वेपदेबन्धमोक्षायनममेतिममेतिच ॥ ममेतिबध्यतेजन्तुर्नममेतिप्रमुच्यते ॥ ९३ ॥ तत्कर्मयन्नबन्धायसाविद्यायाविमुक्तिदा ॥ आयासायापरंकर्मविद्यान्याशिल्पनैपुणम् ॥ ९४ ॥ यावत्कर्माणिदीयन्तेयावत्संसारवासना ॥ यावदिन्द्रियचापल्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥ ९५ ॥ यावद्देहाभिमानश्चममतायावदेवहि ॥ यावत्प्रयत्नवेगोस्ति यावत्संकल्पकल्पना ॥ ९६ ॥

अध्यात्मविद्यातें भिन्न और शिल्प नैपुण्य हर्म्य आदिके बनानेकी चतुराई आदि विद्या॥९४॥जबलौं कर्म दिये जाय हैं और जबलौं इंद्रीनकी चपलता रहैहै तबलौं तत्त्वकी कथा कहां अर्थात् कहीं नहीं ॥ ९५ ॥ जबताईं देहको अभिमानहै और जबताईं ममता है और संसारकी वासना रहै हैं और जबलौं जबताईं प्रयत्नको वेग है और जबताईं संकल्पकी कल्पना है ॥ ९६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्म मैंही हूँ और परमपदरूप ब्रह्म मैंही हूँ ऐसे देखिकै निरुपाधि आत्मामें आपको मनकरिकै स्थापित करिकै ॥ ७ ॥ ॐया एकाक्षर ब्रह्मको उच्चारण करतोभयो और मेरो स्मरण करतो भयो देहको छोडतो जो पुरुष प्रकर्षकरिकै जाय है अर्थात् अर्चिरादि मार्गकरि गमन करै है वह परमगतिको प्राप्त होय है ॥ ८ ॥ जहां ज्ञान और वैराग्यकरि वर्जित दंभ दिखाव नहारे नहीं जाय हैं सुधी अथात ज्ञानी पुरुष वा गतिको प्राप्त होय हैं उनको मैं तुमसों कहौं हौं ॥ ९ ॥ मान और मोहकरिकै रहित

ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ ८ ॥ नयत्रदाम्भिका यान्तिज्ञानवैराग्यवर्जिताः ॥ सुधियस्तांगतिंयान्तितामहंकथयामिते ॥ ९ ॥ निर्मानमोहाजितसङ्गदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वन्द्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाःपदमव्ययं तत ॥ १० ॥ ज्ञानह्रदे सत्यजलेरागद्वेषमलापहे ॥ यःस्नातिमानसेतीर्थेसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ ११ ॥

और जीतो हैं संगको दोष जिनको और आत्मज्ञानमें परिनिष्ठित और विशेषकरिकै दूरि भयो है अभिलाष जिनको ऐसे और सुखदुःख हैं नाम जिनके ऐसे द्वंद्वनकरि छोडेगये ऐसे ज्ञानीमनुष्य वा अव्यय कहिये अविनाशी पदको प्राप्त होय हैं ॥ १० ॥ ज्ञानरूप कुंड है वामें सत्यरूप जल है वह राग तथा द्वेषरूप मलको दूरि करनहारो है ऐसे मानसतीर्थमें जो स्नान करै है वह मोक्षको प्राप्त होयहै ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रौढ वैराग्यकों प्राप्त वैराग्यमें स्थित हो और अन्यको न भजतो भयो जो मोको भजै है पूर्णमें है दृष्टि जाकी ऐसो वह प्रसन्नात्मा कहिये प्रसन्नमन वह निश्चय मोक्षको प्राप्त होय है ॥ १२ ॥ जो मरनेमें उत्कंठित हो घरको छोडिकरि तीर्थमें वास करै है और मुक्तिके देनहारे क्षेत्रनमें मरै है वह मोक्षको प्राप्त होयहै॥ १३ ॥ अयोध्या १ मथुरा २ माया ३ काशी ४ कांची ५ अवंतिका ६ द्वारवती पुरी ७ ये सात पुरी

प्रौढवैराग्यमास्थायभजतेमामनन्यभाक् ॥ पूर्णदृष्टिःप्रसन्नात्मासवैमोक्षमवाप्नुयात ॥ १२ ॥ त्यक्त्वागृहंच यस्तीर्थनिवसेन्मरणोत्सुकः ॥ म्रियतेमुक्तिक्षेत्रेषुसवैमोक्षमवाप्नुयात ॥ १३ ॥ अयोध्यामथुरामायाकाशी काञ्चीह्यवन्तिकाः ॥ पुरीद्वारवतीज्ञेयासप्तैतामोक्षदायिकाः ॥ १४ ॥ इतितेकथितस्तार्क्ष्यमोक्षधर्मःसनातनः॥ ज्ञानवैराग्यसहितोयंश्रुत्वामोक्षमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ मोक्षंगच्छन्तितत्त्वज्ञाधार्मिकाःस्वर्गतिनराः ॥ पापिनोदुर्गतिंयान्तिसंसरन्तिखगादयः ॥ १६ ॥ इत्येवंसर्वशास्त्राणांसारोद्धारोनिरूपितः ॥ मयाते षोडशाध्यायैः किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १७ ॥

मोक्षको देनहारी हैं ॥ १४ ॥ हे गरुड ! मैं तुमसों या प्रकार सनातन मोक्षधर्म कहो ज्ञान और वैराग्य समेत याको सुनिकै मोक्षको प्राप्त होय ॥ १५ ॥ तत्त्वके जाननहारे मोक्षको प्राप्त होय हैं और धर्म करनहारे नर स्वर्गको जाय हैं और पापी दुर्गतिको प्राप्त होय हैं और पक्षी आदि यहां उत्पन्न होय हैं और यहांही मरै हैं ॥ १६ ॥ या प्रकार शास्त्रनको सारोद्धार मैंने तुमसों सोलह अध्यायमें निरूपण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गरुड ! माता पिताके मरनेमें जो याको सुनै है तौ वाके माता पिता मुक्तिको प्राप्त होय हैं और पुत्र संततिशालो होय है ॥७॥ जाने गरुडपुराण न सुनो होय और गया श्राद्धनकियो होय और जाने वृषोत्सर्ग न कियो होय और जाने मासिक तथावार्षिक श्राद्धन कियो होय ॥ ८ ॥ वह कैसे पुत्र कहो जाय और तीनि प्रकारके ऋणतें कैसे छूटै और माता पिताको कैसे तारनेको समर्थ है ॥ ९ ॥ तातें

मातापित्रोश्चमरणेसौपर्णंश्रृणुतेतुयः पितरौमुक्तिमापन्नौ सुतःसन्ततिमान्भवेत् ॥ ७ ॥ नश्रुतंगारुडंयेनगया श्राद्धंचनोकृतम् ॥ वृषोत्सर्गः कृतोनैवनचमासिकवार्षिके ॥ ८ ॥ सकथंकथ्यतेपुत्रःकथंमुच्येदृणत्रयात् ॥ मातरंपितरंचैवकथंतारयितुंक्षमः ॥ ९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रोतव्यंगारुडंकिल ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांदायकन्दुःखनाशनम् ॥ १० ॥ पुराणंगारुडंपुण्यंपवित्रंपापनाशनम् ॥ श्रृण्वतांकामनापूरंश्रोतव्यंसर्वदैवहि ॥ ११ ॥ ब्राह्मणोलभतेविद्यांक्षत्रियःपृथिवींलभेत् ॥ वैश्योधनिकतामेतिशूद्रः शुध्यतिपातकात् ॥ १२ ॥

सब प्रयत्नसों गरुडपुराण निश्चय सुनने योग्य है यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको देनहारो है और दुःखको नाश करनहारोहै॥१०॥ यह गरुडपुराण पवित्र करनहारो और पापनको नाश करनहारो है और सुननहारे पुरुषनकी कामनाको पूरी करै है तातें सदा सुननो चाहिये ॥ ११ ॥ ब्राह्मण विद्याको प्राप्त होय और क्षत्रिय पृथिवीको पावै और वैश्य धनवान् होय और शूद्र पातकसे शुद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होजाय है ॥ १२ ॥ और सुनिकै वाचनहारेको सब दान देनो चाहिये और पहले कहेभये शय्यादान आदि देने चाहिये अन्यथासफल नहीं होय हैं ॥ १३ ॥ पहले पुराणकी पूजा करै ता पीछे कथा कहनेहारेकी वस्त्र अलंकार गोदान और दक्षिणासों आदरपूर्वक पूजा करै ॥ १४ ॥ अन्न सोनेके दान और बहुतसे भूमिदानसों बहुतसे फलकी प्राप्तिके लिये भक्तिसों बाँचनहारेकी पूजा करै ॥१५॥ बाँचन

श्रुत्वादानानिदेयानिवाचकायाखिलानिच ॥ पूर्वोक्तशयनादीनिनान्यथासफलंभवेत् ॥ १३ ॥ पुराणंपूजयेत्पूर्वंवाचकंतदनंतरम् ॥ वस्त्रालंकारगोदानैर्दक्षिणाभिश्चसादरम् ॥ १४ ॥ अन्नैश्चहेमदानैश्चभूमिदानैश्चभूरिभिः ॥ पूजयेद्वाचकंभक्त्याबहुपुण्यफलाप्तये ॥ १५ ॥ वाचकस्यार्चनेनैवपूजितोहंनसंशयः ॥ सन्तुष्टेतुष्टतांयामिवाचकेनात्रसंशयः ॥ १६ ॥ इति श्रीगरुडपुराणश्रवणफलम् ॥

हारेकी पूजाकरनेसों मैं पूजित होउहौं यामें संदेह नहीं है. वाचनहारेके संतुष्ट होनेतै मैं संतुष्ट होउहौं यामें भी संदेह नहीं है ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीगरुडपुराणश्रवणफलं संपूर्णम् ॥

१५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीः ॥ आसीद्वक्तापुराणस्य श्रीशार्दूलमहीपतेः ॥ झुंझुणूनगरस्थापिमिश्रः श्रीसुखलालजी ॥ १ ॥ तस्यश्रीहरिनारायणात्मजस्तत्सुतेन तु ॥ मा (म) या नौनिधिरामेण कृतोयंसारसंग्रहः ॥ २ ॥ प्राचीनैर्यत्कृतःपूर्वंगारुडःसारसंग्रहः ॥ सतुनो बुद्धिदौर्बल्याज्ज्ञातस्तस्मादयं कृतः ॥ ३ ॥ पुनरुक्तिंपरित्यज्यक्रमेणायंमयाकृतः ॥ बालानांसुखबोधायनतुपांडित्यगर्वतः ॥४॥ अत्राप्रमाणंयत्किंचित्प्रमादाल्लिखितं मया॥ विद्वद्भिःसुविचार्यैव शोधनीयोनसूयिभिः ॥ ५ ॥ सारोद्धारोमया मूलैर्बहुग्रन्थैर्यथाकृतः ॥ तथैवानेकटीकाभिरुद्धृतः सारसंग्रहः ॥ ॥ ६ ॥ महाखेदान्मयातत्रयथास्थानंनियोजितः ॥ प्राज्ञंविनाप्रयासंमेकोज्ञास्यतिविमूढधीः ॥ ७ ॥ विद्वानेवहिजानातिविद्वज्जनपरिश्रमम् ॥ नहिवन्ध्याविजानातिगुर्वीप्रसववेदनाम् ॥ ८ ॥ ये पूर्वसंग्रहेमूढानैवजानंतियोग्यताम् ॥ तेकथंहिभविष्यन्तिहर्पिताःपठनेऽस्य च ॥ ९ ॥ सारोद्धारमिमंमिश्राःपठन्तुनपठन्तुवा ॥ मयातुस्वीयबोधायकृतमेतन्नसंशयः ॥ १० ॥ मङ्गलंभगवान्विष्णुर्मङ्गलंगरुडध्वजः ॥ मंगलंपुण्डरीकाक्षोमंगलायतनोहरिः ॥ ११ ॥ लाभस्तेषांजयस्तेषांकुतस्तेषांपराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ॥ १२ ॥ राजानः परिपालयन्तुवसुधांधर्मेस्थिताः सर्वदापृथ्वीकामदुघाभवत्वविरलंवर्षन्तुकालेघनाः ॥ ईर्ष्यामुज्झतुदुर्जनः परगुणेष्वासज्जतांसज्जनःसत्काव्यामृतवर्षिणीकविमुखेवाणीचिरंनन्दतु ॥ १३ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेस्वकृतश्लोकाःसमाप्ताः ॥ प्रथमाध्यायेऐहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणं श्लोकाश्च ॥ ६० ॥ द्वितीयेयममार्गनिरूपणम् ॥८६॥ तृतीयेयमयातनानिरूपणम्॥७१॥चतुर्थेनरकप्रदपापनिरूपणम् ॥१०४॥ पञ्चमेपापचिह्ननिरूपणम् ॥५८॥ षष्ठेपापिनांजन्मादिदुःखनिरूपणम् ॥४३॥ एवंषडध्यायैःपापगतिः ॥ सप्तमेबभ्रुवाहनप्रेतसंबादः ॥६८॥ अष्टमेआतुरदानम् ॥ ११८ ॥ नवमेम्रियमाणकृत्यम् ॥ ४८ ॥ दशमेदाहास्थिसञ्चयकर्मनिरूपणम् ॥ १०४ ॥ एकादशेदशगात्रविधिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ४२ ॥ द्वादशेएकादशाहविधिः ॥ ८० ॥ त्रयोदशेसपिण्डीशय्यापददाननिरूपणम् ॥ १२३॥ चतुर्दशेधर्मराजनगरनिरूपणम् ॥ ८६ ॥ पञ्चदशेसुकृतिजन्माचरणनिरूपणम् ॥ ९४ ॥ षोडशेध्यायेमोक्षनिरूपणमिति ॥ १२१ ॥ मूलसङ्ख्या ॥ १२८७ ॥ सटीका सा ॥ ३१०० ॥ फलम् ॥ ३२ ॥ इति श्रीगरुडपुराणं समाप्तम् ॥

अथ गरुडपुराणसारोद्धारस्यावतरणिका ।

पहले अध्यायमें ऐहिक आमुष्मिकदुःखका निरूपण श्लोक ६०, द्वितीय अध्यायमें यमके मार्गको निरूपण श्लोक ८६, तृतीय अध्यायमें यमकी यातनाका निरूपण श्लोक ७१, चतुर्थअध्यायमें नरकदेनहारे पापनको निरूपण श्लोक १०४, पंचममें पापके चिह्नका निरूपण श्लोक ५८, छठेमें पापिनके जन्म आदिदुःखको निरूपण श्लोक ४३, या भाँति छः अध्यायनकरिकै पापकीगति कही॥ सातवेंमें बभ्रुवाहन प्रेतका संवाद श्लोक६८, आठवेंमें आतुरको दान श्लोक ११८, नवममें जो मरा चाहताहो वाको कृत्य श्लोक ४८, दशममें दाह अस्थिसंचयकर्मका निरूपण श्लोक१०४, ग्यारहमें दशगात्रकी विधि श्लोक ४२, बारहमें एकादशाहकी विधि श्लोक ८०, तेरहमें सपिंडी शय्या और पददानका निरूपण श्लोक १२३, चौदहमें धर्मराजके नगरका निरूपण श्लोक ८६, पंद्रहेमें सुकृतीके जन्म तथा आचरणका निरूपण श्लोक ९४, सोलहेमें मोक्षधर्मका निरूपण श्लोक१२१, मूलसंख्या १२८७, सटीक ३१०० इति गरुडपुराणस्यावतरणिका॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७वीं गल्ली खम्बाटा लैन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणागारेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम्। संवत् २००६, शके १८७१.

इस पुस्तककी रजिस्टरीका सर्वाधिकार "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विदुषामभ्यर्थना ।

अत्रास्माकं मुद्रणालये ऋगादयो वेदा उपनिषदो वेदान्तग्रन्था महाभारतादीतिहासाः श्रीमद्भागवतादिमहापुराणोपपुराणानि धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-व्याकरण-न्याय-योग-सांख्य-मीमांसादिशास्त्रीयग्रन्थाः काव्य-नाटक-चम्पू-प्रभृतयो ग्रन्थाः सहस्रनामाद्यनेकस्तोत्रग्रन्था विविधभाषाग्रन्थाश्च सीसकोत्तममहल्लघ्वक्षरैर्मनोहरं मुद्रिता योग्यमूल्येन क्रय्याः सन्ति, तांश्च ग्राहका यथापुस्तकसूचीपत्रं मूल्यप्रेषणेन प्राप्नुयुः ।

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासः "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्षः, मुंबईस्थः ।

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,-बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्षके अधीन है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ इति गरुडपुराणं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection